विषय-सूची
(CONTENTS)

अध्याय		पृष्ठ संख्या
इकाई I -	**प्रारम्भिक ब्रिटेन (Britain in Early Period)**	**1-24**
1.1	उद्देश्य	1
1.2	प्रस्तावना	1
1.3	भौगोलिक स्थिति	2
1.4	ब्रिटेन के प्राचीन निवासी	4
1.5	केल्ट की सभ्यता	5
1.6	इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म के प्रभाव	6
1.7	नार्मन युग (1066-1154 ई॰)	7
1.8	नार्मन वंश का संस्थापक	10
1.9	यूरोपीय नार्मन सामन्तवाद	12
1.10	इंग्लैण्ड में सामन्तवाद	16
1.11	नार्मन वंश के अन्य शासक	17
1.12	नार्मन काल की वैधानिक प्रगति	21
•	सारांश	23
•	अभ्यास-प्रश्न	23
•	संदर्भ ग्रंथ	24
इकाई II -	**ब्रिटेन में रोमन का आगमन (Arrival of Roman in Britain)**	**25-36**
2.1	उद्देश्य	25
2.2	प्रस्तावना	25
2.3	रोमन द्वारा ब्रिटेन पर हमले व विजय	26
2.4	रोमन शासन का प्रभाव	29
2.5	आंग्ल-सैक्सन विजय	30
2.6	ब्रिटेन में ईसाई धर्म का प्रचार	33
2.7	ह्विटबी का सम्मेलन	34
•	सारांश	35
•	अभ्यास-प्रश्न	36
•	संदर्भ ग्रंथ	36
इकाई III -	**इंग्लैण्ड का संगठन एवं डेन हमले : आंग्ल सैक्सन युग (802-1066 ई॰)**	**37-54**
	[Organization of England and Den's Assault : Angl-Saxon Age (802-1066 A.D.)]	
3.1	उद्देश्य	37
3.2	प्रस्तावना	38
3.3	इंग्लैण्ड का संगठन	38

3.4 वेसेक्स के अतिरिक्त अन्य राज्यों की प्रधानता 38

3.5 डेन हमले 40

3.6 महान एलफ्रेड (848-901 ई॰) 41

3.7 सैक्सन और डेन राज्य 43

3.8 डेन राज्य और अन्तिम सैक्सन राजे 45

3.9 आंग्ल सैक्सन काल की सभ्यता एवं संस्कृति 47

- सारांश 53
- अभ्यास-प्रश्न 54
- संदर्भ ग्रंथ 54

इकाई IV - मध्यकालीन इंग्लैण्ड (1154-1399 ई. तक) [Medieval England (1154-1339A.D)] **55-73**

4.1 उद्देश्य 55

4.2 प्रस्तावना 55

4.3 हेनरी द्वितीय (1154-1189 ई॰) 56

4.4 मैग्नाकार्टा (महान अधिकार-पत्र) 62

4.5 एडवर्ड प्रथम (1272-1307 ई॰) 65

4.6 ब्लैक डेथ 68

4.7 रिचर्ड द्वितीय (1377-99 ई॰) 69

- सारांश 72
- अभ्यास-प्रश्न 73
- संदर्भ ग्रंथ 73

इकाई V - ट्यूडर वंश (1485-1603 ई॰) [Tuder Dynasty (1485-1603 A.D.)] **74-96**

5.1 उद्देश्य 74

5.2 प्रस्तावना 74

5.3 आधुनिक युग की शुरुआत 75

5.4 हेनरी सप्तम 79

5.5 हेनरी सप्तम का मूल्यांकन 83

5.6 हेनरी सप्तम का शासनकाल: उपचार एवं बीजारोपण का काल 85

5.7 हेनरी अष्टम (1509-1547 ई॰) 87

5.8 हेनरी अष्टम का विश्लेषण 89

5.9 एडवर्ड षष्ठ और मेरी ट्यूडर 90

5.10 महारानी एलिजाबेथ प्रथम (1558-1603 ई॰) 92

5.11 एलिजाबेथ की उपलब्धियाँ 93

- सारांश 95
- अभ्यास-प्रश्न 96
- संदर्भ ग्रंथ 96

इकाई VI - धार्मिक आंदोलन (Religious Movement) **97-110**

6.1 उद्देश्य 97

6.2 प्रस्तावना 97

6.3 धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रारम्भिक काल 98

6.4 धर्म-सुधार पार्लियामेन्ट 100

6.5 मठों की बरबादी 101

6.6 धर्म-सुधार में एडवर्ड षष्ठ की भूमिका 104

6.7 धर्म-सुधार विरोधी आंदोलन 105

6.8 स्कॉटलैण्ड और रानी मेरी के बीच संघर्ष 106

- सारांश 109
- अभ्यास-प्रश्न 110
- संदर्भ ग्रंथ 110

इकाई VII – जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम की नीतियाँ (Policies of James I and Charles I) **111-126**

7.1 उद्देश्य 111

7.2 प्रस्तावना 111

7.3 जेम्स प्रथम (1603-25 ई॰) 112

7.4 चार्ल्स प्रथम 113

7.5 जेम्स प्रथम एवं उस समय के धार्मिक दल 114

7.6 जेम्स प्रथम का धार्मिक दलों के साथ संबंध 116

7.7 जेम्स की वैदेशिक नीति एवं वैवाहिक संबंध (1603-1649 ई॰) 118

7.8 यूरोप का 30 वर्षीय युद्ध 120

7.9 30 वर्षीय युद्ध : आक्रमण एवं परिणाम 123

7.10 इंग्लैण्ड की वैदेशिक नीति की समीक्षा 124

- सारांश 125
- अभ्यास-प्रश्न 126
- संदर्भ ग्रंथ 126

इकाई VIII – स्टुअर्ट वंश के समय की महान क्रान्ति एवं पुनर्स्थापना युग **127-140**

(Great Revolution during Stuart Dynasty and Re-establishment Age)

8.1 उद्देश्य 127

8.2 प्रस्तावना 127

8.3 जेम्स द्वितीय (1685-1688 ई॰) 128

8.4 महान क्रान्ति के कारण 129

8.5 क्रान्ति के लक्षण, महत्त्व तथा प्रभाव 131

8.6 1688-89 ई॰ की अंग्रेजी क्रान्ति का स्वरूप 133

8.7 पुनर्स्थापना-युग की वैदेशिक नीति 136

- सारांश 139
- अभ्यास-प्रश्न 139
- संदर्भ ग्रंथ 140

इकाई IX - स्टुअर्ट वंश (1689-1714 ई.) [Stuart Dynasty (1689-1714 A.D.)] **141-161**

9.1 उद्देश्य 141
9.2 प्रस्तावना 142
9.3 विलियम एवं मेरी 142
9.4 विलियम के राज्य का महत्त्व 143
9.5 नियम एवं कानून 145
9.6 आर्थिक प्रगति 148
9.7 रानी एन (1702-1714 ई.) 149
9.8 गुडोल्फिन मंत्रिमण्डल (1702-1710 ई.) 150
9.9 टोरी मंत्रिमण्डल (1710-1714 ई.) 151
9.10 वैदेशिक नीति (1689-1714 ई.) 152
9.11 1688 और 1717 ई. के बीच दो प्रमुख युद्ध 152
9.12 मार्लबरा 156
9.13 यूट्रेक्ट की संधि 158
- सारांश 160
- अभ्यास-प्रश्न 161
- संदर्भ ग्रंथ 161

इकाई X -17वीं शताब्दी तक इंग्लैण्ड की स्थिति (England till 17th Century) **162-180**

10.1 उद्देश्य 162
10.2 प्रस्तावना 162
10.3 सत्रहवीं सदी तक मंत्रिपरिषद् का विकास 163
10.4 सत्रहवीं सदी में राजनीति पर धर्म का प्रभाव 166
10.5 सत्रहवीं सदी में व्यक्तिगत स्वाधीनता की समस्या 169
10.6 17वीं सदी की प्रमुख घटनाएँ 171
10.7 17वीं सदी का महत्त्व (रचनात्मक युग के रूप में) 174
10.8 17वीं सदी में इंग्लैण्ड की दशा 176
- सारांश 179
- अभ्यास-प्रश्न 180
- संदर्भ ग्रंथ 180

- परिशिष्ट 1 181
- परिशिष्ट 2 181
- परिशिष्ट 3 184

इकाई–1

प्रारम्भिक ब्रिटेन
(Britain in Early Period)

नोट

संरचना (Structure)

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 भौगोलिक स्थिति
1.4 ब्रिटेन के प्राचीन निवासी
1.5 केल्ट की सभ्यता
1.6 इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म के प्रभाव
1.7 नार्मन युग (1066–1154 ई.)
1.8 नार्मन वंश का संस्थापक
1.9 यूरोपीय नार्मन सामन्तवाद
1.10 इंग्लैण्ड में सामन्तवाद
1.11 नार्मन वंश के अन्य शासक
1.12 नार्मन काल की वैधानिक प्रगति
- सारांश
- अभ्यास-प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- ब्रिटेन के प्रारम्भिक काल को समझने में।
- नार्मन विजय की सभ्यता को समझने में।
- आंग्लसैक्सन युग को समझने में
- इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म के प्रभाव को समझने में।

1.2 प्रस्तावना

ब्रिटिश द्विपसमूह के चार अंग हैं– इंग्लैण्ड, वेल्स, स्कॉटलैण्ड और आयरलैण्ड। बीसवीं सदी के चरण में प्रथम महायुद्ध के बाद आयरिश स्वतंत्र हो गए। इंग्लैण्ड शीत कटिबंध में स्थित है। यहाँ न तो अधिक सर्दी ही पड़ती

है और न ही अधिक गर्मी। यहाँ के लोग पुष्ट एवं परिश्रमी हैं। इंग्लैण्ड यूरोप के राजनैतिक तथा सांस्कृतिक आंदोलन से बहुत अधिक प्रभावित हुआ था। बेल्जियम की रक्षा हेतु इंग्लैण्ड को कभी फ्रांस से तो कभी जर्मनी से लड़ाई लड़ती रहनी पड़ी।

नोट

ब्रिटेन के प्राचीन नवपाषाण युग और प्राचीन पाषाण युग में भी अंतर है। प्राचीन पाषाण युग में पत्थर के छोटे-छोटे भद्दे हथियार होते थे और नवपाषाण युग में हथियार चमकीले तथा अधिक तेज हुआ करते थे। धातु युग में लोगों को धीरे-धीरे धातुओं की पहचान होने लगी थी। इस युग में रहने वाले लोग आर्य जाति के लोग कहलाते थे। ईसा से लगभग 700 वर्ष पूर्व आर्य जाति के एक दल ब्रिटेन में आकर बस गए जो केल्ट के नाम से जाने गए। केल्टवासियों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक जीवन में सुधार होने से इंग्लैण्ड में बहुत परिवर्तन आया। साथ ही इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म के आगमन से इंग्लैण्ड के राजनैतिक एवं सामाजिक स्थिति पर बहुत प्रभाव पड़ा। ईसाई धर्म से पादरियों, चर्च, शिक्षा को भी बढ़ावा मिला।

नार्मन युग (1066-1154 ई.) इंग्लैण्ड के लिए एक वरदान साबित हुआ। नार्मन युग के संस्थापक विलियम प्रथम के प्रयासों एवं उपलब्धियों ने इंग्लैण्ड के स्वरूप को बदल कर रख दिया। विलियम प्रथम की राह में नार्मनों एवं बेरनों ने बार-बार कठिनाइयाँ उत्पन्न की परन्तु वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल नहीं हुआ। इसके बाद वंशानुक्रम सत्ता संभालने का कारवां प्रारम्भ हो गया। विलियम के तीन पुत्र एवं एक पुत्री थी। बारी-बारी से पहले उन्होंने इंग्लैण्ड की गद्दी सम्भाली। फिर उनके पुत्र-पुत्रियों ने अपनी कुशलता एवं योग्यता अनुसार इंग्लैण्ड की शासन व्यवस्था को कायम रखा।

1.3 भौगोलिक स्थिति

किसी भी देश का भूगोल और उसके निवासी उस देश की नींव होते हैं। देश की स्थापना के लिए चार तत्व सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं– भूमि, जलवायु, पूंजी और निवासी। किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण में वहाँ की भौगोलिक स्थिति का बहुत बड़ा योग होता है। संसार के प्रत्येक देश की भौगोलिक स्थिति भिन्न-भिन्न होती है। यही कारण है जिससे प्रत्येक देश की सभ्यता एवं संस्कृति में भिन्नता होती है। जिस देश की भूमि, जलवायु बेहतर होते हैं वहाँ के लोगों का रहन-सहन उतना ही उत्तम होता है। ठंडी जलवायु वाले लोग गोरे होते हैं। गर्म जलवायु वाले लोग काले होते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि किसी भी देश का इतिहास वहाँ की भौगोलिक स्थिति से बहुत प्रभावित होता है।

1. प्राकृतिक बनावट : ब्रिटिश द्वीपसमूह यूरोप महादेश के उत्तर-पश्चिम में अटलांटिक महासागर में स्थित है। इस द्वीपसमूह के चार अंग हैं–इंग्लैण्ड, वेल्स, स्कॉटलैण्ड और आयरलैण्ड। इंग्लैण्ड और वेल्स द्वीपसमूह के दक्षिण में स्थित है और उत्तर में स्कॉटलैण्ड है। इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड एक-दूसरे के बहुत निकट हैं, परन्तु उनके बीच पर्वत श्रेणियाँ स्थित हैं। बीचों-बीच पर्वत श्रेणियाँ होने के कारण इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड एक-दूसरे के पास होने के बाद भी अलग रहे और उनमें आपस में वैर-विरोध भी होते रहे। बहुत अधिक समय तक स्कॉटलैण्ड इंग्लैण्ड वालों के लिए एक बड़ी परेशानी भी बना रहा। अन्ततः 17वीं शताब्दी में दोनों द्वीपों के बीच कुछ नजदीकियाँ आने लगी। 1603 ई. में स्कॉटलैण्ड का राजा इंग्लैण्ड का राजा बन गया और दोनों द्वीपों की संसद एक हो गई।

ब्रिटिश द्वीप और आयरलैण्ड के बीच आयरिश समुद्र है। इंग्लैण्ड और आयरलैण्ड के बीच काफी समय तक शत्रुता कायम रही। एलिजाबेथ प्रथम के समय में इंग्लैण्ड ने आयरलैण्ड पर कब्जा कर लिया, किन्तु आयरिश इससे संतुष्ट नहीं हुए। दोनों द्वीपों के बीच झगड़ा लगातार चलता रहा। 1801 ई. में दोनों द्वीपों की संसद एक हो गई, परन्तु आयरिशों में मतभेद कायम रहे। 20वीं सदी के प्रथम चरण में प्रथम महायुद्ध के बाद आयरिश स्वतंत्र होकर ही संतुष्ट हुए, परन्तु उनके दो टुकड़े हो गये।

नोट

मानचित्र 1.1

2. इंग्लैण्ड की जलवायु : इंग्लैण्ड शीत कटिबंध में स्थित है। यहाँ पर न तो अधिक गर्मी पड़ती है और न ही अधिक सर्दी। यह चारों ओर समुद्र से घिरा हुआ है। इसके अतिरिक्त बिस्के की खाड़ी से गर्म जल की धारा बहती है जो इसके लम्बे किनारे को छूती है। अत: इसकी जलवायु बड़ी ही मनोहर तथा स्वास्थ्यवर्द्धक है। यहाँ के लोग भी बड़े ही पुष्ट तथा परिश्रमी हैं।

3. व्यापार : विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण विविध उद्योग-धन्धों के अलावा वाणिज्य-व्यापार को भी बहुत प्रोत्साहन मिला है। इससे धन-दौलत की वृद्धि होती रही है और इसके चलते इंग्लैण्ड ने बड़े-बड़े भयंकर तथा दीर्घकालीन युद्धों में सफलता प्राप्त की है। लोगों का जीवन-स्तर भी धीरे-धीरे ऊपर उठता रहा है।

नोट

4. सुरक्षा : इंग्लैण्ड जल से चारों ओर से घिरा हुआ है। जिस कारण यह शक्तिशाली द्वीप बनकर अन्य राज्यों पर हमला करता रहा है और उसे सफलता मिलती रही है। इसी के बदौलत वह दीर्घकाल तक अपने विशाल साम्राज्य के अधिकांश भागों की रक्षा भी कर सका है। अन्य राज्यों ने भी उस पर हमला करने के कई प्रयत्न किये हैं, परन्तु सभी प्रयत्न असफल रहे। सिर्फ प्राचीन एवं मध्यकाल में ही ब्रिटिश द्वीप पर रोमन, आंग्ल-सैक्सन, डेन तथा नार्मन लोगों के हमले हुए और उन्हें सफलता भी मिली। किन्तु 11वीं सदी के बाद कोई भी विदेशी राज्य उस पर हमला करने तथा विजय प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाया। इस दृष्टि से स्पेन के फिलिप द्वितीय, फ्रांस के लुई 14वें और नेपोलियन प्रथम तथा जर्मनी के हिटलर को निराश होना पड़ा।

5. व्यवसाय : समुद्र में स्थित रहने के कारण इंग्लैण्ड का किनारा खूब कटा हुआ है। अत: बन्दरगाहों की भरमार है और वे जहाज के लिए बहुत ही उपयुक्त भी है। सामुद्रिक शक्ति होने के कारण जलयात्रा और जहाज व्यवसाय को भी बहुत प्रोत्साहन मिलता रहा है। अंग्रेज नाविक जाति की श्रेणी में आगे रहे हैं। यहाँ पर खनिज पदार्थ की भी कमी नहीं है। यहाँ पर कोयला और लोहा बहुत मात्रा में पाया जाता है। उत्तर-पश्चिम के इलाके भी अन्य खानों से भरे पड़े हैं। दक्षिण-पूर्व की भूमि समतल होने के कारण वहाँ बहुत मात्रा में खेती की जाती है। 18वीं सदी के मध्य तक इंग्लैण्ड कृषि प्रधान देश बन चुका था। दक्षिणी-पूर्वी भाग बहुत प्रसिद्ध हो चुके थे, परन्तु 18वीं सदी के मध्य के बाद इंग्लैण्ड में एक औद्योगिक क्रान्ति हुई और उत्तरी-पश्चिमी भाग अधिक प्रसिद्ध होने लगा। इसी भाग में कल-कारखाने खुलने लगे और बड़े-बड़े नगर बसने लगे।

6. साम्राज्यवाद : इंग्लैण्ड के निवासी धीरे-धीरे साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद के पथ पर भी अग्रसर हो गये। कालान्तर में अंग्रेजों ने एक विशाल साम्राज्य कायम कर लिया। ऐसा कहा जाता है कि कुछ समय तक तो *ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्यास्त ही नहीं होता था। इस तरह एक समय था जबकि अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण* इंग्लैण्ड संसार में सर्वशक्तिशाली देश बन गया था। केवल आधुनिक काल में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत रूस के उदय एवं विकास के कारण उसका सर्वप्रथम स्थान समाप्त हो गया है। फिर भी विश्व-राजनीति में वह भी एक महत्त्वपूर्ण शक्ति है।

7. महादेशों से निकटता : ब्रिटिश द्वीपसमूह और यूरोप महादेश के बीच इंगलिश चैनल स्थित है। अत: दोनों एक-दूसरे से अलग हैं, किन्तु बहुत दूर नहीं है। इंग्लैण्ड आवश्यकतानुसार यूरोप की राजनीति में हस्तक्षेप करता रहा है और तटस्थ भी रहा है। यूरोप के राजनैतिक तथा सांस्कृतिक आंदोलनों से इंग्लैण्ड भी प्रभावित हुआ है। इस दृष्टि से पुनरुत्थान आंदोलन, धर्मसुधार आंदोलन तथा फ्रांसीसी क्रान्तियाँ उल्लेखनीय हैं। यूरोप महादेश के उत्तर-पूर्व में और इंगलिश चैनल के दक्षिण में बेल्जियम स्थित है। इंग्लैण्ड की यही नीति रही है कि बेल्जियम किसी विदेशी शक्ति के हाथ में नहीं जाने पाये। ऐसा होने से वह इसे अपनी असुरक्षा समझता है। अत: बेल्जियम की रक्षा हेतु इंग्लैण्ड को कभी फ्रांस तो कभी जर्मनी से लड़ाई लड़नी पड़ती।

1.4 ब्रिटेन के प्राचीन निवासी

1. पत्थर युग : ऊपर हमने पढ़ा कि इंग्लैण्ड की भौगोलिक स्थिति कितनी बेहतर है, परन्तु यह स्थिति सृष्टि के प्रारंभ से ही नहीं है। ईसा से लगभग पाँच-छह हजार वर्ष पूर्व इंग्लैण्ड की भौगोलिक स्थिति इस स्थिति से बहुत भिन्न थी। इंग्लैण्ड यूरोप महादेश में मिला हुआ था और जलवायु अधिक ठंडी थी। जंगल, झाड़ की प्रधानता थी, *लोग असभ्य थे, शिकार उनका मुख्य पेशा था। लोग कच्चा मांस खाते थे और वृक्ष की छाल तथा चमड़े से अपने* शरीर को ढका करते थे। वे गड्ढों एवं गुफा में रहा करते थे। उनका कोई विशेष धर्म नहीं था। न तो मृतक को जलाते थे और न ही दफनाते थे। उनके पास पत्थर के कुछ छोटे-छोटे भद्दे हथियार होते थे। अत: इस युग को 'प्राचीन पत्थर युग' कहा जाता था।

समय के साथ उनके रहन-सहन में परिवर्तन होने लगा। वे दूसरे लोगों से मिलने लगे। अपने विचारों को एक-दूसरे से बांटने लगे जिससे उनकी दशा में सुधार होने लगा। उन्होंने पत्थरों से घर बनाना सीख लिया। वे जानवरों को पालने लगे। भोजन में मछलियों का प्रयोग करने लगे। मुर्दों को भी जमीन में गाड़ा जाने लगा। पत्थरों के हथियारों

में सुधार होने लगा। हथियार प्राचीन पाषाणयुगीन हथियारों से अधिक तेज और चमकीले होते चले गये। अत: इस युग को 'नवपाषाण युग' कहा जाने लगा। इस युग के निवासी आईबेरियन जाति के कहलाते थे।

2. धातु युग : कुछ समय के बाद धातु युग का आगमन हुआ। लोगों को धातुओं की जानकारी प्राप्त होने लगी। अब धातुओं से अधिक तेज, मजबूत और उपयोगी अस्त्र-शस्त्र बनने लगे। अब शिकार के साथ-साथ खेती तथा पशुपालन जैसे व्यवसाय पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। लोग घर बनाकर रहने लगे, मिट्टी के बर्तन भी बनने लगे, सभ्यता के कुछ अन्य चिह्न भी दिखने लगे। इस युग के रहने वाले लोग आर्य जाति के थे।

नोट

1.5 केल्ट की सभ्यता

ईसा से लगभग 700 वर्ष पहले आर्यों का एक दल ब्रिटेन में आकर बस गया जिन्हें केल्ट कहा जाता था। इनकी दो शाखाएँ थीं– एक शाखा के लोग गोयडेल और दूसरे शाखा के लोग ब्रिथन या ब्रिटन कहलाते थे। गोयडेल लोग ब्रिटनों से कुछ पहले आये थे। ब्रिटनों के पहुंचने पर गोयडेलों को उत्तर की ओर भागना पड़ा। वे जाकर स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड में बस गये। "ब्रिटन के ही नाम पर द्वीप का नाम ब्रिटेन या ब्रिटानिया पड़ा।" ब्रिटन गोयडेलों की अपेक्षा अधिक सभ्य थे। बाद में गोयडेल लोग पिक्ट एवं स्काट दो शाखाओं में बंट गए। पिथियस तथा जूलियस सीजर के ग्रंथों से हमें केल्ट की सभ्यता की जानकारी प्राप्त होती है। पिथियस एक यूनानी यात्री था जो व्यापार के उद्देश्य से ईसा के करीब 325 वर्ष पहले ब्रिटेन गया था। उसने अपनी यात्रा का कुछ विवरण लिख छोड़ा है। सीजर की कमेंटरी नामक पुस्तक से भी हमें बहुत कुछ सहायता मिलती है।

1. सामाजिक जीवन : केल्ट की सामाजिक दशा काफी अच्छी थी। केल्ट शुरू से ही सबल और लम्बे कद के होते थे। वे लम्बे-लम्बे और काले बाल रखते थे। वे केवल मूँछ ही रखते थे दाढ़ी नहीं। वे गहने बनाया एवं पहना करते थे। धनी लोग सोने-चाँदी के गहनों का प्रयोग किया करते थे। शराब का प्रयोग किया जाने लगा। शराब का अधिक प्रयोग विवाह एवं लड़ाई के समय किया जाता था। शुरुआत में मीड नामक शराब अधिक प्रचलित थी। बहुपति प्रथा भी कायम थी। मनोरंजन के साधनों में रथ-दौड़ का मुख्य स्थान था।

2. धार्मिक जीवन : केल्टों में धार्मिक विश्वास बहुत प्रचलित था। वे कुछ पेड़-पौधों की पूजा करते थे। इनमें ओक अधिक प्रसिद्ध है। सूर्य, चांद, अग्नि, जल आदि प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा भी की जाती थी। उनके पुरोहित भी होते थे जो ड्रुइड कहलाते थे। अत: उनके धर्म को ड्रुइडवाद कहते थे। ड्रुइडों का समाज में बहुत आदर-सत्कार होता था। उनकी आज्ञा पालन करना लोगों का परम कर्त्तव्य होता था। उनसे कोई प्रश्न नहीं कर सकता था। वे बहुत पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं थे किन्तु पद्य की रचना कर लेते थे। वे पुस्तक नहीं लिखते थे। वे जादू-टोने में अधिक विश्वास रखते थे। वे बहुत शक्तिशाली थे तथा अनेक कार्य करते थे। वे धर्मगुरू होने के साथ-साथ युद्ध में भी जाते थे। वे न्यायधीश (जज) का भी काम करते थे। वे झगड़ों का भी फैसला करते थे और अपराधियों को भी सजा देते थे। वे शिक्षक भी होते थे। वे नवयुवकों को आचार-विचार संबंधी शिक्षा भी देते थे। पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे। देवताओं को खुश करने के लिए बलि भी चढ़ाई जाती थी। मनुष्यों की भी बलि दी जाती थी। पुरोहितों को अहम् स्थान दिया जाता था।

3. राजनैतिक जीवन : केल्टवासी कबीलों में बंटे हुए थे। प्रत्येक कबीले का अपना एक सरदार होता था। कबीले की रक्षा का भार सरदार के ऊपर ही होता था। सरदार ही उनका नेता और राजा था। द्वीप छोटे-छोटे रियासतों में विभक्त था और प्रत्येक रियासत में सरदार शासन करता था। कबीलों में किसी प्रकार की एकता नहीं थी। प्रत्येक सरदार अपने कबीले की शक्ति को बढ़ाने का प्रयास करते रहते थे। इसके लिये वह अन्य कबीले वालों से लड़ाई-झगड़ा किया करते थे। इसलिए हम कह सकते हैं कि केल्टों में मजबूत केन्द्रीय शासन का अभाव था।

केल्ट लड़ाई झगड़ा की कला से भली-भांति परिचित थे। युद्ध-काल में सरदार अपने कबीले की सेना का पथ-प्रदर्शन करता था। युद्ध में भाले, बर्छी और कुल्हाड़ी का व्यवहार होता था। ढाल तथा कवच भी प्रयोग में लाये जाते थे। केल्टों में घुड़सवार भी थे। युद्ध के समय रथ भी प्रयोग किए जाते थे। वे दुर्ग भी बनाना जानते थे और संकट के समय सुरक्षा के लिए इनमें छिपा करते थे। दुर्ग को डिन कहा जाता था। वे दुर्ग के चारों ओर दीवार तथा

झाड़ी बनाया करते थे। शत्रुओं को भयभीत करने के लिए ब्रिटन अपने चेहरे को रंग कर बहुत ही भयानक बना लिया करते थे।

नोट

4. आर्थिक जीवन : केल्ट धातु-युग के रहने वाले थे। देश जंगल तथा दलदल से भरा हुआ था। केल्ट खेती तथा पशुपालन के व्यवसाय से भली-भांति परिचित थे। वे अन्न उगाया करते थे और कई पशुओं को पालते थे। इनमें गाय तथा भेड़ अधिक प्रसिद्ध थे। वे घरों में रहते थे और कपड़े का भी व्यवहार करते थे। वे खानों से विविध धातुओं को निकालते और उनका प्रयोग करते थे। वे मिट्टी का बर्तन भी बनाना जानते थे। इन्हें लोहे की भी जानकारी थी और उनके कई हथियार इसी धातु से बनते थे। वे व्यापार भी करना जानते थे। वे सोना, चांदी, टीन, लोहा आदि धातुओं को बाहर भेजते थे। 'टीन' बहुत मात्रा में मिलता था।

1.6 इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म के प्रभाव

रोमनों के ही शासनकाल में ब्रिटेन में ईसाई धर्म का प्रवेश शुरू हो चुका था, किन्तु आंग्ल-सैक्सन जाति के लोगों को ईसाई धर्म के प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी। वे इसके विरोधी थे। वे बहुदेववादी, हिंसावादी और मूर्ति-पूजक थे। वे पूजा-पाठ के अवसर पर पशु-बलि तथा मद्यपान खूब किया करते थे। अतः ब्रिटेन में उनके आ जाने से ईसाई धर्म के चिह्न लुप्त होने लगे, परन्तु समस्त द्वीप से इस धर्म को निर्मूल कर देना सम्भव नहीं था। वेल्स, स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड में ब्रिटनों के बीच यह धर्म जीवित रहा। यह केल्टिक ईसाई धर्म कहलाता था। इन स्थानों के ईसाई पादरी अपने धर्म का प्रचार करते रहे। आयरलैण्ड के पादरियों ने आंग्ल-सैक्सन लोगों के बीच भी ईसायत का प्रचार करने का प्रयत्न किया। इनके अलावा रोमन पादरियों ने भी उन्हें ईसाई बनाने का प्रयास किया। इस तरह केल्टिक तथा रोमन पादरियों के प्रयत्न से आंग्ल-सैक्सन लोगों ने ईसाई धर्म को स्वीकार किया। केल्टिक ईसाई मत का केन्द्र आयरलैण्ड का उत्तर आयोना द्वीप था और रोमन ईसाई मत का केन्द्र इटली में रोम था।

1. राजनैतिक प्रभाव : ईसाई धर्म का प्रभाव राजनैतिक क्षेत्र में भी साफ नजर आने लगा था। ईसाई धर्म ने इंग्लैण्ड को एक धर्म दिया जिस धर्म ने राजनैतिक संगठन को बहुत प्रोत्साहन दिया। धार्मिक एकता ने राजनैतिक एकता के लिए मार्ग सरल बना दिया। इस तरह ईसाई धर्म ने अंग्रेजों की राष्ट्रीय भावना को सबल बनाया।

पादरियों में कुछ बड़े योग्य एवं निपुण राजनीतिज्ञ भी निकले। इस दृष्टि से डंस्टन, लैनफ्रैंक एनस्लेम आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। 15वीं सदी से 16वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक पादरी ही प्रधानमंत्री के पद को सुशोभित करते थे। बहुत से अन्य पदों पर भी वे बहाल होते थे। वे देश की बहुमूल्य सेवा करते थे। वे महत्त्वाकांक्षी नहीं होते थे। वे गद्दी के लिए राजा के प्रतियोगी नहीं होते थे। उनमें व्यक्तिगत स्वार्थ का अभाव था।

ईसाई धर्म के प्रचार से राजा का पद अधिक मजबूत एवं सुरक्षित हो गया। धार्मिक क्षेत्र में लोग कैन्टरबरी के आर्कबिशप के अधीन हो गये। अतः एक राजा के प्रति आज्ञाकारिता एवं भक्ति पर विशेष जोर दिया जाने लगा। अब राजा के अधीन भी शासन संगठित करने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होने लगा। राजा के विरुद्ध हथियार उठाना या विद्रोह करना बहुत बड़ा अपराध समझा जाने लगा। धीरे-धीरे आयरलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड से इंग्लैण्ड का धार्मिक मतभेद दूर हो गया और वे इंग्लैण्ड के निकट सम्पर्क में आने लगे।

2. सामाजिक प्रभाव : इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म के प्रचार से महान परिवर्तन हुए। इससे इंग्लैण्ड की आकृति पूरी तरह से बदल गई। ईसाई धर्म से इंग्लैण्ड की सभ्यता और संस्कृति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। रोम की सभ्यता एवं संस्कृति से सम्पर्क होने से ब्रिटिश सभ्यता एवं संस्कृति समृद्धशाली होने लगी। इंग्लैण्ड में पूरी तरह से ईसाई धर्म छाने लगा। जिसका प्रभाव हर क्षेत्र में नजर आने लगा था।

ईसाई धर्म के आगमन के पहले आंग्ल-सैक्सन लोगों का धर्म प्राचीन एवं भद्दे ढंग का था। स्वार्थ एवं हिंसा की प्रधानता थी। उससे मनुष्य का न तो व्यक्तिगत कल्याण हो सकता था और न राष्ट्र का ही। प्राचीन धर्म मानवता से शून्य था। ईसाई धर्म के प्रचार से इंग्लैण्ड को एक धर्म मिल गया। यह धर्म मानवता से परिपूर्ण था। देश में मठ, विहार तथा आश्रम की वृद्धि होने लगी। इन स्थानों के लोग पवित्र एवं परोपकारी जीवन व्यतीत करने लगे। ईसाई

धर्म के पालन से व्यक्ति तथा राष्ट्र दोनों ही का कल्याण होने लगा। इंग्लैण्ड से पादरी लोग विदेशों में भी जाकर ईसाई मत का प्रचार करने लगे। इस तरह अंग्रेजों को ऐसा धर्म मिल गया जिसके अनुयायी आज तक बने हुए हैं।

उस समय समाज में अनेक बुराइयाँ प्रचलित हुआ करती थी। यदि किसी से कोई अपराध हो जाए तो उसे दंड दिया जाता। उन्हें प्रायश्चित करने का कोई अवसर प्राप्त नहीं था। न्याय की अपेक्षा प्रतिशोध की भावना अधिक बलवती थी। पशुबल प्रधान था। अपराध निश्चित करने का तरीका भद्दा, अविश्सनीय तथा कठोर था। पारिवारिक जीवन अव्यवस्थित था। ईसाई धर्म ने इन बुराइयों को दूर कर समाज को परिष्कृत कर दिया। अपराध के लिए जुर्माने के अतिरिक्त प्रायश्चित करने पर जोर दिया जाने लगा। इससे आत्मशुद्धि को प्रोत्साहन मिला। ईसाइयत ने शान्ति का संदेश दिया और अब शान्ति भंग करना राज्य के प्रति अपराध समझा जाने लगा। अब प्रतिशोध के बदले न्याय पर अधिक जोर दिया जाने लगा। पारिवारिक जीवन अधिक व्यवस्थित होने लगा। विवाह को पवित्र एवं अटूट बंधन समझा जाने लगा। परिवार में प्रेम तथा भाई-चारे का संबंध बढ़ने लगा।

नोट

ईसाई धर्म से शिक्षा का प्रचार हुआ। पादरी की ही देख-रेख में विद्या को प्रोत्साहन मिला। चर्च को विद्यालय तथा पादरी को शिक्षक समझा जाने लगा। चर्च तथा मठों में बड़े-बड़े विद्वान रहते थे। उन्होंने शिक्षा तथा साहित्य को प्रोत्साहित किया। कैडमैन प्रथम अंग्रेज कवि था जो धार्मिक कविता लिखा करता था। वह हिटबी मठ का एक साधु था। बेड नामक विद्वान (673-735) इंग्लैण्ड का प्रथम इतिहासकार था। वह जैरो मठ में एक भिक्षु था। वह शिक्षक तथा लेखक था। उसने कई किताबों की रचना की। उस काल की बहुत-सी बातें उसी की रचनाओं से जानी जाती हैं।

चर्च केवल पूजा-स्थल या विद्यालय ही नहीं था, बल्कि क्लब या मनोरंजन गृह भी था। लोग वहाँ मन-बहलाव के लिए भी इकट्ठे हुआ करते थे। इन दिनों शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ। बड़े-बड़े गिरजाघर बनने लगे। मकानों में लकड़ी के बदले पत्थर का प्रयोग भी किया जाने लगा। ईसाई धर्म से वास्तुकला के विकास को भी सहायता मिली।

1.7 नार्मन युग (1066-1154 ई.)

नार्मन लोग एवं डेनवासी एक ही खानदान के थे। ये लोग स्कैंडिनेविया में रहते थे और बहुत से लोग अपने पुराने इलाकों (स्थानों) को छोड़कर दूसरे स्थानों पर बस गये थे। इन लोगों ने फ्रांस के उत्तरी भाग पर भी 911 ई. में कब्जा कर लिया। इनका नेता एक शक्तिशाली सरदार था जिसका नाम कोलो था। जिस भू-भाग में ये बसे थे, वह 'नार्मण्डी' कहलाता था और इनमें बसने वाले 'नार्मन' कहलाए। ये भी आर्य जाति की ही शाखा में थे। फ्रांस के राजा चार्ल्स को इनसे सुलह करनी पड़ी थी। नाम के लिए ये उसके अधीन थे, किन्तु व्यवहार में ये लोग बहुत शक्तिशाली थे। इनका नेता ड्यूक कहलाता था। 'रोलो' इनका पहला ड्यूक था। 1035 ई. में विलियम नार्मण्डी का ड्यूक 'बहाल' हुआ था और उसी ने 31 वर्ष के बाद इंग्लैण्ड पर विजय प्राप्त की थी।

1. विलियम प्रथम : विलियम प्रथम 1027 ई. में पैदा हुआ था। वह नार्मण्डी के ड्यूक राबर्ट का पुत्र था। जब वह 8 वर्ष का था, तभी उसके पिता की मृत्यु हो गई और उसी उम्र में वह ड्यूक (नेता) बन गया। कुछ जागीरदार उसके दुश्मन हो गये थे, किन्तु 20 वर्ष की उम्र में उसने उन सभी जागीरदारों को हराकर अपना वर्चस्व कायम कर लिया। 24 वर्ष की आयु में वह 1051 ई. में इंग्लैण्ड पहुँच गया। 1057 ई. में उसने नार्मण्डी के दक्खिनी भाग को जीतकर अपने राज्य का विस्तार किया। 1066 ई. में उसने इंग्लैण्ड पर हमला किया और सेनलेक के निकट हेस्टिंग्स के युद्ध में हैरोल्ड को मार डाला। इसके बाद उसने लंदन पर अधिकार जमा लिया। अब विटन ने उसे ही इंग्लैण्ड का राजा घोषित कर दिया।

लेकिन हेस्टिंग्स की विजय के फलस्वरूप विलियम समस्त इंग्लैण्ड का स्वामी नहीं बन सका। अभी उत्तरी इलाके के लोगों ने उसकी प्रभुता को नहीं माना था। सब जगह अपनी प्रभुता कायम करने में उसे 4-5 वर्ष और

नोट

लगे। उत्तर में उसके खिलाफ जहाँ-तहाँ विद्रोह होने लगा। विलियम का घराना लुटेरा और निर्दयी होने के साथ-साथ कठोर एवं विद्रोही भी था। उसने खेतीबारी को बर्बाद कर दिया और हजारों लोगों को तलवार से मौत के घाट उतार दिया। इस तरह उसने लोगों को भूख एवं भय से आतंकित कर दिया। यह घटना 1069 ई. में हुई और इसे 'उत्तर का नाश' कहते हैं। इसके 2 वर्ष बाद एलीद्वीप में हियरवार्ड के नेतृत्व में फिर एक बगावत हुई। हियरवार्ड ने बड़ी बहादुरी दिखलायी, किन्तु अन्त में विलियम ने उसे पछाड़ डाला। इसके बाद सम्पूर्ण इंग्लैण्ड में उसका वर्चस्व कायम हो गया।

नार्मनो का इंग्लैण्ड पर प्रभाव

इंग्लैण्ड के इतिहास में नार्मन विजय की कहानी बहुत ही मनोरंजक और शिक्षाप्रद है। यह एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण घटना है। नार्मन आंग्ल-सैक्सनों की अपेक्षा अधिक सभ्य थे क्योंकि वे फ्रांस के द्वारा रोमन सभ्यता के सम्पर्क में रह चुके थे। इन दोनों के मेल से एक नई सजीव सभ्यता एवं संस्कृति का उदय हुआ। यही सभ्यता वर्तमान अंग्रेजी सभ्यता की जड़ है। किन्तु शुरू में नार्मन विजय के बुरे और अच्छे दोनों तरह के प्रभाव पड़े। इंग्लैण्ड पर नार्मन विजय से अंग्रेजों को दुःख और सुख दोनों के अनुभव प्राप्त हुए। नार्मनों के साथ एक भयंकर आफत पहुंच गयी और बड़ी बर्बादी हुई, किन्तु, पीछे आफत टलने लगी और निर्माण के भी कार्य होने लगे। ऐसा कहा जा सकता है कि नार्मन विजय इंग्लैण्ड के लिए वरदान साबित हुआ। इंग्लैण्ड पर नार्मन विजय के पड़े प्रभाव और कुप्रभाव निम्नलिखित हैं–

1. **कुप्रभाव :** जिस समय नार्मनों ने इंग्लैण्ड पर हमला किया तो स्वाभाविक रूप से दोनों की जान-माल की बहुत हानि हुई। नार्मन जीत गए। अंग्रेज एक विदेशी जाति से हार गए। अंग्रेज गुलाम बन गए जो कि उनके लिए बहुत अपमानजनक बात थी। अंग्रेजों की जमीन-जायदाद छीनी जाने लगी। उनके समाज का उच्च वर्ग-अर्ल और थेन-मिटने लगे। कितने दास और अर्द्धदास बन गये। अब न तो अंग्रेजों की अपनी आजादी रही और न ही उनका इतिहास ही कायम रहा। सभी जगह नार्मन छा चुके थे। कुछ दिनों तक अत्याचार और पक्षपात का सिलसिला कायम रहा। यूरोप से संबंध होने के कारण इंग्लैण्ड को कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी जिससे उन्हें अत्यन्त हानि का सामना करना पड़ा, परन्तु समय ने धीरे-धीरे सब कुछ बदल दिया। धीरे-धीरे अत्याचार कम होने लगे। अंग्रेज एवं नार्मन एक-दूसरे के नजदीक आने लगे। आपस में खान-पान, शादी-विवाह, अन्य मेल-मिलाप होने लगे। प्राचीन भारत में हिन्दू जाति ने कई विदेशियों को अपने में मिला लिया, उसी प्रकार मध्यकाल में अंग्रेजी जाति ने भी डेनों एवं नार्मनों को अपने में मिला लिया। 13वीं सदी के आरंभ में (1204 ई.) तो नार्मण्डी ही नार्मन राजाओं के हाथ से निकल गया। अब इंग्लैण्ड ही नार्मन लोगों का अपना देश बन गया।

2. **सुप्रभाव :** नार्मनों का इंग्लैण्ड पर जितना बुरा प्रभाव पड़ा उतना ही अच्छा भी प्रभाव पड़ा। नार्मनों ने इंग्लैण्ड के राजनैतिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र, धार्मिक क्षेत्र एवं सांस्कृतिक क्षेत्र सभी पर अपना एक अच्छा प्रभाव छोड़ा जिससे इंग्लैण्ड की काया पलट हो गई।

(*i*) **राजनीतिक :** विलियम प्रथम ने 1071 ई. तक समस्त इंग्लैण्ड पर अपना कब्जा कर लिया था। पूरा राष्ट्र उसके अधीन हो चुका था। 1071 ई. के बाद कोई भी उसके वर्चस्व का सामना न कर सका। उसने अपने नेतृत्व में देश की राजनैतिक एकता को बढ़ावा दिया। दूसरा, आंग्ल-सैक्सन काल में केन्द्रीय शासन कमजोर था, स्थानीय शासन की प्रमुखता थी। तीसरा, नार्मनकाल में केन्द्रीय शासन बहुत ही मजबूत हो गया। सरदार एवं जागीरदार कमजोर होते चले गए और राजा शक्तिशाली बन गया। वह समस्त भूमि का स्वामी बन चुका था, परन्तु निरंकुश शासक को कोई पसंद नहीं करता था इसलिए राजा जॉन के समय (1225 ई.) में मैग्नाकार्टा के द्वारा निरंकुशता पर रोक लगाने का प्रयास शुरू किया। राजतंत्र को सीमित करने का यह ठोस प्रयत्न था। चौथा, आंग्ल-सैक्सन कालीन राज्य सभा (विटन) महान परिषद (मैगनम कनसिलियम या ग्रेट कौंसिल) कहलाने लगी। इसमें पार्लियामेंट की शुरुआत मानी गई। यह परिषद् विटन जितनी शक्तिशाली नहीं थी। पाँचवाँ, नार्मनकाल में समान्तवाद का विकास हुआ और इसके कारण इंग्लैण्ड में कई परिवर्तन हुए। छठा, नार्मनकाल में कानून एवं न्याय

व्यवस्था के क्षेत्र में कई हेर-फेर हुए। उस समय क्यूरियारेगिस नामक एक छोटी समिति कायम हुई थी। इससे आधुनिक कैबिनेट की व्यवस्था कायम हुई। पहले देश के कानून में बड़ी विभिन्नता थी किन्तु अब इनमें एकरूपता आई। सातवाँ, अब तक इंग्लैण्ड यूरोप से अलग था और उस पर यूरोपीय घटनाओं तथा आंदोलनों का प्रभाव नहीं पड़ता था, किन्तु नार्मन विजय के साथ इंग्लैण्ड का यूरोप के साथ घना संबंध कायम हो गया। अब इंग्लैण्ड यूरोपीय घटनाओं से प्रभावित होने लगा और नार्मन शासक तथा सरदार युद्धों तथा आंदोलन में भी भाग लेने लगे। आठवाँ, इस काल में राजा और जनता के बीच निकट सम्पर्क कायम होने लगा।

नोट

(*ii*) **आर्थिक :** नार्मन राज्यकाल में प्राय: शान्ति बनी रही। यूरोप के साथ संबंध भी घना हो गया। इसलिए इंग्लैण्ड और यूरोप में व्यापार बढ़ने लगा। बहुत से यहूदी इंग्लैण्ड में आ गये। वे व्यापार और साहूकारी में बहुत आगे बढ़े-चढ़े थे। व्यापार के साथ शहरों का भी विकास हुआ। व्यापार बढ़ने से राष्ट्रीय सम्पत्ति भी बढ़ने लगी। नार्मनों ने सामन्तवाद का भी विकास किया जिसके दो पहलू हैं–आर्थिक और राजनीतिक।

(*iii*) **सामाजिक :** अंग्रेज सरदारों का शासन खत्म हो चुका था अब नार्मन सरदारों की ही चला करती थी। बहुत से लोग दास और भूमिदास की स्थिति में आ गये। व्यापार और शहरों के विकास से मध्यवर्ग का विकास होने लगा। इस वर्ग के लोगों ने संसद की उत्पत्ति और विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। नार्मनों के द्वारा अंग्रेजी समाज पर फ्रांसीसी सभ्यता का गहरा असर पड़ा। इंग्लैण्ड में फ्रांस की झलक नजर आने लगी।

(*iv*) **धार्मिक :** फ्रांस में चर्च बहुत शक्तिशाली था। पादरी बड़े ही विद्वान एवं चरित्रवान होते थे। अब इंग्लैण्ड के चर्च में भी बहुत-से नार्मन और रोमन पादरी रख लिए गए। उन्होंने अंग्रेजी चर्च की बुराइयों को दूर कर उसे शक्तिशाली बनाया। दूसरे, चर्च तथा मठ अब शिक्षा के केन्द्र बनने लगे थे। इसके साथ ही अंग्रेजी चर्च का रोम के साथ घना संबंध कायम हो गया। इंग्लैण्ड में पोप की प्रधानता कायम होने लगी और वह रोमन चर्च से बहुत अधिक प्रभावित होने लगा तथा उन आदर्शों को मानने लगा। चर्च की देख-रेख में धार्मिक अदालतें कायम कर दी गई। इन अदालतों में धर्म, चरित्र एवं अनुशासन संबंधी मामले खासतौर पर देखे जाते थे। चर्च और राज्य को दो अलग-अलग संस्थाओं के रूप में जाना जाने लगा। अब पादरियों को राजनैतिक कामों में हिस्सा लेने का मौका नहीं मिलता था। अब राज्य और चर्च दोनों एक-दूसरे को शंका की नजर से देखने लगे और दोनों में समय-समय पर झगड़े होने लगे।

(*v*) **सांस्कृतिक :** इंग्लैण्ड पर नार्मन विजय का सांस्कृतिक प्रभाव भी पड़ा। फ्रांस में रोमन सभ्यता एवं संस्कृति का बहुत प्रभाव था। नार्मन लोग उसी फ्रांसीसी सभ्यता एवं संस्कृति के चिह्नों को ले गये। इस तरह उनके जरिये इंग्लैण्ड में फ्रांसीसी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार हुआ जो प्रधानत: रोमन सभ्यता एवं संस्कृति थी। नार्मन के आने से इंग्लैण्ड में शिक्षा एवं साहित्य में बहुत तरक्की हुई। नार्मन पादरी बहुत बड़े विद्वान होते थे। चर्च तथा मठ, विद्यालय एवं पुस्तकालय बन गये। वे हाथों से पुस्तकें लिखा करते थे। नार्मन लोग लैटिन तथा फ्रेंच भाषा के ही विद्वान होते थे। अत: इन भाषाओं की प्रधानता हो गई। इनके अनेक शब्द अंग्रेजी भाषा में स्थान पा गये। इस तरह अंग्रेजी भाषा का भंडार समृद्धिशाली बनने लगा। शिक्षा, भाषा एवं साहित्य में लोगों की इतनी दिलचस्पी बढ़ी कि 12-13वीं शताब्दी में विश्वविद्यालयों की स्थापना होने लगी। इस काल में कला का भी विकास हुआ। वास्तु कला (भवन-निर्माण) की खूब उन्नति हुई। अनेक मकान, चर्च, मठ और किले बनवाये गये। नार्मन काल की बनी इमारतें बहुत बड़ी होती गई। अब इमारतें बनाने में लकड़ी के बदले पत्थर तथा ईंटों का अधिक प्रयोग किया जाने लगा।

1.8 नार्मन वंश का संस्थापक

नोट

1066 ई. में विलियम हेस्टिंग्स के मैदान में अंग्रेजों को हराकर गद्दी का अधिकारी बना। उसके बाद 5 वर्षों तक वह उत्तरी-पश्चिमी भागों को जीतने में व्यस्त रहा। उसने उत्तर को रौंद डाला और अपनी प्रभुता कायम की। विलियम को अपनी अंग्रेजी प्रजा से डर था कि वे कहीं उसके विरुद्ध विद्रोह न कर दें। इसलिए उसने प्रारंभ में उनके साथ कठोर व्यवहार किया। उसने नार्मनों के साथ भी पक्षपात किया। वह अंग्रेजों को आगे नहीं बढ़ने देता था। इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने बड़े-बड़े अंग्रेजों एवं जमींदारों की जमीन जायदादों को भी जब्त कर लिया था। अब अंग्रेज अर्ल एवं थेन नहीं बल्कि सर्फ (दास) और विलेन (भूमिदास) बन गये। विलियम के एक और कार्य ने अंग्रेजी जनता को तकलीफ में डाल दिया। राजा के शिकार के लिए बहुत-सी भूमि रोक ली गई। शाही जंगलों का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। लगभग 9000 एकड़ भूमि शाही जंगल के नाम पर सुरक्षित थी। केवल 18000 एकड़ भूमि में जंगल बनाया गया था। उस जंगल में न तो कोई दूसरा शिकार कर सकता था और न ही वहाँ से अपनी जरूरत के लिए लकड़ियाँ ही काट सकता था। आज्ञा का उल्लंघन करने वालों को सजा दी जाती थी। विलियम ने यहूदियों को इंग्लैण्ड में आने और बसने की अनुमति दी। यहूदी व्यापार और साहूकारिता में बहुत बढ़े-चढ़े थे। अंग्रेज इन क्षेत्रों में उनका मुकाबला नहीं कर सकते थे।

विलियम को अपने सगे-संबंधियों एवं अनुयायियों से भी भय था। इसलिए उसने साझीदार बनाने के कई उपाय किए। उन्हें बड़े-बड़े पद दिए गये और अब वे ही अर्ल बनाये जाने लगे। उन्हें कई अन्य सुविधाएँ भी दी गई। अंग्रेजों से जो जमीनें और जागीरें जब्त कर ली गई, उन्हें नार्मन सरदारों (बैरन) सैनिकों और सिपाहियों में बांट दिया गया। नार्मनों को जमीन और जागीर के लिए कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ी, बल्कि ये तो इनाम के रूप में दी गई। प्रमुख स्थानों में किलों का निर्माण कराया गया और इन किलों में नार्मन सरदार तथा सैनिक रखे गये। लन्दन के प्रसिद्ध टावर का निर्माण इसी समय शुरू हुआ था। इसलिए कहा जा सकता है कि हर जगह नार्मनों का ही बोलबाला था।

1. नार्मन विद्रोह : विलियम नार्मनों की ओर से पूरी तरह से निश्चित नहीं था। 1075 ई. में इंग्लैण्ड में पहले-पहल नार्मन सरदारों ने विलियम के खिलाफ विद्रोह किया। उनमें तीन नाम उल्लेखनीय हैं--नारफोक के अर्ल राल्फ, हरफोर्ड के अर्ल रोजर और हटिंगडन के अर्ल वालथ्योफ। विलियम ने इन विद्रोहियों का जमकर सामना किया। वालथ्योफ की हत्या हो गई और रोजर को आजन्म कारावास में रहना पड़ा। राल्फ डर कर भाग गया। केल्ट को अर्ल ओडो, विलियम का सौतेला भाई था और बेयो का बिशप भी था। वह अपनी एक सेना रखना चाहता था। इसलिए विलियम को उस पर संदेह हुआ और उसे भी पकड़कर कैदखाने में डाल दिया। इस तरह विलियम विद्रोहियों को कुचल डाला। विलियम का पुत्र राबर्ट इन विद्रोहों से बहुत प्रभावित हुआ और उसने 1079 ई. में फ्रांस पर हमला कर दिया। अंत में पिता और पुत्र में भी युद्ध हुआ परन्तु विजयी विलियम ही हुआ।

2. बैरनों पर प्रतिबंध : नार्मन सरदारों पर कब्जा चाहता था जिसके लिए उसने अनेक कार्य किए--

(क) सबसे पहले उसने अंग्रेजों के प्रति अपनी नीति को बदला। वह अंग्रेजों के साथ अच्छा व्यवहार करने लगा। साथ ही उन्हें सुविधाएँ भी देने लगा।

(ख) वह सरदारों को बहुत कम अधिकार देता था। संत एडवर्ड के समय में नार्मन सरदार या अर्ल जितने शक्तिशाली थे, उतने विलियम के समय में नहीं थे।

(ग) विलियम ने सरदारों (बैरनों) को जमीन तो दी परन्तु जमीन दूर-दूर के इलाकों में थी जिससे वह एक-दूसरे से सम्पर्क नहीं बना पाते थे। इस बात का ध्यान रखा जाता था कि बैरनों को बहुत थोड़ी जमीन दी जाये। कैन्यूट ने देश को बड़ी-बड़ी नवाबियों (अर्लडम) में बांट दिया था, परन्तु विलियम ने जागीरों के टुकड़े कर दिए। विलियम ने केवल केल्ट, डरहम और चेस्टर की रियासतों को नुकसान नहीं पहुँचाया क्योंकि इससे उन्हें कोई खतरा नहीं था। केन्ट का अर्ल उसका सौतेला भाई था साथ ही वह पादरी भी था। डरहम का अर्ल भी पादरी था। चेस्टर वेल्स की सीमा पर स्थित था। अतः यहाँ का अर्ल सीमा की रक्षा के लिए ही चिन्तित रहता था।

(घ) इतना करने के बाद भी विलियम सरदारों के प्रति सशंकित ही रहता था। इसलिए उसने रात 9 बजे के बाद बत्तियाँ बुझाने का नियम बनाया। इसके लिए रोज रात को चर्च में घंटी बजाई जाती थी जिसके बाद सभी को बत्तियाँ बुझानी पड़ती थी। इस घंटी को कर्फ्यू घंटी कहा जाता था।

नोट

(ङ) राजा ने राज परिषद् (क्यूरिआरेजिस) को सामन्ती संस्था नहीं बनाया। उसने इसमें सभी को स्थान दिया चाहे किसी को उससे जमीन मिली हो या नहीं।

(च) उसने अपनी न्याय व्यवस्था का विस्तार किया। सामन्ती नियम के अनुसार प्रत्येक आदमी अपने मालिक की अदालत में जाता था, किन्तु अब सभी लोग राजा से न्याय (इंसाफ) की मांग करने लगे। इस कारण देश में अदालत बनाई गई। राजा की अदालत में कोई भी अपने मालिक के खिलाफ भी मुकदमा कर सकते थे। अब बैरनों की अदालतों के अधिकार क्षेत्र बहुत ही संकुचित हो गये। इन अदालतों में केवल दीवानी मामले ही जाया करते थे। इनके फैसले के विरुद्ध अपील राजकीय अदालतों में हो सकती थी। न्याय में संदेह होने पर मामला अन्य अदालतों में भेजा जा सकता था।

(छ) सामंती व्यवस्था में राजा सेना के लिए अपने जागीरदारों पर निर्भर रहता था किन्तु नार्मन इंग्लैण्ड में ऐसी बात नहीं थी। वहाँ सामन्ती सेना के अलावा एक राष्ट्र सेना या फिर्ड भी था। इंग्लैण्ड के सभी लोग राजा की प्रजा थे और यह फिर्ड भी राजा की सेवा के लिए तैयार रहती थी। 1066 ई. में नार्मण्डी पर विलियम ने विजय प्राप्त की थी।

(ज) इंग्लैण्ड में सामंत लोग आपस में लड़ाई-भिड़ाई नहीं कर सकते थे और न अन्य देश से संबंध कायम कर सकते थे।

(झ) राजा के कर लगाने की शक्ति पर भी बंधन नहीं था और वह अपनी सामंत प्रजा से कर ले सकता था।

(ण) विलियम ने 1085 ई. में सरकारी अफसरों द्वारा जांच करवा कर लोगों के जमीन-जायदाद का ब्यौरा लिखवाया। प्रत्येक आदमी के पास कितनी जमीन थी, किन शर्तों पर थी, कितना कर लगता था, कितने माल-मवेशी थे, कितने अन्य सामान थे आदि-आदि सभी बातों का उल्लेख किया गया था। इस तरह की नाप-जोख को डूम्सडे सर्वे कहते हैं।

(ट) सामंत प्रथा का एक बहुत बड़ा दोष यह था कि जो सामंत जिससे जमीन लेता था, वह उसी के प्रति आज्ञाकारी होता था। जिसे राजा से जमीन नहीं मिलती थी। वह अपने मालिक की ओर से राजा के खिलाफ विद्रोह शुरू कर देता था। ऐसा होने से केन्द्रीय सत्ता कमजोर होने लगी। इस दोष को दूर करने के लिए विलियम ने सेल्सिबरी में सभी सामंतों की एक सभा बुलाई। उसमें सभी सामंतों ने राजा के प्रति वफादार रहने की शपथ ली, चाहे उसे राजा से सीधे जमीन मिली हो या नहीं। इससे राजा मजबूत हो गया और सामंतों की शक्ति घटती चली गई। यह कार्यकाल 1086 ई. में पूरा हो गया।

विलियम की नीतियाँ

1. विलियम द्वारा किए गए सुधार : विलियम ने सर्वप्रथम चर्च की बुराइयों को समाप्त करना चाहा। इसके लिए उसने कैंटरबरी के चर्च से अंग्रेज आर्कबिशप को हटा कर उसकी जगह फ्रांसीसी लैफैंक को नियुक्त किया। लैफैंक बहुत बड़ा विद्वान था। वह बहुत चरित्रवान माना जाता था। वह 20 वर्षों (1070-89) तक अपने पद पर स्थापित रहा। उसने चर्च के हित में अनेक सुधार किए।

नार्मन युग में अनेक मठ, चर्च तथा विद्यालय बनवाए गये। लैटिन की पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था हुई। कई धार्मिक सम्मेलन तथा धार्मिक वाद-विवाद आयोजित किए जाने लगे। इन सम्मेलनों में धर्म-संबंधी विधि-विधानों पर चर्चा की जाती थी। चर्च से अशिक्षित एवं भ्रष्ट पादरियों को निकाल दिया गया। उनके स्थान नार्मन पादरियों को नियुक्त किया जाने लगा। चर्च में अनुशासन एवं अविवाहित जीवन पर जोर दिया जाने लगा। उनका मानना था कि सादा जीवन उच्च विचार से आदर्श जीवन को पाया जा सकता है।

नोट

विलियम अनेक सुधार करता था, बदलाव भी लाता था परन्तु सब कुछ अपने देख-रेख में करता था ताकि उसका शासन बना रहे। वह अनेक नियम लागू करता था। उसने राज्य और चर्च की अदालतों को अलग-अलग कर दिया। चर्च की अदालतों में केवल धार्मिक मामलों का ही न्याय होता था। राजा की अनुमति के बिना चर्च किसी भी पादरी एवं सदस्य को न तो निकाल सकता था और न ही रख सकता था और न ही कोई नियम बना सकता था। राजा के आज्ञा के बिना कोई भी पोप से या पोप किसी से पत्र-व्यवहार नहीं कर सकता था और न यूरोप के किसी दूसरे देश जा सकता था। पोप किसी को दूत के रूप में इंग्लैण्ड भी नहीं भेज सकता था। उसने बिशपों की बहाली में भी अपना प्रभाव दिखाया। राजा द्वारा ही बिशप (पादरी) को चुना जाता था। राजा उसे एक दण्ड और एक अंगूठी देता था। फिर बिशप राजा के प्रति भक्ति की शपथ लेता था। पादरियों पर भी सामंत बंधन लागू थे। विलियम ने इसी तरह चर्च पर अपना कब्जा कायम रखा।

2. प्रजा के साथ संबंध : विलियम बड़ा ही योग्य एवं दूरदर्शी शासक था। वह इंग्लैण्ड को भली-भाँति समझता था। अंग्रेजों एवं नार्मनों दोनों को उनकी मदद की आवश्यकता थी। शुरू में वह नार्मन के प्रति बहुत कठोर था परन्तु बाद में उसने दया दर्शानी प्रारंभ की थी। वह अंग्रेजों के साथ भी न्यायपूर्ण व्यवहार करने लगा था। इससे विलियम और अंग्रेजों के बीच तथा विलियम और नार्मनों के बीच काफी अच्छा तालमेल स्थापित हो गया था। उसने पूरी तरह प्रजा को अपने कब्जे में कर लिया था। विलियम ने प्रजा पर टैक्स भी लगाए। उसके जंगल शिकार संबंधी कानून बहुत सख्त थे। फिर भी उसने देश में शान्ति व्यवस्था कायम रखी। उसने एक सबल राष्ट्रीय शासन व्यवस्था स्थापित की। उसके शासनकाल में ही व्यापार में अधिक उन्नति हुई, लोग सुखी और सम्पन्न बने।

3. विलियम का अंत : अंतिम समय में विलियम फ्रांस के साथ युद्ध में फंस गया। इस लड़ाई में वह घोड़े पर से गिर गया जिससे उसे घातक चोट लगी इसी कारण 1087 ई. को फ्रांस (रुएन) में उसकी मृत्यु हो गई। वह 21 वर्ष तक 1066-1087 तक इंग्लैण्ड पर शासन कर सका।

4. निष्कर्ष : यदि गौर से देखा जाए तो आप देखेंगे कि विलियम का शासनकाल इंग्लैण्ड के लिए वरदान साबित हुआ। उसने अपनी नीतियों से केन्द्रीय सरकार को सुदृढ़ बना दिया। उसने राजगद्दी पर वंशानुगत अधिकार कायम कर लिया था। उसके अनेक उपायों के कारण सरदारों की कमर टूट गई। उसने पादरियों एवं बिशपों की शक्तियों को भी कम कर दिया था। उसके कारण राजा सम्पूर्ण देश की भूमि का मालिक बन गया था। राजा देश का विधायक एवं सर्वोच्च जज था। उसे कोई भी नियम लागू करने का अधिकार प्राप्त था।

विलियम के समय में आंग्ल-सैक्सन युग के विटनाजिमूट के स्थान पर महान परिषद् (ग्रेट कौंसिल) कायम हो गई। इसमें बड़े-बड़े भू-पति तथा पादरी राजा के साथ बैठते थे, किन्तु राजा जिसे चाहता था, उसी को ही स्थान मिलता था। वह केवल राजा को सलाह दे सकता था। उस सलाह को मानना न मानना राजा के हाथ में था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विलियम के राज्यकाल में ही इंग्लैण्ड के राजतंत्र की नींव मजबूत हो सकी।

1.9 यूरोपीय नार्मन सामन्तवाद

पवित्र रोमन साम्राज्य तथा चर्च की तरह ही सामन्तवाद भी अराजकता के युग में शान्ति-स्थापित करने का प्रमुख एवं उपयोगी साधन माना जाता था। इसे क्षत्रिय राजतंत्र और जागीरदारी प्रथा भी कहा जाता था। अंग्रेजी भाषा में "फ्लूडेलिज्म" कहा जाता है। यह प्रथा बहुत प्रचलित थी। उत्तरकालीन मध्ययुग में तो इस प्रथा का पश्चिमी यूरोप में बोलबाला था। यह प्रथा पश्चिमी यूरोप के सभी देशों में बहुत प्रचलित थी। कुछ देशों में इस प्रथा से संबंधित शर्तों में कहीं कुछ विभिन्नता थी परन्तु इस प्रथा के सिद्धांत सभी देशों में एक जैसे ही थे। यह राजा, सम्राट या किसी विशेष व्यक्ति के प्रयास का फल नहीं था अपितु यह प्रथा स्वाभाविक रूप से विषम परिस्थितियों की देन थी। एक तरह से कहा जाए तो यह उस समय की उचित मांग का समुचित उत्तर था। यह उस समय की कोई नवीन प्रथा नहीं थी। यह पूर्णत: एक मौलिक नियम था। इस प्रथा का मूल अतीत से ही जुड़ा हुआ था साथ ही इसका आधार भी बहुत पुराना था। यह प्रथा रोमन एवं ट्यूटन प्रथाओं का मिश्रण था।

नोट

रोमन साम्राज्य में प्रांतों में खेती करने वाले किसानों को 'कलेनी' कहा जाता था। पुराने जमाने में भी उनकी दशा ठीक नहीं थी। यहाँ तक की अराजकता के समय में उनके प्राण एवं धन दोनों पर ही संकट मंडरा रहा था। ऐसे में उनमें असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो जाती थी जिससे वे अपने हालातों से मजबूर होकर किसी न किसी स्थानीय भूमिपति के अधीन हो जाया करते थे। ऐसे में ही ट्यूटनों में एक प्रथा का उदय हुआ जिसके द्वारा लोग सुरक्षा पाने के लिए स्वयं को सरदार के अधीन सौंप दिया करते थे। इसी तरह यह क्रम चलता रहा, सरदार उनकी रक्षा करता और वे सरदारों की सेवा किया करते।

अत: इस प्रकार 9वीं और 10वीं सदी में यूरोप में संकटपूर्ण अव्यवस्था का साम्राज्य फैला था। असभ्य एवं बर्बर जातियों के आक्रमण बढ़ते जा रहे थे। हर तरफ अराजकता साफ दिखाई देने लगी थी। हर तरफ छीना-झपटी, लूट-पाट, मार-काट, शंका, भय का वातावरण था। एक ओर बाहरी आक्रमण करने वालों की वृद्धि हो रही थी और दूसरी तरफ पारम्परिक फूट भी बढ़ती जा रही थी। लोग जान-माल, मान-मर्यादा हर प्रकार के संकट का सामना कर रहे थे। कोई बलशाली था तो कोई शक्तिशाली। किसी के पास धन का बल था किसी के पास बुद्धि का बल, परन्तु फिर वे अपनी रक्षा करने में असमर्थ थे। अकेले अपनी रक्षा करना मुश्किल ही नहीं, अपितु नामुमकिन था। सभी को अपनी सुरक्षा के लिए किसी बलवान सहायक की जरूरत थी। ऐसी ही विषम एवं दूषित अराजकता से भरी परिस्थिति में सामन्तवाद का उदय हुआ।

1. सामन्तवाद का परिचय : सामंत प्रथा एक मिश्रित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संगठन था। इसकी नींव, भूमि तथा सेवा के आधार पर खड़ी की गई। धनी एवं गरीब, उच्च एवं नीच सभी को सुरक्षा एवं सहयोग की आवश्यकता थी। अत: इसकी व्यवस्था चारों ओर से की जा रही थी। धनी लोग अपनी रक्षा के लिए असामियों को जमीन देते थे। इसके बदले में असामी धनी व्यक्तियों की हिफाजत करने की प्रतिज्ञा लेते थे। इस तरह जो जमीन ली जाती थी उसे 'फीफ' कहा जाता था। 'फीफ' शब्द से ही 'फ्यूडेलिज्म' का निर्माण हुआ। फीफ पाने वाला व्यक्ति उन्हीं शर्तों पर अपनी भूमि का कुछ भाग दूसरों को देकर असामी से स्वामी बन जाता था। लगातार यह क्रम चलता रहा। इसी तरह जमींदार से असामी या स्वामी तथा सेवक का तांता बंध गया। कभी-कभी साधारण भूमिपति अपनी जमीन किसी बलवान जमींदार को सौंप देते और पुन: फीफ के तौर पर उसे वापस ले लेते। इन प्रथाओं को क्रमश: वेनिफिस एवं कमेंडेशन कहते हैं।

सामन्त प्रथा का संगठन एक सीढ़ी के समान था। सबसे ऊपर राजा का दर्जा हुआ करता था। स्वाभाविक रूप से (सिद्धांतत:) वही सर्वोच्च भूमिपति माना जाता था। राजा स्वामी एवं जमींदार माना जाता था। उसी तरह सबसे नीचे का दर्जा दासों को दिया गया था। इन्हें केवल सेवक अथवा असामी माना जाता था। बाकी बचे बीच के लोग अथवा मध्यम वर्गीय लोग जिन्हें स्वामी और दास दोनों माना जाता था। वे अपने से ऊपर के व्यक्तियों के दास थे और अपने से नीचे व्यक्तियों के स्वामी। राजा से प्रत्यक्ष रूप से जमीन लेने वाले व्यक्तियों को उच्च असामी (टीनेंट इन चीफ) कहा जाता था। उच्च असामियों से जमीन लेने वाले व्यक्तियों को उप-असामी (सब-टिनेंट) कहा जाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि भूमि स्वामियों के हाथ में केवल नाममात्र के लिए ही रह गयी थी। सारी की सारी भूमि धीरे-धीरे असामियों एवं उप-असामियों के हाथों में चली गई। जमींदारों के हाथों में केवल उनसे सेवा कराने का ही काम रह गया था। उन्हें सेवा कराने का ही अधिकार बचा था।

जो फीफ दी जाती थी वह असामी के जीवन भर के लिए ही नहीं दी जाती थी अपितु इसके वंशानुक्रम में चलाई जाती थी। अर्थात् फीफ पाने वाला व्यक्ति उस जमीन का सर्वदा के लिए मालिक बन जाता था और उसकी मृत्यु के बाद यह जमीन उसके उत्तराधिकारी को पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिलती थी। उसके वंशज शर्तों का पालन करते, तब तक कि जब तक फीफ को उनके हाथ से कोई ले न ले। इसी तरह सामंत प्रथा का प्रचलन क्रमश: वंशानुगत या रूढ़िगत बन गई। बाद में बढ़ती चली गई।

2. सामंत प्रथा की स्थिति : सबसे पहले सामन्त को अपने स्वामी के प्रति अधीनता स्वीकार करनी पड़ती थी। उन्हें विशेष प्रकार से प्रतिज्ञा लेनी पड़ती थी। इस प्रक्रिया में सेवक मालिक के सामने घुटने के बल बैठकर अपना हाथ उनके हाथ में रखकर प्रतिज्ञा लेते थे। हाथों में हाथ डालकर प्रतिज्ञा लेते समय में वे कहते थे—"इस

नोट

भूमि के लिए मैं आज से आपका सेवक होता हूँ और आपके प्रति सच्चा तथा कृतज्ञ रहूँगा।" उसके बाद स्वामी उसे जमीन से उठा कर खड़ा करता था। सामंत को अपने स्वामी की विविध प्रकार से सेवा करनी पड़ती थी। सैनिक सेवा प्रधान थी। युद्धकाल में यह सेवा बहुत अनिवार्य हो चुकी थी। प्रारंभ में इस सेवा के लिये अवधि निश्चित नहीं थी, परन्तु बाद में यह निश्चय हो गया कि साल में 40 दिन तक सामंत को अपने खर्च से सैनिक सेवा करनी होगी। सैनिक का अर्थ भी व्यापक था। सामन्त की किसी भी वस्तु को स्वामी के उपयोग में लाया जा सकता था। 40 दिन के बाद भी यदि सामंत की सेवा की आवश्यकता पड़ती थी तो उसका खर्च स्वामी को देना पड़ता था।

सामंत अपने स्वामी की सेवा राजकीय तथा न्याय-संबंधी कार्यों में भी करता था। उच्च-सामंत मंत्री, सलाहकार या जज के रूप में सहायता कर सकता था। उप-सामंत अपने मालिक का व्यवस्थापक (मैनेजर) लेखक पादरी आदि बन सकता था। ऐसी सेवा को 'सरजींटी' कहते थे। दास (सर्फ) और अर्द्ध-दास (विलेन) शारीरिक श्रम द्वारा अपने मालिक की सेवा कर सकते थे। ऐसी सेवा को 'पेटी सरजींटी' कहते थे। जो सामंत पादरी थे उन्हें भी अपने मालिक की धार्मिक सेवा करनी पड़ती थी। ऐसी सेवा को 'फैंकल मोइन' कहते थे। सामंत को अपने मालिक के दरबार में हाजिर होना पड़ता था और उसे अपने मामले मालिक की ही अदालत में ले जाना पड़ता था।

कुछ विशेष अवसरों पर आर्थिक सहायता भी देनी पड़ती थी जैसे–मालिक के बंदी होने पर, उसके बड़े पुत्र के नाईट बनने पर और उसकी बड़ी पुत्री का विवाह होने पर। स्वामी को अन्य विशेषाधिकार भी प्राप्त थे। पिता के मरने के बाद जब उसका लड़का भूमि का स्वामी बनता था तो उसे विशेष कर (Tax) देना पड़ता था। यदि कोई असामी निःसंतान मर जाता था तो उसकी भूमि मालिक के अधीन हो जाती थी। स्वामी के मरने पर भी सेवक को अपने खर्च को बांटना पड़ता था। कोई अन्य सामंत से अपने स्वामी की स्वीकृति के बिना जमीन नहीं खरीद सकता था और स्वीकृति-प्राप्ति के लिए कुछ कर (Tax) लगता था, वरना उनसे जागीर छीन ली जाती थी। यदि सामन्त नाबालिग संतान छोड़कर मर जाता था तो स्वामी संरक्षक बन जाता था। इस काल में स्वामी जागीर की आय का उपभोग कर सकता था। यदि पुत्र न हो तो पुत्री जागीर की अधिकारिणी बनती थी परन्तु उसे अपने पति को सैनिक सेवा के लिए भेजना पड़ता था। साथ ही उसे अपना पति स्वामी के ही इच्छानुसार चुनना पड़ता था। यदि कोई लड़की अपना पति अपनी इच्छानुसार चुनना चाहे तो उसे स्वामी को धन देना पड़ता था। धन पाने के बाद ही स्वामी लड़की की इच्छा को स्वीकृति देता था। शान्ति काल में स्वामी के खेत में अन्न उपजाने में भी सामन्त को मदद करनी पड़ती थी।

अतः यह कहा जा सकता है कि स्वामी जमीन दे देता था परन्तु उसके अधिकारों की सूची लम्बी थी, लेकिन सामंत के भी कुछ अधिकार थे। उसे भूमि पाने का अधिकार तो था ही, न्याय एवं सुरक्षा पाने का भी अधिकार था। सामंत के मरने पर उसके परिवार की देखभाल करना स्वामी का कर्त्तव्य था। यदि कभी सेवक अपने कर्त्तव्य से चूक जाता था तो स्वामी उसके प्रति विद्रोह करने का भी अधिकार रखता था। स्वामी और सामंत का संबंध एकरारनामे पर आधारित था। अधिकार और कर्त्तव्य का भी संबंध था। स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है सामंत जमीन के बदले में कठिनाई से भरा जीवन ले लेते थे।

3. न्यायिक प्रणाली : मालिक की जमींदारी को मेनर कहा जाता था जिसमें उसके अपने किले, सैनिक तथा न्यायालय होते थे। इसके अन्तर्गत मालिक न्यायधीश का भी काम करता था इन न्यायालयों में असामियों के मामलों को देखा जाता था। सामाजिक या राजकीय मामलों में आर्डियल तथा युद्ध के द्वारा अपराध की जांच की जाती थी। आर्डियल दो प्रकार के होते थे– अग्नि तथा गर्म जल संबंधी। आग और गर्म जल को हाथ पर रखा जाता था। कोई घाव नहीं होने पर या कुछ निश्चित काल में अच्छा (घाव) हो जाने पर अपराधी को निर्दोष समझा जाता था। अपराध की जांच करने और सजा देने की यह प्राचीन परम्परा थी। दो अपराधियों में द्वन्द्व-युद्ध भी कराया जाता था और विजेता को निर्दोष तथा विजित को अपराधी माना जाता था। इसे ईश्वर-न्याय समझा जाता था। न्याय का यह तरीका बहुत प्रचलित हुआ था।

4. नाइट और किसान : मध्य युग में नाइट की पदवी गौरव एवं प्रतिष्ठा का प्रतीक समझी जाती थी। इसलिए राजा तथा धनी-मानी लोग भी अपने पुत्रों को नाइट की पदवी देते थे। इस पदवी से विभूषित होने के लिए उत्साह एवं वीरता का प्रदर्शन आवश्यक था। नाइट युद्ध-कला में बड़े ही निपुण होते थे। ये विशेष प्रकार के सैनिक

थे जो अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर घोड़े पर सवारी करते थे। नाइट के साथ एक सेवक हमेशा रहता था। शूरवीर होना उनका प्रधान गुण था।

कृषकों का प्रमुख कार्य होता था जमीन जोतना और फसल उगाना। कृषक दो भागों में विभक्त थे–(*i*) स्वतंत्र कृषक (फ्री होल्डर) और (*ii*) परतंत्र कृषक (सर्फ तथा गुलाम)। प्रथम श्रेणी के कृषकों की दशा साधारणत: अच्छी थी। उन्हें जागीरदार को केवल रुपया देना पड़ता था और वे अपनी इच्छा से उत्तरदायित्व से मुक्त हो सकते थे। उन्हें राजा के न्यायालय में अपील करने का भी अधिकार प्राप्त था, किन्तु परतंत्र कृषकों को ये सभी सुविधाएँ नहीं प्राप्त थीं लेकिन उनमें भी सर्फो की दशा अच्छी थी। सर्फो को नकद और उपज का कुछ भाग मालिक को देना पड़ता था, किन्तु स्वामी स्वेच्छानुसार दासों की तरह उनकी खरीद-बिक्री नहीं कर सकता था। दासों का क्रय-विक्रय तो होता था और उनसे कड़ा काम तथा अनेक प्रकार की बेगारी ली जाती थी जैसे– बाग-बगीचों को लगाना, गड्ढ़ों को खोदना आदि।

नोट

आंग्ल-नार्मन सामन्तवाद की अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ

सामंतवाद दो प्रकार के होते थे– आर्थिक, राजनैतिक। यूरोपीय नार्मन सामन्तवाद को ही राजनैतिक सामन्तवाद कहा जाता था। यह प्रथा पश्चिमी यूरोप की सबसे प्रचलित प्रथा थी। सामंत प्रथा में जितनी अच्छाइयाँ थी उतनी ही बुराइयाँ भी थी। जिसका विवरण इस प्रकार है–

1. अच्छाइयाँ :

(क) सामंत प्रथा ने केन्द्रीय शासन की कमजोरी के युग में शान्ति एवं व्यवस्था कायम रखी।

(ख) इस प्रथा ने फीक के द्वारा ही सही परन्तु लोगों को सुरक्षा प्रदान की।

(ग) इस प्रथा के द्वारा राजा पर प्रतिबंध लगा होता था जिस कारण वह अपनी प्रजा पर अत्याचार नहीं कर पाता था।

(घ) यदि राजा अत्याचार करने का प्रयास करते तो सरदार राजाओं का विरोध करते थे।

(ङ) इस प्रथा का समाज पर नैतिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव भी पड़ा था।

2. बुराइयाँ :

(क) जब राजा कमजोर होता था तब सामंत प्रजा के साथ बहुत दुर्व्यवहार करते थे। साथ ही प्रजा की शिकायत सुनने वाला भी कोई नहीं होता था और शिकायतों को दूर करने वाला भी कोई नहीं होता था। आम लोगों की राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं होती थी और राष्ट्रीय स्तर पर कोई काम नहीं हो पाता था।

(ख) वाणिज्य : व्यापार और उद्योगों-धंधों को प्रोत्साहन नहीं मिलता था। महाजनी पेशा और मुद्रा का पूरा प्रचार नहीं था।

(ग) केन्द्रीय शासन कमजोर होता था। एक देश में एक राजा के बदले कई राजा होते थे। बड़े-बड़े सामंत सरदार अपने को राजा के बराबर या अधिक मानते थे। कमजोर राजा होने पर कई बार सरदार राजा को ही दबा दिया करते थे।

(घ) कला एवं विद्या के विकास के लिए भी क्षेत्र संकुचित था।

(ङ) सामन्त प्रथा में युद्ध एवं हिंसा के लिए अधिक गुंजाइश थी।

(च) राजा और जनता के बीच सीधा संबंध नहीं होता था। इसलिए सामंतों द्वारा बगावत करने पर जनता राजा को किसी प्रकार की शिकायत नहीं कर पाती थी। राजा अपनी रक्षा के लिए स्वयं सामंती सेना पर निर्भर करता था। अन्य सामंतों द्वारा बगावत करने पर उसे उच्च सामंतों से मदद मिलती थी, परन्तु जब उसके अपने उच्च सामंत बागी हो जाते थे, राजा स्वयं लाचार हो जाता था।

1.10 इंग्लैण्ड में सामंतवाद

नोट

(क) आंग्ल-सैक्सन काल में : आंग्ल-सैक्सन काल में इंग्लैण्ड में सामंत प्रथा का प्रचार था, परन्तु इसका क्षेत्र और स्वरूप बहुत ही सीमित था। उस समय का सामंतवाद-प्रधानतः आर्थिक था।

जिस समय जर्मन लोग इंग्लैण्ड में बस गये थे बड़े-बड़े भूमिपति और धनी लोग अपने अधीन कुछ अनुयायियों को रखते थे। राजा के अधीन जो अनुयायी होते थे उन्हें 'थेन' कहा जाता था। प्रारंभ में थेन तथा राजा के बीच का संबंध मधुर तथा व्यक्तिगत था, परन्तु कुछ समय पश्चात् दोनों के बीच के संबंध का आधार जमीन ही बन गई थी। राजा के रक्षा के बदले थेन कुछ न कुछ जमीन का हिस्सा लेकर राजा की रक्षा की प्रतिज्ञा लेने लगे थे। इस प्रकार थेन के पास थोड़ी ही सही परन्तु जमीन रहने लगी थी। राजा की मदद करने के बदले सरदारों को जागीर दे दी जाती थी। धीरे-धीरे राजा के थेन लोग दूसरों को जमीन देकर अपना थेन बनाने लगे।

आंग्ल-सैक्सन काल में प्रत्येक व्यक्ति के लिए कुछ जमीन या स्वामी रखना अति आवश्यक था। भूमिहीन व्यक्ति पर सरकार द्वारा नियंत्रण रखना कठिन था। यदि उससे कुछ गलती हो जाती तो सरकार जुर्माने के तौर पर कुछ वसूल करने में भी असक्षम हो जाती थी। अर्थात् कहा जा सकता था कि उनके पास कुछ न होने के कारण सरकार का जुर्माना वसूलना असम्भव था। अतः एथेल ने एक नियम बनाया। इस नियम के अंतर्गत प्रत्येक भूमिहीन व्यक्ति को अपना स्वामी रखना पड़ेगा ताकि उनके पास भी भूमि हो। साथ ही यह उनके सगे-संबंधियों का फर्ज था कि वे उनके लिए स्वामी खोजें। उसके अच्छे आचरण की जिम्मेवारी स्वामी पर ही होती थी।

डेन हमले के समय दुर्बल लोग मजबूत व्यक्तियों की शरण में चले जाया करते थे। 10वीं सदी में एडगर ने इस आश्रय के ऊपर एक नियम बनाया। सरदार अपनी शरण में आए हुए लोगों की रक्षा के लिए जिम्मेदार होता था। बाद में सरदार अपने अधीनस्थों को कुछ जमीन का हिस्सा देने लगा। कमजोर आदमी भी रक्षा हेतु शरण पाने के लिए अपनी जमीन (जो भी थोड़ा-बहुत जमीन का टुकड़ा उनके पास होता था) भी सरदारों को देने लगा। बाद में अपने जीवनयापन हेतु अपनी ही जमीन जागीर (किराए पर) के तौर पर लेकर उस जमीन पर खेती करता था। जिससे उनकी दशा और अधिक दयनीय हो गई थी।

आंग्ल-सैक्सन काल के अन्तिम हिस्से में राजा अपने विश्वासी साथियों को चर्चों में फैसले करने का अधिकार भी देने लगा। एडवर्ड कनफैसर ने स्वयं यह सुविधा अपने मित्रों को सौंप दी थी। इस तरह कई सामंती अदालतें कायम होने लगी। जिसे 'मेनर' कहा जाता था। बिशप भी राजा से जमीन पाते थे और वे भी अपने असामियों के मामलों को अपने 'चर्च कोर्ट' में देखने लगे।

कैन्यूट ने भी अपने राज्य को 4 नवाबियों (अर्लडम) में बांट दिया था और प्रत्येक में एक-एक नवाब (अर्ल) रख दिया था। इन नवाबों को शासन-संबंधी कई अधिकार दे दिये थे।

आंग्ल-सैक्सन काल कुछ-कुछ सामंतवाद से मिलता जुलता था। धीरे-धीरे पूरा देश इस तरह की प्रथा का अनुसरण करने लगा था, किन्तु उस समय सामंत प्रथा के मार्ग में कई तरह की कमियाँ दिखाई पड़ती थी। सामंत प्रथा पूरी तरह सम्पन्न नहीं थी। यह प्रथा ढीली-ढाली थी और इसमें संगठन का अभाव भली-भाँति झलकता था। राजा को पूर्ण अधिकार नहीं प्राप्त थे। उसे देश की पूरी धरती का मालिक (स्वामी) नहीं समझा जाता था। अतः भूमि के आधार पर ही सभी व्यक्तियों का संबंध स्थापित नहीं था। समाज में सामंती बंधनों का भी अभाव था। असामियों के लिए स्वामी सेवा करना अनिवार्य नहीं था। उस समय राजा और देश की रक्षा करना, प्रत्येक व्यक्ति का परम् कर्त्तव्य माना जाता था। राजनैतिक सेवा का भी जमीन से कोई संबंध नहीं था। विटन में बैठने के लिए किसी को राजा से जमीन पा लेने के बाद ही अधिकार नहीं मिलता था जैसा कि नार्मन काल में होता था, बल्कि इस सैक्सन में कोई भी व्यक्ति विटन पर तभी बैठता था जब राजा उसे बुलाता था। सामंतों के न्यायालय मैनोरियल कोर्ट (Manorial Courts) तो थे परन्तु मूट, हन्ड्रेड मूट जैसे स्थानीय न्यायालय भी स्थित एवं सक्रिय थे।

(ख) नार्मन काल में : विलियम प्रथम पहला ऐसा व्यक्ति था जो इंग्लैण्ड में राजनैतिक सामन्तवाद का संगठन और प्रचार करने में सफल हुआ। विलियम प्रथम ही सामंतवाद के विकास में सहयोग भी देता था और उसकी राह में बाधा भी पहुंचाता था।

नोट

(i) सहयोग : जैसा कि बताया जा चुका है कि विलियम प्रथम बाहुबल द्वारा इंग्लैण्ड पर विजय प्राप्त करने में सफल हुआ था। अत: वह देश का मालिक बन चुका था और सभी प्रजा पर उसका पूरा अधिकार था। वह समस्त देश का भूमिदार बन चुका था। उसने तो अंग्रेज सरदारों की भी जमीन जब्त कर ली थी। उसने जमीन को सामंती सरदारों के अनुसार नार्मन सरदारों में बांट दिया था। इन सरदारों ने सामंती बंधनों को कबूल किया और राजा से जमीन ले ली। इस प्रकार यह उच्च सामंत कहलाए। इन लोगों ने भी अपने से नीचे के लोगों को उन्हीं शर्तों पर जमीन दी। इस तरह सामंती बंधनों एवं प्रथाओं के आधार पर समाज में भूमि का बंटवारा हुआ इसलिए उपरोक्त कारणों को देखकर यह कहा जा सकता है कि विलियम ने सामंत प्रथा के विकास में सहायता दी।

(ii) बाधाएँ : समय के साथ-साथ सामंतवाद की बुराइयाँ उभर कर सामने आने लगी। विलियम अब समझ चुका था कि सामंतवाद का इंग्लैण्ड पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है तब उसने सामंतवाद में कुछ सीमाएँ बनाने का प्रबंध किया। उसने सामंतवाद प्रथा में कुछ फेर-बदल कर दिया। इससे राजनैतिक सामंतवाद की कुछ बुराइयाँ दूर हो गई। राजा शक्तिशाली बन गया और सामंत कमजोर हो गए।

1.11 नार्मन वंश के अन्य शासक

विलियम द्वितीय (1087-1100 ई.)

विलियम प्रथम के तीन पुत्र थे। पहले पुत्र का नाम था राबर्ट। दूसरे का नाम था विलियम और तीसरे पुत्र का नाम था हेनरी। विलियम प्रथम ने अपने बड़े पुत्र राबर्ट को नार्मण्डी का ड्यूक बना दिया था। उसने अपने दूसरे पुत्र विलियम को इंग्लैण्ड की गद्दी का उत्तराधिकारी बना दिया और अपने तीसरे लड़के हेनरी को मात्र कुछ पैसे ही दिए थे। विलियम, विलियम द्वितीय के नाम से इंग्लैण्ड की गद्दी पर विराजमान हुआ। विलियम द्वितीय के चेहरे का रंग लाल था जिस कारण वह विलियम रुफस भी कहलाता था। वह नास्तिक एवं स्वभाव का बुरा व्यक्ति था। वह ईश्वर, पादरी, मनुष्य किसी को भी आदरपूर्ण दृष्टि से नहीं देखता था। वह योग्य व्यक्ति था परन्तु धर्म के नाम पर चिढ़ जाता था। उसे अपनी काबिलियत पर पूरा विश्वास था। वह अपना तथा देश का भला-बुरा अच्छी तरह समझता था। उसने अपनी शक्ति को कायम करने का बहुत प्रयास किया। काफी हद तक उस लक्ष्य में कामयाब भी हुआ।

(क) विद्रोह का सामना : चूंकि विलियम प्रथम ने अपने तीनों पुत्रों को भेदभाव पूर्ण तरीके से सम्पत्ति एवं अधिकार दिए थे। उसके फैसले ने तीनों भाइयों को आपस में विरोधी बना दिया। विलियम द्वितीय के राज्याभिषेक के दूसरे साल में नार्मन सरदारों ने विद्रोह कर दिया था। ये सभी लोग राबर्ट को पसंद करते थे, परन्तु राबर्ट शक्तिशाली नहीं था। वहीं दूसरी ओर विलियम में ताकत की कोई कमी नहीं थी। राबर्ट ने नार्मन सरदारों की मदद के लिए नार्मण्डी से मदद भेजी थी, परन्तु विलियम द्वितीय ने इस विद्रोह का जमकर सामना किया और इस विद्रोह को दबा दिया।

(ख) नार्मण्डी पर अधिकार : विलियम द्वितीय राबर्ट को पसंद नहीं करता था। साथ ही वह नार्मण्डी को राबर्ट को दिए जाने वाले अपने पिता के फैसले को भी नापसंद करता था। अत: उसने 1091 ई. में नार्मण्डी पर हमला कर दिया। राबर्ट ने हार नहीं मानी और उसने विद्रोह का जमकर मुकाबला किया। इसलिए विलियम द्वितीय समस्त नार्मण्डी पर कब्जा करने में सफल ना हो सका, परन्तु 4 वर्ष के बाद राबर्ट को धर्मयुद्ध में जाने की धुन सवार हो गई। उसे धन की आवश्यकता थी इसलिए राबर्ट ने नार्मण्डी को विलियम द्वितीय के हाथों में गिरवी पर दे दिया जिससे अप्रत्यक्ष रूप से नार्मण्डी पर विलियम द्वितीय का कब्जा हो गया।

(ग) बैरनों का दबाव : विलियम ने बैरनों को काबू में रखने के लिए उन पर दबाव डाला। उसने सामंती सिद्धांतों और बंधनों को बड़ी कड़ाई से लागू किया। वह शिकार का भी बहुत शौकीन था और इसके लिए सख्ती के साथ जंगलों को सुरक्षित रखा गया। उसने रेनल्फ फ्लैम्बर्ड की मदद उचित-अनुचित ढंग से ली और कठोरता के साथ धन जमा करता रहा।

नोट

(घ) धार्मिक नीति : विलियम द्वितीय स्वभाव का नास्तिक था। उसको धर्म पर बिल्कुल विश्वास नहीं था। 1089 ई. में कैंटरबरी के आर्कबिशप लैनफ्लैक की मृत्यु हो गई। विलियम ने वर्षों तक इस पद पर किसी को बहाल नहीं किया और चर्च की आमदनी का स्वयं उपभोग करता रहा। उसने चर्च के जागीरों पर भी अपना अधिकार कर रखा था। वह बिशपों और मठाधीशों की जगहों को भी खाली ही छोड़ देता था या पैसे लेकर उन्हें भरता था। वह किसी भी पादरी को रोम नहीं जाने देता था। ऐंस्लेम (पादरी) जब उसकी इच्छा के विरुद्ध रोम चला गया तो उसने उसकी जमीन जो इंग्लैण्ड में थी उसे जब्त कर लिया। इसी तरह वह चर्च के मामलों में भी हस्तक्षेप करता रहा।

एक बार 1093 ई. में विलियम द्वितीय बहुत बीमार पड़ गया। बिशपों ने उसे समझाया कि चर्च में हस्तक्षेप करने के कारण उसके साथ ऐसा हुआ। वह भी अपने बीमार होने का कारण इसे ही समझ रहा था। इस घटना ने विलियम द्वितीय को बदल दिया। अब वह उदारवादी बन चुका था। उसने चर्च के प्रति भी उदारवादी नीति अपनाई। उसने जल्द ही ऐंस्लेम को कैंटरबरी के आर्कबिशप के पद पर बहाल कर दिया, परन्तु ऐंस्लेम योग्य और शिक्षित व्यक्ति था। उसकी राजा से पटरी नहीं बैठी और वह 1097 ई. में रोम चला गया। राजा ने उसकी जमीन-जायदाद हड़प ली।

(ङ) विलियम द्वितीय का अंत : 1100 ई. में वह एक बार शिकार खेलने निकला। उसे जंगल में अचानक तीर लग गया और वह मर गया। उसने 13 वर्षों तक इंग्लैण्ड पर शासन किया। वह 40 वर्ष की उम्र में मर गया।

हेनरी प्रथम (1100-1135 ई.)

अपने बड़े भाई विलियम द्वितीय की मृत्यु के बाद हेनरी प्रथम इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा। यह विलियम प्रथम का सबसे छोटा पुत्र था। हेनरी का सबसे बड़ा भाई राबर्ट अभी जीवित था परन्तु उसमें काबिलियत न होने के कारण हेनरी को राजगद्दी पर बिठाया गया। हेनरी योग्य, चतुर एवं कुशल व्यक्ति था। उसे शासन करने की पूरी समझ थी। उसने अपनी शक्ति एवं प्रभाव को बढ़ाने का भरपूर प्रयास किया।

(क) स्वाधीनता पत्र : हेनरी का बड़ा भाई राबर्ट अभी जीवित था जिस कारण गद्दी पर उसका अधिकार कमजोर था। इसलिए गद्दी पर बैठते ही हेनरी ने एक स्वाधीनता-पत्र प्रकाशित किया। इस पत्र में उसने जनता से कई सारे वादे किए। उसने लोगों को सुशासन और न्याय के लिए विश्वास दिलाया। सरदारों और बिशपों के साथ अनुचित व्यवहार नहीं किया जाएगा। उसने साफ-साफ शब्दों में कहा कि वह अपने पूर्वजों की बनाई कठोर नीति पर नहीं चलेगा। संत एडवर्ड के चलाये हुए कानूनों पर ध्यान दिया जाएगा। उसने अपने वायदे का पूरी तरह पालन भी किया। उसने सभी के साथ न्याय ही किया। अतः उसे न्याय सिंह (लायन ऑफ जस्टिस) की पदवी से विभूषित किया गया। इस स्वाधीनता-पत्र को प्रकाशित कर जन-हित के हित के हक में उसने एक महत्त्वपूर्ण काम किया। आगे चलकर 115 वर्षों के बाद इसी के आधार पर मशहूर मैग्नाकार्टा का निर्माण हुआ। इस तरह हेनरी का स्वाधीनता पत्र राजतंत्र के अंतर्गत पहला लिखित प्रतिबंध था।

(ख) विवाह : हेनरी ने मेटिल्डा नामक एक अंग्रेज़ महिला से विवाह किया। इस विवाह द्वारा वेसेक्स के पुराने राजवंश के साथ अपना संबंध जोड़ दिया। मेटिल्डा एडगर की भगिनी थी।

(ग) हेनरी की विजय : 1100 ई. में राबर्ट अपने धर्मयुद्ध से वापस आ गया। उसने वापस आते ही नार्मण्डी पर अपना कब्जा कर लिया। उसने जल्द ही इंग्लैण्ड पर भी धावा बोल दिया और इस काम में सामंतों ने उसका साथ दिया। किन्तु हेनरी ने राबर्ट को कुछ देकर अपने साथ मिला लिया और नार्मण्डी लौट गया। हेनरी ने सामंतों की गद्दारी के लिए उनको सजा दी और उनसे सारी जागीरें छीन ली। इसके बाद किसी ने हेनरी के विरुद्ध सिर उठाने का प्रयास नहीं किया। इस तरह 3 वर्ष बीत गए।

(घ) राबर्ट का अंत : 1104 ई. में हेनरी ने नार्मण्डी पर चढ़ाई आरंभ कर दिया। 3 वर्षों तक हेनरी और राबर्ट लड़ते रहे। इसमें अंग्रेजों ने हेनरी की बहुत सहायता की। 1106 ई. की 'टिनचेब्राई लड़ाई' अब तक की सबसे प्रसिद्ध लड़ाई मानी जाती है। इस लड़ाई में राबर्ट की बुरी तरह हार हुई। राबर्ट को कैद कर लिया गया। नार्मण्डी पर हेनरी का आधिपत्य हो गया। 1106 ई. में कैद में ही राबर्ट की मृत्यु हो गई।

नोट

(ङ) धार्मिक नीति : हेनरी पोप का भक्त था। हेनरी सरदारों की तरह चर्च के अधिकारियों को भी खुश करना चाहता था। इसलिए हेनरी ने ऐंस्लेम को रोम से वापस बुला लिया। हेनरी की इच्छानुसार ऐंस्लेम इंग्लैण्ड लौट आया। दोनों ही राजा द्वारा बिशपों की बहाली को नापसंद करते थे। अत: इस सवाल को लेकर पोप और राजा में पुन: मतभेद प्रारंभ हो गया। इसी कारण 1103 ई. में ऐंस्लेम को एक बार फिर इंग्लैण्ड को छोड़ना पड़ा। कई बिशपों ने राजा का ही समर्थन किया, परन्तु पोप ने ऐसे बिशपों को धर्मबहिष्कृत घोषित कर दिया। इसी तरह पोप एवं राजा के बीच झगड़ा चलता रहा।

इतने लड़ाई-झगड़ों के बाद सन् 1107 ई. में राजा और पोप के बीच समझौता हो गया। इस समझौते के अंतर्गत यह तय हुआ कि राजा के इच्छानुसार ही नये बिशपों का पादरियों द्वारा चुनाव हो। राजा न तो उन्हें दण्ड देगा और न ही अंगूठी (इनाम) परन्तु फिर भी उसे राजा के प्रति भक्त रहना पड़ेगा। अत: यह कहा जा सकता है कि इस तरह के समझौते में राजा का ही पलड़ा अधिक भारी रहा।

(च) शासन-प्रणाली : उपरोक्त वर्णन से यह साफ स्पष्ट होता है कि हेनरी एक योग्य शासक था। उसने शासक प्रणाली को और अधिक मजबूत किया। राजा की परिषद् (ग्रेट कौंसिल) जब बड़ी संस्था बन गई, तब कुछ प्रमुख सदस्यों की एक छोटी समिति से अधिक काम लिया जाने लगा। इसे 'क्यूरिआरेजिस' कहते हैं। इसके दो मुख्य काम थे—न्याय करना एवं कानून बनाना। इसके साथ ही आमद खर्च का हिसाब रखने के लिए एक्सचेकर नामक अदालत स्थापित हुई। इसका प्रधान जस्टीसियर कहलाता था। हेनरी ने लोगों की सुविधा के लिए चलते-फिरते न्यायालय का भी प्रबंध किया। जज लोग जहाँ-तहाँ घूम-फिर कर राज्य की ओर से न्याय करने और जुर्माना तथा कर (Tax) जमा कराने का काम करते थे। इसी काल में जूरी प्रथा का भी प्रचलन शुरू हुआ। क्यूरिआरेजिस में अपील भी होती थी और यह बहुत ही लोकप्रिय अदालत बन गई। इन प्रत्येक प्रयासों द्वारा हेनरी ने न्याय को आम जनता तक पहुँचाया एवं सस्ता, सहज बना दिया।

(छ) हेनरी प्रथम का अंत : हेनरी ने 1100-1135 तक इंग्लैण्ड पर शासन किया। अर्थात् 35 वर्षों तक इंग्लैण्ड पर हेनरी राज्य करता रहा। हेनरी के एक पुत्र तथा एक पुत्री थी। उसने मरने से पहले ही इंग्लैण्ड के उत्तराधिकारी की व्यवस्था कर दी थी। उसका पुत्र उत्तराधिकारी बनने से पूर्व ही मर चुका था। इसलिए हेनरी ने अपनी पुत्री को इंग्लैण्ड का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। उसकी पुत्री का विवाह अंजू के काउन्ट ज्योफ्रे से हुआ था। उसका समर्थन करने के लिए उसने अपने जागीरदारों से वादा ले लिया था। अत: 35 वर्ष राज करने के बाद हेनरी प्रथम की मृत्यु हो गई और फिर उसकी पुत्री गद्दी की अधिकारी घोषित की गई।

स्टीफन (1135-54 ई.)

हेनरी की मृत्यु के बाद उसके किए गए वादे भी न रहे। उसके जागीरदार अपने वायदों को भी भूल गए। वे किसी भी औरत को राजा की गद्दी पर नहीं देखना चाहते थे। वे एक ऐसा कमजोर राजा चाहते थे जो राज्य में जागीरदारों की मनमानी को न रोके जबकि हेनरी की पुत्री एक काबिल (योग्य) पुत्री थी जो कारण भी हो लोगों (जागीरदारों) ने उसे गद्दी पर नहीं बैठने दिया। अंजू एवं नार्मण्डी के लोगों के बीच बिल्कुल भी नहीं पटती थी। अत: सामंतों ने बूलोन (फ्रांस) के अर्ल स्टीफल को इंग्लैण्ड की गद्दी का अधिकारी बनाया। विलियम प्रथम के तीन पुत्र और एक पुत्री थी जिसका नाम था एडला। अर्ल स्टीफन, एडला का ही पुत्र था। वह कमजोर एवं आलसी प्रवृति का व्यक्ति था इसलिए उसे राजा की गद्दी प्रदान की गई।

कारण चाहे जो रहे हों अंतत: स्टीफन इंग्लैण्ड का राजा बन गया, परन्तु मेटिल्डा (हेनरी की पुत्री) चुपचाप खड़े रहकर तमाशा देखने वालों में से नहीं थी। स्टीफन के पास तो पहले से एक दल था ही इसलिए मेटिल्डा ने भी अपने पक्ष में एक दल तैयार कर लिया। परिणामस्वरूप देश में ही गृहयुद्ध प्रारंभ हो गया। सामंत लोगों की शुरू से यही सोच थी कि सामंत प्रथा को बढ़ावा मिले और यही हो रहा था।

स्टीफन ने अपना पक्ष मजबूत करने के लिए सरदारों और पादरियों के प्रति उदार नीति अपनाई। उसने सामंतों के प्रति सामंती बंधनों को लागू करने में ढ़ीलापन दिखाया। अब सामंत और अधिक मजबूत हो चुके थे, उन्हें अपने राजा से किसी प्रकार का कोई भय नहीं था।

नोट

स्टीफन इंग्लैण्ड में अपनी लोकप्रियता चाहता था और गद्दी नहीं छोड़ना चाहता था। इसके लिए उसने चर्च को भी बहुत-सी रियायतें दीं। इसी तरह चर्च भी शक्तिशाली बन गया। चर्च के संबंध में स्टीफन के पूर्वजों ने दो मुख्य अधिकार प्राप्त किए थे–

(*i*) राजा बिशपों की बहाली करते थे और बदले में बिशप राजा के प्रति भक्ति की शपथ लेते थे।

(*ii*) सरकारी अदालतों में धर्माधिकारियों के भी मामले देखे जाते थे और उन्हें सजा भी देते थे।

स्टीफन ने उन दोनों अधिकारों को त्याग दिया, परन्तु फिर भी बिशपों और पादरियों ने स्टीफन को अपना पूरा सहयोग नहीं दिया। कुछ विरोध हो जाने पर उन्होंने राजा को बहुत परेशान किया।

(क) इंग्लैण्ड का गृहयुद्ध : ड्यूक ऑफ ग्लौसेस्टर और स्कॉटलैण्ड के राजा डेविड ने मेटिल्डा का पक्ष लिया था। इसलिए डेविड ने इंग्लैण्ड पर हमला कर दिया, किन्तु स्टैन्डर्ड को हार का मुँह देखना पड़ा। 1138 ई. में उसे मिलाने के लिए स्टीफन ने उसे इंग्लैण्ड में कुछ प्रदेश सौंप दिए। इसके दूसरे ही साल में मेटिल्डा में इंग्लैण्ड पर वापस हमला कर दिया। यह युद्ध लगभग 8 वर्षों तक जारी रहा। दो वर्ष के बाद लिंकन के युद्ध में मेटिल्डा विजयी हुई। इसके कुछ समय बाद मेटिल्डा के पति ज्योफ्रे ने नार्मण्डी पर भी कब्जा कर लिया, परन्तु अंत में हार मेटिल्डा की हुई। 1147 ई. को मेटिल्डा निराश होकर फ्रांस चली गई।

(ख) स्टीफन का अंत : सन् 1151 ई. में मेटिल्डा के पति ज्योफ्रे की मृत्यु हो गई। उनका एक पुत्र था जिसका नाम था हेनरी। हेनरी बाद में (नार्मण्डी का) उत्तराधिकारी बना। 2 वर्ष बाद हेनरी ने इंग्लैण्ड पर हमला कर दिया, लड़ाई होने लगी। इस लड़ाई में स्टीफन का पुत्र मर गया जिससे स्टीफन बहुत दुःखी हो गया। इसलिए स्टीफन ने हेनरी से समझौता कर लिया। इस समझौते को वेलिंगफोर्ड का समझौता कहते हैं। स्टीफन ने हेनरी को ही अपना उत्तराधिकारी मान लिया। दुर्भाग्यवश 1154 ई. को स्टीफन की मृत्यु हो गई और मेटिल्डा का पुत्र हेनरी, हेनरी द्वितीय के नाम से इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा। स्टीफन और हेनरी द्वितीय में समझौता कराने में आर्कबिशप थ्योबाल्ड ने मध्यस्थ (पंच) का काम किया।

मूल्यांकन : स्टीफन ने 1135-1154 ई. अर्थात् 19 वर्षों तक इंग्लैण्ड पर शासन किया, परन्तु इन 19 वर्षों में देश में कभी भी शान्ति का दौर नहीं रहा। सामंतों पर भी किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं रहा। चर्च और अधिक शक्तिशाली बन गया, आम जनता का जीवन दूभर हो गया था, सामंत लोगों पर जुल्म करते रहे, लोगों की मुसीबत का कोई अंत न रहा। लोग कहने लगे कि ईश्वर गहरी नींद में सो चुका है। साधु-संतों का भी कोई पता नहीं है, उनके दुःख की दासता सुनने वाला कोई भी नहीं था। कथानानुसार इन 19 वर्षों को 'उन्नीस लम्बी सदियों का काल' भी कहा जाता है। इस काल में सामंतवाद की प्रधानता थी। सामंत मौका मिलते ही आम जनता पर झपट पड़ते थे। उनकी स्थिति चूहे-बिल्ली से भी बदतर हो चुकी थी। सामंत बेवहज ही निर्दोष-गरीब व्यक्तियों का खून बहाते रहते थे। चूंकि स्टीफन एक कमजोर राजा था इसलिए सामंत अपनी मनमानी चलाया करते थे राजा की आज्ञा के बिना ही दुर्ग आदि का निर्माण कर लेते और उन दुर्गों को अत्याचार एवं लूट-पाट का केन्द्र बना लेते थे। आम जनता दुर्ग के पास से गुजरते तो उनके रोंगटे खड़े हो जाते। जनता की जमीन, जायदाद, सम्पत्ति एवं जीवन बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं थी।

चर्च भी अपने-आप में पीछे नहीं था। चर्च ने भी अपनी शक्तियों को बढ़ा लिया था। चर्च केवल धार्मिक मामलों को देखने का अधिकार रखता था, परन्तु चर्च अपनी मनमानी करता था। सभी मामलों को वह चर्च में ही देखता था। वह स्वयं को अदालत बना चुका था। पादरी हर न्याय में अपना स्वार्थ देखता था। वह बड़े-से-बड़े अपराध के लिए मामूली सजा देता जिससे देश में अराजकता को विशेष बढ़ावा मिल रहा था। अराजकता ने देश की नींव को खोखला कर दिया था जिसमें छोटी समिति, कोर्ट ऑफ एक्सचेकर, क्यूरिआरेजिस जैसी किसी भी बैठक की कोई जगह नहीं थी। देश अपने अस्तित्व को खोने के कगार पर आ चुका था।

1.12 नार्मन काल की वैधानिक प्रगति

नोट

इंग्लैण्ड के संविधान के इतिहास में नार्मन काल एक मोड़ की भाँति है। नार्मन विजय के साथ आंग्ल-सैक्सन के विधान या प्रथाओं का अंत नहीं हो गया। विलियम प्रथम अपने आप को इंग्लैण्ड की गद्दी के लिए एक लायक अधिकारी मानता था और वह एक अंग्रेज की ही भाँति राज्य करना चाहता था। इसलिए उसने इंग्लैण्ड के पौराणिक विधि-विधानों में किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन नहीं किया। इंग्लैण्ड में कुछ परिवर्तन हुए थे जो स्वाभाविक थे। केन्द्रीय शासन में कुछ परिवर्तन खासतौर से दिखे जिनका नार्मन काल में अंग्रेजी तथा नार्मन सिद्धांतों और संस्थाओं से मेल करा दिया गया। नार्मन काल के केन्द्रीय शासन का वर्णन निम्नलिखित है–

1. राजा : इंग्लैण्ड में आंग्ल-सैक्सन काल के अन्त में राजतंत्र कमजोर होने लगा था। कई राजा अत्यन्त कमजोर थे। सामंत जिनका फायदा आसानी से उठाते थे और अपनी शक्ति को बढ़ाकर देश में अराजकता फैलाते थे, किन्तु नार्मन के आगमन से इंग्लैण्ड का राजतंत्र पुनः व्यवस्थापित होने लगा था। नार्मण्डी में नार्मन लोग बहुत ही शक्तिशाली थे, अतः इंग्लैण्ड में भी वे कमजोर नहीं रह सकते थे। इंग्लैण्ड में अब राजा के पास एक दरबार स्थापित होने लगा था जिससे राजतंत्र को मजबूत बनने में सहायता मिली। इसके कई कारण थे–

(*i*) विलियम योग्य, शक्तिशाली, कुशल, बलशाली एवं बुद्धिमान था। उसने अपने बाहुबल से इंग्लैण्ड को जीत लिया। जब भी उसके विरुद्ध विद्रोह होता, वह उसे आसानी से कुचल देता। अतः किसी की भी दोबारा हिम्मत नहीं पड़ी कि वह विलियम के खिलाफ विद्रोह करे।

(*ii*) धन और शक्ति से पूरी तरह सक्षम होने के बावजूद नार्मन राजाओं ने अंग्रेजों के रीति-रिवाजों में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं किए।

(*iii*) राजा का व्यक्तित्व बड़ा ही पवित्र समझा जाता था और उसके प्रति सभी को भक्ति की शपथ लेनी पड़ती थी। उस समय के लोग अधिक धार्मिक होते थे, अतः अपनी शपथ को तोड़ना अपराध समझते थे।

(*iv*) विलियम के पास सामंती और राष्ट्र (फिर्ड) दोनों प्रकार की सेनाएँ थी। राजा बहुत धनी था। इसलिए वह किराये पर भी सेना रख सकता था।

(*v*) नार्मन काल में वंशानुगत राजतंत्र का सिद्धांत कायम होने लगा था।

2. शासन-प्रणाली : राजा ही शासन का प्रधान होता था। वह सामंती समाज का भी प्रधान था। नार्मन राजा बड़े ही योग्य थे और उन्होंने बैरनों को अपने अधीनस्थ ही रखा था। इस तरह राजा निरंकुश थे। उन्होंने इन परिस्थितियों का पूरी तरह लाभ उठाया। अंग्रेज और नार्मन दोनों ही अपनी रक्षा के लिए राजा की सहायता को आवश्यक समझते थे।

राजा की दैनिक शासन प्रणाली में एक छोटी समिति से सहायता मिलती थी। इसमें कुछ बड़े अफसर तथा बैरन रहते थे। इनमें तीन प्रमुख अफसर हुआ करते थे–

(*i*) 'जस्टीसियर' सबसे बड़ा अफसर होता था। वह प्रधानमंत्री तथा वायसराय दोनों ही था। राजा की उपस्थिति में प्रधानमंत्री और उसकी अनुपस्थिति में वायसराय का काम करता था। राजा प्रायः नार्मण्डी जाया करता था। इस पद पर कोई प्रमुख पादरी रहता था। यह पद करीब 13वीं सदी तक कायम रहा।

(*ii*) 'चांसलर' दूसरा प्रमुख अफसर था। उसके पास राजा की मोहर रहती थी और पत्र-व्यवहार आदि का कार्य करता था। यदि किसी को खजाने की रकम चाहिए हो तो उसे उसकी इजाजत लेनी पड़ती थी। वह राजा के निजी सचिव के रूप में था अर्थात् वर्तमान भाषा के शब्दों में कहें तो 'सेक्रेटरी ऑफ स्टेट' का पद उससे काफी हद तक मिलता-जुलता है। वही रिट जारी करता था और पुरोहित का काम भी करता था।

नोट

(iii) तीसरा अफसर 'खजांची' आमद खर्च का हिसाब-किताब रखता था।

यह छोटी समिति आर्थिक तथा न्याय संबंधी कामों को भी देखती थी। जब यह आर्थिक संबंधी कामों को देखती तब यह 'एक्सचेकर' कहलाती थी और जब न्याय संबंधी कार्य को देखती तब यह 'क्यूरियारेजिस' कहलाती थी। 'एक्सचेकर' के रूप में यह छः महीने में एक बार बैठक बुलाती और शेरिफ एवं अन्य लोगों से हिसाब लेती थी।

3. न्याय-प्रणाली : आंग्ल-सैक्सन काल के शायर हंड्रेड कोर्ट कायम रहे। इनके अलावा तीन और अन्य कोर्ट भी कायम हुए। इनमें बैरन लोग अपने लोगों के ही मामले देखा करते थे। जब इन अदालतों का विकास होने लगा तो शायर हंड्रेड कोर्ट के महत्त्व कुछ घटने लगे। बैरन लोग इन अदालतों के फैसलों को नहीं मानते थे क्योंकि वे इन अदालतों को पसंद नहीं करते थे वे केवल अपनी अदालतों को ही पसंद किया करते थे। विलियम प्रथम ने चर्च को आज्ञा दी कि वे धार्मिक मामलों को अपनी अदालतों में ही देखें। आगे चलकर इन अदालतों में पादरी लोगों के गैर-धार्मिक मामले भी देखे जाने लगे और उन्हें मामूली सजा देकर छोड़ दिया जाने लगा, जो देश में अराजकता फैलाने में मदद कर रही थी।

तीसरे वर्ग की अदालतें राजकीय थीं। इसके द्वारा राजा ने अपने अधिकार-क्षेत्र का विस्तार किया। शाही अदालतों के कायम होने से बैरनों पर दबाव पड़ता था जिससे वे अपनी शक्तियों का विस्तार नहीं कर पाते थे। इसके अलावा इन अदालतों में जो जुर्माने होते थे, वे राजा को मिलते थे।

'क्यूरियारेजिस' इन शाही अदालतों में सबसे ऊपर थी। जिन मामलों में राजा की दिलचस्पी होती थी, इन अदालतों में उस मामले की ही जांच होती थी। दो उच्च सामंतों के बीच का मामला भी इन्हीं अदालतों में देखा जाता था। राजा की आज्ञा से दूसरे लोग भी अपने मामले को इस कोर्ट में पेश कर सकते थे, परन्तु यह बातें नार्मन काल के अन्तिम समय में देखने को मिलती है।

हेनरी प्रथम के समय में जजों को मुकदमें की जांच करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान में भेजने की प्रथा भी चली थी। इन जजों को 'दौरा जज' कहते थे। शुरुआत में ये जज उन्हीं मुकदमों को देखते थे, जिनमें राजाओं का स्वार्थ रहता था परन्तु बाद में राजा की आज्ञा से और निश्चित फीस देकर दूसरे लोग भी अपने मुकदमों का फैसला इन जजों से करा सकते थे। इस प्रणाली की सबसे बड़ी खामी (बुराई) यह थी कि जजों का दौरा करने का समय निश्चित नहीं था। राजा अपनी इच्छानुसार ही जजों को दौरे पर भेजता था।

4. खर्च का ब्यौरा : राजा के आय-व्यय के अनेक साधन थे। राजा के सबसे बड़े आय के साधन जमींदार तथा भूमिकर होते थे क्योंकि राजा को इनसे बहुत रकम प्राप्त होती थी। बैरन लोगों को सैनिक सेवा के बदले धन देने की सुविधा दी गई। उनके द्वारा दी गई रकम स्कुटेज कहलाती थी। नार्मन काल में डनीजेल्ड भी वसूल होता रहा। शायर से कई प्रकार के बकायों को वसूल किया जाता था। शेरीफ वसूल करके राजा के खजाने में जमा कर देता था। कई पदों के लिए भी उम्मीदवारों को रकम चुकानी पड़ती थी।

अभी खर्च के मद कम और साधारण थे। बहुत से काम तो बैरनों के द्वारा मुफ्त कर दिए जाते थे अतः राजा को काफी रकम की बचत होती थी। उनका खजाना बढ़ता रहता था।

5. चर्च : नार्मन विजय से चर्च को लाभ-हानि दोनों ही हुए। चर्च की शक्तियाँ बढ़ी भी और घटी भी। इंग्लैण्ड पर विजय प्राप्त करने के लिए पोप ने भी विलियम प्रथम को आशीर्वाद दिया था। इसलिए विलियम ने चर्च को खुश रखने का प्रयत्न किया। उसने चर्च में अदालत भी कायम की जिसमें धार्मिक मामलों को देखा जाता था। उसने पादरियों को धर्मसभा में धार्मिक नियमों को बनाने का अधिकार भी दे दिया था। इन सुविधाओं को पाकर चर्च के अधिकारी बहुत खुश हुए, किन्तु जैसा कि हमें पता है विलियम प्रथम ने उन पर कई प्रतिबंध भी लगा दिए थे जिससे वे राजा के अधीन ही रहें, राजा के विरुद्ध विरोध नहीं कर सके।

6. राजसभा : नार्मन-काल में आंग्ल-सैक्सन काल की राजसभा (विटन) महान् परिषद् (ग्रेट-कौंसिल) कहलाने लगी। विटन के निर्माण के संबंध में कोई निश्चित नियम नहीं था। राजा अपनी इच्छानुसार किसी को इसका सदस्य बनाता था। नार्मन काल में ग्रेट कौंसिल सामंतों की सभा बन गई। इसमें छोटे-बड़े सभी प्रमुख सरदार (टिनेंट इन चीफ) बैठने के अधिकारी थे परन्तु राजा अपनी इच्छा से किसी को भी बैठक में बुला सकता था। चर्च के

प्रतिनिधि के रूप में आर्कबिशप और बिशप के लिए इसमें स्थान नहीं था अपितु वे भी सामंत की हैसियत से इसमें बैठने के अधिकारी थे।

कुछ समय के पश्चात् साधारण सामंतों, जिनमें अधिकतर शायर के नाइट शामिल थे, जिनको ऐसा प्रतीत होने लगा था कि महान् परिषद् में उनका कोई महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं है। इसके अलावा बहुत लोगों को अपना घर-बार छोड़कर जाना पड़ा। इसलिए इन लोगों ने परिषद् के कामों में दिलचस्पी लेना छोड़ दिया। बाद में इन्हें पार्लियामेन्ट में स्थान मिलने लगा।

नोट

जो अधिकार विटन को प्राप्त थे वही अधिकार सैद्धांतिक दृष्टि से कौंसिल को भी प्राप्त थे। नार्मन वंश के राजा स्टीफन को छोड़कर बाकी सभी राजा बहुत ही शक्तिशाली थे और वे अपनी कौंसिल की परवाह नहीं करते थे। कौंसिल राजाओं की आज्ञा को नोट करती थी परन्तु उनके ऊपर इसका कोई नियंत्रण नहीं था। राजा कौंसिल की सलाह लेता था, परन्तु इसे मानने के लिए वह बाध्य नहीं था, लेकिन टैक्स लगाने के संबंध में राजा को उसकी सलाह का ख्याल करना पड़ता था।

बड़ी कौंसिल की बैठक साल में 3 बार होती थी अत: धीरे-धीरे एक छोटी कौंसिल का विकास हुआ। इस छोटी कौंसिल में उच्चस्थायी अफसर और राजा के निकट रहने वाले सरदार होते थे। शासन के मामले में राजा इसी छोटी कौंसिल से प्राय: सलाह लेने लगा। छोटी और बड़ी कौंसिल में बहुत फर्क नहीं था। छोटी कौंसिल बड़ी कौंसिल का ही छोटा रूप था उसे बड़ी कौंसिल की एक समिति ही कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा, परन्तु छोटी कौंसिल को टैक्स लगाने का कोई अधिकार नहीं था।

सारांश

- ईसा में लगभग 700 वर्ष पहले आर्यों का एक दल ब्रिटेन में आकर बस गया जिन्हें 'केल्ट' कहा गया। इसकी दो शाखाएँ थी – पहली शाखा गोयडेल तथा दूसरी शाखा ब्रिटन कहलाती थी। ब्रिटन के नाम पर ही द्वीप का नाम ब्रिटेन या ब्रिटानिया पड़ा।
- इंग्लैण्ड पर ईसाई धर्म का राजनैतिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रभाव पड़े। इसी से इंग्लैण्ड में शिक्षा, धर्म, वास्तुकला, मनोरंजन, मठ, आश्रम, पहनावे आदि का विस्तार हुआ।
- इंग्लैण्ड में नार्मन युग 1066 में शुरू हुआ। विलियम प्रथम ने हैरोल्ड को मार दिया (युद्ध में) और वह ब्रिटेन का पहला (नार्मन युग का) राजा बना। नार्मनों का इंग्लैण्ड पर प्रभाव एवं कुप्रभाव दोनों ही पड़ा। नार्मनों ने सभ्यता एवं संस्कृति को पूरी तरह से ही बदलकर रख दिया। अंग्रेजी भाषा का भंडार भी समृद्धिशाली बना दिया।
- विलियम प्रथम के मृत्यु के बाद उसके पुत्र एवं पुत्री तथा नाती-पोतों ने विलियम के वंश को आगे बढ़ाया। विलियम द्वितीय ने 1087-1100 ई. तक इंग्लैण्ड पर राज किया। फिर विलियम द्वितीय के बाद उसका छोटा भाई हेनरी प्रथम (1100-1135 ई.) इंग्लैण्ड का राजा बना उसके बाद स्टीफन ने (1135-1154 ई.) तक इंग्लैण्ड पर अपना शासन किया। इसी प्रकार यह वंश (नार्मन-वंश) आगे बढ़ता गया।

अभ्यास-प्रश्न

1. ब्रिटन कौन थे? उनके सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक जीवन की विवेचना कीजिए।
2. इंग्लैण्ड पर ईसाई धर्म के प्रचार का क्या प्रभाव पड़ा? निबंध लिखिए।
3. नार्मन वंश के इंग्लैण्ड पर पड़े कुप्रभाव एवं प्रभाव का विवरण दीजिए।
4. नार्मन वंश के संस्थापक विलियम प्रथम की जीवनी एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताइए।
5. सामंतवाद से आप क्या समझते हैं? सामंत प्रथा के बारे में भी बताइए।

6. 1087 से 1154 ई. तक के नार्मन वंश के राजा कौन-कौन थे? उनके बारे में विस्तार से बताइए।
7. नार्मन काल की वैधानिक प्रगति के बारे में बताइए।

नोट

संदर्भ ग्रंथ

1. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
2. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
3. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
4. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*
5. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
5. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
7. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*

इकाई–2

ब्रिटेन में रोमन का आगमन (Arrival of Roman in Britain)

नोट

संरचना (Structure)

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 रोमन द्वारा ब्रिटेन पर हमले व विजय

2.4 रोमन शासन का प्रभाव

2.5 आंग्ल-सैक्सन विजय

2.6 ब्रिटेन में ईसाई धर्म का प्रचार

2.7 ह्विटबी का सम्मेलन

- सारांश
- अभ्यास-प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- रोमनों के ब्रिटेन में आगमन को समझने में।
- रोमनों के ब्रिटेन पर हमले व विजय को समझने में।
- ईसाई धर्म के प्रचार को समझने में।

2.2 प्रस्तावना

रोमन लोग मुख्यत: इटली में टाइबर नदी के किनारे बसे हुए थे। धीरे-धीरे इन्होंने पूरी इटली पर अधिकार कर लिया। 60 ई. में इन्होंने गॉल (फ्रांस) पर हमला कर उस पर अपना अधिकार जमा लिया। 55 ई.पू. में सीजर ने ब्रिटेन पर हमला कर दिया, परन्तु उसे जीत न मिल सकी और उसे संधि करके वहाँ से लौटना पड़ा। इसके बाद रोम ने ब्रिटेन पर दोबारा हमला किया और इस बार उन्होंने उस पर अपनी विजय हासिल कर ली। रोमनों ने ब्रिटेन

नोट

पर लगभग 350 वर्षों तक शासन किया। इस शासनकाल में उन्होंने कई नगर बसाए, सड़कें इत्यादि का निर्माण किया। यह कुछ लाभ है जो रोमन शासन के कारण इंग्लैण्ड को हुए पर इससे कुछ हानियाँ भी हुईं जैसे इंग्लैण्ड की स्वयं की सभ्यता को खतरा पहुँचने लगा। रोमनों के ही शासनकाल में ब्रिटेन में ईसाई धर्म का प्रवेश हो चुका था। पोप ग्रिगोरी ने इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए संत आगस्टाइन नामक पादरी को ब्रिटेन भेजा।

2.3 रोमन द्वारा ब्रिटेन पर हमले व विजय

1. परिचय : रोम इटली में स्थित एक नगर का नाम है। यह यूरोप महादेश के दक्षिण में इटली में टाइबर नदी के किनारे पर स्थित है। मानव समाज के इतिहास में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि इतिहास के पन्नों को पलटकर देखा जाये तो हम देखेंगे कि प्राचीन काल में यूनान के बाद रोम में ही सभ्यता एवं संस्कृति का विकास हुआ। यहाँ पर जो लोग निवास करते थे वे बहुत शक्तिशाली थे एवं उनमें साम्राज्यवाद की भावना बहुतायत में थी। सर्वप्रथम उन्होंने टाइबर नदी के आसपास ही एक राज्य स्थापित किया, किन्तु समय के साथ-साथ उन्होंने अपने प्रयत्नों द्वारा पूरी इटली पर अपना अधिकार कायम कर लिया। इन्होंने इटली के बाहर भी भू-मध्य सागर के तट पर स्थित कई देशों पर भी अपना वर्चस्व कायम कर लिया। एक समय ब्रिटेन भी रोमन हमले का शिकार हुआ और इस पर रोमन आधिपत्य हो गया।

तकरीबन चौथी शताब्दी ई.पू. तक ब्रिटेन के संबंध में बाहरी दुनिया को कोई जानकारी नहीं थी। ब्रिटेन के कुछ व्यापारी ब्रिटेन से टीन लाकर यूरोप के बाजारों में बेचा करते थे, परन्तु वह व्यापारी अपना पूरा पता किसी को भी नहीं बतलाते थे। पीथियस नामक एक यूनानी व्यापारी 14वीं सदी ई.पू. के अंत में ब्रिटेन पहुँचा। उसने उस पूरे द्वीप का भ्रमण किया और अपनी यात्रा का पूरा हाल लिखा। उसके वृत्तान्त को पढ़कर ही कई लोगों को इस द्वीप के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। सीजर के नेतृत्व में ब्रिटेन पर हुए रोमन हमले के कारण भी लोगों को इसके संबंध में अधिक जानकारी हासिल होने लगी। सीजर पहला व्यक्ति था जिसने ब्रिटेन का द्वार खोलने का प्रयत्न किया।

2. हमले के कारण : रोमनों द्वारा ब्रिटेन पर हमले करने के कई कारण थे जो इस प्रकार हैं–

(क) पहली सदी ई.पू. में रोम गणराज्य में जूलियस सीजर नामक एक महान सेनापति का उदय हुआ। वह हौंसले का बुलंद व्यक्ति था। वह अपनी भुजा के बल से एक साम्राज्य कायम करना चाहता था। अत: उसने सर्वप्रथम 60 ई.पू. के लगभग गॉल पर हमला किया। गॉल का ही नाम फ्रांस है। गॉल के निवासी ब्रिटनों के सगे-संबंधी होते थे। अत: ब्रिटन उन्हें जूलियस सीजर के विरुद्ध मदद दिया करते थे। इससे सीजर को बहुत ही परेशानी उठानी पड़ी। अत: सीजर ने ब्रिटनों से इसका बदला लेने के लिए अपने मन में ठान लिया।

(ख) सीजर को इस बात की भी सूचना थी कि ब्रिटनों के पास बहुत बड़ी धातु की खानें हैं। इन खानों पर अधिकार का लाभ उठाने की लालसा भी रोमनों में थी।

(ग) रोमवासी मुख्य रूप से सैनिक जाति के थे। वह लड़ाकू स्वभाव के थे। वह अपनी साहसिक भावनाओं की संतुष्टि चाहते थे।

(घ) रोमनों को दासों की बहुत आवश्यकता रहती थी। ब्रिटेन से रोमनों को दास पाने की भी आशा थी।

(ङ) उस समय रोमन सभ्यता बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। कुछ लोग इसका प्रचार कर असभ्यों को सभ्य बनाना चाहते थे।

नोट

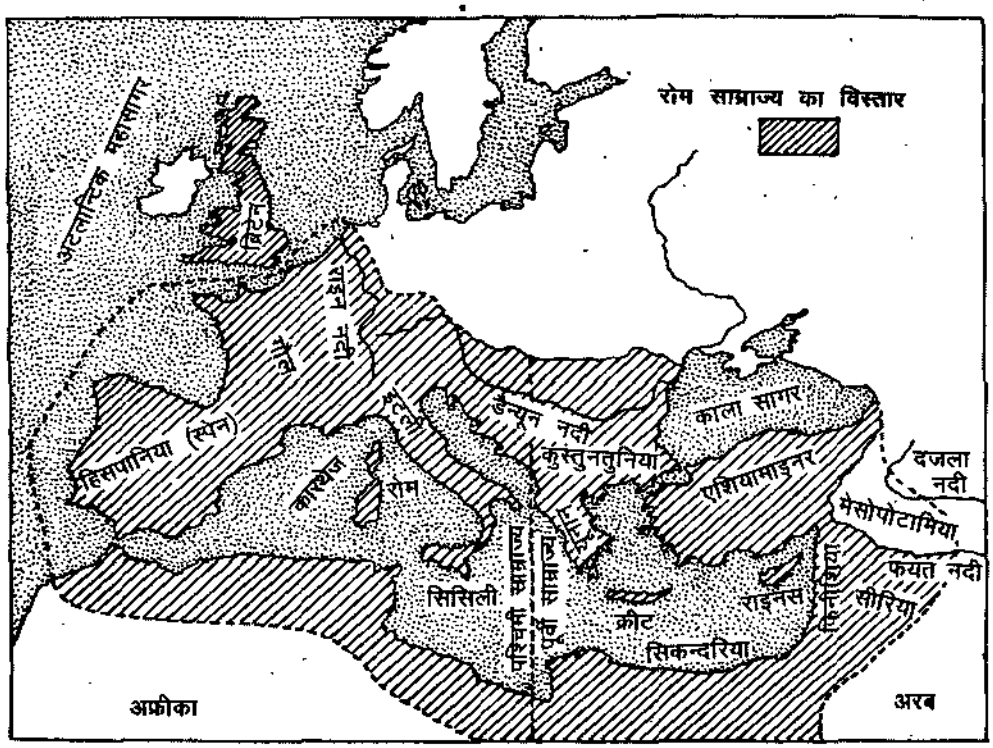

मानचित्र 2.1

3. सीजर के हमले : सीजर ने 55 ई.पू. में ब्रिटेन पर हमला किया। सीजर की सेना में कुल सैनिकों की संख्या दस हजार थी। उसके पास कई बड़े-बड़े जहाज थे। इतनी बड़ी सेना व जहाज होने के बावजूद ब्रिटनों ने बहुत ही बहादुरी से सामना किया। शिक्षा व अनुभव के क्षेत्र में रोमन ब्रिटनों से कहीं अधिक शिक्षित व अनुभवी थे। इस अनुभव का रोमनों ने इस हमले में प्रयोग किया। रोमनों के पास बहुत बड़े जहाज थे और इतने बड़े होने के कारण इन्हें सरलता से किनारे तक पहुँचाना थोड़ा कठिन था। एक भयंकर तूफान से भी सीजर को बहुत हानि उठानी पड़ी। इस तूफान के कारण रोमनों के कई जहाज नष्ट हो गए। अत: इस बार सीजर को विशेष सफलता नहीं मिल पाई और वह ब्रिटनों से संधि कर गॉल चले आये, किन्तु सीजर उन लोगों में से नहीं था जो चुपचाप परिस्थिति को स्वीकार कर लेते थे बल्कि वह परिस्थिति को बदलकर उसका फायदा उठाने वालों में से था। वह एक बार फिर ब्रिटनों से अधिक विशाल सेना लेकर 54 ई.पू. में ही फिर ब्रिटेन पर चढ़ाई करने लगा। पहली बार ब्रिटनों ने अपने रथ के साथ किनारे पर ही रोमनों का विरोध करना शुरू कर दिया था, परन्तु इस बार किनारे पर रोमनों का विशेष विरोध नहीं हुआ। कैसीवेलानस के नेतृत्व में टेम्स नदी के उत्तर की ओर ब्रिटनों ने रोमनों का मुकाबला किया। सीजर ने कुछ लोगों को घूस आदि देकर अपने पक्ष में कर लिया। ब्रिटन लोग हार गये और रोमनों को वार्षिक कर देने के लिए वायदा किया। इसके बाद सीजर लौट आया।

सीजर ने ब्रिटेन को रोम साम्राज्य में नहीं मिलाया। उसका असल उद्देश्य था ब्रिटनों को सजा देना, क्योंकि वे उसके शत्रुओं की मदद करते थे। इसके अतिरिक्त रोम से ब्रिटेन बहुत दूर था। अतएव वह इतनी दूर शासन करने में कठिनाई देखता था। रोम में सीजर के विरोध में एक दल भी काम कर रहा था। यही वह कारण है कि सीजर ब्रिटेन पर स्थायी आधिपत्य स्थापित नहीं कर पाया, किन्तु सीजर के इस हमले के दो परिणाम हुए। ब्रिटेन पर आगे स्थायी विजय पाने के लिए मार्ग खुल गए। इसके अतिरिक्त सीजर ने कमेंटरी नामक एक पुस्तक लिखी। इससे ब्रिटनों के संबंध में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त है।

4. ब्रिटेन की जीत : सीजर के वापस लौट जाने के बाद करीब सौ वर्षों तक ब्रिटेन-निवासी सुख-चैन से रह सके। रोम के सम्राट क्लौडियस (41-54) ब्रिटेन को स्थायी रूप से जीतने की सोचा। उसने 43 ई. में प्लैटियस के नेतृत्व में एक बहुत बड़ी सेना भेज दी। प्लैटियस ने 5 वर्षों के अंदर (43-47 ई.) ब्रिटेन के समस्त

नोट

दक्षिणी भाग को जीत लिया। उसके बाद स्केपुला (47-52 ई.) ने उसके कार्य को जारी रखा। इस समय कैसीवेलानस के वंशज कैरेडोक (कारटेक्स) ने रोमनों के विरुद्ध संगठित विद्रोह किया। उसने रोमनों का मुकाबला करने के लिए ब्रिटनों को जोशीले शब्दों में ललकारा। ब्रिटनों ने बहुत ही बहादुरी के साथ उनका सामना किया, परन्तु उन्हें इसमें हार का सामना करना पड़ा। कैरेडोक को पकड़कर बंदी बना लिया गया और उसे रोम भेज दिया गया। सम्राट ने उससे प्रभावित होकर उसे क्षमा कर दिया, किन्तु उसे ब्रिटेन लौटने की अनुमति नहीं दी गई। अब ब्रिटेन में शासन करने के लिए रोमन सूबेदार बहाल किये जाने लगे। इस तरह रोमन शासन की शुरुआत हो गयी।

58 ई. में पौलिनस ब्रिटेन का सूबेदार हुआ। उसने उत्तर-पश्चिम भाग को जीतने के लिए योजना बनायी। इस इलाके में ड्रुइड लोगों की प्रधानता थी। वे बड़े ही वीर लड़ाकू थे। पौलिनस ने ऐंगलसी टापू पर 61 ई. में चढ़ाई कर दी। ड्रुइडों ने घोर विरोध किया। उसी समय पूरब में आइसेनी जाति के लोगों ने भयंकर विद्रोह कर डाला। रानी बोडीशिया विद्रोह का नेतृत्व कर रही थी। वह विधवा स्त्री थी। वह बड़ी वीर थी और स्वतंत्रता उसे अपने प्राण से भी बढ़कर प्रिय थी। उसने अपने लोगों को आदेश दिया कि वे रोमनों को परास्त कर अपनी स्वाधीनता की रक्षा करें या मर मिटें। उसके आदेश पर बहुत लोग मर मिट जाने को तैयार हो गये। रोमनों की राजधानी कोलचेस्टर को तहस-नहस कर डाला गया। हजारों रोमन मारे भी गये। किन्तु अन्त में बोडीशिया पराजित हुई, लेकिन वह रोमनों के हाथ बन्दी नहीं बनायी जा सकी। इसके पहले ही उसने विष खाकर अपने प्राण का अन्त कर दिया। रोमनों ने भी कठोरतापूर्वक विद्रोह का दमन किया। हजारों ब्रिटन पुरुष तथा स्त्री मौत के घाट उतारे गये। कहा जाता है कि लगभग 80 हजार ब्रिटेनवासी मृत्यु के शिकार हुए। रोमन विजय का सिलसिला जारी रहा।

78 ई. में जूलियस ऐग्रिकोला ब्रिटेन में रोमन प्रांतों का शासक नियुक्त हुआ। वह बड़ा ही बुद्धिमान और शक्तिशाली सेनापति था। उसने जीत के इस सिलसिले को जारी रखा। उसने क्लाइड और फोर्थ नदी तक धावा बोल दिया। उसने रोमनों के अधिकार को ब्रिटेन के अधिकांश भाग पर मजबूत कर लिया। उन्होंने स्कॉटलैण्ड के दक्षिणी भाग को भी जीत लिया। अब ब्रिटेन भी रोमन साम्राज्य का ही एक हिस्सा बन गया था। इस समय यार्क रोमन शासन का एक मुख्य केन्द्र था। अब विजय का क्रम पूरा हो गया और रोमन शासन के युग का आरंभ हुआ।

ऐग्रिकोला ने 7 वर्षों (78-85 ई.) तक रोमन ब्रिटेन पर शासन किया। उसका शासन लोकप्रिय था। उसने कई विद्यालय तथा न्यायालयों का निर्माण करवाया। उसने कई सड़कें बनवाईं। विजित प्रदेशों की रक्षा के लिए कई किलों का निर्माण करवाया। इस प्रकार उसने ब्रिटन लोगों को सभ्यता के पथ पर अग्रसर किया।

स्कॉटलैण्ड के जिस प्रदेश को पहले ही जीत लिया गया था, वह रोमनों के हाथ में नहीं रहा। आयरलैण्ड को तो जीता ही नहीं जा सका। 121 ई. में सम्राट हैड्रियन ने ब्रिटेन में रोम-साम्राज्य की उत्तरी सीमा निर्धारित कर दी। सालवे से टाइन तक न्यूकैसल से कार्लाइल तक लगभग 74 मील लम्बी पत्थर की एक दीवार बनवायी गयी। यह दीवार "हैड्रियन दीवार" के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह 7 फुट चौड़ी और 16.5 फुट ऊँची थी। इसमें जहाँ तहाँ मीनारें भी बनाई गईं। कुछ-कुछ दूरी पर प्रमुख स्थानों में सैनिकों के रहने के लिए चौकियों की भी स्थापना हुई थी। इनके खण्डहर को आज भी देखा जा सकता है। 140 ई. में हैड्रियन दीवार के उत्तर करीब 38 मील लम्बी क्लाइड से फोर्थ तक एक अन्य मिट्टी की दीवार का निर्माण हुआ। यह एन्टोनाइन दीवार के नाम से पुकारी गई, क्योंकि वह सम्राट एन्टोनियस (138-161 ई.) की आज्ञा से बनायी गई थी। यह करीब 20 फुट चौड़ी थी। इस दीवार के एक तरफ चौफेरा काफी गहरी तथा चौड़ी एक खाई का भी निर्माण किया गया था।'

5. रोमन शासन की समाप्ति : इस प्रकार आयरलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड को छोड़ समस्त द्वीप पर वर्षों के भीतर (43-85 ई.) रोमन अधिकार कायम हो गया। इसके बाद लगभग 325 वर्षों तक (85-410 ई.) रोमन ब्रिटेन में शासन करते रहे। शासन के दो प्रमुख केन्द्र थे—उत्तर में यार्क और दक्षिण में कोलचेस्टर। 410 ई. में रोम साम्राज्य पर उत्तर की ओर हूण, गोथ आदि बर्बर जातियों के आक्रमण शुरू हुए। अब ब्रिटेन से रोमन सेना को रोम बुला लिया गया। इसके साथ ब्रिटेन से रोमन शासन की समाप्ति हो गयी।

2.4 रोमन शासन का प्रभाव

नोट

जिस प्रकार इतिहासकारों के बीच भारत पर यूनानी प्रभाव के संबंध में मतभेद है उसी प्रकार प्राचीन ब्रिटेन पर रोम प्रभाव के संबंध में भी इतिहासकारों के बीच मतभेद हैं। **स्टन्स** एवं **वार्नर** का मत है कि ब्रिटेन पर रोमन शासन का कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा और आंग्ल-सैक्सन विजय के साथ रोमन सभ्यता के सभी चिह्न नष्ट हो गये। ब्रिटेन के भविष्य पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

वार्नर के शब्दों में, "रोमन आधिपत्य (ब्रिटेन पर) की कहानी ऐतिहासिक दृष्टि से ही मनोरंजक है, किन्तु शायद इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं है।" किन्तु ऐशले नामक इतिहासकार का मत इससे बिल्कुल भिन्न है। उसके विचारानुसार ब्रिटेन से रोमन सभ्यता के समस्त चिह्नों को मिटा देना सम्भव नहीं था। बहुत-सी ऐसी रोमन संस्थाएँ तथा अन्य चिह्न थे जो आंग्ल-सैक्सन काल में भी कायम रहे अत: ब्रिटेन पर रोमन शासन का स्थायी प्रभाव पड़ा, यही मत माना जा सकता है। रोमनों ने ब्रिटेन पर 350 वर्षों तक शासन किया, यह सम्भव नहीं मालूम पड़ता है कि इतने दीर्घकाल तक शासन करने के बावजूद भी ब्रिटेन रोमन सभ्यता से प्रभावित नहीं हुआ हो। ब्रिटेन पर रोमन शासन के कई प्रभाव पड़े। ये प्रभाव अच्छे तथा बुरे दोनों प्रकार के थे।

1. लाभ : रोमन शासकों ने रोमनीकरण की नीति अपनाई रोमन सभ्यता ब्रिटनों की सभ्यता से बहुत बढ़ी-चढ़ी थी अत: रोमन रहन-सहन, वेशभूषा, बोलचाल की नकल की जाने लगी। रईस लोग लैटिन भाषा व्यवहार में लाने लगे। आंग्ल भाषा में लैटिन के कई शब्द घुस गये और लैटिन शिक्षा को प्रोत्साहन मिला। रोमन अमीरों की तरह धनी ब्रिटन भी बड़ी-बड़ी कोठियों में रहना पसंद करने लगे। इन कोठियों में ऐशो-आराम के बहुत साधन मौजूद थे। रोमनीकरण की नीति से दक्षिणी ब्रिटेन ही अधिक प्रभावित हुआ था।

2. जंगलों से घिरा ब्रिटेन : ब्रिटेन में झाड़ियों की भरमार थी। रोमनों ने बहुत-सी जंगल वाली भूमि को साफ कर उसे खेती करने के लायक बनाया। खेती में रोमन प्रणाली का प्रचार किया गया। पैदावार बहुत ज्यादा बढ़ गयी। अब ब्रिटेन को 'उत्तर का अन्न भंडार' कहा जाने लगा। अनेक बाग-बगीचे भी लगाये गये। कुछ फसलें तथा पेड़-पौधे बाहर से मंगाकर भी ब्रिटेन में लगाए गये।

चेस्टर, कोलचेस्टर, यार्क, लन्दन और लिनकोन जैसे अनेक नगर बसाये गए। इन नगरों में अनेक भवन, स्नानागार, नाटकघर तथा न्यायालय बनाये गये। नगरों में पक्की सड़कें बनाई गईं। रोमन ब्रिटेन में अच्छी सड़कों का जाल-सा बिछ गया। सभी मुख्य सड़कें लन्दन से संबंधित थीं। सड़कों का नामकरण भी किया गया था। सैकड़ों दुर्ग या किलों का भी निर्माण हुआ। नदियों पर अनेकों पुल बनवाये गये। मुख्य स्थानों में फौजी छावनियाँ कायम हुईं। सड़कों के द्वारा सेना कहीं से कहीं आसानी से भेजी जा सकती थी।

खान व्यवसाय को बढ़ावा मिला। टीन, शीशा, नमक, लोहे आदि धातुओं की खानों में खुदाई की जाने लगी। मिट्टी के अच्छे बर्तन भी बनाये जाने लगे। नाव-जहाज भी बनते थे।

ब्रिटेन में रोमनों ने तीन सदियों तक शान्ति बनाए रखी। यह रोमन शान्ति (पैक्स रोमना) का काल था। अत: इसमें वाणिज्य-व्यापार की भी खूब वृद्धि हुई। इससे धन में वृद्धि हुई और धन बढ़ने से लोगों के सुख में वृद्धि हुई। व्यापार के विकास से संसार से ब्रिटेन का सम्पर्क भी बढ़ने लगा।

ब्रिटेन में ईसाइयत को प्रारंभ करने का श्रेय भी रोमनों को ही प्राप्त है। रोमन ब्रिटेन में ईसाई धर्म का प्रचार हुआ और एक चर्च स्थापित किया गया। इसी चर्च के पादरियों ने आयरलैण्ड में ईसाई धर्म का प्रचार करने में खूब दिलचस्पी ली। अब ब्रिटेन में ड्रुइडों का प्रभाव कम हो गया और नरबलि की भयंकर प्रथा समाप्त कर दी गई।

3. हानि : हमने अभी तक ऊपर रोमन के शासन में हुए लाभों के बारे में पढ़ा परन्तु इस शासन ने केवल लाभ नहीं दिए बल्कि इनसे कुछ हानियाँ भी हुईं। अच्छे विदेशी शासन से त्रुटिपूर्ण स्वशासन को अच्छा माना जाता है। रोमन शासन विदेशी शासन था। **रेनर** के शब्दों में, रोमन सभ्यता की सारी बुराइयाँ देश में व्याप्त हो गईं। शासन तथा सेना में ब्रिटेनवासियों का सक्रिय सहयोग नहीं था। दोनों क्षेत्रों में रोमनों की ही प्रधानता थी। ब्रिटेन में लगभग 50,000 रोमन सैनिक तैनात किये गये थे। शासन-सूत्र भी रोमन अधिकारियों द्वारा ही संचालित होता था। अत: ब्रिटेनवासियों को शासन-संबंधी शिक्षा नहीं मिल सकी। वे रोमनों के अधीन रहकर विलासी तथा आलसी बन गये। वे युद्ध तथा सैनिक संगठन की कला भूलने लगे। इसका भयंकर परिणाम हुआ। जब रोमन ब्रिटेन छोड़कर 5वीं सदी के शुरू में रोम चले गये तो ब्रिटेनवासी असहाय हो गये। वे अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सके और आंग्ल-सैक्सन

जाति ने उन्हें अपने कब्जे में कर लिया। रोमन के ब्रिटेन में आने के बाद ब्रिटेनवासी अपनी सभ्यता को छोड़कर रोमनों की सभ्यता को अपनाने लगे जिससे ब्रिटेन की सभ्यता को खतरा पहुँचने लगा था।

नोट

2.5 आंग्ल-सैक्सन विजय

1. **ब्रिटेन पर उत्तर से हमले :** रोमन शासन के अंतिम काल में उत्तर की ओर से पिक्ट तथा स्कॉट के हमले ब्रिटेन पर होने लगे थे। ब्रिटेन से रोमनों के चले जाने के बाद ये हमले और भी अधिक होने लगे। ब्रिटन अपनी रक्षा करने में असमर्थ थे, अत: उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए रोम के एक सम्राट से प्रार्थना की। प्रार्थना बड़े ही दु:खपूर्ण शब्दों में की गई। उनके ये शब्द बड़े ही मार्मिक थे—"बर्बर शत्रु हमें समुद्र की ओर धकेलते हैं और समुद्र हमें फिर उन्हीं की ओर फेंक देता है।"

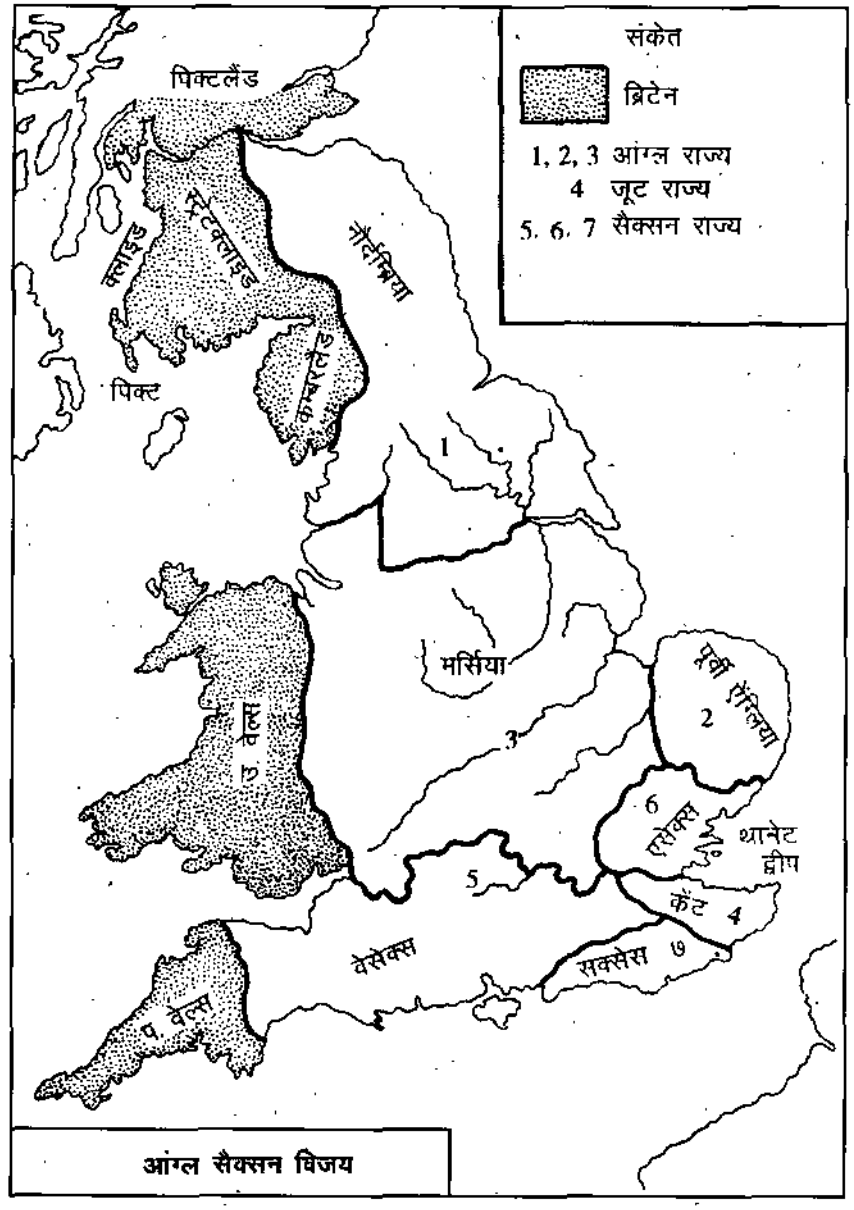

मानचित्र 2.2

ब्रिटेन पर आंग्ल-सैक्सनों द्वारा विजयी क्षेत्र का मानचित्र

इस प्रार्थना को 'ब्रिटनों का विलाप' कहते हैं, परन्तु इससे कोई खास लाभ नहीं हो पाया था। रोमन उस समय स्वयं संकट में थे, उनसे सक्रिय सहायता मिल पाना कठिन था। अतः उन्होंने लाचार होकर अंग्रेजों से मदद मांगी। उन्होंने ब्रिटेन के दक्षिण जूटलैण्ड के निवासी जूटों से सहायता मांगी।

नोट

2. जूटों द्वारा हमले : जब ब्रिटेन ने जूटों से सहायता मांगी तो वे उनकी सहायता करने हेतु तैयार हो गये। दो सरदारों (हेंगिस्ट तथा होरसा) के अधीन एक बड़ी सेना ब्रिटेन के मदद के लिए चल पड़ी। वे लोग सबसे पहले थेनेट द्वीप पर पहुँचे। ब्रिटेन पहुँचकर उन्होंने पिक्ट तथा स्कॉटों को मार भगाया। यह घटना 5वीं सदी के मध्य की है। जूट लालची थे, उनमें परोपकार की भावना नहीं थी। विजय प्राप्त करने के बाद वह वापस अपने वतन नहीं लौटे। ब्रिटन कमजोर थे किन्तु जूट शक्तिशाली थे। उनमें ब्रिटन को जीतने की इच्छा उत्पन्न हो गई। अतः जूटों ने ब्रिटन पर ही हमला शुरू कर दिया। इस युद्ध को एलिसफोर्ड का युद्ध कहा जाता है। इस युद्ध में जूटों की ही विजय हुई। जूटों ने केंट में अपना राज्य कायम कर लिया और धीरे-धीरे अपने राज्य का विस्तार करने लगे।

3. सैक्सनों द्वारा हमला : जूटों ने ब्रिटन पर बहुत अच्छी सफलता प्राप्त की थी। इस सफलता को देखकर ब्रिटेन पर सैक्सनों को हमला करने के लिए प्रोत्साहन मिला। 477 ई. में सीरसा तथा इल्ले नामक दो सरदारों के अधीन सैक्सनों ने ब्रिटेन पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटनों ने सैक्सनों का वीरतापूर्वक मुकाबला किया। सैक्सनों ने एसेक्स, ससेक्स और वेसेक्स पर कब्जा कर लिया। 520 ई. में मौंटबेडन की लड़ाई से आर्थर नामक सरदार ने सैक्सनों को पराजित किया था। इसके बाद लगभग 50 वर्षों तक ब्रिटेन की सिर उठाने की हिम्मत ही नहीं हुई। सन् 577 ई. में सैक्सनों ने ब्रिटेन पर पुनः चढ़ाई शुरू कर दी। डरहम की लड़ाई हुई जिसमें ब्रिटेन बुरी तरह से परास्त हो गया। इसके परिणामस्वरूप सैक्सनों का वेल्स तथा कार्नवल के बीच के भू-भाग पर अधिकार हो गया। इन दोनों स्थानों के ब्रिटन एक-दूसरे से अलग हो गये। इस विभाजन से ब्रिटनों की शक्ति कमजोर हो गई।

4. आंग्ल या ऐंग्ल का आगमन : अंत में ब्रिटेन में ऐंग्ल या आंग्ल जाति के लोग पहुँचे। ये लोग आक्रमणकारी थे। ब्रिटेन ने कमजोर होते हुए भी इनका पुरजोर विरोध किया, परन्तु फिर भी कुछ नहीं कर सके। 613 ई. में आंग्लों के साथ चेस्टर में एक बड़ी लड़ाई हुई। इसमें ब्रिटेन हार गया और इसमें आंग्ल विजयी हुए। उन्होंने ब्रिटेन के उत्तरी पूर्वी तथा मध्य भाग को आबाद किया। अब चेस्टर की विजय के फलस्वरूप कम्बरलैण्ड के ब्रिटन वेल्स के ब्रिटेन से अलग हो गया। अब ब्रिटेनों की शक्ति और भी कमजोर हो गई। आंग्लों के बनाये राज्यों में पूर्वी (ईस्ट) ऐंग्लिया, नौर्दम्ब्रिया और मर्सिया प्रसिद्ध हैं। नौर्फोक तथा सफोक के राज्यों को मिलाकर पूर्वी ऐंग्लिया का राज्य बना था।

इस प्रकार ट्यूटन जाति की तीन शाखाओं ने सात राज्यों को कायम किया–

1. जूटों ने केंट में,
2. सैक्सनों ने एसेक्स, ससेक्स तथा वेसेक्स में,
3. आंग्लों ने पूर्वी ऐंग्लिया, नौर्दम्ब्रिया तथा मर्सिया में।

इन राज्यों को सप्त राज्य (हेपटार्की) कहते हैं। इस विजय प्राप्ति के बाद प्राचीन ब्रिटन निवासी तीन क्षेत्रों में विभाजित हो गये–(1) वेल्स, (2) कार्नवाल, (3) कम्बरलैण्ड। आगे चलकर ये तीनों राज्य भी आंग्ल-सैक्सन के ही अंग बना दिए गए।

नोट

5. रोमन तथा आंग्ल-सैक्सन के बीच तुलना:

रोमन विजय	आंग्ल-सैक्सन विजय
1. रोमन को ब्रिटेन पर विजय प्राप्त करने में केवल 42 वर्षों का समय लगा।	1. आंग्ल-सैक्सन को ब्रिटेन पर विजय प्राप्त करने में 150 वर्ष का समय लगा।
2. रोमन शासन सैनिक शासन था। ब्रिटेन में लगभग 50,000 रोमन सैनिक सत्ता तथा शान्ति बनाये रखने के लिए रखी गई थी। उत्तरी ब्रिटेन तो विशाल छावनी के रूप में दिखता था।	2. आंग्ल-सैक्सन लोगों ने ऐसी सभ्यता और संस्कृति की नींव रखी जो सही साबित हुई। उन्होंने पुराने रोमन ब्रिटेन को नष्ट कर दिया और नए ब्रिटेन की रचना की।
3. रोमनों ने ब्रिटेन में लैटीन सभ्यता का प्रचार किया।	3. आंग्ल-सैक्सनों ने ट्यूटॉनिक सभ्यता का प्रचार किया।
4. रोमन विजय के साथ विदेशों से ब्रिटेन का सम्पर्क बढ़ा।	4. आंग्ल-सैक्सन काल में (449-613) यह सम्पर्क समाप्त हो गया।
5. रोमनों ने ब्रिटेनवासियों को सभ्यता की बहुत-सी बातें सिखलाईं। रोमन, ब्रिटनों की अपेक्षा अधिक सभ्य थे उन्होंने देश में शासन कायम किया, कानून चलाया, लैटिन भाषा और ईसाई धर्म का प्रचार किया।	5. आंग्ल-सैक्सन जाति के लोग कठोर एवं असभ्य थे। लूटपाट, तहस-नहस में अधिक दिलचस्पी रखते थे। उन्होंने ब्रिटेन की बहुत-सी सभ्यता को तहस-नहस कर दिया। उन्होंने रोमन सभ्यता के अनेक चिह्न मिटा दिए और ईसाई धर्म को भी लुप्त कर दिया।
6. रोमन का मुख्य उद्देश्य अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए ब्रिटेन को दण्ड देना था। वह वहाँ बसना नहीं चाहते थे।	6. आंग्ल-सैक्सन के लोग वहाँ पर बसना चाहते थे इसलिए वे अपने परिवार, संस्था एवं सम्पत्ति के साथ ब्रिटेन आए थे।
7. रोमन की स्थिति वही थी जो भारत में आए हुए अंग्रेजों की थी। रोमन तथा अंग्रेज दोनों ही विजेता एवं शासक के रूप में रहे और अपनी सभ्यता का, धर्म का प्रचार-प्रसार कर तथा इच्छापूर्ति के बाद वापस अपने वतन लौट गए।	7. आंग्ल-सैक्सनों के लोगों की स्थिति भारत के मुसलमानों जैसी ही थी। उन्होंने ब्रिटेन को अपना घर बना लिया और वहीं पर बस गये।

6. रोमन तथा आंग्ल-सैक्सन का ब्रिटेन पर प्रभाव : आंग्ल-सैक्सन तथा जूट तीनों एक ही जाति (ट्यूटन जाति) के अंग थे। ये तीनों ही उत्तरी जर्मनी में राइन नदी तथा बाल्टिक सागर के मध्य रहते थे। जब ये ब्रिटेन में जाकर बस गये थे तब तीनों ही धीरे-धीरे मिल गये और इसी तरह 'अंग्रेज जाति' का जन्म हुआ। अत: यह कहा जा सकता है कि ये तीनों जाति अभी के अंग्रेज जाति के पूर्वज थे। इन तीनों में आंग्ल लोगों की प्रधानता थी क्योंकि इनकी संख्या सबसे अधिक थी। उन्हीं के नाम पर द्वीप का नाम 'ऐंग्ललैण्ड' पड़ा। यह इंग्लैण्ड या इंगलिस्तान के नाम से भी जाना जाता है। उन लोगों के देवताओं के नाम पर आंग्ल भाषा में दिनों का नामकरण हुआ है।

आंग्ल-सैक्सन तथा जूट बड़े ही कठोर और क्रूर, लुटेरे और लड़ाकू थे। उन्होंने बहुत से ब्रिटनों को मौत के घाट उतार दिया। बहुत से ब्रिटन पश्चिम की ओर ढकेल दिये गये और कुछ लोग गुलाम बना लिए गये। रोमन सभ्यता के बहुत से चिह्न मिटा डाले गये। पादरी तथा गिरजा भी उनके शिकार हुए। इस तरह उनके आक्रमण से ब्रिटेन की दशा बहुत बिगड़ गई। ब्रिटेन की स्थिति रोमनों के आने के पहले जैसी हो गई।

यद्यपि इन लोगों ने विनाश में आनंद का अनुभव प्राप्त किया, फिर भी वे कोरे जंगली नहीं थे। उनकी अपनी भाषा थी, अपनी संस्थाएँ थीं, अपने नियम थे। उन्होंने अपने पथ-प्रदर्शन में एक नयी सभ्यता एवं संस्कृति की सृष्टि

की और वही आधुनिक अंग्रेजी सभ्यता एवं संस्कृति की आधारशिला बनी। उसी आधार पर अंग्रेजी सभ्यता एवं संस्कृति का भवन निर्मित हुआ है। आंग्ल-सैक्सन काल से ही अंग्रेजों के क्रमबद्ध इतिहास का प्रारंभ होता है। उस समय से ब्रिटिश समाज में आवश्यकतानुसार परिवर्तन हुए हैं, किन्तु क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हुए हैं। अत: अंग्रेज अपने इन पूर्वजों की कृतियों में गर्व तथा गौरव का अनुभव करते हैं।

नोट

ट्यूटन जाति की इन तीनों शाखाओं में एकता का अभाव था। अत: वे मिलकर एक सबल केन्द्रीय शक्ति का विकास नहीं कर सके। उनके समय में स्थानीय संस्थाओं को ही प्रधानता रही। नार्मन विजय के साथ केन्द्रीय शक्ति का विकास शुरू हुआ।

पहले ब्रिटेन में एक ही राजा था, वह था रोम का राजा। ब्रिटेन में उसी का शासन चला करता था, परन्तु अब ब्रिटेन दस राज्यों में बँट चुका था। आंग्ल-सैक्सन के सात राज्य तथा ब्रिटेन के तीन। अत: ब्रिटेन में रोमन की जो एकता थी वह भी अब समाप्त हो चुकी थी।

2.6 ब्रिटेन में ईसाई धर्म का प्रचार

ब्रिटेन में रोमनों के आगमन से ईसाई धर्म का भी प्रवेश हो चुका था, परन्तु आंग्ल-सैक्सन जाति के लोगों को ईसाई धर्म के प्रति कोई रुझान नहीं था। वे ईसाई धर्म के विरोधी थे। वे बहुदेववादी, हिंसावादी और मूर्तिपूजक थे। वे पूजा-पाठ, पशु-बलि, मद्यपान पर बहुत जोर देते थे। आंग्ल-सैक्सन के ब्रिटेन में आने से ईसाई धर्म जाने कहाँ लुप्त होने लगा, परन्तु इतने बड़े द्वीप से इतनी आसानी से ईसाई धर्म को लुप्त कर पाना कठिन कार्य था। ईसाई धर्म वेल्स, स्कॉटलैण्ड, आयरलैण्ड में ब्रिटनों के बीच हमेशा जीवित ही रहा। यह केल्टिक ईसाई धर्म कहलाता था। इन स्थानों पर पादरी ईसाई धर्म का प्रचार किया करते थे। आंग्ल-सैक्सन लोगों के बीच भी पादरियों ने अपने धर्म का प्रचार करने का बहुत प्रयास किया। यहाँ तक कि रोमनों ने उन्हें ईसाई बनाने का भी खूब प्रयत्न किया। इस तरह केल्टिक तथा रोमन पादरियों के प्रयत्न से आंग्ल-सैक्सन के लोगों ने ईसाई धर्म को स्वीकार किया। आयरलैण्ड के उत्तर में आयोना द्वीप केल्टिक ईसाई मत का केन्द्र था और रोमन ईसाई मत का केन्द्र इटली में रोम था।

1. **केल्टिक पादरियों के प्रयत्न :** 'संत पेट्रिक' का नाम केल्टिक पादरियों में सबसे अधिक मशहूर है। उसका जन्म ब्रिटेन में ही हुआ था। उसने इटली में भी शिक्षा ली थी। उसका कार्य-क्षेत्र आयरलैण्ड में था। उसने 432 ई. में आयरलैण्ड में रोमन-चर्च के आधार पर एक चर्च का निर्माण किया। इसी तरह उसने आयरलैण्ड में ईसाई धर्म का प्रचार किया। वह अभी भी उच्च दृष्टि से देखा जाता है। 'संत कोलम्ब्रा' भी केल्टिक ईसाई मत का एक प्रसिद्ध अनुयायी था। उसने 563 ई. में आयोना द्वीप में एक मठ बनवाया था। उसने पश्चिमी स्कॉटलैण्ड में पिक्ट लोगों के बीच ईसाई मत फैलाया। आयोना में एक 'संत ऐडन' नामक पादरी भी रहता था। उसने 7वीं सदी के प्रारंभ में नौर्दम्ब्रिया में एक मठ बनवाया था। इसी तरह ईसाई मत का प्रचार हुआ। वहाँ के राजा ओस्वाल्ड ने केल्टिक ईसाई धर्म को स्वीकार किया। इसके बाद मर्सिया तथा एसेक्स में भी केल्टिक ईसाई मत फैल गया।

2. **रोमन पादरियों का प्रयत्न :** रोमन पादरियों ने जिस प्रकार आंग्ल-सैक्सनों के बीच ईसाई धर्म का प्रचार किया वह कहानी बड़ी ही रोचक है। इस कहानी के अनुसार, एक व्यापारी कुछ अंग्रेज बच्चों को रोम के बाजार में बेचने के लिए ले गया। रोम के ग्रिगोरी नामक पादरी ने उन बच्चों को देखा और उनकी सुन्दरता एवं सज्जनता देखकर अति प्रसन्न हुआ। वह व्यापारी से उन बच्चों के बारे में पूछताछ करने लगा। तब व्यापारी ने कहा, "नहीं-ऐंग्ल नहीं, ऐंजल (देवदूत) हैं क्योंकि इनके चेहरे देवताओं के समान हैं। यह मरने के बाद स्वर्ग में देवताओं के साथ रहेंगे।" पादरी ने बच्चों की सुन्दरता को पढ़ लिया परन्तु उनके अंदर की सुन्दरता को नहीं पढ़ पाए। उन्होंने बच्चों तथा उनके देश के लोगों को आत्मा से सुन्दर बनाने का निश्चय किया। इसलिए वे उन निवासियों को ईसाई धर्म के संदेश द्वारा सत्य के प्रकाश से रूबरू कराने चल पड़े।

3. **संत आगस्टाइन का आगमन :** पोप ग्रिगोरी ने इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए संत आगस्टाइन नामक पादरी को भेजा। उसके साथ कुछ अन्य पादरी भी थे। संत आगस्टाइन 597 ई. में केन्ट राज्य के निकट थेनेट द्वीप में पहुँचा। इसके बाद उसने केन्ट राज्य में प्रवेश किया। केन्ट का राजा एथेलबर्ट था। उसकी रानी

नोट

बर्था फ्रांसीसी ईसाई महिला थी। अत: आगस्टाइन का केन्ट राज्य में बड़ा स्वागत हुआ। एक सभा का आयोजन हुआ और आगस्टाइन ने ईसाई मत के संबंध में उपदेश दिया। एथेलबर्ट ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। कैन्टरबरी नामक स्थान में एक चर्च बनाने के लिए आगस्टाइन को अनुमति दी गई और वही इसका प्रथम आर्कबिशप (प्रमुख पादरी) भी बहाल हुआ। तब से अब तक कैन्टरबरी के चर्च और आर्कबिशप को बहुत ही उच्च दृष्टि से देखा जाता है। इंग्लैण्ड के धार्मिक क्षेत्र में कैन्टरबरी का आर्कबिशप सबसे बड़ा अधिकारी रहा है। 8 वर्ष के बाद इंग्लैण्ड में ही आगस्टाइन की मृत्यु हुई। जब एथेलबर्ट ने ईसाई धर्म कबूल कर लिया तो उसकी अधिकांश प्रजा ने भी इस धर्म को मान लिया।

4. रोमन ईसाई मत का प्रचार : केंट के बाद भी इंग्लैण्ड में अन्य भागों में रोमन ईसाई मत का प्रचार होने लगा। नौर्दम्ब्रिया के राजा एडविन ने केंट के राजा एथेलबर्ट की पुत्री एथेलबर्गा से विवाह किया था। एथेलबर्गा अपने साथ एक पादरी जिसका नाम पौलीनस था उसको भी लेते हुए आई थी। पौलीनस आगस्टाइन का ही एक मित्र था। पौलीनस ने राजा एडविन को ईसाई धर्म स्वीकार कराया। धीरे-धीरे उसकी प्रजा भी ईसाई धर्म के प्रति आकर्षित होने लगी। इस समय पेंडा मर्सिया का राजा था। वह ईसाई धर्म का कट्टर दुश्मन था। अत: उसने एडविन को मार डाला और ईसाइयों पर अत्याचार करने लगा। इससे ईसाई धर्म का प्रचार कुछ समय के लिए रुक गया परन्तु जल्द ही इसका प्रचार पुन: प्रारंभ हो गया। नौर्दम्ब्रिया के राजा ओस्वी ने पेंडा को मार डाला। यह घटना 655 ई. की है। अब ईसाई धर्म का प्रचार तेजी से होने लगा। पेंडा की मृत्यु से मर्सिया के लोग भी ईसाई बनने लगे।

664 ई. तक ससेक्स को छोड़कर आंग्ल-सैक्सनों के 6 राज्यों में ईसाई मत का प्रचार हो गया। इनमें केंट; वेसेक्स और पूर्वी ऐंग्लिया में रोमन ईसाई मत का और अन्य राज्यों में केल्टिक ईसाई मत का प्रचार हुआ, परन्तु नौर्दम्ब्रिया में दोनों मतों का प्रचार हुआ।

5. केल्टिक तथा रोमनों में भिन्नता : केल्टिक तथा रोमन दोनों शाखाओं के विचारों में बहुत भिन्नता थी–

(*i*) रोमन शाखा का केन्द्र रोम था। रोम एक विशाल साम्राज्य तथा विकसित सभ्यता एवं संस्कृति का केन्द्र रह चुका था। यूरोप तथा संसार में यह स्थान बहुत ही पवित्र एवं प्रसिद्ध बन चुका था, परन्तु केल्टिक शाखा का केन्द्र आयोना द्वीप को यह प्रसिद्धि प्राप्त नहीं थी। यह कोई बड़ी सभ्यता का केन्द्र नहीं था।

(*ii*) रोमन मत के अनुयायी शारीरिक कष्ट को कोई महत्त्व नहीं देते थे, परन्तु केल्टिक मत के अनुयायी भारत के जैनों की तरह शारीरिक कष्ट को अधिक महत्त्व देते थे।

(*iii*) पोप ईसाई जगत का धर्मगुरु था और रोम में ही उसका निवास-स्थान था। रोम में ही महात्मा ईसा के दो महान शिष्यों-पीटर तथा पाल की समाधियाँ थीं। अत: धार्मिक दृष्टि से भी रोम की महत्ता थी। आयोना द्वीप के साथ ऐसा कोई संबंध नहीं था।

(*iv*) रोमन मत में पोप तथा पादरी की व्यवस्था थी, परन्तु केल्टिक मत में इनके लिए कोई स्थान नहीं था।

(*v*) बड़े-बड़े देशों के ही अधिकतर लोग रोमन मत के अनुयायी थे, परन्तु छोटे तथा पिछड़े देश के अधिकतम लोग केल्टिक मत के अनुयायी थे।

(*vi*) दोनों शाखाओं में ईस्टर पर्व भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न ढंग से मनाया जाता था। इनके अलावा कई अन्य छोटी-छोटी बातों में भी अंतर था।

2.7 ह्विटबी का सम्मेलन

इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म की दोनों शाखाओं के कायम होने से आपस में बैर-भाव बढ़ने लगा। इसे खतरनाक समझा गया और इसे दूर करने के लिए 664 ई. में ह्विटबी में एक धर्म सम्मेलन बुलाया गया। नौर्दम्ब्रिया के राजा ओस्वी ने सभापति का पद ग्रहण किया। सम्मेलन में दोनों शाखाओं के विद्वान इकट्ठे हुए। कोलमैन केल्टिक शाखा का और बिलफ्रीड रोमन शाखा का प्रमुख प्रतिनिधि था। बिलफ्रीड बहुत बड़ा तार्किक था। उसके तर्क से राजा ओस्वी बहुत ही प्रभावित हुआ और उसने रोमन मत की प्रधानता मान ली। उसने यह तर्क दिया था कि स्वर्ग की

कुंजी के स्वामी संत पीटर हैं। ओस्वी ने पोप को ईसाई जगत का नेता मान लिया। कुछ केल्टिक ईसाइयों ने ओस्वी के निर्णय का विरोध किया, किन्तु उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। धीरे-धीरे एक सदी के भीतर ही उन्होंने भी ह्विटबी के फैसले को कबूल कर लिया। अब इंग्लैण्ड एक धर्म के अंदर आ गया।

नोट

थ्योडोर टारटर्स : 668 ई. में पोप ने थ्योडोर टारटस (668-690 ई.) को कैन्टरबरी का आर्कबिशप नियुक्त कर भेजा। उसका जन्म टारटस नगर में हुआ था। अत: उसके नाम के साथ टारटस भी जुड़ा हुआ था। वह 22 वर्षों तक अपने पद पर बना रहा और इंग्लैण्ड में ही 690 ई. में इसकी मृत्यु हुई। वह प्रथम आर्कबिशप था जिसने समस्त इंग्लैण्ड में धाक जमायी थी। वह बहुत बड़ा विद्वान और धार्मिक व्यक्ति था। उसने इंग्लैण्ड के चर्च को रोमन प्रणाली के आधार पर संगठित किया। उसके आदेश से अनेक गिरजाघर बने और पादरियों की संख्या बढ़ायी गई। उसने अनुशासन पर बहुत जोर दिया और पादरियों के लिए अनेक नियम बनाए। प्रत्येक पादरी (बिशप) का अधिकार-क्षेत्र निश्चित कर दिया गया। गैर-ईसाई क्षेत्र को ईसाई धर्म के अंदर लाया गया। 681 ई. में ससेक्स के लोग भी ईसाई बना दिये गये। धार्मिक विचार-विमर्श के लिए पादरियों को सम्मेलन में बुलाने की प्रथा चलायी गयी। 673 ई. में हर्टफोर्ड में ऐसा पहला धर्म-सम्मेलन बुलाया गया। इस तरह थ्योडोर के पथ-प्रदर्शन में रोमन आधार पर अंग्रेजी चर्च का संगठन हुआ। अब पोप इंग्लैण्ड तथा यूरोप में सर्वेसर्वा बना रहा।

ह्विटबी के निर्णय का महत्त्व : ह्विटबी सभा के निर्णय का इंग्लैण्ड के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इससे इंग्लैण्ड का सम्पर्क रोम और रोमन चर्च से घनिष्ठ हो गया। यूरोप-इंग्लैण्ड का संबंध बढ़ा। रोम और यूरोप से सम्पर्क बढ़ने से इंग्लैण्ड ने रोमन सभ्यता एवं संस्कृति की भी कई बातें सीखीं। इसी निर्णय के फलस्वरूप 16वीं सदी में इंग्लैण्ड में धर्मसुधार आंदोलन संभव हो सका। यदि निर्णय केल्टिक मत के पक्ष में होता तो इंग्लैण्ड रोमन सभ्यता तथा धर्म-सुधार आंदोलन के कई लाभों से वंचित रह जाता। ह्विटबी सभा के निर्णय से इंग्लैण्ड में धार्मिक एकता कायम हुई और इससे राजनीतिक एकता के लिए मार्ग साफ हो गया। बिल्फ्रीड का मत था कि रोम का विरोध करना विश्व का विरोध करने के समान था। ओस्वी ने रोम का पक्ष लेकर बुद्धिमता का परिचय दिया।

सारांश

- रोमन पहले इटली के नदी किनारे बसे हुए थे। 55 ई. पूर्व से ही उन्होंने अपना मन ब्रिटेन पर हमला करने के लिए बना लिया था। जिसके लिए सीजर ने ब्रिटेन पर हमला भी किया परन्तु उसे जीत प्राप्त नहीं हो सकी और उसे संधि करके ही संतुष्ट होना पड़ा। सीजर वैसे भी केवल अपना बदला ही पूरा करना चाहता था।
- रोमन ने लगभग 325 वर्षों तक ब्रिटेन पर शासन किया था। बाद में किसी कारणवश रोमन सेना को वापस रोम बुला लिया। इस तरह ब्रिटेन पर रोमन शासन का अंत हो गया।
- रोमन ब्रिटेन से चले तो गए परन्तु जाते-जाते अपनी छाप अथवा प्रभाव ब्रिटेन पर छोड़ गए। ब्रिटेन को लाभ तथा हानि दोनों ही मिले। ब्रिटेन में रोमन भाषा, वेशभूषा, बोलचाल, रहन-सहन आदि सभी चीजों की नकल की जाने लगी। लोग बड़ी-बड़ी कोठियों में रहना पसंद करने लगे।
- ब्रिटेन जंगल, झाड़ियों से भरा पड़ा था। रोमन प्रणाली से खेती की पैदावार में वृद्धि हुई, खान व्यवसाय (टीन, शीशा, नमक, जहाज आदि) को बढ़ावा मिला, वाणिज्य व्यापार में तरक्की हुई, ईसाई धर्म का प्रचार हुआ, मिट्टी के बर्तनों आदि में वृद्धि हुई। अन्य कई लाभ रोमन प्रणाली से ब्रिटेन को मिले।
- रोमन सभ्यता के आने से ब्रिटेन में उनकी सभी बुराइयाँ भी आ गईं। ब्रिटेनवासियों को शासन संबंधी शिक्षा नहीं दी जाती थी।
- रोमन के चले जाने के बाद ब्रिटेन पर उत्तर से जूटों द्वारा, सैक्सनों द्वारा, आंग्ल तथा ऐंग्ल द्वारा हमले हो रहे थे और सभी को विजय भी प्राप्त हो रही थी। एक राष्ट्र के विजय का लाभ अन्य राष्ट्र उठा रहा थे। ब्रिटेन इस बात से बहुत परेशान हो चुका था।

नोट

- ब्रिटेन पर रोमन तथा आंग्ल-सैक्सन दोनों ने ही अधिक समय तक शासन किया। दोनों में बहुत अंतर था। दोनों के विचार, सभ्यता, धर्म उद्देश्य सभी भिन्न-भिन्न थे।
- ब्रिटेन पर रोमन के कब्जे के बाद ईसाई धर्म का तेजी से प्रचार शुरू हो गया जिसके लिए केल्टिक पादरी, रोमन पादरी, संत आगस्टाइन आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और रोमन राजा ने विवाह संबंधी कार्य भी किए।
- इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म के फैलने से बैर-भाव बढ़ गया जिसको रोकने के लिए धर्म संबंधी एक संधि की गई। जिसके लिए 664 ई. ह्विटबी में सम्मेलन आयोजित किया गया। इसी के द्वारा धर्म में सुधार सम्भव हो पाया था।

अभ्यास-प्रश्न

1. रोमन कौन थे? ब्रिटेन पर हमला करने का उनका उद्देश्य क्या था?
2. ब्रिटेन की जीत तथा रोमन शासन के अंत के बारे में विस्तार से बताइए।
3. रोमन शासन का ब्रिटेन पर क्या प्रभाव पड़ा? बताइए।
4. आंग्ल-सैक्सन ने किस प्रकार ब्रिटेन पर विजय प्राप्त की?
5. ब्रिटेन पर पड़े प्रभाव के आधार पर रोमन तथा आंग्ल-सैक्सन के बीच तुलना कीजिए।
6. ब्रिटेन में ईसाई धर्म का प्रचार किस प्रकार हुआ?
7. ह्विटबी सम्मेलन के ऊपर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
2. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
3. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
4. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
5. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
6. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*
7. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*

नोट

इकाई–3

इंग्लैण्ड का संगठन एवं डेन हमले : आंग्ल सैक्सन युग (802–1066 ई.)

[Organization of England and Den's Assault : Angl-saxon Age (802-1066 A.D.)]

संरचना (Structure)

3.1 उद्देश्य
3.2 प्रस्तावना
3.3 इंग्लैण्ड का संगठन
3.4 वेसेक्स के अतिरिक्त अन्य राज्यों की प्रधानता
3.5 डेन हमले
3.6 महान एलफ्रेड (848–901 ई.)
3.7 सैक्सन और डेन राज्य
3.8 डेन राज्य और अन्तिम सैक्सन राजे
3.9 आंग्ल सैक्सन काल की सभ्यता एवं संस्कृति
- सारांश
- अभ्यास-प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- इंग्लैण्ड के संगठन को जानने में।
- आंग्ल सैक्सन के राजाओं को विस्तार से जानने में।
- डेनों के इंग्लैण्ड के ऊपर हुए हमले को जानने में।
- आंग्ल सैक्सन युग की सभ्यता और संस्कृति को जानने में।

नोट

3.2 प्रस्तावना

इस इकाई के अध्ययन के बाद हमें इंग्लैण्ड के संगठन के बारे में जानकारी मिलेगी कि किस तरह 9वीं शताब्दी में वेसैक्स की प्रधानता में इंग्लैण्ड का संगठन हुआ। इंग्लैण्ड के संगठन के बाद किस तरह इंग्लैण्ड के राजाओं तथा आम जनता को डेनों के हमलों को बर्दाश्त करना पड़ा जिससे इंग्लैण्ड को जान-माल की बहुत हानि उठानी पड़ी। इन हमलों के बाद कुछ डेन तो इंग्लैण्ड में ही आकर बस गए जिससे इंग्लैण्ड को एक नई सभ्यता मिली। इंग्लैण्ड में हुए महान राजा एलफ्रेड के बारे में पढ़ा कि किस तरह उसने इंग्लैण्ड को एक मजबूत स्थिति पर पहुँचाया जिसके बाद वह डेनों के हमले से खुद की रक्षा करने में सक्षम हुआ। एलफ्रेड महान द्वारा डेनों के साथ इंग्लैण्ड द्वारा की गई बेड्मूर की संधि को समझ पाएँगे। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इंग्लैण्ड में सैक्सनों के स्वर्णयुग के बारे में भी विस्तार से समझ पाएँगे। उसके बाद 1016 ई. में एक डेन का इंग्लैण्ड पर अधिकार हुआ जिसका नाम कैन्यूट था। जिसने अंग्रेजों और डेनों को मिलाने का सर्वप्रथम प्रयास किया परन्तु उसकी मृत्यु के बाद जब एडवर्ड इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर बैठा तो कैसे उसने इंग्लैण्ड की जनता के साथ पक्षपात किया। इसके बाद हेंस्टिंग्स् के युद्ध के बारे में पढ़ेंगे। फिर आप आंग्ल सैक्सन लोगों की संस्कृति व सभ्यता के बारे में इस इकाई में पढ़ेंगे।

3.3 इंग्लैण्ड का संगठन

हमने पिछले अध्याय में पढ़ा है कि 400 से 600 ई. के अन्दर आंग्लों, सैक्सनों तथा जूटों ने ब्रिटेन पर विजय प्राप्त की। इन तीनों ने अलग-अलग छोटी-छोटी कई रियासतें बसायीं। इन रियासतों में लगातार छोटे-छोटे अन्तराल के उपरान्त युद्ध होते रहे और 7वीं सदी के प्रारम्भ तक सात राज्यों का उदय हुआ। केन्ट, पूर्वी ऐंग्लिया, ससेक्स, एसेक्स, वेसेक्स, नौर्दम्ब्रिया और मर्सिया ये वे 7 राज्य थे। 600 ई. से 800 ई. तक इन राज्यों में परस्पर युद्ध होते रहे। प्रत्येक राज्य का राजा अन्य राज्यों को दबाना चाहते थे और उन दूसरे राज्यों में मुख्याधिपति सम्राट या चक्रवर्ती (ब्रेटवाल्डा) की उपाधि धारण करना चाहते थे। केन्ट, पूर्वी ऐंग्लिया, नौर्दम्ब्रिया और मर्सिया सभी बारी-बारी से सर्वोच्च स्थान तक पहुँचे किन्तु उनका यह सर्वोच्च स्थान कभी स्थायी नहीं हुआ और अन्त में वेसेक्स का सितारा चमका और उसका सर्वोच्च स्थान पर स्थायी वर्चस्व स्थापित हुआ। 9वीं सदी के प्रारम्भ में वेसेक्स की प्रधानता में और उसी के नेतृत्व में स्थायी रूप से इंग्लैण्ड का संगठन हुआ।

यह विचारणीय है कि पूर्वी ऐंग्लिया, एसेक्स और ससेक्स को प्रभुता क्यों नहीं प्राप्त हुई? ये इंग्लैण्ड के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित थे। ये अधिक आबाद और समृद्धशाली राज्य थे, किन्तु अपनी सामरिक शक्ति खो बैठे थे। नौर्दम्ब्रिया, मर्सिया और वेसेक्स की सामरिक शक्ति जीवित थी, क्योंकि उन्हें वेल्सवासियों की ओर से सदा संकट की आशंका बनी रहती थी।

3.4 वेसेक्स के अतिरिक्त अन्य राज्यों की प्रधानता

सबसे पहले केन्ट राज्य प्रधान बना। ईसाई भी सर्वप्रथम वही बना था। केन्ट का राजा एथेलबर्ट बड़ा ही शक्तिशाली था। उसने 56 वर्षों तक (560-616 ई.) राज्य किया था। संत आगस्टाइन ने 617 ई. में एथेलबर्ट को सर्वप्रथम ईसाई बनाया था। उसकी मृत्यु के साथ ही केन्ट की प्रधानता भी जाती रही। केन्ट के बाद नौर्दम्ब्रिया प्रधान बना। 588 ई. में एथेलरिक बर्निसिया और डोरा को मिलाकर नौर्दम्ब्रिया का राज्य बनाया था। 613 ई. में एथेलरिक ने चेस्टर के युद्ध में ब्रिटनों के विरुद्ध विजय प्राप्त की थी। इसके बाद नौर्दम्ब्रिया में तीन प्रसिद्ध राजा हुए। एडविन (616-633 ई.), ओसवाल्ड (634-642 ई.), ओस्वी (642-671 ई.)। इन राजाओं ने ईसाई धर्म कबूल किया था और अपने राज्य की शक्ति का विस्तार किया था। एडविन एक शक्तिशाली शासक था। उसने पिक्टो को फोर्थ के उस पार धकेल दिया था। उसने वेल्स के ब्रिटनों को भी पहाड़ी में खदेड़ दिया। मर्सिया तथा पूर्वी ऐंग्लिया दोनों उसके

नोट

दोस्त थे। उनके केन्ट से वैवाहिक सम्बन्ध भी कायम हो गए थे। उसके पास जंगी बेड़े थे और उसने आयरिश सागर में भी दो टापुओं पर नियंत्रण स्थापित किया था। एडविन की वेसेक्स से दुश्मनी थी परन्तु उसने उसे भी हरा दिया और उस पर अपना आधिपत्य जमा लिया और वेसेक्स ने एडविन की प्रभुता स्वीकार कर ली। एडविन की भुजाओं में बल था, किन्तु वह ईसाई धर्म कबूल कर अहिंसा के पथ पर अग्रसर हुआ। मर्सिया का राजा पेंडा जो कि ईसाई धर्म का दुश्मन था। उसने नौर्दम्ब्रिया पर चढ़ाई कर दी और 633 ई. में हीथफील्ड के युद्ध में एडविन को मार डाला। इसके पश्चात् एक वर्ष तक नौर्दम्ब्रिया की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ। 634 ई. में ओस्वाल्ड के राजा बनने के बाद उसकी स्थिति में सुधार होने लगा। पेंडा ने ओस्वाल्ड के साथ भी मेसरफील्ड में युद्ध करके 642 ई. में उसे भी मार डाला। ओस्वाल्ड की मृत्यु के बाद ओस्वी जो कि उसका भाई था उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया। ओस्वी एक बहादुर एवं चतुर व्यक्ति था। 655 ई. में उसने मर्सिया पर हमला किया और पेंडा को मार दिया। पेंडा की मृत्यु ने ओस्वी की शक्तियों को बढ़ा दिया और अब वह ईसाई धर्म का प्रचार बहुत तेजी से करने लगा। 2 वर्ष के पश्चात् पेंडा के पुत्र ने ओस्वी का शासन स्वीकारने से इन्कार कर दिया और इस संदर्भ में ओस्वी कुछ नहीं कर पाया। इसके बाद नौर्दम्ब्रिया की शक्तियाँ कम होती चली गईं और स्कॉटलैंड के पिक्टों के साथ (685 ई.) एक लड़ाई हुई जिसमें नौर्दम्ब्रिया को हार का सामना करना पड़ा। इस हार के कारण उसकी प्रधानता भी जाती रही। नौर्दम्ब्रिया की अवनति के बाद मर्सिया की बारी आई। मर्सिया में दो प्रसिद्ध राजा हुए—एथेलबाल्ड (716-757 ई.) और ओफ्फा (757-796 ई.)। मर्सिया की शक्ति को इन राजाओं ने खूब बढ़ाया। एथेलबाल्ड का वेसेक्स के साथ संघर्ष था। एक बार वहाँ का राजा आइनी तीर्थयात्रा के लिए रोम गया तो एथेलबाल्ड ने वेसेक्स पर अपना कब्जा कर लिया, किन्तु दो वर्षों के बाद बफोर्ड की लड़ाई में उसे हार का सामना करना पड़ा, परन्तु ओफ्फा ने फिर से शक्ति एकत्रित कर ली। उसने वेल्स में ब्रिटनों से युद्ध किया, उन्हें परास्त किया और उनके कुछ प्रदेशों पर कब्जा कर लिया। उसने अपनी राज्य की सुरक्षा के बारे में सोचा और यही सोचकर उसने 70 मील लम्बे एक बाँध का निर्माण करवाया। यह बाँध मिट्टी का था और यह बाँध 'ओफा बाँध' के नाम से प्रसिद्ध था। इसके चिह्न आज भी देखने को मिलते हैं। यह बाँध ओफ्फा की अद्भुत एवं प्रबल शक्ति का परिचय कराता है। उस-समय के सर्वशक्तिशाली सम्राट शर्लमां के साथ समानता के आधार पर पत्र-व्यवहार करता था।

वेसेक्स का उत्थान—वेसेक्स का उत्थान मर्सिया के पतन के बाद हुआ। इसका उत्थान 9वीं सदी से शुरू हुआ। इसका उत्थान स्थायी था। अन्य राज्यों की तरह इसका उत्थान अल्पकालीन नहीं था। आधुनिक राजतंत्र का भी सम्बन्ध वेसेक्स के राजघराने के साथ बताया जा सकता है।

9वीं सदी के पूर्व कीबलीन ने डरहम की विजय प्राप्त की थी और आइनी ने समरसेट, ससेक्स तथा केन्ट पर अधिकार किया था। उसी समय लोगों को आशा हुई कि अब पश्चिमी सैक्सनों का आधिपत्य स्थापित होगा लेकिन दोनों बार नौर्दम्ब्रिया तथा मर्सिया की उन्नति के कारण लोगों को निराशा हुई। इसके बाद एगबर्ट ने फिर इंग्लैण्ड पर सैक्सन प्रभुता कायम करनी चाही, पर वह असफल रहा। उसे भागकर शार्लमां के दरबार में शरण लेनी पड़ी, परन्तु 802 ई. में उसका भाग्य चमका जबकि उसे वेसेक्स की गद्दी प्रदान की गई।

एगबर्ट ने 37 वर्षों (802-839 ई.) तक राज्य किया। इस दौरान उसे शक्ति बढ़ाने का अवसर मिला। उसने कार्नवाल के ब्रिटनों को पराजित किया। उसने मर्सियावासियों को हराकर केन्ट, ससेक्स और ऐसेक्स पर अधिकार स्थापित कर लिया। नौर्दम्ब्रिया और पूर्वी ऐंग्लिया दोनों ने उसकी सत्ता को स्वीकार कर लिया। पश्चिमी सैक्सनों का वह महान शासक था जिसने समस्त इंग्लैण्ड पर अपनी प्रभुता कायम की।

एडगर की मृत्यु 839 ई. में हुई। एडगर की मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य उसके लड़कों के बीच बाँट दिया गया। जिस कारण उनकी एकता में कमी होती गई और वेसेक्स का उत्थान भी समाप्त हो गया, किन्तु इसी समय एक ऐसी घटना हो गयी जिससे एकता को बड़ा प्रोत्साहन मिला और वेसेक्स की शक्ति पुनः बढ़ने लगी। यह घटना थी इंग्लैण्ड पर विदेशी शक्ति डेनों का हमला। एगबर्ट ने वेसेक्स को इस लायक बना दिया था कि वह डेनों के हमले का मुकाबला कर इंग्लैण्ड को बचा सके।

नोट

3.5 डेन हमले

डेनों की जानकारी : डेन लोगों को अनेक नामों से पुकारा जाता था। नौर्थमैन, नौर्समैन, नार्मन, वाईकिंग और स्कैंडिनेवियन कहने से भी उन्हीं का बोध होता है। ये लोग उत्तरी जर्मनी, नार्वे और डेनमार्क में रहते थे। डेनमार्क के निवासी होने के कारण इन्हें 'डेन' और यूरोप के उत्तरी भाग में रहने के कारण 'नौर्समैन' या 'नौर्थमैन'–उत्तरी लोग कहते थे। इनमें से कुछ उत्तरी फ्रांस में भी जाकर बस गए थे। वहाँ इन्हें नौर्मन कहा जाता था। इनके भूभाग को नौर्मण्डी के नाम से पुकारा जाता था। समुद्री इलाकों के आसपास रहने के कारण उन्हें वाईकिंग कहा जाता था। ये लोग ट्यूटन जाति के थे। इस तरह अंग्रेजों के साथ जातीय समानता थी, दोनों की भाषा भी समान थी, किन्तु दोनों के धर्म दो हो गये थे। आंग्ल-सैक्सन ईसाई बन गये थे और ये लोग गैर-ईसाई ही थे।

डेन पहाड़ी तथा ऊसर इलाके के रहने वाले थे। इस कारण वह शरीर से बहुत मजबूत होते थे। वे बहुत कठोर भी होते थे। वे बहुत गरीब थे और लूटपाट, मारकाट करने में बड़ी दिलचस्पी रखते थे। ईसाई-विरोधी होने के कारण वे पादरियों पर अत्याचार किया करते थे, मठों तथा गिरजाघरों को तोड़-फोड़ देते थे, उन्हें नष्ट करने से पहले वह एक बार भी नहीं सोचते थे। उनके पास जंगी बेड़े भी होते थे और वह जहाजों के द्वारा अन्य देशों पर आक्रमण करते थे। यूरोप में समुद्रतट पर स्थित प्रायः सभी नगरों पर इन्होंने आक्रमण किया था।

इंग्लैण्ड पर 8वीं सदी के अन्तिम चरण में डेनों ने हमले करने शुरू कर दिए, किन्तु डेनों ने केवल इंग्लैण्ड पर ही हमला नहीं किया बल्कि उन्होंने 9वीं सदी में कई देशों पर आक्रमण किया। फ्रांस, स्पेन, इटली, रूस, आयरलैण्ड, कुस्तुन्तुनिया सभी इनके हमले के शिकार हुए। डेन लोग आइसलैण्ड और ग्रीनलैण्ड में भी पहुँचे थे। कहा तो यह भी जाता है कि कोलम्बस से कुछ सदियों पूर्व ये अमेरिका के आसपास भी पहुँच चुके थे।

डेनों ने इंग्लैण्ड पर एक-दो बार नहीं अपितु कई बार आक्रमण किए। हर आक्रमण में उनका एक नया उद्देश्य शामिल होता था। डेनों के इंग्लैण्ड पर आक्रमण को तीन भागों में बांटा जा सकता है–

(क) लूटमार (786-851 ई.) : इन 65 वर्षों में डेनों ने इंग्लैण्ड पर कई बार आक्रमण किए। इनके हमलों की मुख्य वजह लूटपाट, मारकाट थी। वह आदमी, औरत, बच्चे सभी को मार देते थे व कुछ को बन्दी बना लेते थे। ये मुख्यतः गर्मी के मौसम में हमला करते थे। सर्दी के मौसम की शुरुआत होने पर यह अपने घर वापस आ जाते थे। इन्होंने 786 ई. में हमले करना शुरू किया था। उन्होंने 793 ई. में नौर्दम्ब्रिया के एक मशहूर मठ को उजाड़ डाला। उन्होंने आयरलैण्ड के आथोना मठ पर भी धावा बोल दिया। 835 ई. के बाद उनके हमले प्रायः हर साल होने लगे। बेसेक्स के राजा एगबर्ट ने हेंगिस्टडाउन में उन्हें 837 ई. में हरा दिया परन्तु इसके बाद भी उनका हमला बन्द नहीं हुआ। प्रायः इंग्लैण्ड के सभी राज्यों में इन्होंने लूटपाट मचायी।

(ख) इंग्लैण्ड में बसना (851-896 ई.) : इन 45 वर्षों में डेनों ने जब भी आक्रमण किए इसके बाद वह इंग्लैण्ड में लूटपाट मचाकर वापस नहीं लौटते थे बल्कि जहाँ-तहाँ बस जाते थे। 851 ई. में ही उन्होंने जाड़े के दिनों में इंग्लैण्ड में ही छावनियों में व्यतीत किया। 870 ई. तक बेसेक्स छोड़कर उन्होंने लगभग सभी राज्यों पर अपना आधिपत्य जमा लिया। 871 ई. में डेनों ने वेसेक्स पर भी चढ़ाई करना प्रारम्भ कर दिया। उनके विरुद्ध कई युद्ध लड़े गए। इस समय वेसेक्स का राजा एथेलरेड था। डेनों द्वारा किए गए इस युद्ध में एथेलरेड मारा गया। एल्फ्रेड जो कि एथेलरेड का भाई था उसने डेनों के इस हमले से वेसेक्स की रक्षा के लिए कदम बढ़ाए।

(ग) विजय एवं राज्य-स्थापना का काल : यह लगभग 62 वर्षों (980-1042 ई.) तक का काल था। इस काल में डेनों को इंग्लैण्ड में अपना राज्य कायम करने में सफलता प्राप्त हुई, किन्तु डेनों का इंग्लैण्ड पर शासनकाल 1042 ई. में समाप्त हो गया।

डेन हमले के नतीजे : इन हमलों के कारण इंग्लैण्ड के लोगों को बहुत दिनों तक परेशान रहना पड़ा। उनकी जान और जायदाद दोनों ही पर संकट आ पड़ा। उनकी शान्ति एवं सुरक्षा लगभग समाप्त हो गयी थी। इस स्थिति में सभी कमजोर मजबूतों की शरण में जाने लगे। इससे सामन्तवाद (फ्यूडलिज्स) का बीजारोपण हुआ। इस

युद्ध के कारण इंग्लैण्ड में बहुत बड़ी मात्रा में धन-जन का नुकसान हुआ। इन युद्धों के कारण वहाँ के जीवन में बहुत-सी बाधाएँ पहुँचने लगीं। उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। शिक्षा तथा ईसाई धर्म की प्रगति कुछ समय होने से इसके प्रत्येक क्षेत्र में बाधा पहुँची। शिक्षा तथा ईसाई धर्म की प्रगति कुछ समय के लिए रुक गई। अनेक मठ जो विद्या के केन्द्र थे, लगभग बर्बाद हो गए थे। इन मठों की बर्बादी के कारण साहित्य के सृजन नहीं हो सके। डेनों द्वारा इंग्लैण्ड पर हमले का एक अच्छा परिणाम यह भी निकला कि इन हमलों के कारण इंग्लैण्ड के छोटे-छोटे राज्य जिनमें परस्पर झगड़े होते रहते थे, एक साथ मिलकर डेन के हमलों का सामना करते थे। अब उनमें मेलजोल बढ़ने लगा। इस युद्ध के कारण जो डेन लोग इंग्लैण्ड में आकर बस गए थे, उनका वहाँ के आम निवासिओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध कायम होने लगा। जो कालान्तर में घुल-मिलकर एक हो गए। डेनों के आने से कुछ समय तक व्यापार तथा कला-कौशल के विकास में भी सहायता मिलती थी।

डेनों के इन हमलों का एक बुरा नतीजा यह भी सामने आया कि कैन्यूट ने देश का विभाजन कर जागीरदारों को सूबेदार नियुक्त कर दिया। इन सूबेदारों को अर्ल कहा जाता था। ये अपने-अपने क्षेत्र में बड़े ही शक्तिशाली थे। ये शक्तिशाली राजतंत्र के विकास में बड़े बाधक साबित हुए। गौडविन और हैरोल्ड जैसे शक्तिशाली अर्लो का राजा पर बड़ा प्रभाव था।

3.6 महान एलफ्रेड (848-901 ई.)

एलफ्रेड 848 ई. में बर्कशायर में पैदा हुआ था। वह वेसेक्स का राजा एगबर्ट का पोता और एथेलवुल्फ (839-858) का सबसे छोटा पुत्र था। 8 वर्ष का होते-होते वह दो बार रोम तीर्थयात्रा करने जा चुका था। उसके 23 वर्ष का होते-होते वेसेक्स को कई बार डेनों के हमलों व कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। 871 ई. में वह वेसेक्स का उत्तराधिकारी चुना गया।

डेनों के साथ संघर्ष: एलफ्रेड अपने भाई एथेलरेड का डेनों के साथ हुए युद्धों में साथ देता था। उसने कई बार डेनों के छक्के छुड़ा दिए थे। जब डेनों ने 876-77 ई. में गथरूम के नेतृत्व में चिपेनहाम नामक किले एलफ्रेड को घेर लिया तब वह बड़ी चतुराई से निकल भागा। एक दिन अचानक वह अपनी पूरी तैयारी के साथ डेनों पर टूट पड़ा। 878 ई. में एथानड्डन की लड़ाई में डेन बुरी तरह परास्त हुए। अब गथरूम ने सफलता की आशा छोड़ दी और संधि के लिए प्रस्ताव किया। एलफ्रेड ने भी प्रस्ताव मान लिया। उसी साल दोनों के बीच वेडमूर की संधि हो गई।

वेडमूर की संधि के अनुसार इंग्लैण्ड का दक्षिणी-पश्चिमी भाग एलफ्रेड के अधीन और उत्तरी-पूर्वी भाग डेनों के अधीन रहा। दूसरी शर्त के अनुसार डेनों ने ईसाई धर्म कबूल कर लिया।

वेडमूर की संधि ने यह भी सिद्ध कर दिया कि एलफ्रेड एक बड़ा ही बुद्धिमान, व्यावहारिक और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। हालांकि एलफ्रेड ने यह युद्ध जीता था परन्तु फिर भी वह इस संधि के लिए आसानी से मान गया। वह इस बात को समझ चुका था कि यदि वह इस संधि के लिए स्वीकृति नहीं देगा तो युद्धों का सिलसिला चलता रहेगा जिससे भारी जन-धन की हानि होती रहेगी। उसका मानना था कि आगे के युद्धों में किसकी विजय होगी यह निश्चित नहीं है। यदि डेन इन युद्धों में जीत गए तो पूरा का पूरा इंग्लैण्ड उनका हो जाएगा। इससे बेहतर उपाय एलफ्रेड को यह समझौता मानकर देश के विभाजन को स्वीकार करना लगा। उसके इस निर्णय के कारण उसके दुश्मन नष्ट नहीं हुए परन्तु वह कमजोर जरूर हो गए। डेनों के धर्म-परिवर्तन होने से भी अंग्रेजों के साथ धार्मिक एकता कायम हो गई और इससे अन्य एकता के लिए मार्ग साफ होने लगा।

वेडमूर की संधि के बाद

वेडमूर की संधि से डेन कमजोर हुए, किन्तु उन्हें कुचला नहीं जा सका। उन्हें भी इंग्लैण्ड का आधा हिस्सा मिल गया। अगले 14 वर्ष तक वह शान्ति से रहे थे परन्तु 892 ई. में वह फिर से अपने पुराने रूप में वापस आ गए और उन्होंने दोबारा हमले करने शुरू कर दिए। गथरूम अब मर चुका था। वे 4 वर्ष तक अपने हमलों के द्वारा

नोट

अंग्रेजों को तबाह करते रहे, किन्तु अन्त में परास्त और निराश होकर वे अंग्रेजी राज्य से हट गए। डेनों के विरुद्ध एलफ्रेड की यह अन्तिम विजय (चेस्टर) थी। इसके 5 वर्ष के बाद 901 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

एलफ्रेड के अन्य कार्य

एलफ्रेड एक कुशल शासक था तथा वह एक योग्य संगठनकर्ता भी था। एलफ्रेड एक लड़ाकू सैनिक भी था। आक्रमण के समय में वह एक शानदार रक्षक का दायित्व निभाता था तथा शान्ति के समय में वह अनेक क्षेत्रों में सुधार किया करता था। इस तरह उसके द्वारा किए गए कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य इस प्रकार हैं–

कानून सुधार : उस समय कानून बिखरे हुए थे। एलफ्रेड ने सभी कानूनों को इकट्ठा कर उन्हें एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध कराया। उस समय के दण्ड कठोर थे। एलफ्रेड ने इस क्षेत्र में भी सुधार कर नरमी लाई।

सैनिक सुधार: एलफ्रेड एक सबल सैनिक शक्ति की आवश्यकता समझता था। डेन उसके बहुत बड़े दुश्मन थे। उनसे संधि हो जाने पर वह उन पर विश्वास नहीं करता था। अतः उसने सैनिक शक्ति का पुनर्संगठन किया। वह सामुद्रिक शक्ति के महत्त्व को समझता था। उसने बड़े-बड़े और अधिक मजबूत जंगी बेड़े बनवाये। जिन्हें देखकर डेन भी डरने लगे। एलफ्रेड को ठीक ही अंग्रेजी नौसेना का जन्मदाता कहा गया है। उसने सेनानायकों (थेनों) की संख्या में वृद्धि कर दी। उसने अनेक किलों का निर्माण कराया जिनसे डेनों से देश की रक्षा में बहुत मदद मिली।

आर्थिक सुधार : डेनों के हमले से लन्दन तथा अन्य नगरों की जो बर्बादी हुई थी उसे ठीक किया गया। शान्ति हो जाने से वाणिज्य व्यापार को भी प्रोत्साहन मिला। व्यापारियों को कई सुविधाएँ दी जाने लगीं। वाणिज्य व्यापार में उन्नति होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगे।

धार्मिक सुधार : पुराने गिरजाघरों के मरम्मत कराये गये और नए गिरजाघर भी बनवाए गए। पोप को एक तरह का धार्मिक कर भेजा जाता था। इसे पीटर पेंस कहते हैं और यह हर साल भेजा जाता था।

सांस्कृतिक कार्य : सबसे बढ़कर उसने सांस्कृतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। यदि वह युद्धकाल में सैनिक था तो शान्तिकाल में शिक्षक था। एलफ्रेड स्वयं एक विद्वान था और वह विद्वानों का आदर करता था। एलफ्रेड ने अनेक मठों और विद्यालयों को बनवाया, अंग्रेजी तथा लैटिन की पढ़ाई पर विशेष जोर दिया जाता था। एलफ्रेड स्वयं भी अंग्रेजी तथा लैटिन भाषाओं को अच्छी तरह समझता था।

एलफ्रेड इतिहास का भी प्रेमी था। उसके समय में आंग्ल-सैक्सन इतिहास गाथा (ऐंग्लो-सैक्सन क्रॉनिकल) लिखा गया। यह अंग्रेजी भाषा में अंग्रेजों का सबसे प्राचीन इतिहास है। इसमें एलफ्रेड के समय तक का इतिहास लिखा गया, किन्तु उसके बाद के राजा भी अपनी घटनाओं को इसमें जुड़वाते रहे। 12वीं सदी के मध्य तक के इतिहास के लिए यह प्रामाणिक एवं बहुमूल्य ग्रन्थ है। ऐसे **बीड** ने तो इतिहास लिखा था, किन्तु वह विशुद्ध धार्मिक इतिहास था। इसके लिए एलफ्रेड ने ही पहला प्रयास किया। इससे पहले किसी ने राजनैतिक इतिहास लिखने का प्रयास नहीं किया था। अतः यदि एलफ्रेड को अंग्रेजी साहित्य का पिता कहें तो कोई अनुचित नहीं होगा।

मूल्यांकन : एलफ्रेड के द्वारा किए गए कार्यों के बारे में हमने अभी पढ़ा। वह एक राजनीतिज्ञ था, विद्वान था, योद्धा था, कानून निर्माता था, सुधारक था और हर दृष्टिकोण से वह एक महान व्यक्ति था। यदि वह एक सफल योद्धा के रूप में विजयी नहीं हुआ होता तो भी उसकी महानता में कोई कमी नहीं आती। वह एक कुशल शासक था जिसमें उसकी उपलब्धियाँ तारीफ के लायक हैं। उसकी एक बहुत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि उसने डेनों के साथ वेडमूर की संधि कर और उन्हें ईसाई बनाकर अपनी राजनीतिक बुद्धिमता एवं दूरदर्शिता का परिचय दिया। इसके बाद भी वह आराम से नहीं बैठा बल्कि अपनी थल एवं जल सेना को डेनों के प्रति संगठित करता रहा। वह रचनात्मक कार्यों की तरफ भी उतना ही ध्यान देता था। जब उसका राज्यारोहण हुआ था तब शायद ही कोई पादरी होगा जो बाइबिल एवं प्रार्थना का अर्थ ठीक से समझता था, किन्तु उसके शासन के अन्त तक शिक्षितों की संख्या में वृद्धि हो गई। उसने धर्म एवं न्याय के क्षेत्रों से भी बुराइयों को समाप्त किया। उसने अंग्रेजों के जीवन को उन्नत बनाया। वह एक प्रबुद्ध शासक की तरह अपनी प्रजा का हित चाहता था। अतः वह जनता की नजरों में एक लोकप्रिय शासक हुआ। उसे जनता का बहुत प्यार मिला। यह सत्य है कि उसकी महान की उपाधि उचित है। वास्तव में वही

अंग्रेजी राज्य का संस्थापक था। उसका नाम इंग्लैण्ड के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित होने लायक है। उसका शासनकाल आंग्ल सैक्सन इतिहास के स्वर्ण युग का प्रथम चरण था। एक विद्वान का कथन है कि "उससे अधिक प्रबुद्ध या तेजस्वी अन्य कोई राजा नहीं हुआ और उसका कार्य अंग्रेजी महानता के युग का आधार स्तम्भ था।"

नोट

3.7 सैक्सन और डेन राज्य

सैक्सन स्वर्णयुग और इसका अन्त : 878 ई. से 978 ई. तक के काल को आंग्ल-सैक्सन इतिहास का स्वर्णयुग कहा जाता है। 901 ई. में एलफ्रेड महान की मृत्यु हो गई। उसके बाद 978 ई. तक कुल 7 राजा हुए जिनमें बड़े एडवर्ड, एथेलस्टन और एडगर के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

बड़ा एडवर्ड : एडवर्ड एलफ्रेड का ज्येष्ठ पुत्र था। एलफ्रेड के मरने के पश्चात् एडवर्ड ने ही गद्दी संभाली। (901 से 925) ई. इन 24 वर्षों तक उसने सारा राजकाल संभाला। वह भी अपने पिता के समान वीर एवं योग्य व्यक्ति था। उसकी एक बहन मध्य भागों में राज्य करती थी। जब-तब डेन वेसेक्स की ओर हाथ उठाते थे और सैक्सनों के दुश्मनों का भी साथ देते थे। एडवर्ड को इस बात की समझ थी कि डेन राज्य उसके लिए बहुत ही खतरनाक सिद्ध हो सकता है और डेनेला का अंत करके ही वह इस डर को समाप्त कर सकता है। इस उद्देश्य के साथ उसने डेन राज्य पर आक्रमण किया और वह 18 वर्षों तक उनके साथ लड़ता रहा। इस युद्ध का परिणाम यह निकला कि उसने डेनो से पूर्वी ऐंग्लिया और एसेक्स को जीत लिया। मर्सिया पर एडवर्ड की बहन ने कब्जा कर लिया। स्कॉटलैण्ड ने भी उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार नौर्दम्ब्रिया को छोड़कर अब एडवर्ड समस्त इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड का राजा बन गया। अब उसका बड़ा नाम हो गया और उसकी एक लड़की का विवाह नौर्दम्ब्रिया के डेन राजा से हुआ।

एथेलस्टन : एडवर्ड की मृत्यु के पश्चात् राजगद्दी संभालने का अवसर उसके तीनों पुत्रों को बारी-बारी से मिला। सबसे पहले एडवर्ड का सबसे बड़ा पुत्र एथेलस्टन गद्दी पर बैठा। 925 ई. से 940 ई. तक (15 वर्षों तक) उसने राज किया। उसने भी अपने पूर्वजों के स्वाभिमान को बनाए रखा और देश राज्य को सुरक्षित रखा। यूरोप के प्रमुख शासकों के साथ उसने अपनी बहन का विवाह किया। उसके विरुद्ध स्कॉटलैण्ड तथा नौर्दम्ब्रिया ने एक संघ कायम किया। 937 ई. में ब्रूनानबर्ग में संघ के साथ भयंकर लड़ाई हुई, किन्तु एथेलस्टन को ही विजय प्राप्त हुई।

एथेलस्टन के बाद एडमंड (940-46 ई.) और उसके बाद (946 से 955 ई.) तक दोनों ने गद्दी संभाली। एडमंड को अपने राज्यकाल में फिर से इन विरोधों का सामना करना पड़ा। इन विरोधी शक्तियों का सामना करने के बाद कुछ प्रदेश उनके हाथ से निकल गए। इन विरोधों का मुकाबला करते समय दुश्मन के हाथों उसका वध हो गया। उसके बाद एडरेड को राजा बनाया गया। इसने भी विद्रोह के चिह्नों को दबाया और नौर्द्रम्ब्रिया को दो जागीरों के रूप में बाँट दिया। इसने डंसटन को अपना मंत्री नियुक्त किया जो एक भिक्षु था। इन दोनों राजाओं ने डेनों को दबाये रखा और अपने वंश की मान-मर्यादा को कायम रखा।

एडरेड के बाद उसका भतीजा एडवी को गद्दी पर बैठाया गया। वह करीब-4 वर्षों तक (955-59 ई.) राजा रहा। वह एक कुशल शासक नहीं था। प्रजा उससे खुश नहीं थी। उसने डंसटन को निकाल दिया था। उसके भाई एडगर ने उसके कुछ राज्य को दखल कर लिया था। उसके मरने पर एडगर ही राजा नियुक्त किया गया।

एडगर : 959-975 ई. तक एडगर ने वहाँ राज किया। इन 16 वर्षों में वहाँ उसी का शासन चला। वह एक योग्य व्यक्ति था। उसने अपनी प्रजा को बहुत सुखी रखा। उसने डंसटन को अपना सलाहकार नियुक्त किया जिनकी बातों को वह मानता भी था। उसे शान्ति पसंद थी, इसलिए उसके शासनकाल में युद्ध बहुत कम होते थे। इस कारण उसका नाम एडगर शान्तिप्रिय पड़ गया था। सर्वत्र उसकी तूती बोलती थी। अन्य राजा उसे कर देते थे। वह समस्त ब्रिटेन का राजा था। कहा जाता है कि एक बार जब वह डी नदी को पार कर रहा था तो आठ राजा इसकी नाव को खेने में सहायता कर रहे थे। इसी समय डंसटन ने महत्त्वपूर्ण धार्मिक तथा नैतिक सुधारों को किया था।

नोट

शहीद एडवर्ड : एडगर की मृत्यु के उपरान्त उसका सबसे बड़ा पुत्र गद्दी पर बैठा। उसने लगभग 4 वर्ष तक ही (975-78) गद्दी को संभाला। उसकी हत्या उसी की सौतेली माँ ने करवाई थी। अत: इस कारण उसका नाम शहीद एडवर्ड पड़ गया। उसकी मृत्यु के साथ ही स्वर्णयुग का भी अन्त हो गया।

डंसटन : डंसटन एडगर का प्रमुख सलाहकार था। वह 925 ई. में एक कुलीन परिवार में जन्मा था। उसकी शिक्षा-दीक्षा ग्लैस्टनबरी मठ में हुई। सबसे पहले वह एथेलस्टन के दरबार में शामिल हुआ, परन्तु उसे किन्हीं कारणों से दरबार छोड़ना पड़ा। एडमंड ने उसे ग्लैस्टनबरी मठ का प्रधान बनाया, उसके बाद एडरेड तथा एडवी का भी मन्त्री रहा था, किन्तु एडवी ने क्रुद्ध होकर उसे राज्य से निकलवा दिया था। अन्त में एडगर ने उसे अपना मुख्यमन्त्री बनाया और कैन्टनबरी का आर्कबिशप भी नियुक्त किया। इस प्रकार उसे राज्य और धर्म दोनों क्षेत्र में प्रधानता मिल गयी। पादरी राजनीतिक क्षेत्र में भी अपनी प्रधानता स्थापित करने लगा। स्टुअर्टकाल तक यह परम्परा कायम रही। डंसटन की मृत्यु 988 ई. में हुई जब उसकी आयु 64 वर्ष की थी।

डंसटन ने गृहस्थ पादरियों को चर्च से बाहर निकलवा दिया। उसने यह कहा कि पादरियों को अविवाहित होना चाहिए। छठी सदी में संत बेनेडिक्ट ने जो सुधार-कार्य किए थे, उसे डंसटन ने और आगे बढ़ाया। इस तरह उसने इंग्लैण्ड की महती सेवा की, परन्तु इंग्लैण्ड के पतन की शुरुआत उसकी आँखों के सामने ही शुरू हो चुकी थी। एडगर के राज्य-काल के बाद उसने राजनीति से अवकाश ग्रहण कर लिया।

एथेलरेड : एथेलरेड शहीद एडवर्ड का सौतेला भाई था। उसे एथेलरेड रेडेलेस और असावधान (अनरेडी) एथेलरेड भी कहते हैं। जब एथेलरेड को गद्दी पर बैठाया गया तब वह केवल 10 वर्ष का था। उसमें परिस्थिति पर काबू करने की क्षमता नहीं थी। उसने डंसटन जैसे किसी योग्य व्यक्ति को अपना सलाहकार भी नियुक्त नहीं किया। राजा और प्रजा दोनों की दशा दयनीय होती चली गई थी। ऐसी स्थिति का फायदा उठाने के लिए डेनों ने फिर हमले करने शुरू कर दिए। राज्यारोहण के दो ही वर्ष बाद से उसके शासन के अन्त तक दोनों में परस्पर युद्ध होते रहे। एथेलरेड ने 38 वर्षों तक (978-1016 ई.) तक राज्य किया था।

डेनों का आक्रमण

सैक्सनों ने यह निश्चय किया कि वह डेनों से युद्ध नहीं करेंगे बल्कि उन्हें धन देकर उनसे समझौता कर लेंगे परन्तु इस तरह धन मिलने से वह और लोभी हो गए और उनके हमले और बढ़ते चले गए। डेनों को रकम देनी पड़ती थी उस रकम को डेनगेल्ड कहा जाता था। डेनों की इस प्रलोभन की स्थिति व उनके बार-बार हमले करने के कारण सभी राजाओं के सब्र का बांध टूट गया और उन्होंने मिलकर यह निर्णय लिया कि वह सभी डेनों को मार देंगे और उन्होंने यह घोषणा कर दी जहाँ भी डेनों को देखा जाए उन्हें मार दिया जाए। 1002 ई. में 14 नवम्बर को हज़ारों डेन मौत के घाट उतार दिए गए। जिन दिन यह दुर्घटना घटी वह संत ब्राइस के उत्सव का दिन था। अत: यह हत्याकांड संत ब्राइस दिवस के नाम से मशहूर है।

इस हत्याकांड के बहुत ही भयंकर परिणाम सामाने आए। इस घटना ने डेनों से जो थोड़ी-बहुत मित्रता हुई थी वह समाप्त हो गई। इस हत्याकांड में डेनमार्क के राजा स्वीन की बहन का अपने पति के साथ मृत्यु हो गई। अत: स्वीन इस बात पर बहुत क्रोधित हुआ और बदला लेने के लिए 1013 ई. में उसने इंग्लैण्ड पर आक्रमण कर दिया। इस हमले से डरकर इंग्लैण्ड का राजा देश छोड़कर नार्मन्डी अपने ससुराल चला गया। स्वीन ने इंग्लैण्ड पर कब्जा कर लिया और वहाँ की गद्दी हथिया ली परन्तु दो वर्ष पश्चात् ही उसकी मृत्यु हो गई जिससे एथेलरेड वापस इंग्लैण्ड लौट आया परन्तु दो वर्ष बाद उसकी भी मृत्यु हो गई।

स्वीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कैन्यूट उत्तराधिकारी बना। उसने एथेलरेड के साथ युद्ध को जारी रखा। एथेलरेड की मृत्यु के बाद उसका लड़का एडमंड गद्दी पर बैठा। एडमंड को लौहपुरुष कहा जाता था। वह एक वीर पुरुष था। 1016 ई. में दोनों में आसन्डून की लड़ाई हुई जिसमें एडमंड हार गया। ओलनी की सन्धि के द्वारा दोनों ने इंग्लैण्ड को बाँट लिया, किन्तु उसी वर्ष एडमंड मर गया और कैन्यूट समस्त देश का स्वामी बन गया।

3.8 डेन राज्य और अन्तिम सैक्सन राजे

नोट

कैन्यूट

1016 ई. में कैन्यूट जोकि एक डेन था पूरे इंग्लैण्ड की राजगद्दी का मालिक हो गया था। वह लगभग 20 वर्षों तब (1016-1035 ई.) राज्य करता रहा। इंग्लैण्ड के साथ-साथ वह डेनमार्क का राजा भी था। इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठने के बाद उसने एथेलरेड की विधवा के साथ शादी कर ली। वह अंग्रेजों व डेनों में किसी तरह का भेदभाव नहीं करता था। उसकी सोच व्यापक थी। वह बहुत योग्य और दूरदर्शी राजा था। एथेलरेड की विधवा से विवाह कर उसने अंग्रेजी राजवंश के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लिया। वह एक नार्मन महिला थी। कुछ थोड़े से डेनों को छोड़कर बाकी को उसने वापस डेन भेज दिया। वह अंग्रेजों के साथ सद्व्यवहार करता था। वह अंग्रेजों को बड़े-बड़े पदों पर रखता था।

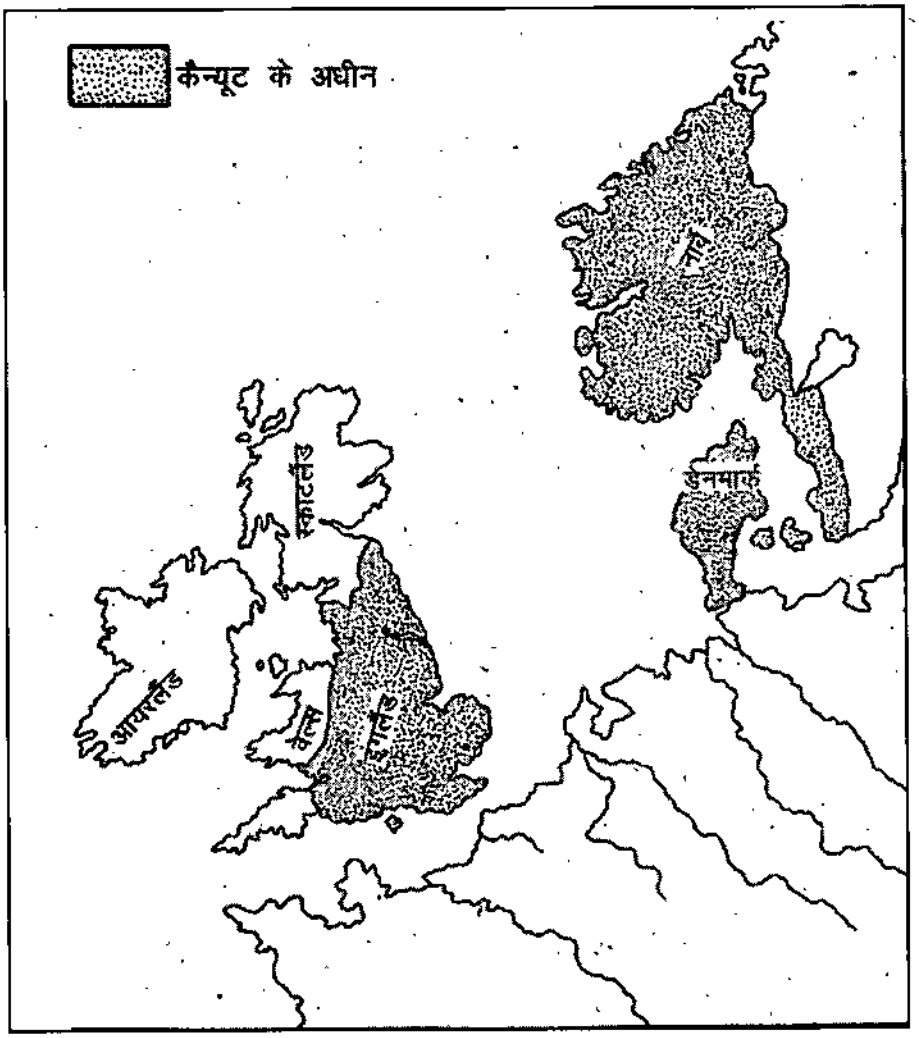

मानचित्र 3.1

पिछले कई वर्षों में डेनों के हमले के कारण इंग्लैण्ड को बहुत-सी हानि उठानी पड़ी। लोगों ने बहुत-सी मुसीबतों का सामना किया। किन्तु कैन्यूट के शासनकाल में युद्ध बन्द होकर अमन-चैन कायम हो गया था। कृषि, व्यापार-वाणिज्य शिक्षा सभी की उसके शासनकाल में प्रगति हुई। उसने अच्छे ढंग से शासन की भी व्यवस्था की।

नोट

उसने समस्त राज्य को 5 प्रदेशों में विभाजित कर दिया। हर प्रदेश के लिए एक सूबेदार नियुक्त किया। इन सूबेदारों को अर्ल कहा जाता था। अपने क्षेत्र में अर्ल की बड़ी धाक थी।

कैन्यूट ने ईसाई धर्म भी स्वीकार कर लिया था। उसने इसके प्रचार के लिए प्रयत्न किया। उसकी देखरेख में कई गिरजे बने। उसने रोम की भी तीर्थयात्रा की और पोप का दर्शन किया।

इंग्लैण्ड की प्रजा कैन्यूट के शासनकाल में बहुत सुखी थी। वह एक विदेशी था जो इंग्लैण्ड में शासन कर रहा था, परन्तु विदेशी होने के बाद भी वह प्रजा की दृष्टि में अच्छा शासक था। 1035 ई. में कैन्यूट की मृत्यु हो गई।

कैन्यूट की मृत्यु के बाद उसके साम्राज्य को उसके पुत्रों के बीच बाँट दिया गया। उसके बड़े पुत्र का नाम हैरोल्ड था। उसे इंग्लैण्ड का राजा बनाया गया। उसने 5 वर्षों तक (1035-40) राज्य किया। नार्मन रानी एम्मा से कैन्यूट को एक पुत्र हुआ जिसे हार्थनठ नाम दिया गया। उसे डेनमार्क की राजगद्दी सौंपी गई। कुछ समय पश्चात् जब हैरोल्ड की मृत्यु हो गई तब हैरोल्ड की मृत्यु के पश्चात् उसके छोटे भाई हार्थनठ को ही इंग्लैण्ड की राजगद्दी सौंप दी गई। वह केवल दो वर्षों तक (1040-42 ई.) ही शासन कर सका। जनता ने इन दोनों राजाओं को सहर्ष कभी नहीं स्वीकारा क्योंकि यह दोनों राजा बहुत निकम्मे थे और प्रजा को संतुष्ट कर पाने में यह दोनों असमर्थ थे। इस कारण 1042 ई. में एडवर्ड को राजा चुना गया जोकि एथेलरेड व उसकी नार्मन पत्नी एम्मा का पुत्र था। इस प्रकार 25 वर्ष बाद इंग्लैण्ड में डेन राज्य का खात्मा हो गया। अंग्रेजों का राजवंश फिर से इंग्लैण्ड में पनपने लगा।

सन्त एडवर्ड

एडवर्ड राज्यारोहण के समय केवल 7 वर्ष का था। वह एक सीधा, शुद्ध तथा धार्मिक विचार में विश्वास करने वाला व्यक्ति था। वह एक साधु होने की क्षमता ज्यादा रखता था बजाय एक राजा होने में। उसे राजनीति से ज्यादा धार्मिक मामलों में अधिक रुचि होती थी। उसने सन्त पीटर की स्मृति में वेस्टमिन्स्टर में एक विशाल गिरजाघर बनवाया जिसे वेस्टमिन्स्टर अबी कहते हैं।

उसकी माँ एक नार्मन थी और उसके पिता एक अंग्रेज थे। अत: उसकी रगों में दोनों के खून का मिश्रण था। इसके अतिरिक्त वह नार्मन्डी में ही रहता था जब इंग्लैण्ड पर डेनों का शासन था। वह 25 वर्ष तक वहाँ रहा। अत: उस पर नार्मन्डी का बहुत गहरा प्रभाव था। वह फ्रांसीसी भाषा तथा रस्म-रिवाजों को अंग्रेजों के रिवाजों से ज्यादा पसंद करता था। वह नार्मनों का ज्यादा पक्ष लेता था उन्हें अच्छी नौकरियाँ भी देता था। अंग्रेजों को उसकी यह बात पसंद नहीं आ रही थी। राजा की इस नार्मन नीति का गोडविन ने बहुत विरोध किया परन्तु उसके इस विरोध का राजा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। राजा ने क्रोधित होकर गोडविन को राज्य से परिवार सहित बाहर निकाल दिया था। उसकी जमीन-जायदाद भी राजा ने कब्जे में कर लिया। यह घटना 1051 ई. में घटित हुई।

अब एडवर्ड के दरबार में नार्मन का बोलबाला हो गया था। नार्मन बहुत ज्यादा स्वार्थी स्वभाव के थे। राजा के बिगड़े हालातों से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। एडवर्ड का मौसेरा भाई विलियम जोकि नार्मन्डी का ड्यूक था, एक बार एडवर्ड से मिलने आया क्योंकि एडवर्ड की कोई सन्तान नहीं थी, तो विलियम ने एडवर्ड को प्रभावित कर स्वयं को इंग्लैण्ड का उत्तराधिकारी बनाने के लिए एडवर्ड को राजी कर लिया, परन्तु एडवर्ड ने जो व्यवहार गौडविन के साथ किया उससे जनता में एडवर्ड के प्रति रोष घर गया था। इस कारण 1052 ई. में राजा ने उसे फिर इंग्लैण्ड वापस बुला लिया। उसके इंग्लैण्ड में वापस आने के कारण नार्मन लोगों का डर बढ़ने लगा और वह देश छोड़कर भागने लगे। गोडविन की मृत्यु 1053 ई. में हो गई। गोडविन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हैरोल्ड का भाग्योदय हुआ। वह वेसेक्स का अर्ल बना और राजा पर भी अपना प्रभाव बनाए रखा। इस तरह 13 वर्षों तक (1053-66) उसकी प्रधानता कायम रही।

1065 ई. में हैरोल्ड को अपने भाई टांसटिग से युद्ध करना पड़ा। टांसटिग नौर्दम्ब्रिया का अर्ल था। हैरोल्ड द्वारा हारने के बाद टांसटिग नौर्दम्ब्रिया छोड़कर भाग गया। 1066 ई. के प्रारम्भ में (जनवरी) सन्त एडवर्ड की मृत्यु हो गई। उसने 23 वर्षों तक (1042-65) राज्य किया। एडवर्ड के बाद हैरोल्ड को गद्दी सौंपी गई।

हैरोल्ड

जब से हैरोल्ड इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा वैसे ही उसके बुरे दिनों की शुरूआत हो गई। उसके गद्दी पर बिताए गए एक साल उसके जीवन के सबसे कठिन दिनों में से थे। उस पर जैसे संकटों का तूफान आ गया था। उसके राज्यारोहण से अनेक अर्ल उससे असंतुष्ट हो गए। उसका भाई टांसटिग भी उसके विरुद्ध युद्ध की तैयारी करने लगा। नार्मण्डी का ड्यूक यह ख्वाब देख रहा था कि वह एडवर्ड की मृत्यु के बाद इंग्लैण्ड का राजा बनेगा क्योंकि एडवर्ड से उसने यह वचन लिया था परन्तु हैरोल्ड को गद्दी मिलने के कारण वह उससे बहुत नाराज था। यह भी कहा जाता है कि जब एक बार हैरोल्ड का जहाज नार्मन्डी के एक बन्दरगाह पर फँस गया था तब उस समय विलियम ने उसे पकड़वा लिया। इसी समय हैरोल्ड ने भी वादा किया था कि एडवर्ड के बाद इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठने में वह विलियम का समर्थन करेगा। इन्हीं सब बातों ने विलियम को हैरोल्ड के प्रति और क्रोधित कर दिया। हैरोल्ड पोप की सहानुभूति भी खो चुका था। अत: हैरोल्ड के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए पोप विलियम की पीठ ठोंक रहा था। इस स्थिति में टांसटिग ने नार्वे के राजा के साथ मिलकर 1066 ई. में (20 सितम्बर) नौर्दम्ब्रिया पर आक्रमण कर दिया। हैरोल्ड ने उनका जमकर सामना किया और स्टैम्फोर्ड पुल के युद्ध में टांसटिग और नार्वे के राजा दोनों को पराजय का मुँह देखना पड़ा। हार के साथ-साथ उन्हें अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा। हैरोल्ड ने उन दोनों को मौत के घाट उतार दिया, हालांकि हैरोल्ड जीत तो गया परन्तु उसे भारी जान व माल के नुकसान का भार सहना पड़ा।

हेस्टिंग्स का युद्ध : हैरोल्ड ज्यादा समय तक अपनी जीत का जश्न नहीं मना पाया क्योंकि जब वह उत्तर में था तब ही विलियम ने दक्षिण में आक्रमण कर दिया। हैरोल्ड इस आक्रमण का जवाब देने के लिए उत्तर से चल पड़ा। दोनों के बीच में जो युद्ध हुआ वह बहुत ही भयंकर था। इस युद्ध को सेनलेक या हेस्टिंग्स का युद्ध कहते हैं। 14 अक्टूबर 1066 ई. को हैरोल्ड लड़ते-लड़ते मारा गया और विलियम की विजय के साथ इंग्लैण्ड पर नार्मन का अधिकार हो गया।

अंग्रेजों की हारने की वजह : अंग्रेजों की हार के कई कारण थे। **पहला**, हैरोल्ड एक चतुर एवं कुशल सेनानायक नहीं था उसके मुकाबले में विलियम बड़ा ही वीर एवं कुशल सेनानायक था। विलियम ने हैरोल्ड को मात देने के लिए छल-कपट का भी सहारा लिया था। **दूसरा**, विलियम के पास अस्त्रों की कोई कमी नहीं थी। वह अस्त्र-शस्त्र से परिपूर्ण था। **तीसरा**, नार्मन सेना के पास घुड़सवारों की संख्या बहुत ज्यादा थी जो युद्ध लड़ने में बहुत सक्षम थे। सैक्सन सेना में पैदल सैनिकों की भरमार थी जो घुड़सवारों के समान निपुण नहीं थे। **चौथा**, हैरोल्ड की मृत्यु का कारण यह था कि उसकी आँख में तीर की चोट लग गई थी जिस कारण उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था व ज्यादा खून बहने से उसकी मौत हो गई। इससे हैरोल्ड के सैनिक बहुत निराश और भयभीत हो गये।

अंग्रेजों के हार की मुख्य वजह तो उनमें आपसी मेलजोल का न होना था। हैरोल्ड के राजा बनते ही वहाँ के अर्ल उससे ईर्ष्या करने लगे थे तथा उसका भाई टांसटिग नार्वे के राजा हारड्रेडा के साथ मिलकर उसके खिलाफ काम करने लगा था। अंग्रेजों में सच्चाई व एकता का अभाव देखने को मिलता है। अत: इतिहासकारों का कथन है– "प्रत्यक्ष शत्रु से परिचित मित्र का, डेनों या नार्मनों से विश्वासघाती अंग्रेजों का ही अधिक भय था। एथेलरेड की असत्यता, एडरिक का विश्वासघात, गौडविन वंश का स्वार्थमय लोभ, टांसटिग का विद्रोह एडविन तथा मोरकर की उदासीनता–ये ही सैक्सन पतन के वास्तविक कारण थे।"

3.9 आंग्ल सैक्सन काल की सभ्यता एवं संस्कृति

परिचय : आंग्ल-सैक्सन लोग मुख्यत: जर्मनी के ट्यूटन जाति के थे। ट्यूटन जाति आर्यों की ही शाखा थी। ये लोग न तो पूरे जंगली थे और न ही पूरी सभ्य। ये प्राय: कबीले बनाकर रहते थे। इन कबीलों का एक नेता होता था और वे आपस में प्राय: लड़ाई-झगड़े भी करते थे, परन्तु उनके समाज में कई प्रथाएँ और संस्थाएँ भी थीं। जब इन लोगों ने ब्रिटेन में आना प्रारम्भ किया तब वे अपने साथ अपनी सभ्यता को भी लेकर आए। 410-1016 ई. इन 600 वर्षों में इनका अधिकांश समय लड़ते-झगड़ते हुए ही बीता। 1016 ई. में इनका गौरव लुप्त

नोट

नोट

होने लगा, किन्तु इन्होंने इंग्लैण्ड में भी अपनी प्राचीन प्रथाओं और संस्थाओं का प्रचार किया। समय की गति के साथ आवश्यकतानुसार उनमें सुधार होते रहे और इस तरह उनका विकास होता रहा। इंग्लैण्ड में वैधानिक प्रगति की नींव आंग्ल-सैक्सन काल में ही पड़ गयी।

राजनैतिक जीवन

राजा : जर्मनी में आंग्ल-सैक्सनों के बीच राजतंत्र प्रणाली प्रचलित नहीं थी। इंग्लैण्ड में उन्हें लगातार युद्ध में लगा रहना पड़ता था। युद्ध में एक शक्तिशाली एवं बुद्धिमान व्यक्ति उनका नेतृत्व करता है। यदि वह योग्य होता तो वह युद्ध जीत जाते और उनके अयोग्य होने पर उनकी मृत्यु हो जाती व उसके पुत्र को नेता कहा जाने लगता था। इस प्रकार लगातार लड़ाई-झगड़ा होने के कारण राजा के पद का निर्माण हुआ। राज्य का विस्तार करने व ईसाई धर्म के प्रचार से राजा का महत्त्व और बढ़ गया। समय के साथ-साथ पूरे इंग्लैण्ड में एक व्यक्ति को राजा बनाया जाने लगा। इस स्थिति के कारण राजा के पद का वर्चस्व और प्रभाव बहुत बढ़ गया। ईसाई पादरियों ने इस सिद्धान्त का प्रचार करना शुरू कर दिया कि राजा को राजा बनने का अधिकार ईश्वर से प्राप्त हुआ है और यदि राजा की आज्ञा नहीं मानी गई तो इसका मतलब ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना होगा। राजा को देवता ही समझा जाने लगा।

एक राजा की मृत्यु के पश्चात् उसका लड़का गद्दी पर बैठने का अधिकार रखता था, परन्तु यदि यह समझा जाता था कि वह अभी गद्दी पर बैठने के योग्य नहीं है तो किसी दूसरे को राजसभा के आदेश द्वारा राजा चुन लिया जाता था। 1066 ई. में शाही खानदान को छोड़कर हैरोल्ड नामक एक नवाब को गद्दी दी गई थी।

राजा के अधिकार : केन्द्रीय सत्ता का केन्द्र राजा ही होता था। राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने का हक राजा का होता था। शान्तिकाल में राजा का काम होता था कि वह नए कानून बनाये एवं लोगों को न्याय दे। कभी-कभी राजा कुछ धार्मिक उत्सवों में भी भाग लेता था और युद्धकाल में उसकी मुख्य जिम्मेदारी सैनिकों का नेतृत्व करना होता था। देश में शान्ति-व्यवस्था को फिर से बहाल करना भी राजा का ही कार्य होता था। राजा को कर लगाने का अधिकार होता था किन्तु वह निरंकुश नहीं था। राजा का पद वंशानुगत नहीं था। उत्तराधिकार से सम्बन्धित कोई निश्चित नियम नहीं था। किसी राजा का उत्तराधिकारी राज्यसभा (विटन) के द्वारा चुना जाता था। समाज में लागू सभी रीति-रिवाजों का उसे पालन करना पड़ता था। राजसभा का नियंत्रण सदैव राजा पर बना रहता था। मुख्य विषयों में राजा को विटन की सलाहों का ख्याल रखना पड़ता था। राज्याभिषेक के समय कुछ प्रतिज्ञाएँ करनी पड़ती थीं जिनकी उपेक्षा राजा के द्वारा नहीं की जा सकती थी।

राजा की मुश्किलें : राजा को कुछ मुसीबतों का सामना करना पड़ता था क्योंकि राजा अपने महल में रहता था। वह गाँव के लोगों से बहुत दूर था। यातायात के साधन विकसित न होने के कारण देहाती लोग राजा की पहुँच से बहुत दूर होते थे। अत: देहातों में दूर-दूर तक राजा का प्रभाव कायम रखना कठिन कार्य था। अत: ऐसे स्थनों में स्थानीय धनी-मानी लोगों का प्रभाव अधिक रहता था। राजा के पास कोई स्थायी सेना नहीं होती थी और कई बातों के लिए वह अपनी राजसभा पर निर्भर था। उसकी आमदनी के जरिए भी साधारण थे और खास तथा आम धन में कोई फर्क नहीं था।

राज सभा (विटन) : केन्द्र में एक राजसभा होती थी। इसका नाम विटन या विटनाजिमोट था जिसका अर्थ होता था बुद्धिमानों की सभा। राजघराने के लोग, धनी-मानी पादरी और नवाब, उच्च पदाधिकारी इसके सदस्य होते थे। सभी राजा के करीबी लोग इससे जुड़े होते थे। जनता द्वारा राजसभा के सदस्यों को नहीं चुना जाता था। असल अर्थ में विटन प्रतिनिधि संस्था नहीं कही जा सकती थी, परन्तु फिर भी इसकी आवाज राष्ट्र की ही आवाज समझी जाती थी। राजनीति में जनता अपनी कोई रुचि नहीं दिखाती थी जिस कारण वर्ष में एक बार इसकी बैठक होती थी जो कि ज्यादा दिनों तक नहीं चलती थी।

राजसभा को राज्य से जुड़े हर कार्य सौंपे गए थे। शासन, कानून-निर्माण तथा न्याय तीनों का सम्बन्ध राजसभा से होता था। अत: राजसभा कैबिनेट, पार्लियामेंट और हाइकोर्ट तीनों ही थी। राजा का चुनाव भी वही करती थी। आमतौर पर राजा का चुनाव राजघरानों के सदस्यों में से ही होता था परन्तु कई बार विपरीत परिस्थितियों में किसी

नोट

बाहर के व्यक्ति को राजा के पद पर नियुक्त कर दिया जाता था। कैन्यूट और उसके पुत्र हैरोल्ड विदेशी थे, किन्तु उन्हें राजपद पर बैठाया गया था। शासन के मामलों में राजा को राजसभा परामर्श दिया करता था। राजा द्वारा किए गए कार्यों एवं उसके द्वारा बनायी गई नीतिओं का सभी के द्वारा समर्थन करना आवश्यक था। राजसभा अयोग्य राजा को गद्दी से हटा भी सकती थी, जैसे एथेलरेड को गद्दी से उतार दिया गया था। राजसभा दीवानी तथा फौजदारी दोनों महत्त्वपूर्ण मामलों पर निर्णय किया करती थी। धार्मिक क्षेत्र में भी उसका प्रभाव था। एक बार नौर्दम्ब्रिया के शासक एडविन ने इसकी राय से ही ईसाई धर्म को स्वीकार किया। चर्च के लिए नियम बनाने का कार्य भी इसी का था। उत्सव तथा छुट्टी के दिनों के निर्धारण की जिम्मेदारी भी इसी की थी।

इस प्रकार विटन राज्य में महत्त्वपूर्ण संस्था थी। आधुनिक पार्लियामेंट का बीज भी इसी में पाया जाता है किन्तु उस जमाने में केन्द्रीय सरकार के अधीन बहुत कम काम करने पड़ते थे उसमें भी विटन अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं थे। इसके निर्माण के सम्बन्ध में निश्चित नियम भी नहीं थे। अत: इसके सदस्य राजा के विरुद्ध कभी भी एक दल में संगठित नहीं हो पाए।

स्थानीय शासन

शायर : राज्य शायरों में विभाजित किया गया था। शायर के प्रबन्ध का भार एक सभा के ऊपर था जो शायर मूट कहलाती थी। बड़े-बड़े लोगों को इसका सदस्य बनाया जाता था। टाउनशिप और हंड्रेड के भी प्रतिनिधि बैठते थे। एक वर्ष में दो बार इसकी बैठक होती थी। एल्डरमैन, बिशप और शेरिफ इसमें तीन मुख्य पदाधिकारी होते थे। एल्डरमैन उच्च शाही खानदान का कोई व्यक्ति होता था। वह शायर लोगों का मुखिया होता था। शायर में शान्ति-व्यवस्था कायम रखना उसकी ही जिम्मेदारी थी। बिशप चर्च का प्रतिनिधि था और धार्मिक मामलों में सलाह देता था। 10वीं सदी का अन्त होते शेरिफ का महत्त्व बढ़ने लगा और एल्डरमैन का महत्त्व घटने लगा। जब कभी एल्डरमैन वहाँ मौजूद नहीं होता था तो शेरिफ को ही सभापति बना दिया जाता था। राजा द्वारा उसे स्थानीय लोगों में से ही चुना जाता था तथा कभी-कभी उसे बाहर से भी चुना जाता था। शायर में वह राजा का प्रतिनिधि होता था। शायर में शान्ति व्यवस्था करना, अपराधियों को पकड़वाना, सेना का प्रबन्ध करना यह सभी शेरिफ के कर्तव्यों में से था। शेरिफ विविध प्रकार के कर्तव्य निभाता था इस कारण वह धीरे-धीरे बड़ा प्रसिद्ध व्यक्ति हो गया।

शायर मूट के कार्य : शायर के लोगों की पंचायती अदालत को शायर मूट कहा जाता था। न्याय करना इसका प्रमुख कार्य था। इसका कार्य दीवानी तथा फौजदारी दोनों मामलों को देखना था। इसमें बड़े-बड़े लोगों के और अधिकतर जटिल मामलों को ही पेश किया जाता था। इस अदालत में अपील करने की सुविधा नहीं थी। हाँ, परन्तु यदि जज गलत न्याय कर दे तो उसे उसके फैसले के लिए दण्ड अवश्य दिया जा सकता था। न्याय के अतिरिक्त इसे शायर के सामान्य (आम) हितों का ख्याल रखना पड़ता था। इसके द्वारा लोगों को केन्द्रीय सूचनाएँ भी मिलती थीं।

हंड्रेड : प्रत्येक शायर के अन्दर कई हंड्रेड होते थे। प्रत्येक हंड्रेड की भी सभा होती थी जिसे हंड्रेड मूट कहा जाता था। हर माह इसकी एक बैठक होती थी। इस बैठक में हंड्रेड के अर्ल तथा थेन और टाउनशिप के मुख्य लोग बैठते थे। इसका मुख्य पदाधिकारी हंड्रेडरीव या हंड्रेडमैन कहलाता था। पहले तो पंचायत में ही उसका चुनाव होता था, किन्तु 10वीं सदी से शेरिफ उसे बहाल करने लगा। इस सभा द्वारा दीवानी तथा फौजदारी दोनों मामलों की सुनवाई होती थी। इसके लिए पीछे चलकर 12 सदस्यों की एक समिति (कमेटी) बनाई गई। इसमें साधारण लोगों के और साधारण मामले अधिकतर आते थे। न्याय के अलावा अन्य हितों का भी हंड्रेड मूट को ख्याल रखना पड़ता था।

टाउनशिप : प्रत्येक हंड्रेड के अन्दर कई ग्राम होते थे। ग्राम को टाउनशिप भी कहा जाता था। इसकी भी अपनी सभा होती थी जिसे टाउनमूट या फौकमूट कहते थे। इसकी बैठक महीने में एक बार होती थी। यह सबसे छोटी इकाई थी। स्वतन्त्र लोग इसकी सभा में भाग लेते थे। स्थानीय समस्याओं का निपटारा करना टाउनमूट का कार्य था। इसके प्रमुख पदाधिकारी को टाउनरीव कहा जाता था। इनके पास अपनी सेना व अपना खजाना होता था। यह नियमों को बनाती थी और अमन-चैन कायम रखती थी। इसमें हंड्रेडमूट और शायरमूट के लिए प्रतिनिधियों को भी

नोट

चुना जाता था। यदि टाउनमूट की बैठक नहीं होती थी तो ऐसी स्थिति में रीव शासन-सम्बन्धी और पादरी (प्रीस्ट) धर्म सम्बन्धी कामों को देखता था। उस समय सामूहिक खेती की प्रथा प्रचलित थी और प्रत्येक टाउनशिप में धार्मिक काम के लिए पादरी होता था।

इसकी विशेषताएँ : स्थानीय शासन की तीन विशेषताएँ हैं–

1. आंग्ल सैक्सन काल में केन्द्रीय शासन की तुलना में स्थानीय शासन अधिक महत्त्वपूर्ण था और स्थानीय संस्थाओं में ही शासन सम्बन्धी विशेष काम होते थे। केन्द्रीय शासन का अधिक सम्बन्ध वैदेशिक नीति एवं युद्ध तथा शान्ति से रहता था।
2. कुछ क्षेत्रों में केन्द्रीय शासन से स्थानीय शासन अधिक पुराना था। छोटे-छोटे राज्यों को मिलाने के बाद वहाँ स्थानीय शासन का प्रबन्ध कर दिया जाता था।
3. केन्द्र का स्थानीय शासन पर कोई नियंत्रण नहीं था। शायर में तो शेरिफ राजा का प्रतिनिधि भी था, किन्तु हंड्रेड और टाउनशिप में ऐसा कोई प्रतिनिधि नहीं था।

उपर्युक्त संस्थाओं को देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आंग्ल सैक्सन संस्थाओं में प्रजातंत्र के बीज निहित थे। प्रजा द्वारा शासन का प्रारम्भ आंग्ल सैक्सन काल में ही शुरू हुआ था। राजा की शक्तिओं को सीमित रखा गया और उन्हें वंशानुगत नहीं बल्कि उनकी योग्यता के आधार पर चुना जाता था। स्थानीय शासन का क्षेत्र व्यापक था। जनता शासन तथा न्याय के कामों में हिस्सा लेती थी। आगे चलकर केन्द्रीय शासन मजबूत होने लगा, किन्तु स्थानीय शासन की प्रतिष्ठा पहले की तरह बनी रही। इसी समय की दी गई नींव पर ही अंग्रेजी शासन विधान का महल खड़ा किया गया है।

न्याय प्रणाली

अदालतें : स्थानीय शासन को शायर, हंड्रेड और टाउनशिप में विभाजित किया गया था। इनकी संस्थाओं में न्याय का काम भी होता था। इन तीनों अदालतों में दीवानी और फौजदारी दोनों मामले देखे जाते थे। शायर मूट इनमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध था। विटन नामक अदालत सबसे ऊपर मानी जाती थी। केवल इसे ही दण्ड के तौर पर फांसी देने का अधिकार था, किन्तु नीचे की अदालतों से इसमें अपील नहीं हो सकती थी। यह निचली अदालतों के फैसले को रद्द नहीं कर सकती थी।

जज एक नहीं अनेक होते थे। सिद्धान्त में सभा के सभी सदस्य जज का काम कर सकते थे, किन्तु केवल 11 जजों को ही इसके व्यवहार में चुना जाता था। विशेष मामलों में इनकी संख्या में इजाफा किया जा सकता था।

आंग्ल-सैक्सन काल के अन्त में लगभग 10वीं सदी में सामन्ती व्यवस्था के साथ मेनर कोर्ट (बैरल कोर्ट) का प्रचार हुआ। इन अदालतों में बैरन लोग अपने-अपने आसामियों के मामलों को देखते थे और जुर्माने की रकम वह स्वयं लेते थे।

कानून : बहुत कम और पुराने ढंग का कानून उस समय लागू था। कानून में जटिलता का अभाव था और कानून लिखित रूप में मौजूद भी नहीं थे बल्कि रीति-रिवाजों तथा परिपाटियों पर कानून आधारित थे। दोनों मामले दीवानी तथा फौजदारी में ज्यादा फर्क नहीं था। दीवानी कानूनों का बहुत ही अभाव था परन्तु अपराध बहुत ज्यादा होते थे, जैसे–चोरी-डकैती, मारपीट, लूटपाट आदि। प्रत्येक शायर में कानूनों में विभिन्नता पाई जाती थी। कभी-कभी राजा की ओर से कानून लागू किये जाते थे। अभियोग लगाने वाला मुद्दई और अभियुक्त मुद्दालह कहलाता था। लोक शपथ (कसम) में उन्हें बहुत विश्वास था। आजकल भी यह प्रथा प्रचलित है, किन्तु उन दिनों में दो बातों की सुविधा थी। एक तो लोगों का धार्मिक प्रवृत्ति में बहुत विश्वास होता था अत: वह झूठ बोलने से डरते थे। दूसरे, समाज अभी बहुत छोटा था, प्राय: लोग एक-दूसरे से परिचित रहते थे और मामलों को भी जानते रहते थे।

तरीका : सर्वप्रथम मुद्दई को शपथ दिलवाई जाती थी फिर वह अपना बयान देता था। तब मुद्दालह (अभियुक्त) भी शपथ के साथ अपराध को इन्कार करता था। शपथ निर्भीक होकर शुद्ध उच्चारण के साथ लेनी पड़ती थी। ऐसा नहीं होने से सन्देह किया जाता था। जज इसके बाद फैसला करता था कि किसको सबूत पेश करना

नोट

चाहिए और सबूत का कौन-सा तरीका लागू हो। अपराधी की जाँच के लिए दो साधन थे–शपथ (कम्पुरगेशन) और परीक्षा (ऑर्डियल)। अभियुक्त कचहरी में 12 गवाह पेश करता था। इन गवाहों को बहुत ईमानदार समझा जाता था। ये लोग अभियुक्त की निर्दोषिता के सम्बन्ध में शपथ लेते थे। शपथ लेते समय यदि किसी अभियुक्त की बोली अटकने लगती थी तो उसकी शपथ की सच्चाई पर शक किया जाता था। यदि अभियुक्त बिना अटके शपथ ग्रहण कर लेता था तो अभियुक्त को निर्दोष समझकर मुक्त कर दिया जाता था। यदि अपराधी को कोई गवाह नहीं मिलता था तो उसके न्याय के लिए और अन्य साधनों का सहारा लेना पड़ता था। मुजरिम की सच्चाई जानने के लिए तीन तरीके थे–

1. अपराधी का हाथ खौलते हुए जल में डाल दिया जाता था।
2. गर्म लोहा अपराधी के हाथ पर रखा जाता था। इन दोनों प्रक्रिया के बाद एक निश्चित समय का निर्धारण किया जाता था। यदि अपराधी के घाव ठीक हो जाते थे तो उसे निर्दोष घोषित कर दिया जाता था। यदि दोषी व्यक्ति के घाव सड़ने या बढ़ने लगता तो उसे दोषी ठहरा दिया जाता था।
3. इस तरीके में अपराधी को नदी या तालाब में फेंक दिया जाता था। यदि अपराधी डूब जाता था तो उसे दोषी मान लिया जाता था। यदि अपराधी नहीं डूबता था तो उसे निर्दोष मान लिया जाता था।

इस तरह अपराधी का अपराध सिद्ध कर उसे दोषी ठहराया जाता था।

सजा : एक बार अपराधी सिद्ध हो जाने पर उस दोषी व्यक्ति को सजा दी जाती थी। उस समय में जेल में बन्द करने की सजा नहीं मिलती थी और फांसी पर भी चढ़ाने का प्रायः उतना चलन नहीं था। उस समय में लोगों को सजा के तौर पर जुर्माना अदा करना पड़ता था। यहाँ तक कि हत्या के आरोप में भी अपराधी पर जुर्माना ही लगाया जाता था।

किस अपराधी को कितना जुर्माना देना है यह रकम मुद्दई की समाज में कैसी स्थिति है पर निर्धारित होता था। यदि किसी साधारण श्रेणी के व्यक्ति ने किसी उच्च श्रेणी के व्यक्ति को कोई नुकसान पहुँचाया है तो उसे जुर्माने के तौर पर बड़ी रकम अदा करनी पड़ती थी और यदि किसी उच्च वर्ग के व्यक्ति द्वारा किसी निम्न श्रेणी या साधारण वर्ग के व्यक्ति को नुकसान पहुँचाया जाता था तो उस व्यक्ति को जुर्माने में कम रकम अदा करनी पड़ती थी। जुर्माने की रकम को वर्गिल्ड कहा जाता था। एक साधारण और एक उच्च वर्गीय व्यक्ति के वर्गिल्ड में 6 गुना का फर्क था। यदि किसी साधारण वर्ग के व्यक्ति के सगे-संबंधियों की हत्या हो जाती थी तो उसे जुर्माने के तौर पर केवल 10 पौंड ही मिलते थे। वहीं यदि किसी उच्च वर्ग के व्यक्ति की हत्या हो जाती थी तो उसके सगे-सम्बन्धियों को वर्गिल्ड के तौर पर 60 पौंड मिलते थे।

उन दिनों कुछ स्थान राजा के खास संरक्षण में समझे जाते थे। जैसे–राजमहल, चर्च, कुछ पवित्र दिन आदि। इसे राजा की शान्ति कहते थे। उन स्थानों और दिनों में अपराध करने वाले पर कड़ा जुर्माना किया जाता था।

अपराध को रोकने के लिए भी प्रबन्ध किया गया था। हरेक आजाद आदमी के लिए यह जरूरी था कि वह किसी को अपने चरित्र के लिए जिम्मेदार बनाकर रखे। ऐसे व्यक्ति को जो जिम्मेदारी लेता था, जामिन या बोई कहते थे। वह आदमी यदि कोई खराब काम करता था तो जामिन से इसके लिए जवाबदेही तलब की जाती थी। इसके अतिरिक्त सभी लोग दस-दस आदमियों की टोली मे बाँट दिए गए थे। प्रत्येक टोली का प्रत्येक सदस्य अन्य सदस्यों के आचरण के लिए उत्तरदायी होता था। यदि टोली के किसी एक आदमी द्वारा कोई बुरा काम किया जाता था तो टोली के सभी दूसरे लोग इसके लिए जिम्मेदार समझे जाते थे और उसे पकड़वाकर उसे सजा दिलाना इनका काम था। यह प्रथा टाइथिंग कहलाती थी।

आय-व्यय : उस समय में आय के साधन और व्यय के मद दोनों ही बहुत सीमित थे। आमदनी के दो मुख्य साधन जुर्माना और मालगुजारी (भूमिकर) थे। कुछ जागीर राजा को खर्च के लिए भी दे दी जाती थी। जब वह कहीं बाहर जाता था तो लोगों को उसके लिए रसद का इन्तजाम करना पड़ता था। प्रत्यक्ष रूप से कर लेने की प्रथा नहीं थी। केवल डेनीजेल्ड नामक कर लोगों से लिया गया था। लोगों के खर्च के मद भी बहुत सीमित थे। उस समय की शासन प्रणाली बहुत सरल थी। राजा के मंत्री नहीं होते थे और कर्मचारी भी बहुत थोड़े थे। उस काल में स्थायी सेना रखने की प्रथा का चलन नहीं था, परन्तु प्रत्येक योग्य व्यक्ति को सैनिक कला की जानकारी रखनी

नोट

पड़ती थी और जरूरत पड़ने पर उन्हें इकट्ठा कर लिया जाता था। इसे राष्ट्रसेना (फिर्ड) कहते थे। कुछ बड़े-बड़े सरदार भी होते थे जो अपनी सेना रखते थे। इन्हें राजा की ओर से जागीर प्रदान की जाती थी और ये मौका पड़ने पर अपनी सेना भी राजा को देते थे। इन सरदारों को थेन कहा जाता था। 9वीं सदी में अल्फ्रेड ने जलसेना का भी संगठन किया था। उस समय से इस ओर भी ध्यान दिया जाने लगा।

सामाजिक जीवन

आंग्ल समाज का आधार परिवार था। कई सदस्यों से मिलकर परिवार बनते थे। उस समय के घरों में खिड़कियों का अभाव था; परन्तु छतों और दीवारों में बड़े छेद हुआ करते थे जिनसे हवा, प्रकाश अन्दर आते थे और धुआँ वगैरह बाहर निकल जाते थे। लोगों के भोजन में अन्न, फल, मांस, मछली शामिल होते थे। वह लोग शराब का सेवन भी करते थे। मन-बहलाव के भी कुछ तरीके प्रचलित थे। भोजन करने के पश्चात् गाने-बजाने का प्रबन्ध किया जाता था। सारंगी बजती थी। अमीर अपने दरबार में गवैये रखा करते थे। शिकार का भी प्रचार था। शिकार के लिए कुत्ते व जाल की मदद ली जाती थी। रविवार के दिन शिकार पर कुछ प्रतिबन्ध रहते थे। मद्यपान में लोगों को बहुत आनन्द मिलता था। शराब का निर्माण जौ और अंगूर से किया जाता था। उस समय में सूअर को अधिक महत्त्व दिया जाता था। मकानों में लकड़ी का अधिक व्यवहार किया जाता था। समाज 4 भागों में बँटा हुआ था–

(*i*) पहले भाग में उच्च वर्ग के लोगों को शामिल किया जाता था। ये ऐसे लोग थे जो प्रारम्भ से ही धनी-मानी थे। ये अर्ल कहलाते थे। कुछ ऐसे लोग थे जो अपनी जागीर एवं इज्जत के लिए राजा की कृपा पर निर्भर थे। ये थेन कहलाते थे। इसी वर्ग के लोग बड़े-बड़े पदों पर बहाल होते थे और समाज में इनका बड़ा आदर होता था।

(*ii*) दूसरे वर्ग में साधारण स्वतंत्र लोग होते थे। इनके पास भी अपनी जमीन होती थी। स्थानीय संस्थाओं में ये लोग काम करते थे और शान्ति व्यवस्था कायम रखने का भार भी इन्हीं के ऊपर था। ये लोग ही बोर्ड तथा टाइपिंग के सदस्य हो सकते थे। ये लोग सर्ल कहलाते थे।

(*iii*) तीसरे वर्ग में उन लोगों को शामिल किया गया था जिनके पास स्वयं अपनी जमीन नहीं थी। ये किसी दूसरे की जमीन को जोतते-बोते थे। ये विलेन या अर्द्धदास कहलाते थे।

(*iv*) चौथा वर्ग दासों का था। इनके पास न तो अपनी जमीन-जायदाद थी और न इन्हें कोई अधिकार ही प्राप्त था। स्वामी इनकी खरीद-बिक्री भी करते थे। इस वर्ग में युद्ध के बन्दी, कुछ पुराने बाशिन्दे तथा कंगाल शामिल थे। ये लोग खेतों में हल जोतते थे और सेवा-टहल का काम करते थे।

धार्मिक जीवन

शुरू से इंग्लैण्ड में बस जाने पर भी बहुत समय तक आंग्ल-सैक्सन गैर-ईसाई एवं मूर्तिपूजक थे। वे हीदेन कहलाते थे। वे अनेक देवताओं की पूजा करते थे, किन्तु 7वीं सदी के प्रारम्भ से ही इंग्लैण्ड में ईसाई धर्म का प्रचार होने लगा और धीरे-धीरे अंग्रेज ईसाई बन गये। चर्च कायम होने लगे और मठों तथा गिरजों में पादरी लोग रहने लगे। उस समय पादरियों के लिए कठोर अनुशासन तथा अविवाहित जीवन पर विशेष जोर नहीं दिया जाता था। कई पादरी विवाहित भी होते थे, किन्तु वे शिक्षित होते थे और साधारणतः उनका चरित्र उन्नत होता था। कई पादरी धार्मिक व्यक्ति होने के साथ-साथ कुशल राजनीतिज्ञ भी होते थे। ऐसे पादरी राजाओं के सलाहकार के रूप में बहाल किये जाते थे।

आर्थिक जीवन

लोगों के मुख्य व्यवसाय खेती और पशुपालन था। यह लोग मुख्यतः गाँव में रहते थे। एक गाँव से दूसरे गाँव को विभाजित करने के लिए मार्क नामक सीमा निर्धारित की गई थी। जमीन तीन प्रकार की होती थी–खेती वाली, जंगली और चारागाह। खेती वाली जमीन प्रत्येक परिवार की अलग-अलग होती थी परन्तु जंगल तथा चारागाह पर पूरे गाँव के समस्त लोगों का अधिकार रहता था। चारागाह पर माल मवेशी चराए जाते थे और जंगल से जलावन मिलते थे। खेती वाली जमीन के भी 3 भाग होते थे। प्रत्येक वर्ष में दो भाग में फसल उगायी जाती थी और एक भाग परती छोड़ दी जाती थी। इस प्रकार बारी-बारी से प्रत्येक भाग को परती छोड़ने की प्रथा थी। जमीन की उपजाऊ

शक्ति प्राप्त करने के लिए ही ऐसा किया जाता था। खेतों में बाड़ या मेड़ लगाने की प्रथा नहीं थी। हल के द्वारा जमीन जोती जाती थी और बैलों का हल में प्रयोग होता था। साधारणत: पैदावार अच्छी होती थी। जौ और गेहूँ मुख्य पैदावार थे। घोड़े के द्वारा हल नहीं खींचे जाते थे।

नोट

शिक्षा एवं साहित्य

शिक्षा एवं साहित्य की तरक्की भी आंग्ल सैक्सन काल में हुई। मठ और गिरजे शिक्षा के केन्द्र थे। पादरी शिक्षा प्रचार का भी काम करते थे। इसी काल में कीडमन अंग्रेजी का पहला कवि हुआ। वह ह्विटबी के मठ का निवासी था। ब्रीड जैसे मठ का एक पादरी था जिसने अंग्रेजों का धार्मिक इतिहास लिखा। यह लैटिन भाषा में लिखा गया। एलफ्रेड ने आंग्ल-सैक्सन गाथा नामक इतिहास लिखा। उसके समय में बहुत पुस्तकों का लैटिन से अंग्रेजी में अनुवाद कराया गया। छोटी-मोटी कुछ अन्य पुस्तकें भी अंग्रेजी भाषा में लिखी गईं।

सारांश

- वेसेक्स की प्रधानता में ही 9वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड का संगठन हुआ परन्तु उससे पहले बाकी सभी राज्यों की भी प्रधानता रही जिसमें केन्ट के राजा एथेलबर्ट का बहुत नाम हुआ और वह पहला राजा था जिसे ईसाई बनाया गया था।
- केन्ट के बाद नौर्दम्ब्रिया प्रधान बना, नौर्दम्ब्रिया के बाद मर्सिया और उसके बाद वेसेक्स की बारी आई। वेसेक्स की शक्ति के उत्थान का श्रेय एडगर को जाता है। उसने ही इंग्लैण्ड (वेसेक्स व अन्य राज्यों के संगठन के बाद) को उसकी एक मजबूत स्थिति तक पहुँचाया जिससे वह डेनों के हमलों से स्वयं की रक्षा कर सका।
- डेन मुख्यत: ट्यूटर जाति के थे जो मुख्यत: इंग्लैण्ड में लूटपाट मचाना व वहीं बसना चाहते थे। डेनों के हमले के कारण इंग्लैण्ड को बहुत नुकसान उठाना पड़ा। महान एलफ्रेड ने इस बात को समझा और डेनों के साथ वेडमूर की संधि कर ली। इस संधि के कारण कुछ सालों तक इंग्लैण्ड तथा डेनों के बीच युद्ध कुछ समय के लिए रुक गया।
- एलफ्रेड एक महान राजा था उसने इंग्लैण्ड के लिए बहुत से सुधार भी किए। एलफ्रेड की मृत्यु के बाद इंग्लैण्ड का स्वर्णयुग समाप्त हो गया और उसके बाद इंग्लैण्ड में 90-978 ई. तक 7 राजा बने। फिर 1016 ई. में कैन्यूट राजा बना जोकि एक डेन था परन्तु उसने अंग्रेजों और डेनों के साथ कोई भेदभाव नहीं किया और दोनों को साथ लेकर सत्ता चलाई।
- उसके शासनकाल में इंग्लैण्ड एक सुखी राज्य था, परन्तु 1035 ई. में उसकी मृत्यु के बाद हार्थनट और उसके बाद हैरोल्ड को राजा चुना गया जो अच्छे शासक सिद्ध नहीं हुए।
- इसके बाद सन्त एडवर्ड को राजा चुना गया क्योंकि एडवर्ड की माता एम्मा एक नार्मन थी अत: एडवर्ड नार्मन का पक्षपात करता था व अंग्रेजों एवं डेनों के साथ दुर्व्यवहार करता था।
- एडवर्ड की मृत्यु के बाद गोडविन के पुत्र हैरोल्ड को राजा बनाया गया। हैरोल्ड को इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर बैठते ही बहुत-सी मुसीबतों का सामना करना पड़ा और हेस्टिंग्स के युद्ध में हैरोल्ड मारा गया और विलियम जो नार्वे का राजा था, ने इंग्लैण्ड पर अपना कब्जा कर लिया।
- इंग्लैण्ड में वैधानिक प्रगति की नींव आंग्ल-सैक्सन काल में ही पड़ी थी। उस समय राजा कैसे नियुक्त होते थे व उनके अधिकार, दिक्कतें व राजसभा और स्थानीय शासन के बारे में जाना।
- राज्य को शायर में विभाजित किया गया था। शायर, मूट, हंड्रेड व टाउनशिप, आंग्ल-सैक्सन काल की न्याय प्रणाली तथा किस प्रकार कसम लेने की प्रथा से अपराधी को पकड़ा जाता था और अपराधी को दण्ड के तौर पर जुर्माना भरना पड़ता था एवं उनके धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन और उनके आय-व्यय शिक्षा और संस्कृति के बारे में जाना।

नोट

अभ्यास-प्रश्न

1. इंग्लैण्ड के संगठन के विषय पर एक टिप्पणी कीजिए।
2. डेनों के विषय पर चर्चा करते हुए यह बताइए कि उनका इंग्लैण्ड पर हमला करने के क्या उद्देश्य होते थे?
3. एलफ्रेड महान की जीवनी एवं उसकी उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।
4. डेन राज्य और अन्तिम सैक्सन राजाओं के काल के बारे में व्याख्या करें।
5. आंग्ल सैक्सन काल की सभ्यता एवं संस्कृति पर रोशनी डालते हुए उसके राजनैतिक जीवन, स्थानीय शासन एवं न्याय प्रणाली को समझाइए।

संदर्भ ग्रंथ

1. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
2. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
3. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*
4. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
5. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
6. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
7. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*

इकाई–4

मध्यकालीन इंग्लैण्ड (1154–1399 ई. तक)
[Medieval England (1154-1399 A.D.)]

नोट

संरचना (Structure)

4.1 उद्देश्य
4.2 प्रस्तावना
4.3 हेनरी द्वितीय (1154–1189 ई.)
4.4 मैग्नाकार्टा (महान अधिकार-पत्र)
4.5 एडवर्ड प्रथम (1272–1307 ई.)
4.6 ब्लैक डेथ
4.7 रिचर्ड द्वितीय (1377–99 ई.)
- सारांश
- अभ्यास-प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

4.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- हेनरी द्वितीय के शासनकाल की उपलब्धियों को समझने में।
- मैग्नाकार्टा को विस्तारपूर्वक समझने में।
- एडवर्ड प्रथम के प्रयासों को समझने में।
- रिचर्ड द्वितीय के शासनकाल में हुए किसान विद्रोह को समझने में।
- ब्लैक डेथ के प्रकोप को समझने में।

4.2 प्रस्तावना

इस इकाई में हम समझेंगे कि किस प्रकार हेनरी द्वितीय अपनी खानदानी परम्परा के अनुसार इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा। हेनरी द्वितीय का वंश प्लैंटेजिनेट के नाम से पुकारा जाता है। उसका वंश 245 वर्षों तक कायम रहा। उसके शासनकाल में कौन-कौन सी घटनाएं घटित हुईं और किस प्रकार हेनरी द्वितीय ने उन सब घटनाओं का समझदारी के साथ समाधान किया। हेनरी द्वितीय का विवाह अपने से 12 वर्ष बड़ी युवती से होने का क्या कारण

नोट

था। उसने कौन-कौन सी संस्थाओं को कायम रखा। वह लोगों के अमन-चैन का पूरा ध्यान रखता था। जिसके लिए वह समय-समय पर प्रयास भी करता रहता था। उसने अपना बहुत समय फ्रांस में ही बिताया था।

उसने तीन सुधार कार्य किए। हेनरी ने बैरनों द्वारा किए जा रहे लोगों पर जुल्म को दबाने के अथक प्रयास किए। उसने धार्मिक कचहरियों का भी निर्माण कराया था। उसने सुयोग्य जजों के अधीन एक नयी अदालत कायम कर दी थी। उसने दौरा जजों की लोकप्रियता को भी बढ़ावा दिया था।

सन् 1215 में मैग्नाकार्टा को स्वीकृति प्रदान की गई थी। उनमें अनुच्छेद और धाराएँ भी बनाई गई थीं। हेनरी द्वितीय द्वारा कायम की गई न्याय-प्रणाली को भी स्वीकृति दी गई थी। मैग्नाकार्टा के अनुसार राजा के अधिकार कुछ घटा दिए गए थे। इससे लोगों के ऊपर हो रहे जुल्म कुछ कम हुए थे। पहला एडवर्ड 35 वर्ष की आयु में राजगद्दी के लिए सम्मानित किया गया। वह अपने मित्रों के साथ-साथ अपने दुश्मनों से भी ज्ञान लेने में नहीं चूकता था। वह सही अर्थों में इंग्लैण्ड का एक सच्चा राजा था। उसे कानून-न्याय के क्षेत्र में बेहद दिलचस्पी थी। उसने इंग्लैण्ड को शक्तिशाली बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

ब्लैक डेथ 14वीं शताब्दी में घटी सबसे बड़ी घटना थी। इस कारण इंग्लैण्ड की 1/2 प्रतिशत जनसंख्या का खात्मा हो गया था, जो बच गए थे वे भी मरने के लिए मजबूर हो गये थे। देश में एक भयानक आफत का आतंक मच गया था।

रिचर्ड द्वितीय सबसे कम उम्र का राजा था। वह अपने राज्याभिषेक के समय केवल 11 वर्ष का था। वह अच्छा शासक नहीं था। उसके शासनकाल में कोई भी मजदूर एवं गरीब व्यक्ति सुखी नहीं था। यही कारण था कि देश में किसान विद्रोह शुरू हुआ। उसे राजगद्दी से जबरन उतारकर फेंका गया था। उसके स्थान पर हेनरी चतुर्थ को बिठाया गया था जोकि असली उत्तराधिकारी नहीं था।

4.3 हेनरी द्वितीय (1154-1189 ई.)

स्टीफन अपने पुत्र की मृत्यु से हताश हो गया और उसने हेनरी (मेटिल्डा का पुत्र) से समझौता कर लिया तथा 1154 में हेनरी, हेनरी द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठा। इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठने का अधिकार हेनरी द्वितीय को दो कारणों से था। पहला, वह इंग्लैण्ड के प्रथम शासक विलियम विजय (विलियम प्रथम) के पुत्र हेनरी प्रथम की बेटी मेटिल्डा का पुत्र था, इसलिए गद्दी पर बैठने के लिए यह उसका खानदानी अधिकार था। दूसरा, वह स्टीफन को हराकर वेलिंगफोर्ड की संधि कर चुका था साथ ही स्टीफन ने उसे अपना उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया था। हेनरी द्वितीय के पिता काउन्ट (नवाब) थे इसलिए उसका वंश एंजेविन कहलाया था। इनके वंश में सभी प्लैंटाजेनिस्टा नामक फूल के बड़े शौकीन थे इसलिए इनका वंश प्लैंटेजिनेट भी कहा जाता था। 'प्लैंटाजेनिस्टा' लैटिन शब्द है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि हेनरी द्वितीय का खानदान दो नामों से पुकारा जाता था-'एंजेविन' तथा 'प्लैंटेजिनेट'। इनका वंश 245 वर्षों अर्थात् 1154 से 1399 ई. तक इंग्लैण्ड पर कायम रहा।

हेनरी द्वितीय 1133 ई. में पैदा हुआ था। वह स्टीफन को हराकर 1154 ई. को इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा। स्टीफन बहुत कमजोर शासक था। उसके शासनकाल में राज्य में अराजकता का जाल फैल गया था। राजा का आधिपत्य धीरे-धीरे समाप्त होने लगा था। बैरन और चर्च दोनों ही शक्तिशाली बन गए थे। न्याय का गला घोंटा जा रहा था। बड़े-से-बड़े अपराध के लिए मामूली सजा दी जाती थी। जिस समय हेनरी द्वितीय गद्दी पर बैठा था उस समय सबसे बड़ी समस्या यह थी कि किस प्रकार वह अराजकता को समाप्त कर सकता है। वह किस प्रकार बिशपों और बैरनों को दबाकर राज्य में शान्ति स्थापित करे। आम जनता अपने साथ हो रहे अन्याय से परेशान हो चुकी थी। उनकी सुनने वाला कोई नहीं। उन्हें ऐसे शासक की जरूरत थी जो उनकी दुर्दशा में सुधार ला सके। इस तरह की परिस्थिति में हेनरी का आगमन चमत्कार से कम नहीं था। हेनरी द्वितीय योग्य शासक था। वह अपनी कुशलता से राज्य में शान्ति ला सकता था। उसने समय के मुताबिक आवश्यक सुधार किए और पुरानी संस्थाओं को भी बनाए

रखा। उसने शोषित जनता की स्थिति में भी सुधार लाने के प्रयास किए। उसके कार्यों में मौलिकता का अभाव था। उसने पुरानी व्यवस्था को नये ढंग से लागू करने के बहुत प्रयत्न किए। उसने अपना अत्यधिक समय फ्रांस में ही बिताया था, परन्तु वह इंग्लैण्ड का राष्ट्रीय राजा था। उसके शासनकाल में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटीं, जो कि निम्नलिखित हैं–

नोट

1. हेनरी द्वितीय नार्मण्डी का ड्यूक था। वह फ्रांस के अधिकांश राज्यों पर कब्जा कर चुका था। फिर उसने स्टीफन को हराकर इंग्लैण्ड की गद्दी पर भी अपना आधिपत्य कायम कर लिया था।

2. अंजू, मेन और तूरेन पर भी उसका कब्जा था क्योंकि वह इन स्थानों का काउंट था। 1152 ई. में एलीनोर से विवाह किया। ऐलीनोर लुई सातवें की तलाकशुदा थी। हेनरी ने अपने से 12 वर्ष बड़ी औरत से विवाह किया था। विवाह के समय वह 20 वर्ष का था और ऐलीनोर 32 वर्ष की थी। विवाह के कारण हेनरी को दक्षिणी फ्रांस में एक्वीटेन आदि कुछ और प्रदेश मिल गए थे।

3. युद्धकाल के समय बहुत से विदेशी सैनिक इंग्लैण्ड में आ गए थे। उसने सभी सैनिकों को इंग्लैण्ड से बाहर निकाल दिया। उसने इंग्लैण्ड की गद्दी को मजबूत बना दिया।

4. स्टीफन ने स्कॉटलैंड के राजा डेविड को इंग्लैण्ड में कुछ प्रदेश दे दिया था।

5. 1175 ई. में हेनरी ने तत्कालीन स्कॉट राजा मैलकम से इन प्रदेशों को वापस कर लिया। वेल्श के शासक ने भी उसकी प्रभुता मान ली। हेनरी ने आयरलैंड पर भी विजय प्राप्त कर ली और 1185 ई. में अपने पुत्र जॉन को वहाँ का शासक बनाकर भेज दिया।

6. 1173 ई. में हेनरी के खिलाफ एक भयंकर विद्रोह संगठित किया गया। विद्रोह की लपट इंग्लैण्ड तथा फ्रांस दोनों स्थानों में फैली थी। इसे फ्रांस तथा स्कॉटलैंड के राजाओं ने उकसाया था। कई बैरन भी इसमें शामिल थे। हेनरी के पुत्रों की भी विद्रोहियों के साथ सहानुभूति थी, किंतु हेनरी ने विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा डाला।

हेनरी का पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं था। उसके पुत्रों ने उसके साथ विश्वासघात किया। किंतु वह बड़ा ही योग्य व्यक्ति था। वह शक्तिशाली था, किंतु स्वेच्छाचारी नहीं, नीतिज्ञ था। वह कानून तथा न्याय के राज्य में विश्वास करता था। वह एक महान सुधारक था, किंतु क्रान्तिचारी नहीं। उसकी प्रतिभा रचनात्मक थी और उसने अनेक सुधारों को लागू किया। 1189 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। हेनरी के कामों को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है। उसने अपने शासन में सुधार किए– *(i)* शासन सम्बन्धी सुधार *(ii)* न्याय सम्बन्धी सुधार और *(iii)* धर्म सम्बन्धी सुधार। इनका वर्णन निम्नलिखित है–

(i) धर्म सम्बन्धी सुधार : स्टीफन की कायरता के कारण उसके शासनकाल में चर्च बहुत ही शक्तिशाली बन चुका था। वे शासन में भी हस्तक्षेप करने लगे थे। धार्मिक अदालतों को केवल धार्मिक मामलों को ही देखने का अधिकार दिया गया था, परन्तु अब इन अदालतों में सभी प्रकार के मामले देखे जाने लगे। यदि पादरी हत्या भी करता तो उसका मामला चर्च की अदालतों में ही देखा जाने लगा। यह इसलिए क्योंकि इन धार्मिक अदालतों में मामूली सजा ही दी जाती थी या फिर कुछ छोटा-सा जुर्माना लगा दिया जाता था, या फिर आरोपी के पद में थोड़ा हेरफेर कर दिया जाता था। धार्मिक अदालतों का अपराधी गलत फायदा उठाने लगे थे। वहाँ जाकर अपराधी बड़ी सजा से स्वयं को बचाने के लिए स्वयं को पादरी बता दिया करते थे। स्वयं को पादरी बताने के लिए वे बाइबिल से सम्बन्धित कुछ बातें बताने लगते थे। इन कारणों से राष्ट्र में अपराधियों की संख्या में बहुत इजाफा होने लगा था, न्याय के साथ ही अन्याय होने लगा था तथा देश की आमदनी घटने लगी थी।

इस स्थिति में 1154 को जब हेनरी द्वितीय इंग्लैण्ड का राजा बना तो उसको यह भयानक स्थिति बर्दाश्त नहीं हुई। वह सुधार चाहता था जिसके लिए उसने कई कदम उठाए। उसने 1161 ई. में थॉमस बेकेट को कैंटरबरी का आर्कबिशप बहाल किया। बेकेट हेनरी का मित्र था और चांसलर की हैसियत से अपनी योग्यता एवं सेवा का परिचय दिया था। हेनरी को पूरी उम्मीद थी कि चर्च के सुधारों में उससे बड़ी मदद मिलेगी। हेनरी ने एक जाँच समिति बनाई और चर्च के प्रारम्भिक विधि-विधानों को लिखने के लिए इसे आदेश दिया। 1164 ई. में यह समिति

(कमीशन) का काम समाप्त हो गया और उसने अपनी सिफारिशों का पत्र पेश कर दिया। इस पत्र का क्लैरेडन का विधान कहते हैं।

(क) कलैरेडन का विधान : इस विधान के जरिए राजा के हाथ को मजबूत बनाने का प्रयत्न किया गया। कलैरेडन के विधान ने पादरियों के विशेषाधिकारों पर कुठाराघात किया।

नोट

(i) पहली बात यह थी कि यदि कोई अपराधी अपने को पादरी कहता है तो पहले उसे शाही अदालत के सामने यह सिद्ध करना होगा कि वह पादरी ही है। यदि उसका पादरी होना सिद्ध हो जाता है तो उसे चर्च की अदालत में जाना चाहिए। यदि इस अदालत में उसका अपराध सिद्ध हो जाए तो शाही अदालत में उसका अपराध सिद्ध हो जाए तो शाही अदालत के द्वारा कानून के मुताबिक उसे सजा मिलनी चाहिए।

(ii) राजा की आज्ञा के बिना उच्च सामन्तों को धर्म-बहिष्कृत नहीं किया जा सकता।

(iii) जागीरदार के नाते पादरियों को भी राजा के प्रति भक्ति की शपथ लेनी चाहिए और

(iv) धार्मिक अदालतों से अपील राजा की अदालतों में आनी चाहिए, पोप की अदालत में नहीं।

(ख) बेकेट से मतभेद : बेकेट वास्तव में चर्च के अधिकारों को कम नहीं करना चाहता था। पहले भी इस बात पर उसने अपनी राय दी थी। पादरी के रूप में बेकेट पहले से कुछ हद तक बदल गया था। वह स्वयं को चर्च का संरक्षक (गार्जियन) मानता था। उसके इस कदम से राजा बहुत रुष्ट था। इन सभी बातों के कारण झगड़ा कुछ बढ़ने लगा था। हेनरी ने बेकेट पर कुछ अनुचित खर्च करने का दोष भी लगाया। साथ ही उसकी कुछ सम्पत्ति भी हड़प ली थी। उसने (बेकेट ने) कभी भी कलैरेडन विधान को मंजूर नहीं किया था, जिस कारण उस पर मुकदमा चलाया गया और उसे दोषी करार दिया गया, परन्तु अपने व्यवहार के मुताबिक बेकेट ने इस फैसले को भी मानने से इन्कार कर दिया और वह चुपके से देश छोड़कर भाग गया। वह 1164-70 ई. अर्थात् 6 वर्षों तक यूरोप में घूमता-फिरता रहा। बेकेट चुप बैठने वालों में से नहीं था। वह इस बीच कोई-न-कोई हरकत करता रहा। राजा उसकी इस हरकत से बहुत नाराज हुआ। इसके बाद राजा के कुछ समर्थकों को बेकेट ने धर्मबहिष्कृत कर दिया।

(ग) बेकेट की हत्या : राजा बेकेट से अत्यंत नाराज था, परन्तु फिर भी हेनरी बेकेट से समझौता कर लेना चाहता था। बेकेट को भी यह बात मालूम हुई। सन् 1170 ई. को बेकेट वापस इंग्लैण्ड लौटकर आ गया। वह चर्च के लिए मर-मिटने को तैयार था। उसकी गैरहाजिरी में राजा के बड़े पुत्र को उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया। इस बात पर इंग्लैण्ड में बहुत उत्सव मनाया गया। बेकेट को यह बात कतई पसंद नहीं आई। उसने इसमें भाग लेने वाले विशपों को धर्म से बहिष्कृत कर दिया। बेकेट की यह हरकत राजा को बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। वह आगबबूला हो गया और कहा– "क्या, मेरा नमक खाने वालों में ऐसा कोई भी नहीं है जो इस झगड़ालू पादरी से मेरा पिंड छुड़ा दे।" यह सुनते ही उसके 4 सैनिक कैंटरबरी की ओर चल पड़े। उन्होंने चर्च में ही बेकेट को पकड़ा और घसीटते हुए बाहर लाकर उसकी हत्या कर दी।

(घ) हत्या का परिणाम : बेकेट की बड़ी ही बेरहमी के साथ हत्या कर दी गई, परन्तु यह केवल उसके शरीर का ही अंत था, उसके द्वारा चलाया गया सिद्धान्त अभी भी पूर्णत: कायम ही था। जीते जी बेकेट ने हेनरी को बर्बाद कर रखा ही था परन्तु मरने के बाद बेकेट की शक्तियाँ और अधिक बढ़ गई थीं। यहाँ तक कहा जाता है कि हेनरी ने बैरनों पर तो विजय प्राप्त कर ली थी परन्तु चर्च ने उसे पूरी तरह से बर्बाद कर दिया था। उसका कब्जा बैरनों पर पूरी तरह से था किंतु वह चर्च धर्म अधिकारियों पर कब्जा करने में पूरी तरह से असफल सिद्ध हुआ। बेकेट को मृत नहीं अपितु शहीद का दर्जा प्राप्त हुआ। वह पहले से ज्यादा लोकप्रिय होने लगा था। उसके सहयोगियों की गिनती बढ़ने लगी थी। लोग उसकी समाधि को देखने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा संख्या में जाते थे। हेनरी भी इस लहर से बच नहीं पाया। उसे अपने किए पर शर्मिंदगी हुई। वह प्रायश्चित्त करने के लिए बेकेट की समाधि के पास पहुँच गया। उसने कब्र को नमस्कार किया। यह भी कहा जाता है कि उसने प्रायश्चित्त करने के लिए पादरियों से अपनी पीठ पर कुछ कोड़े भी मरवाए। पोप ने बेकेट को संत की पदवी से विभूषित किया।

नोट

हेनरी ने 1172 ई. में पोप के साथ एक समझौता भी कर लिया। अब उसने कलैरेडन विधान की सभी माँगों पर विशेष जोर नहीं दिया। हेनरी को अपने लक्ष्य से कुछ पीछे हटना पड़ा। पादरियों के विशेषाधिकारों के कुछ अंगों को छोड़ देना पड़ा। पोप की अदालत में अपील नहीं रोकी जा सकती। राजद्रोह को छोड़कर पादरियों के सभी मामले धार्मिक अदालतों में ही देखे जाने के लिए तय हुआ लेकिन स्टीफन के समय राज्य में चर्च को जितने अधिकार प्राप्त थे अब वह अधिकार नहीं रह गये थे। अत: यह भी कहा जा सकता है कि चर्च के मामले में हेनरी जहाँ दो कदम आगे बढ़ाना चाहता था वहाँ वह एक कदम ही बढ़ा पाता था। हेनरी को भी इसी से संतोष करना पड़ता था।

(ii) ***शासन सम्बन्धी सुधार :*** *पिछले 15 वर्षों से महान परिषद की बैठक नहीं बुलायी गयी थी उस पर शासकीय कामों का भार सौंपा गया। इसके अलावा उसने एक्सचेकर के कोर्ट को भी संगठित किया। अब हिसाब-किताब की जाँच की जाने लगी और शेरीफ तथा अन्य लोगों को बकाया चुकाने के लिए बाध्य किया गया।*

बहुत दिनों से शेरीफ के अनेक पद खाली थे। राजा ने उन सभी पदों पर शेरीफ को नियुक्त कर दिया। राजा ने उन शेरीफों के सम्बन्ध में जाँच करवायी। दोषी शेरीफों को बर्खास्त कर नए शेरीफ बहाल कर लिये गये। इस तरह शासन की बुराइयों को दूर करने का उसने प्रयास किया–

(क) बैरन लोग बहुत जुल्म कर रहे थे। अत: हेनरी ने उन्हें दबाने का भरपूर प्रयास किया। स्टीफन ने उन्हें *सहायता के बदले शाही जागीर दे दी थी। राजा ने ऐसी सभी जागीरों पर कब्जा कर लिया।*

(ख) बैरनों ने मनमाने ढंग से स्टीफन द्वारा बनवाए गए सभी दुर्ग तुड़वा दिये थे। जिन दुर्गों को नहीं तोड़ा गया था उस पर भी राजा ने अपना अधिकार कायम कर लिया था।

(ग) राजा ने बैरनों को शारीरिक सेवा के बदले धन देने की सुविधा दे दी। अनेक बैरनों ने इसे पसंद किया। इससे राजा को दो लाभ हुए– बैरनों की लड़ाकू प्रवृत्ति घटने लगी और राजा उस रकम से भाड़े (किराए) पर सैनिकों को रख सकता था। उस रकम को स्कूटेज या शिल्डमनी कहा जाता है।

(घ) 1181 ई. में एसाइज ऑफ आर्म्स के द्वारा सभी लोगों को अपनी हैसियत के मुताबिक हथियार रखने की आज्ञा दे दी गई।

(ङ) पहले बैरन लोग ही प्राय: शेरीफ के पदों पर नियुक्त होते थे, परन्तु अब आम नागरिकों को भी इन पदों पर नियुक्त किया जाने लगा था। शेरीफ के अधिकारों को भी बढ़ा दिया गया। पहले शेरीफ किसी बैरन की जमींदारी में बिना उसके हुक्म के किसी चोर तक को भी नहीं पकड़ सकता था, परन्तु अब वह बैरन से अनुमति लिए बिना उसकी जागीर से किसी अपराधी को पकड़ सकता था।

(च) शायरों का नियमित रूप से दौरा जजों को भेजा जाने लगा। उनके पहुँचने पर स्थानीय बैरनों को उनके स्वागत में हाजिर होना पड़ता था। अब तक लोग बैरनों को ही अपना स्वामी मानते थे, किंतु अब लोगों को पता चलने लगा कि बैरनों से ऊपर भी शक्ति है। इसके अलावा राजा ने सामन्ती अदालतों को भी कमजोर कर दिया था। अब राजा मुकदमों को बैरनों की अदालत से अपनी अदालत में भिजवा सकता था। राजा की अदालतों में बैरनों की अदालतों के फैसले के विरुद्ध अपील भी की जाने लगी। बैरनों की अदालतों में फौजदारी मामले पेश ही नहीं हो सकते थे।

उपर्युक्त दोनों बातें दीवानी मामलों के सम्बन्ध में लागू थीं। जूरी प्रथा से भी बैरनों को बहुत हानि पहुँची। इन सभी नियमों का परिणाम यह निकला कि बैरन लोग पूरी तौर से राजा के अधीन हो गये और अब वे जनता पर जुल्म करने की हिम्मत नहीं कर सकते थे।

हेनरी अपनी राष्ट्रीय आय में बढ़ोतरी करना चाहता था। इसके लिए उसने कुछ अन्य उपायों का भी सहारा लिया, ताकि आय में कुछ वृद्धि की जा सके। उसने नये सिक्के चलाए, साथ ही पुराने सिक्कों में भी सुधार किया। जिन जागीरों से मालगुजारी नहीं मिलती थी उससे एक निश्चित मालगुजारी ली जाने लगी। जो लोग वनों की सीमाओं का उल्लंघन करते थे, उन पर भी जुर्माना लगाया जाने लगा। बहुत से यहूदियों पर भी कर (tax) लगा दिया गया। अमीरों के सिक्के बन्द कर दिये गये थे। एलाई के बिशप को खजांची बनाया गया।

नोट

(iii) **न्याय संबंधी सुधार** : हेनरी ने न्याय संबंधी सुधार के लिए भी कार्य किए। उसके समय में पाँच प्रकार की कचहरियाँ उपलब्ध थीं जोकि इस प्रकार हैं–

(क) शायर और हंड्रेड की स्थानीय कचहरियाँ थीं, परन्तु सामन्ती और राजकीय कचहरियों की उन्नति के साथ इनका महत्त्व घटने लगा था। हेनरी इन कचहरियों को पुनर्जीवित एवं उन्नत करना चाहता था, परन्तु वह सफल नहीं हो सका।

(ख) दूसरी थी सामन्ती कचहरियाँ, परन्तु हेनरी ने इनके बहुत सारे अधिकार छीन लिए।

(ग) इनमें चर्च के अधीन कुछ धार्मिक कचहरियाँ आती थीं, परन्तु हेनरी द्वितीय के काल से ही इनका महत्त्व घटने एवं राजकीय न्यायालयों का महत्त्व बढ़ने लगा था।

(घ) इस श्रेणी में क्यूरिआरेजिस और दौरा जजों की कचहरियाँ थीं। यह क्यूरिआरेजिस के केन्द्र में स्थित थी। यह कचहरियाँ स्टीफन के समय में लोकप्रिय नहीं थीं, साथ ही क्रियाशील भी नहीं थीं, परन्तु हेनरी के समय में इन कचहरियों को अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। साथ ही यह कार्यव्यस्त कचहरी बन गईं। अब सभी लोगों के मामले इसमें जाने के लिए छूट प्राप्त हो चुकी थी।

(ङ) उपर्युक्त कचहरी पाँचवीं श्रेणी में भी आती थी, परन्तु इस कचहरी में एक दिक्कत थी कि यह राजा के द्वारा ही चालित कचहरियाँ थीं। इसके कारण लोगों के पैसे एवं समय दोनों का दुरुपयोग होता था। अतः इसका भार हल्का करने के लिए और लोगों की असुविधा को दूर करने के लिए हेनरी ने सुयोग्य जजों के अधीन एक नयी अदालत कायम कर दी। यह अदालत कोर्ट ऑफ कॉमन प्लीज के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह कचहरी भी आम लोगों के बीच धीरे-धीरे लोकप्रियता पाने लगी थी। कभी-कभी जब कोई कठिन मामला आ जाता तो राजा स्वयं उस मामले में हस्तक्षेप किया करता था। यह कचहरी बराबर लंदन में काम करती थी। इसके जज भी प्रायः क्यूरिआरेजिस के ही जज होते थे और जूरी के सहारे (सहायता से) फैसला किया करते थे।

धीरे-धीरे दौरा जजों को भी सम्मान मिलने लगा था। हेनरी प्रथम के द्वारा जजों को दौरा पर भेजने की प्रथा चलाई गई थी, परन्तु इस प्रथा में दो प्रकार की कमी थी। जजों को दौरा पर जाने का मौका बहुत कम मिलता था और वह किसी स्थान पर निश्चित समय पर नहीं रह सकते थे। सभी लोगों को उनके पास मुकदमे ले जाने का अधिकार प्राप्त नहीं था। यदि किसी को अपना मुकदमा दौरा जजों के पास ले जाना हो तो वह राजा की अनुमति से ऐसा कर सकता था। स्टीफन के समय में इस प्रकार की कचहरियाँ बंद हो चुकी थीं, परन्तु हेनरी द्वितीय ने इन कचहरियों को पुनः आरम्भ कर दिया साथ ही इनमें कुछ फेरबदल भी किए–

पहला, जजों के दौरा पर जाने के समय को निश्चित किया।

दूसरा, सभी लोगों को इन जजों के पास मुकदमा ले जाने का अधिकार दिया गया। और

तीसरा, दौरा जजों को न्याय प्रणाली का मुख्य अंग बना दिया गया।

इन कचहरियों में सर्वप्रथम उन मामलों को देखा जाता था जिनमें राजा का स्वार्थ निहित होता था फिर केन्द्रीय कचहरियों से भेजे गए मामलों को देखा जाता था और अन्त में सर्वसाधारण मामलों पर विचार किया जाता था।

दौरा जजों को अधिकार मिलते जा रहे थे साथ ही उनके शासकीय कार्यों में भी वृद्धि की जा रही थी। वे स्थानीय और केन्द्रीय सरकारों के बीच की कड़ी का काम किया करते थे। उनका काम केन्द्र शेरीफों के कामों की जाँच करनी पड़ती थी। यदि आसपास कोई दंगा हो जाए तो उन्हें उस दंगे को दबाना भी पड़ता था। उनको यहूदियों पर नजर रखनी पड़ती थी। उनके अधीन कुछ आर्थिक काम भी थे। राजा की जागीर दूर-दूर तक फैली हुई रहती थी। दौरा जजों को उन जागीरों का लगान (Tax) समय-समय पर वसूलना पड़ता था।

(क) दौरा जजों की बढ़ती लोकप्रियता : धीरे-धीरे दौरा जजों को सम्मान एवं काम (अधिकार) अधिक दिया जाने लगा। दौरा जजों से आम नागरिकों को न्याय पाने के लिए अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता था। उनके लिए न्याय सस्ता एवं सुलभ हो गया था। दौरा जजों से आम नागरिकों को निम्न प्रकार की सुलभता प्राप्त होती थी–

नोट

(क) इससे आम नागरिकों के समय एवं पैसे दोनों की बचत हुआ करती थी।

(ख) जज अनुभवी एवं कुशल होते थे, उन्हें कानूनों की बेहतर समझ होती थी जिससे वे सही फैसला लेते थे।

(ग) दौरा जज बहुत ईमानदार होते थे।

(घ) दौरा जज कुछ शासकीय और आर्थिक कामों को भी किया करते थे।

(ङ) वे स्थानीय तथा केन्द्रीय शासन के बीच एक कड़ी का काम किया करते थे।

(च) इन जजों ने इंग्लैण्ड में सामान्य कानूनों (कॉमन लॉ) के विकास में बड़ा योगदान दिया था।

अत: दौरा जजों की कचहरी अधिक लोकप्रिय बनने लगी। मैग्नाकार्टा में भी यह माँग बढ़ गई थी कि दौरा जजों को प्रत्येक हलके में साल में 4-4 बार भेजा जाए।

(ख) जूरी प्रथा का प्रचार : *हेनरी द्वितीय के समय में जूरी प्रथा कतई नयी चीज नहीं थी।* विलियम प्रथम और हेनरी प्रथम के समय में भी इस प्रथा का प्रचलन था, परन्तु उस समय यह राजा के अधिकार क्षेत्र में था। राजा अपने ही काम में इसका उपयोग करता था। डूम्सडे पुस्तक के निर्माण के समय पड़ोसियों को कसम खिलाकर किसी की जमीन-जायदाद के सम्बन्ध में जाँच की जाती थी। राजा और किसी व्यक्ति के बीच यदि किसी जमीन के सम्बन्ध में मतभेद हो जाता था तो कुछ पड़ोसी कसम खाकर बताते थे कि वास्तव में यह जमीन किसकी है। इस तरह पड़ोसी लोग अपनी पूर्व जानकारी के आधार पर अपना मत दिया करते थे। हेनरी प्रथम के समय में दूसरे लोग भी उसकी आज्ञा से अपने मुकदमे की जाँच में जूरी का प्रयोग कर सकते थे।

हेनरी द्वितीय ने जूरी प्रथा का नये सिरे से संगठन किया। उसके शासनकाल में शुरू में अदालतों में जाँच के तीन तरीके प्रचलित थे। कम्परगेसन और ऑर्डियल तो आंग्ल-सैक्सन काल की देन थी। नार्मनों ने युद्ध का तरीका भी चलाया। किसी बात के लिए झगड़ा हो जाने पर दो आदमियों को लड़ा दिया जाता था और जो जीतता था अंत में जीत उसी की हुआ करती थी। इसका प्रयोग केवल दीवानी मामले (जमीन-जायदाद से सम्बन्धित मामले) में ही होता था। यह तरीका बहुत ही भद्दा था। हेनरी द्वितीय को इनमें से कोई भी तरीका रास नहीं आया। इसलिए उसने जूरी के प्रयोग पर अधिक बल दिया। उसने सभी प्रकार के मामलों में जूरी के प्रयोग पर जोर दिया। अर्थात् उसने सभी को यह अधिकार सौंप दिया कि वह अपना मामला जूरी द्वारा सुलटा सकते हैं। अब इस कार्य में राजा की अनुमति की आवश्यकता नहीं रह गई थी। जूरी प्रथा इतनी लोकप्रिय हुई कि *वह न्याय-प्रणाली का स्थायी अंग बन* गई थी। इंग्लैण्ड के साथ और भी कई प्रदेशों में आधुनिक काल में जूरी का प्रयोग होता था, परन्तु उस समय और इस समय में बहुत अंतर है। उस समय जूरी के सदस्यों के लिए यह जरूरी था कि उन्हें मामले के सम्बन्ध में पहले से ही पूरी जानकारी प्राप्त हो। लोग अधिकतर सच्चे एवं ईमानदार हुआ करते थे। वे शपथ लेने के बाद केवल सत्य ही कहा करते थे। आजकल भी जूरी के सदस्य कोई बात करने से पहले शपथ ग्रहण करते हैं परन्तु मामले की पहले से ही जानकारी हो कोई जरूरी नहीं है। बल्कि ऐसा भी कहा जा सकता है कि किसी सदस्य को किसी मामले की पहले से जानकारी हो और वह स्वीकार कर ले तो उसे जूरी में बैठने से मुक्त कर दिया जायेगा। गवाही के आधार पर अपनी बुद्धि के मुताबिक जूरी को फैसला करना पड़ता था।

हेनरी द्वितीय के समय काल में दीवानी तथा फौजदारी दोनों मामलों में जूरी का प्रयोग होता था। दीवानी मामलों में जजों के लिए आवश्यकता थी कि वे 12 पड़ोसियों से जो मामले के बारे में जानते हों, सहायता लें और फैसला सुनाएँ। वे एक बड़े गवाह का काम करते थे।

उन दिनों में फौजदारी मामले में दो बातों की बड़ी कठिन समस्याएँ थीं। एक तो अपराधी का पता लगाना और दूसरे उस अपराधी के खिलाफ कचहरी में शिकायत करना। हेनरी ने इन सभी समस्याओं का हल कर दिया। उसने प्रत्येक हंड्रेड में 12 व्यक्तियों की एक जूरी बना दी। इनका काम था कि दौरा जजों के उस स्थान से चले जाने के बाद जो भी अपराध हों, उन अपराधों की और उनके बारे में जिन लोगों पर आशंका हो, उन अपराधियों की एक सूची तैयार करें। जब दौरा जज उस क्षेत्र में फिर जाते थे तो यह सूची उनके सामने पेश की जाती थी। इसके साथ ही इन लोगों का काम समाप्त हो जाता था। इस जूरी को महान जूरी (ग्रैण्ड जूरी), पेश करने वाली जूरी

नोट

(जूरी ऑफ प्रेजेटमेंट) और अभियोग लगाने वाली जूरी (जूरी ऑफ एक्यूजेशन) कहते थे। इस जूरी का काम बड़ा कठिन था। इसके सदस्य किसी के नाम को जानते हुए छिपा नहीं सकते थे। यदि ऐसा पता लग जाता था तो उन्हें ही सजा होती थी। अपराधियों के नाम बताने पर उन्हें भय बना रहता था कि उन पर भी कहीं आपत्ति न आ जाए।

दौरा जजों के सामने जब सूची पेश हो जाती थी, तब उन सभी अपराधियों को पकड़कर उनकी जाँच की जाती थी। इसमें पानी का अधिक प्रयोग होता था। अपराध सिद्ध हो जाने पर कानून के अनुसार सजा मिलती थी। यदि परीक्षा में कोई अपराधी निर्दोष सिद्ध हुआ तो उसे छोड़ दिया जाता था, परन्तु यदि उस आदमी की अपने इलाके में बहुत बदनामी रही हो तो उसे देश से निकाल दिया जाता था और उसकी जायदाद पर पूरा अधिकार सरकार का हो जाता था।

(ग) जूरी का महत्त्व : जूरी की प्रथा बहुत लोकप्रिय हो चुकी थी। इसका महत्त्व भी बढ़ता ही जा रहा था। परीक्षाओं (ऑर्डियल) की तुलना में यह प्रथा सहज और अधिक विश्वसनीय थी। लोग इसे अधिक पसंद करते थे। इस प्रथा ने बैरनों की अदालतों को बहुत अप्रिय बना दिया और उन्हें बहुत हानि पहुँचायी। अब शाही अदालतों में ही अधिक मुकदमे जाने लगे।

इससे राजा की प्रतिष्ठा और आमदनी दोनों में वृद्धि हो रही थी। धीरे-धीरे जूरी प्रथा, न्याय-प्रणाली का स्थायी अंग बन गयी। इस पर एक अंग्रेज इतिहासकार ने कहा भी है, "इंग्लैण्ड में जूरी का उपयोग लोकतांत्रिक शासन का आरम्भ था।"

(घ) कॉमन लॉ का विकास : आंग्ल-सैक्सन काल में कानून रस्म-रिवाजों पर आधारित थे। सभी शायरों में रस्म-रिवाजों की विभिन्नता थी। अत: कानून भी विभिन्न थे। समस्त देश के लिए एक समान कानून नहीं थे। नार्मनों के साथ उनकी रस्म-रिवाजों की भी एक धारा इंग्लैण्ड में आ गयी। सामन्त प्रथा के साथ सामन्ती प्रथाएँ लागू हुईं। अत: कानून के क्षेत्र में और भी विभिन्नता बढ़ी। हेनरी द्वितीय की नजर में यह बात अच्छी नहीं थी और यह दूर कर दी गई। दौरा जजों और कॉमन प्लीज की अदालतों के निर्माण के साथ कानून के क्षेत्र में समानता आने लगी। धीरे-धीरे परीक्षाओं के विभिन्न तरीके समाप्त होने लगे और राजकीय अदालतें जूरी की सहायता से फैसले करने लगी। आंग्ल-सैक्सन और नार्मन की रस्म-रिवाजों में जो उपयोगी बातें थीं; वे ले ली गईं। इस तरह अब सारे देश के लिए एक समान कानूनों का विकास होने लगा। ऐसे ही कानून को कॉमन लॉ (सामान्य लॉ) कहते हैं।

इंग्लैण्ड की विधियों और संस्थाओं पर दूसरे हेनरी का गहरा प्रभाव जितना पड़ा उतना प्रभाव शायद ही किसी अन्य व्यक्ति का पड़ा हो।

4.4 मैग्नाकार्टा (महान अधिकार-पत्र)

1213 ई. में दो सभाएँ हुईं। पहली सभा सेंट अलबन्स में हुई। इसमें सरदार, शायर (प्रान्त) तथा हंड्रेड (जिला) के भी प्रतिनिधि इकट्ठे हुए। प्रतिनिधित्व का यह पहला उदाहरण है। प्रत्यक्ष उद्देश्य तो कुछ और ही था किन्तु इसमें प्रजा के कष्टों तथा कठिनाइयों पर विचार-विमर्श हुआ। एक सप्ताह के बाद सेंटपाल में दूसरी बैठक हुई। इसमें लैंगटन ने हेनरी प्रथम के चार्टर (सनद) के बारे में लोगों को सूचना दी और उसके आधार पर एक दूसरा चार्टर तैयार किया गया। फ्रांस से जब जॉन इंग्लैण्ड आया तो अपनी शक्ति को वह बढ़ाना चाहता था। इसके लिए उसने भाड़े पर सैनिकों को बुलाया। अब उसकी स्वीकृति के लिए चार्टर को उसके सामने पेश करना पड़ा। जॉन को बैरन, पादरी तथा जनता के संयुक्त मोर्चे का सामना करना पड़ा। इसके लिए उसने टालमटोल की नीति अपनायी और पीछे से लोगों में फूट डालकर अपना काम निकलवाना चाहा, परन्तु उसकी यह नीति सफल न हो सकी। अन्त में 15 जून, 1215 ई. को लंदन के पास रन्नीमेड के स्थान पर जॉन ने उस चार्टर पर अपना हस्ताक्षर कर स्वीकृति दे दी। यही चार्टर इतिहास में 'मैग्नाकार्टा' के नाम से प्रसिद्ध है।

अत: यह कहा जा सकता है कि 15 जून, 1215 ई. को बैरनों ने राजा जॉन से अपनी माँगों को स्वीकृत कराया। जिस पत्र में इन माँगों का उल्लेख किया गया है उसे ही लैटिन भाषा में मैग्ना (ग्रेट) + कार्टा (चार्टर), अंग्रेजी में ग्रेट चार्टर तथा हिंदी में महान अधिकार-पत्र कहा जाता है।

(क) मैग्नाकार्टा की धाराएँ : मैग्नाकार्टा में कुल 63 अनुच्छेद हैं। यह सभी बातों को मानने के लिए राजा को बाध्य करता है। इसकी मुख्य धाराएँ निम्नलिखित हैं–

1. पहले अनुच्छेद के अनुसार चर्च के अधिकारों और आजादी पर हमला न करने का वादा किया गया है। साथ ही सामन्ती व्यवस्था के सम्बन्ध में कई वादे किये गए हैं। किसी असामी के मर जाने पर उसका लड़का निश्चित रकम देने के बाद पैतृक सम्पत्ति का अधिकारी बन सकता था। यदि उसका लड़का या उत्तराधिकारी नाबालिग हो तो उस स्थिति में राजा ही संरक्षक का काम करेगा, परन्तु किसी प्रकार से कुछ सम्पत्ति पर प्रतिबंध लगाया गया। राजा और उसके कर्मचारी जब बाहर जाते थे तो लोगों को उनके भोजन और निवास के लिए मुफ्त या मामूली मूल्य लेकर इंतजाम करना पड़ता था। अब इन सभी तथ्यों (बातों) पर रोक लगा दी गई।
2. कुछ अनुच्छेदों के मुताबिक लंदन और अन्य नगरों के अधिकारों को सुरक्षित किया गया और व्यापारियों को व्यापार-सम्बन्धी सुविधाएँ दी गईं। नाप-तौल में एकरूपता लाई गई। कुछ अनुच्छेदों के अनुसार हेनरी द्वितीय द्वारा कायम की गई न्याय-प्रणाली को स्वीकृत किया गया।
3. अनुच्छेद 3 का बहुत ही वैज्ञानिक महत्त्व है, मैग्नाकार्टा के सभी अनुच्छेदों में। इसके अन्तर्गत आने वाली बातें इस प्रकार हैं–

(*i*) महान परिषद् (ग्रेट कौंसिल) की सहमति के बिना राजा तीन नियमी जागीरी सहायताओं के अलावा अन्य कोई भी सहायता नहीं ले सकता था। अब इस परिषद् की बैठक नियमित रूप से बुलाना निश्चित कर दिया गया था। कम-से-कम 40 दिन पहले बैठक के लिए तारीख और स्थान का निश्चित करना आवश्यक था। साथ ही इसकी सूचना सभी सदस्यों को दी जानी भी अति आवश्यक थी। अत: स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इस अनुच्छेद के अनुसार राजा अपनी मर्जी अथवा मनमाने ढंग से कोई कार्य नहीं कर सकता था एवं टैक्स भी नहीं लगा सकता था।

(*ii*) अनुच्छेद 3(ख) के अनुसार नियमित न्यायालय में बिना जांच-पड़ताल के किसी भी आम नागरिक को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता था और बिना अपराध साबित हुए किसी को शक के आधार पर न तो जेल में डाला जा सकता था और न ही किसी प्रकार से दंडित किया जा सकता था। इसका तात्पर्य यह हुआ कि किसी भी नागरिक के साथ बिना कारण अनुचित व्यवहार नहीं किया जा सकता था।

(*iii*) राजा किसी के साथ न्याय करने में न तो देर कर सकता था और न ही न्याय करने से इंकार कर सकता था, न ही धन लेकर इसे बेच ही सकता था अर्थात् सभी के साथ न्याय करना अनिवार्य था। प्रत्येक अपराध के लिए जुर्माना तय होता था। राजा अपनी आमदनी में बढ़ोतरी के लिए अधिक जुर्माना नहीं लगा सकता था।

4. अनुच्छेद 61 के अनुसार 25 बैरनों की एक समिति कायम हुई। इस समिति का कार्य राजा पर नजर रखना था कि राजा अपने वादे सही तरीके से निभा रहा है या नहीं और यदि राजा अपने वादे को सही ढंग से पूरा नहीं करता तो समिति के पास यह अधिकार था कि वह उचित कार्यवाही करके राजा के खिलाफ बगावत करे और यह समिति राजा को उसकी गद्दी से उतार सकती थी। परन्तु समिति इस बात के लिए बाध्य थी कि वह राजा या राजा के परिवार के किसी भी व्यक्ति को जेल में नहीं डाल सकती थी और न ही उनके साथ बदसलूकी कर सकती थी।

(ख) मैग्नाकार्टा का महत्त्व : यह तो सत्य है कि मैग्नाकार्टा इंग्लैण्ड के इतिहास का महत्त्वपूर्ण बदलाव था परन्तु इसके संदर्भ में इतिहासकारों के मत भिन्न-भिन्न हैं। इन मतों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है –

(*i*) मैग्नाकार्टा एक प्रतिक्रियावादी विधान था।

(*ii*) यह एक साम्यवादी विधान था।

(*iii*) यह अंग्रेजों की आधारशिला का आधार था।

नोट

नोट

उपरोक्त तीनों ही मतों में कुछ-न-कुछ सत्य था परन्तु तीसरे मत में सत्य का अंश अधिक पाया जाता है। अत: यह कहा जा सकता है कि तीसरा मत का महत्त्व बहुत अधिक वैधानिक था। तीनों मतों पर विस्तार से विचार किया जा सकता है, जो निम्नलिखित हैं–

(*i*) **प्रतिक्रियावादी विधान :** मैग्नाकार्टा को प्रतिक्रियावादी विधान इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस विधान में किसी प्रकार की नयी बात पर कोई चर्चा नहीं की गई थी। इसमें केवल पुरानी बातों को पुनर्रूप से दोहराया गया था। इसमें जनता के मताधिकार या प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा गया था। मंत्रियों के उत्तरदायित्व या व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भी चर्चा नहीं की गई थी। मैग्नाकार्टा के अंतर्गत चर्च, नगरों और व्यापारियों को कुछ अधिकार प्रदान किए गए थे, परन्तु यह कोई नयी बात नहीं थी क्योंकि यह अधिकार इंग्लैण्ड के कई राज्यों में पहले ही दिए जा चुके थे। किसी-न-किसी का मत यह भी था कि मैग्नाकार्टा से बैरन अधिक शक्तिशाली हो गये और वे अब सर्वसाधारण पर अत्याचार करने से नहीं चूकते थे।

(*ii*) **सामन्तवादी विधान :** मैग्नाकार्टा के प्रति सामन्तवादी विधान भी सत्य से कुछ कम नहीं था। इसने सामन्ती समाज में राजा तथा उसके सरदारों के बीच और उसके सरदारों तथा इनके अधीनस्थ सरदारों के बीच के सम्बन्धों को ठीक किया। यह पराजित राजा और विजयी बैरनों के बीच एक संधिपत्र था। दोनों के बीच बहुत-सी अनिश्चित बातें थीं, जिन्हें मैग्नाकार्टा ने स्पष्ट कर दिया। इस कारण कहा जा सकता है कि इसका सम्बन्ध सामन्ती व्यवस्था से था जो पतन की ओर अग्रसर हो रही थी। अत: मैग्नाकार्टा का सम्बन्ध एक ऐसे अतीत से था जिसका अन्त बहुत ही निकट था। इस दृष्टि से भी मैग्नाकार्टा का कोई विशेष महत्त्व नहीं दिखाई देता था।

(*iii*) **अंग्रेजों की आधारशिला :** महानपरिषद् की बैठक नियमित रूप से बुलाने के लिए निश्चित किया गया, किन्तु इस परिषद् को अधिकार बहुत ही कम मिला हुआ था। केवल नये कर लगाने के सम्बन्ध में इसकी सहमति आवश्यक थी, किन्तु सरकार की नीति को निर्धारित करने में इसका कोई हाथ नहीं था। यदि मैग्नाकार्टा को सत्य रूप से देखा जाए तो मैग्नाकार्टा महज एक कागज का टुकड़ा है जिस पर विशेषज्ञों के भिन्न-भिन्न मत हैं। यह केवल एक चार्टर सीट है। इसका सामन्त युग, मध्ययुग एवं आधुनिक युग तीनों में भिन्न-भिन्न अर्थ एवं महत्त्व रहा है। अपनी उत्पत्ति से लेकर आधुनिक युग तक मैग्नाकार्टा का विशेष महत्त्व रहा है जोकि प्रयत्न के रूप में देखा जा सकता है। इस पर **हैलम** का कहना है कि "मैग्नाकार्टा अंग्रेजी स्वाधीनता की आधारशिला है।" **स्टब्स** के शब्दों में– "इंग्लैण्ड का सम्पूर्ण संवैधानिक इतिहास ही मैग्नाकार्टा की एक व्याख्या मात्र है।" **लार्ड चैथम** ने कहा है कि "महान अधिकार-पत्र (मैग्नाकार्टा), अधिकार याचना-पत्र (पेटीशन ऑफ राइट्स) और अधिकार-पत्र (बिल ऑफ राइट्स) अंग्रेजी संविधान के बाइबिल हैं।"

(ग) मैग्नाकार्टा का सैद्धान्तिक महत्त्व : मैग्नाकार्टा के कुछ सिद्धान्त भी निकाले गए है जिन पर अंग्रेजी संविधान की इमारत खड़ी है। इसके सिद्धान्त इस प्रकार हैं–

(*i*) इसके अनुसार देश का क़ानून ही सर्वोपरि हैं, अर्थात् राजा भी कानून के अंतर्गत ही आता है। उसके अधिकार भी सीमित होने चाहिए और हैं। जॉन ने कुछ कानूनों की उपेक्षा की थी, परन्तु मैग्नाकार्टा को स्वीकार करने के बाद ऐसा न करने का वादा किया।

(*ii*) यदि राजा कानून भंग करे तो प्रजा को अधिकार है कि उस पर हिंसात्मक तरीके से भी दबाव डाले कि वह ऐसा नहीं करे वरना उसे गद्दी से हटाया जा सकता है।

ये दो सिद्धान्त आधुनिक स्वतंत्र शासन के आधार हैं और इस दृष्टि से इंग्लैण्ड में मैग्नाकार्टा के साथ निरंकुश राजतंत्र का युग समाप्त हो गया और सीमित राजतंत्र का युग प्रारम्भ हुआ। यह कहना भी ठीक न होगा कि मैग्नाकार्टा से केवल बैरनों को ही लाभ पहुँच रहा था, बल्कि जो सुविधाएँ बैरनों को राजा से मिली थी, उन सुविधाओं को बैरनों ने भी अपने मातहत के लोगों को प्रदान किया। नगरों और व्यापारियों को भी सुविधाएँ मिलीं जिनसे मध्यवर्ग वाले लोगों को भी फायदा हुआ था। साथ ही यह कहना भी गलत नहीं होगा कि इससे सबसे अधिक लाभ बैरनों को ही हुआ परन्तु सारा राष्ट्र ही इससे लाभान्वित हुआ। यह अंग्रेजी स्वतंत्रता की पहली नींव है। इसी नींव पर इंग्लैण्ड की एक विशाल इमारत खड़ी है तथा इसके लाभ की लहर इंग्लैण्ड के बाहर अन्य राष्ट्रों तक भी

नोट

पहुँचने लगी थी। मैग्नाकार्टा ने अपने नरम स्वभाव एवं मामूली मांग को आधार बनाया। उसने राजा को ही शासक बने रहने दिया। केवल एक ही कठोर मांग की गई थी कि राजा अपने पुराने विधियों, रीति-रिवाजों को चालू ही रखे।

मैग्नाकार्टा ने राजनीतिक दलबंदी में कुछ परिवर्तन किया। नार्मन राज्यकाल के प्रारम्भ में बैरन लोग अपने राजाओं से कुछ असंतुष्ट थे क्योंकि वे बदले में पुरस्कार चाहते थे। अत: वे राजा के विद्रोही बन गये। वे एक स्वतंत्र राज्य चाहते थे। मैग्नाकार्टा के समय राजा कानून को भंग करना चाहता था। राजा के विरुद्ध बैरन, पादरी तथा सर्वसाधारण संगठित हुए। बैरन जब पूरी स्वतंत्रता पाने में असफल रहे तो वे शासन में कुछ अधिकार पाकर ही संतोष करने लगे। अब उन्हें स्वतंत्रता नहीं, किन्तु वास्तविक शक्ति चाहिए थी। अंत में राजा ने अपने हाथ खड़े कर दिए। वह अपने सारे उद्देश्यों को भूल गया और मैग्नाकार्टा को स्वीकार कर लिया।

मैग्नाकार्टा इंग्लैण्ड की प्रारम्भिक राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। अब तक बैरन, बिशप तथा सर्वसाधारण अलग-अलग राह पकड़ चुके थे। जनता बैरनों को अपना दुश्मन समझने लगी परन्तु मैग्नाकार्टा के अवसर पर बैरन, पादरी तथा सर्वसाधारण प्रजा सभी राजा के विरुद्ध हो गये थे। यह पहला अवसर था जब सभी लोग समान माँग के लिए एकत्रित हुए हों। इससे एक बात तो पूर्णत: सिद्ध होती है कि 13वीं सदी के प्रारम्भ में इंग्लैण्ड एकता की ओर अग्रसर हो रहा था।

मैग्नाकार्टा जहाँ एक ओर इतना सफल, लोकप्रिय और लाभान्वित था वहीं दूसरी ओर उसमें त्रुटि (कमियाँ) भी थी। इसके सिद्धान्तों को व्यवहार में लाने के लिए कोई वैधानिक साधन निर्मित नहीं किया गया, लेकिन 25 बैरनों की एक समिति कायम हुई परन्तु यह क्रान्तिकारी समिति साबित हुई जो पूर्णत: राजा के दुश्मन थे। इस समिति का यह काम नहीं था कि यह राजा से मैग्नाकार्टा की मांगों को पूरा करवाए, अपितु इसका तो यह काम था कि राजा जब इनकी मांग की उपेक्षा करे तो उसे (राजा को) दण्ड अवश्य मिले, परन्तु कुछ समय बाद राजा की मृत्यु हो गई। अत: इस समिति को अपने अधिकार के उपयोग का अवसर ही नहीं मिला।

4.5 एडवर्ड प्रथम (1272-1307 ई.)

जिस समय एडवर्ड के पिता की मृत्यु हुई थी उस समय एडवर्ड फिलस्तीन में धर्मयुद्ध पर गया हुआ था, परन्तु उसके कई दोस्त और समर्थक इंग्लैण्ड में मौजूद थे। उन्होंने ही मिलकर इंग्लैण्ड की गद्दी को सुरक्षित रखा साथ ही देश में अमन-चैन को भी कायम रखा। एडवर्ड 1274 ई. को अपने वतन वापस लौटा। 34 वर्ष की आयु में उसका राज्याभिषेक हुआ, फिर उसने इंग्लैण्ड की गद्दी को सम्भाला। एडवर्ड बड़ा ही वीर एवं समझदार योद्धा था। वह साइमन के साथ हुए युद्ध में अपने पिता के साथ था। वह धर्मयुद्ध में भी भाग ले चुका था। वह रणभूमि के कामों में पूर्णत: दिलचस्पी लेता था। वह दृढ़ विश्वासी, परिश्रमी एवं अपनी धुन का पक्का व्यक्ति था। वह निपुण एवं कुशल था। लोगों को उस पर पूरा विश्वास था। वह एक सैनिक था परन्तु राजनीति में भी उसकी बुद्धिमता कुछ कम न थी। वह समय की मांग को समझता था। इसके लिए उसने अपने राज्य के अनेक क्षेत्रों में कई सुधार किए। वह एक महान सुधारक, कुशल शासक और सफल कानून निर्माता था। उसके विचार एवं दृष्टिकोण दोनों ही बहुत व्यापक थे। वह अपने शत्रुओं से भी अच्छे गुणों को सीखने में विश्वास रखता था। साइमन उसका दुश्मन था। उसने उसके साथ युद्ध भी किया था, परन्तु एडवर्ड ने उससे भी पार्लियामेंट के जरिये राष्ट्र का समर्थन पाने की नीति को सीखा और व्यवहार में लाया। वह समस्त ब्रिटिश द्वीपसमूह को एक शासन सूत्र में बांधना चाहता था और देश में राष्ट्रीय सरकार को भी मजबूत बनाना चाहता था। इसके लिए उसने सामन्त व्यवस्था को जड़ से ही उखाड़ फेंका। उसकी नीति एवं उपलब्धियों को देखते हुए उसे मध्ययुगीन इंग्लैण्ड का सर्वश्रेष्ठ शासक कहा जाता है। उसने इंग्लैण्ड को ही हर तरह से शक्तिशाली बनाने का पूरा-पूरा प्रयास किया। अत: यह कहा जा सकता है कि सही मायनों में एडवर्ड ही पहला राष्ट्रीय राजा था।

एडवर्ड ने केवल साइमन का ही अनुसरण नहीं किया, बल्कि कई बातों में वह अपने दादा द्वितीय हेनरी का भी अनुसरण कर रहा था। वह इंग्लैण्ड में अच्छे बदलाव लाने में पूर्णत: सफल रहा।

नोट

(क) अंग्रेज जस्टीनियन : एडवर्ड कानूनी और प्राविधिक (टेक्नीकल) प्रकृति का व्यक्ति था। उसको कानून एवं न्याय में बहुत अधिक दिलचस्पी थी। अत: उसकी तुलना जस्टीनियन के साथ की जाती है। जस्टीनियन पूर्वी रोम साम्राज्य का (छठी सदी) एक सम्राट था। उसने अपने शासक के समय तक के प्रचलित सभी कानूनों का संग्रह किया और उन्हें लिखित रूप दे दिया। उस समय तक कानून का काफी विकास हो चुका था लेकिन इंग्लैण्ड में तो अभी विकास का दौर चल ही रहा था। इसलिए एडवर्ड ने प्रचलित कानूनों का संग्रह किया और उनमें सुधार कर, नए कानूनों का निर्माण किया और उन्हें अपने देश में लागू करने का पूरा प्रयास किया। अत: यह कहा जा सकता है कि एडवर्ड, जस्टीनियन से भी ऊँचा था। उसने राजकीय शक्ति को बढ़ाने और बैरनों तथा पादरियों की शक्ति को कुचलने के लिए कई नियमों का निर्माण किया। इस तरह उसने सामन्ती व्यवस्था की जड़ें खोद दीं और सामान्य कानून (कॉमन लॉ) को प्रोत्साहित किया।

(ख) एडवर्ड के कानून : एडवर्ड ने कानून बनाए और बैरनों (सरदारों) के साथ सम्बन्ध अच्छे करने के भी प्रयास किए।

(*i*) 1275 ई. में वेस्टमिंस्टर का पहला कानून पास हुआ। इसके द्वारा भेजे (बाहर) जाने वाले ऊन, चमड़े, कुछ वस्तुओं आदि पर निश्चित कर (Tax) लगा दिया गया। इससे राजा को आर्थिक लाभ पहुँचा। इसने पार्लियामेंट को चुनाव सम्बन्धी अधिकार भी दिए। इस कानून ने राजा के अधिकारों को लोगों की नजर में अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया।

(*ii*) 1278 ई. में ग्लौसैस्टर का कानून पास हुआ। बहुत से बैरनों ने जमीन पर अनुचित अधिकार कायम कर लिया था और इसके साथ ही अपनी अदालत भी स्थापित कर ली थी। राजा ने इस संबंध में कमिश्नरों को नियुक्त कर दौरा पर भेजा था। इनका काम यह जाँच करना था कि किस अधिकार से बैरन ने जमीन पर कब्जा कर लिया। जिनके पास इस सम्बन्ध में राजा की दी हुई सनद नहीं रहती थी उससे जमीन वापस छीन ली जाती थी और अदालत को भी बंद कर दिया जाता था। इस कानून को 'वारंटी' भी कहा जाता था।

(*iii*) 1283 में एक व्यापारी कानून (स्टेच्यूट ऑफ मर्चेन्ट्स) बना, जिसे 'बेर्नेल कानून' के नाम से भी जाना जाता है। कभी-कभी सरदार लोग व्यापारियों से कर्जा लेकर देने में आनाकानी किया करते थे। अत: इस नियम के अनुसार यह तय हुआ कि जो लोग कर्ज चुकाने में टालमटोल करेंगे, उनकी जमीन-जायदाद जब्त कर ली जाएगी और साथ ही उन्हें कैद भी कर लिया जाएगा।

(*iv*) 1285 ई. में विंचेस्टर का कानून पास किया गया। इसके द्वारा हेनरी द्वितीय के एसाइज ऑफ आर्म्स नामक कानून को पुनर्जीवित किया गया। इसके अनुसार प्रत्येक आदमी अपने पद और हैसियत के मुताबिक हथियार रख सकता था। इससे राजा की सैनिक शक्ति में वृद्धि हुई। एक ओर नियमानुसार 40 पौंड सालाना आमदनी वाले के लिए नाइट की पदवी लेना जरूरी कर दिया गया। पदवी प्राप्त करने के लिए फीस देनी पड़ती थी। पदवी न लेने वाले को जुर्माना देना पड़ता था। दोनों तरीकों से राजा को आर्थिक लाभ हुआ। नाइट बनने वाले भी राजा के अनुयायी होते थे। इस नियम को 'डिस्ट्रेंट ऑफ नाइटहुड' कहते हैं।

(*v*) 1285 ई. में ही वेस्टमिंस्टर का दूसरा कानून पास हुआ। इसके द्वारा जमीन-जायदाद का उत्तराधिकार निश्चित किया गया। किसी बैरन के मरने पर उसकी रियासत उसके वास्तविक अधिकारी को मिलेगी। जमीन-जायदाद पर बड़े लड़के का ही अधिकार कायम रहा। अन्य भाइयों को नौकरी की तलाश करनी पड़ती थी। इसके कई परिणाम निकले। पहले तो कुछ थोड़े से बड़े घरानों के अधिकार में बहुत जमीन हो गयी। दूसरे, जमींदारों की संख्या घटने लगी। तीसरे सर्वसाधारण और सरदारों के बीच का भेदभाव घटने लगा क्योंकि बड़े सरदार के ज्येष्ठ पुत्र के अलावा जितने भी पुत्र या लड़के होते थे, उन्हें साधारण लोगों की तरह ही काम करना पड़ता था। इस तरह इंग्लैण्ड के बीच छोटी-छोटी जमीनों का बंटवारा रुक गया। बड़े-बड़े भूमिपतियों का एक वर्ग कायम हो गया। इसने देश के राजनैतिक इतिहास पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है।

(*vi*) इन सबके बाद 1290 ई. में वेस्टमिंस्टर का तीसरा कानून पास हुआ। इसके पहले ऐसा होता था कि एक व्यक्ति कई आदमियों से भिन्न-भिन्न शर्तों पर जमीन ले लेता था। अत: उचित ढंग से मालिक की सेवा नहीं

हो पाती थी। इस नियम के द्वारा यह तय हुआ कि कोई जमीन किसी से भी ले, किन्तु वह बड़े जमींदार की ही प्रजा माना जायेगा, न कि बीच में जमीन देने वाले की। इससे उसकी सेवाओं का लाभ बीच वाले जमींदार को न मिलकर बड़े जमींदार यानि राजा को ही मिलने लगा।

नोट

(ग) चर्च के साथ सम्बन्ध : चर्च के सम्बन्ध में भी दो तरह के कानून पास हुए–

1. 1279 ई. में मौर्टमेन (मरा हाथ) कानून बना। राजा का मानना था कि जो जमीन चर्च तथा धार्मिक संस्थाओं को दे दी जाती थी, वह मुर्दा हाथ में चली जाती थी। ऐसी संस्थाओं से सरकार को टैक्स नहीं मिला करता था, परन्तु इससे चर्च की शक्ति बढ़ती थी। कितने ही लोग तो सामन्ती लगान से बचने के लिए अपनी जमीन चर्च को दान कर दिया करते थे। फिर ठीका-पट्टा आदि के रूप में उससे लेकर जमीन जोतते थे। अत: मौर्टमेन कानून के द्वारा चर्च तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं को जमीन-जायदाद देने पर रोक लगा दी गई।

2. 1285 ई. में सरकम्सपेक्ट अगेंठिस नामक कानून बना जिसका शाब्दिक अर्थ है होशियारी से रहना। इसके मुताबिक राजकीय जजों को होशियारी से रहने को कहा गया ताकि चर्च की अदालतें अपना अधिकार न बढ़ा लें। वे केवल धार्मिक मामलों को ही देख सकते थे। एडवर्ड ने पोप के पास कोई भी टैक्स भेजना रोक दिया।

(घ) एडवर्ड के कारण न्याय के क्षेत्र में भी बहुत सुधार हुए। उसने केन्द्र में राजकीय अदालतों का संगठन किया। क्यूरिया-रेजिस से 3 अदालतों का विकास हुआ था–

(*i*) किंग्स बेंच, जिसमें बड़े लोगों के मामले देखे जाते थे।

(*ii*) एक्सचेकर, जिसमें राजा की आमदनी और जमीन से सम्बन्धित मामले देखे जाते थे। 1284 ई. में इस आशय का रुदलम नामक एक कानून पास किया गया था।

(*iii*) कॉमन प्लीज, नामक एक और कानून पास हुआ, जिसमें जनता के मामले देखे जाते थे। इसमें सामान्य कानून (कॉमन लॉ) का उपयोग होता था। अब प्रत्येक अदालत में अलग-अलग जजों की बहाली कर दी गई थी। इन अदालतों के अलावा चांसलर के अधीन चांसरी नामक अदालत थी जिसमें इक्विटी लॉ के मुताबिक फैसला किया जाता था।

(ङ) शांति स्थापना का प्रयास : एडवर्ड देश में शांति स्थापित करना चाहता था जिसके लिए उसने बैरनों एवं पादरियों को दबाया, न्याय के क्षेत्र में सुधार किए, विनचेस्टर को कानून का रूप दिया। इन सभी कार्यों से उसे शांति स्थापित करने में बहुत मदद मिली। उसने शांति स्थापना के लिए कई अन्य उपाय भी किए–

(*i*) उसने सड़क के आसपास वाले सभी झाड़-जंगलों को कटवा दिया।

(*ii*) रात में शहर के सभी दरवाजों को बंद रखने का नियम बनाया।

(*iii*) यदि कोई अपरिचित आदमी नगर में दाखिल होता तो उसका पता-ठिकाना रजिस्टर कर लिया जाता।

(*iv*) उसने खास अफसर बहाल किया जो शान्ति-संरक्षक (कंजर्वेटर ऑफ पीस) कहलाता था। बाद में वह शान्ति-न्यायाधीश (जस्टिम ऑफ पीस या जे.पी.) के नाम से मशहूर हुआ और स्थानीय शासन का मुख्य स्तंभ बन गया।

(*v*) एडवर्ड का राज्यकाल पार्लियामेंट की प्रगति के लिए भी प्रसिद्ध है। उसने 1295 ई. में एक पार्लियामेंट बुलाई जो आदर्श पार्लियामेंट कहलाती है। उसके कारण ही पार्लियामेंट पूरे राष्ट्र की प्रतिनिधि संस्था बन गई थी।

(*vi*) उसने शान्ति स्थापना के लिए मैग्नाकार्टा का भी समर्थन किया। एक समय आया जब उसे धन की बहुत आवश्यकता पड़ी। वह चाहता था कि प्रत्येक नागरिक को कानून का पूरा-पूरा ज्ञान हो। इसके लिए उसने पठन-पाठन हेतु एक कॉलेज भी खोला। इससे सिक्कों में भी काफी सुधार देखा गया। पहले तो फार्दिङ्ग और पेनी के सिक्कों का चलन हुआ। नीदरलैंड के साथ एक व्यापारिक समझौता किया गया और इंग्लैण्ड से कई यहूदियों को बाहर निकाल दिया गया। उसके समय में नगरों की नीति बहुत संकुचित थी जिससे व्यापार में बाधा उत्पन्न होती थी। एक नगर से दूसरे नगर जाने वाले निवासी को विदेशी का दर्जा दिया जाता था। चूंकि एडवर्ड खुले विचारों वाला था इसलिए उसने इस संकुचित नीति का विरोध कर एक नई राष्ट्रीय व्यापारिक नीति का समर्थन किया।

नोट

(*vii*) जिस समय एडवर्ड को धन की आवश्यकता पड़ी तो उसने इसके लिए अपनी प्रजा से मनमाने ढंग से कुछ टैक्स वसूल करने लगा। इस पर एक स्मृतिपत्र (मेमरैण्डम) तैयार किया गया जो कन्फर्मेशियों कार्टेरम कहलाता है। 1297 ई. में राजा ने इसे स्वीकृति दे दी। इसके द्वारा मैग्नाकार्टा का पुष्टिकरण हुआ। मैग्नाकार्टा में सामन्ती जमींदारों से मनमाने ढंग से टैक्स लेने की मनाही की गई, परन्तु इस बार राजा को पार्लियामेंट की मर्जी के बिना अपनी समस्त प्रजा से टैक्स लेने पर रोक लगा दी गई।

(च) ग्रेट ब्रिटेन की स्थापना के प्रयत्न : हेनरी द्वितीय ने आयरलैंड के कुछ भाग पर कब्जा कर लिया था परन्तु एडवर्ड, हेनरी द्वितीय से दो कदम आगे निकला। एडवर्ड ने मौलिक विचार कायम करने के विषय में सोचा और कदम भी उठाया। उसे पूरी सफलता तो नहीं मिली, परन्तु आगे चलकर इस प्रयत्न में बहुत कुछ सफलता मिली और एडवर्ड द्वारा शुरू किया हुआ काम पूरा हुआ। एडवर्ड वेल्स तथा स्कॉटलैंड में असफल हुआ।

वेल्स बहुत दिनों तक स्वतंत्र रहा था। अंग्रेजों ने इस पर कब्जा करना चाहा परन्तु वे सफल नहीं हो सके। नार्मनों के समय में वेल्स के दक्षिणी भाग पर कब्जा हो गया था और बहुत से बैरन वहाँ बस भी गये। उत्तरी भाग जंगलों और पहाड़ियों से भरा हुआ था। वेल्स निवासी अंग्रेजों के साथ लड़ा करते थे और उनके दुश्मनों की मदद भी करते थे। वेल्स का राजा (लेवलिन) एडवर्ड द्वितीय का समकालीन था। एडवर्ड ने लेवलिन से अपनी प्रभुता को स्वीकार कराने के लिए हुक्म दिया। लेवलिन ने इंकार कर दिया। इसलिए एडवर्ड ने वेल्स पर हमला कर दिया। लेवलिन ने हारकर उसकी अधीनता मान ली। अब करीब 5 वर्ष तक शान्ति स्थापित रही। 1281 ई. में लेवलिन ने अपने भाई डेविड के साथ मिलकर विद्रोह कर दिया। एडवर्ड ने वेल्स पर फिर चढ़ाई की। दोनों भाई लड़ाई में हारे और मारे भी गये। अब 1282 ई. में एडवर्ड ने वेल्स को इंग्लैण्ड में मिला लिया। वेल्स नामक एक कानून के द्वारा वेल्स को तीन शायरों में बाँट दिया गया और वहाँ अंग्रेजी कानून का प्रचार हुआ।

वेल्स की विजय के समय ही एडवर्ड के बड़े लड़के का जन्म हुआ और उसे वेल्स के राजकुमार (प्रिंस ऑफ वेल्स) की पदवी दी गई। उस समय से इंग्लैण्ड के राजा का लड़का यह पदवी बराबर धारण करता है।

4.6 ब्लैक डेथ

14वीं सदी के मध्य के पहले यूरोप में प्लेग (महामारी) का प्रकोप छा गया था। 1348 ई. में यह महामारी इंग्लैण्ड में प्रवेश कर चुकी थी। यह उस समय की बात है जब इंग्लैण्ड में सफाई एवं स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था। लोग गलियों के अंदर मकानों में रहते थे जोकि पूरी तरह गंदगी से भरे रहते थे। यह प्रकोप इंग्लैण्ड में दो वर्षों (1348-50) तक जारी रहा। यह बहुत भयंकर स्थिति थी। इसमें व्यक्तियों के शरीर पर काले फोड़े हो जाते थे और केवल दो दिन के अंदर ही इंसान की मृत्यु हो जाती थी। इस महामारी से इंग्लैण्ड के लगभग 10 लाख निवासियों की मृत्यु हो गई। इंग्लैण्ड की लगभग 50 प्रतिशत आबादी इस महामारी से समाप्त हो गई थी। इससे मरने वालों की संख्या में अधिकतर पादरी, गरीब एवं गुलाम ही थे। रोज इतने लोग मरते थे कि सभी लाशों को निकालना और संस्कार करना कठिन ही नहीं असम्भव हो गया था। पादरी एवं डॉक्टर सभी डरे हुए थे। रोगी के पास कोई भी जाना नहीं चाहता था। देश में एक भंयकर आफत आ गई थी।

इस ब्लैक डेथ के बहुत बुरे प्रभाव पड़े जिसको आंकना भी कठिन था। इससे इंग्लैण्ड की आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से बिखर गई थी। मजदूरों की संख्या न के बराबर हो चुकी थी। इस कारण खेती, उद्योग-धंधों का काम ठप पड़ चुका था। फसलों को काटने एवं रखरखाव करने वाला कोई नहीं था जिससे फसलें तबाह हो रही थीं। खाने-पीने से लेकर अन्य संभी वस्तुओं तक सब कुछ महंगा हो चुका था। एक तो महामारी तथा दूसरी महंगाई दोनों के कारण गरीब भूखों मरने लगे थे। इससे पुरानी जागीरदारी को गहरा धक्का लगा। जो मजदूर बच गये उनके भाव बढ़ गए। देश में मजदूरों की जरूरत ज्यादा महसूस की जाने लगी। इस कारण मजदूरों ने अपनी मजदूरी को दुगना कर दिया अर्थात् वे दुगने कीमत पर काम करते थे। जहाँ उन्हें अधिक पैसे मिलते वे वहीं जाकर काम करते थे। इसी तरह देश में सामन्त प्रथा और भूमिदास नहीं रह गये थे। जो मर गये वे तो गये और जो रह गए वे स्वतंत्र हो गये। जमींदार मजदूरों को अधिक कीमत देने को कतई तैयार नहीं थे। अत: उन्होंने 1351 ई. को

पार्लियामेंट से मजदूरी का कानून पास कराया। इसके मुताबिक मजदूर लोगों को उतना ही वेतन मिलने लगा जितना उन्हें ब्लैक डेथ से पहले मिलता था, परन्तु मजदूर इस बात से पूर्णतः असंतुष्ट थे। मजदूरों को कानून की कतई कोई परवाह नहीं थी। जमींदार जबरदस्ती उनसे कम वेतन पर काम कराना चाहते थे परन्तु मजदूरों में असंतोष होने के कारण उन्होंने 1381 ई. को भयंकर किसान आंदोलन छेड़ दिया।

नोट

चूंकि देश में जमींदारों का प्रभाव था, इसलिए मजदूरों द्वारा किये गये आंदोलन का कोई अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ा। मजदूर कानून से कोई फायदा नजर नहीं आया। मजदूरों के ऊपर जुल्म बढ़ते ही रहे। उन दिनों ऊन का व्यापार बहुत तेजी में था। भेड़ पालने के लिए कम मजदूरों की आवश्यकता पड़ती थी अतः बहुत से लोगों ने अपने खेतों को चारागाह में परिवर्तित कर दिया। वे मजदूरी करने के बजाय भेड़ पालने लगे। अतः अब भेड़-पालन और ऊन-व्यवसाय में वृद्धि शुरू हो गई। इससे कम खर्च में अत्यधिक लाभ होने लगा।

मजदूर अपनी आजादी पाने के लिए बेताब थे। उन्होंने एकजुट होकर प्रतिक्रियावादी मजदूर कानून का विरोध किया। वे सभी एक ही मकसद के लिए संगठित हुए। उन्होंने मिलकर मजदूर कानून के सारे प्रयत्न बेकार कर दिये। जमींदारों एवं मजदूरों के बीच की जंग में मजदूरों की हार हो गयी। हार के बाद भी यह कहा जा सकता है कि यह पहला अवसर था जब सभी मजदूर इतनी जागृति के साथ एकजुट हुए थे।

एडवर्ड के अंतिम दिन बिल्कुल भी सुख-शांति से नहीं बीते। महामारी और मजदूर कानून के कारण पूरे देश में हलचल मची हुई थी। पूरी की पूरी प्रजा ही नाखुश थी। साथ ही किसान-मजदूरों की भी हालत बहुत खराब थी। स्कॉटलैंड हाथ से निकल गया। फ्रांस के जीते हुए भाग भी हाथों से निकल गये। 1376 ई. में राजा का इकलौता बेटा काला राजकुमार (ब्लैक प्रिंस) मर गया जिससे बुढ़ापे में उसे गहरी चोट पहुँची। दूसरे साल राजा स्वयं ही मर गया।

4.7 रिचर्ड द्वितीय (1377-99 ई.)

एडवर्ड तृतीय की मृत्यु के बाद उसका पोता (ब्लैक प्रिंस का लड़का) रिचर्ड द्वितीय के नाम से इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा। वह बचपन में बहुत होशियार एवं होनहार था, परन्तु बड़े होते-होते उसमें बहुत परिवर्तन आ गया। वह कठोर एवं निरकुंश प्रवृत्ति का व्यक्ति बन गया था। कुछ समय तक तो उसने पार्लियामेंट के साथ मिलकर राज्य किया, परन्तु अन्तिम दो वर्षों में उसने पार्लियामेंट को ठुकरा दिया और मनमाने ढंग से शासन चलाने लगा था। उसने 22 वर्षों तक शासन किया। जब वह पहली बार गद्दी पर बैठा उस समय उसकी उम्र केवल 11 वर्ष थी। उसके नाबालिग होने के कारण शासन का भार एक समिति के ऊपर सौंपा गया। इस समिति का प्रधान उसका चाचा जॉन ऑफ गौंट था। जॉन बहुत जुल्मी व्यक्ति था। इसी बीच 1381 ई. में एक किसान-विद्रोह हुआ। इस किसान विद्रोह के बारे में विभिन्न रूपों में चर्चा की जा रही है–

(i) किसान विद्रोह : इंग्लैण्ड में 14वीं शताब्दी में कई सारी घटनाएँ घटित हुई थीं, परन्तु इसमें से किसान विद्रोह इंग्लैण्ड के इतिहास में प्रमुख था। यह घटना रिचर्ड द्वितीय के शासनकाल में घटित हुई। पूर्वी इंग्लैण्ड में यह विद्रोह शुरू हुआ था। यह क्रान्ति पूरे राष्ट्र में फैल चुकी थी जिसने एक जनक्रान्ति का रूप धारण कर लिया था। यह किसानों और मजदूरों की ओर से की गई पहली क्रान्ति थी। यह गरीबों का अमीरों के खिलाफ पहला विद्रोह था। यह काफी हिंसात्मक विद्रोह था। यह अचानक ही शुरू हुआ था, परन्तु इस विद्रोह के कारण अनेक थे। जो कि निम्नलिखित हैं–

1. पिछली कई सदियों से किसान अनेक कष्टों एवं कठिनाइयों को सहते आ रहें थे, परन्तु 14वीं सदी के उत्तरार्द्ध में उनकी कठिनाइयों एवं कष्टों में वृद्धि हो गई जिससे उनके सब्र का बांध टूटने लगा था।

2. 14वीं सदी के बीच में जो महामारी (1348-50 तक) का प्रकोप आया था उसने इन लोगों का जीवन (सामाजिक एवं आर्थिक) पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया था। जीवन जीने की प्राथमिक आवश्यकताओं (अन्न एवं वस्तुएँ) के मूल्य में बहुत वृद्धि हो गई थी। किसानों के पास इतने पैसे नहीं होते थे जिससे वे इतनी

महंगी वस्तुएँ खरीद सकें। उनका जीवन बहुत तकलीफदेह हो गया था। इसलिए विद्रोह के अलावा कोई अन्य उपाय ही नहीं रह गया था।

नोट

3. 1351 ई. को जो मजदूर कानून पास हुआ था उसकी वजह से मजदूरों पर (स्वतन्त्र रूप से) बहुत दबाव डाला जा रहा था कि वे पुरानी मजदूरी पर ही काम करें। पुरानी मजदूरी बहुत कम थी और अब की महंगाई बहुत ज्यादा। इससे उनका पेट भरना मुश्किल हो गया था।

4. सर्फ एवं विलेन (भूमिदासों) से पहले से अधिक बेगार लिया जाने लगा था। इस तरह भूमिदास और स्वतंत्र मजदूर दोनों ही असंतुष्ट हो गये। 30 वर्षों तक (1351-81 ई.) उनका असंतोष घटने की बजाय बढ़ता ही जा रहा था।

5. स्कॉटलैंड और फ्रांस से इंग्लैण्ड की लड़ाइयाँ होती ही रहती थीं इसलिए जनता पर टैक्स का बोझ बढ़ता ही जा रहा था। साथ ही साथ इंग्लैण्ड एक भी लड़ाई नहीं जीत पा रहा था। इससे देश में गरीबों की दशा दयनीय होती जा रही थी।

6. फ्रांस से लौटे हुए सैनिक जनता के बीच फ्लैंडर्स की कहानी सुनाया करते थे। इस कहानी से लोग बहुत प्रभावित हुए। यह कहानी लोगों को इसलिए प्रेरित कर रही थी क्योंकि फ्लैंडर्स में भी लोगों ने अत्याचारी राजा के विरुद्ध विद्रोह किया था।

7. जॉन विकलिफ के अनुयायी लोलार्डों ने सामन्तों और अमीरों के खिलाफ प्रचार किया। इनका नेतृत्व उस समय कैंट का जॉन बाल नामक पादरी कर रहा था। उसने लोगों को बताया कि अमीर-गरीब सभी बराबर हैं क्योंकि वे एक ही माता-पिता (आदम और ईव) की संतान हैं। वह कहता था कि जब ईव (हौवा) चर्खा कातती थी उस समय आदम सारा काम किया करते थे, तब कौन बड़ा था और कौन छोटा।

8. लोग अपनी परेशानी से बहुत परेशान थे। रिचर्ड द्वितीय के शासन से लोग बहुत नाखुश थे। उस समय राज्य के अधिकारी भी अत्याचार करने में पीछे नहीं रहते थे। चांसलर (साइमन सरबरी) और खजांची (राबर्ट हिलेज) के व्यवहार से लोग दुखी थे। नगरों में व्यापारियों को बहुत तंग किया जाता था। राजा रोज नए टैक्स लोगों पर लगाता था। लोग टैक्स से पूरी तरह तबाह थे ही इस पर उन पर एक नया पोल टैक्स लगाया गया। यह टैक्स स्त्री-पुरुष सभी पर लगाया गया। पोल टैक्स से लोग घबरा उठे।

9. यह विद्रोह का सबसे अहम् कारण है जिस कारण इस विद्रोह का विस्फोट हुआ। एक तहसीलदार पोल टैक्स वसूल कर रहा था। वह केंट के वाट टायलर के पास गया। टायलर ने टैक्स देने से इंकार कर दिया। इस बात पर तहसीलदार ने उसके और उसकी बेटी के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। यह बात लोगों से बर्दाश्त नहीं हुई और विद्रोह ने उसी क्षण ज्वालामुखी फटने जैसा रूप धारण कर लिया।

***(ii)* विद्रोह का रूप :** तहसीलदार ने टायलर के साथ बुरा बर्ताव किया था लोग उसे कतई बर्दाश्त नहीं कर सके। लोगों ने तहसीलदार को पकड़कर मार डाला। साथ ही टायलर उन सभी लोगों का नेता बन गया। विद्रोह की लहर वन में लगी आग की तरह तेजी से फैलने लगी। लंदन में झुंड के झुंड मजदूर पहुँचने लगे और बुरी तरह तोड़-फोड़ करने लगे। उन लोगों के समूहों ने अमीरों के महलों पर धावा बोल दिया और जेलों तथा अदालतों को भी नहीं छोड़ा। उन्होंने मिलकर अनगिनत अफसर एवं वकीलों को मार डाला। इसी बीच उनका नेतृत्व कर रहे जॉन बाल को कैद कर लिया गया, परन्तु उसे जल्दी ही जेल से छुड़ा लिया गया और कैंटरबरी के आर्कबिशप को मार डाला। लोग इतने गुस्से में थे कि वे जहाँ-तहाँ आग लगा देते थे, जो कोई हाथ लगता था उसे मार देते थे। इन सबके कारण राष्ट्र के जान-माल का बहुत नुकसान हो रहा था। यह बहुत भयंकर स्थिति थी।

***(iii)* रिचर्ड द्वितीय की नीति :** इस समय रिचर्ड द्वितीय मात्र 16 वर्ष का ही था, परन्तु इस भयंकर स्थिति में भी उसने बड़ी ही चतुराई एवं समझदारी से काम किया। वह अपने कुछ दोस्तों के साथ विद्रोहियों से मिलने आया। उसने वाट टायलर के साथ वाद-विवाद करना शुरू कर दिया। वाट टायलर को राजा से वाद-विवाद करता देख लंदन के मेयर को बहुत गुस्सा आया और उसने वाट टायलर को जान से मार दिया। इस बात पर विद्रोहियों की नाराजगी आपे से बाहर हो गयी। उनके क्रोध की कोई सीमा नहीं रह गयी थी। वह राजा और उसके साथियों को जान से

नोट

मार देना चाहते थे, परन्तु राजा ने अपनी वाक् क्षमता से लोगों को शांत कर दिया। उसने लोगों को समझाया और कहा कि "घबराने की कोई बात नहीं है। मैं आपके दु:ख-दर्द को अवश्य खत्म करने का प्रयास करूंगा।" उसने लोगों से उनके दु:ख-दर्द को मिटाने का दृढ़ता से वादा किया जिससे लोगों का आक्रोश कुछ कम हो गया। विद्रोह धीरे-धीरे दबने लगा और लोगों की भीड़ भी मिटने लगी परन्तु सच्चाई तो कुछ और ही थी। उसने लोगों से किया वादा नहीं निभाया, नीति से अपना काम निकाला। उसने लोगों के प्रति गद्दारी दिखाई। पीठ पीछे उसने विद्रोह का नेतृत्व करने वाले नेताओं की खूब खबर ली। उसने जॉन बाल सहित कुछ अन्य नेताओं को भी फांसी दे दी। उसने किसान तथा मजदूरों के साथ भी कठोरता का व्यवहार दिखाया। इससे उन लोगों में निराशा छा गई। राजा ने अपना किया वादा तोड़ दिया।

***(iv)* विद्रोह के परिणाम :** अत: स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि यह विद्रोह पूरी तरह असफल हो गया, परन्तु इतने बड़े विद्रोह का कोई-न-कोई परिणाम तो निकलना ही था जो कि इस विद्रोह का भी हुआ। इसके कुछ परिणाम निकले जो कि निम्नलिखित हैं–

1. इस विद्रोह के परिणामस्वरूप लोगों पर से पोल टैक्स हटा लिया गया। इससे महंगाई के दौर में लोगों को बहुत राहत पहुँची।

2. राजा रिचर्ड अब शासन में दिलचस्पी लेने लगा तथा 1389 ई. तक पूरी शासन व्यवस्था का काम अपने हाथों मे ले लिया था।

3. अब मजदूरों एवं किसानों पर पहले की भांति अत्याचार नहीं किया जाता था। मजदूर-कानून रद्द कर दिया गया था। स्वतंत्र मजदूरों को उनकी मांग के अनुसार मजदूरी मिलने लगी।

4. अर्द्धदासों या भूमिदासों से बेगार लेना बंद हो गया और वे भी स्वतंत्र मजदूरों की स्थिति में आने लगे। इससे पट्टेदारी और जागीरदारी व्यवस्था का अंत हो गया।

5. यह किसान-मजदूरों की पहली क्रान्ति थी। उनमें एकता एवं संगठन के भाव में बहुत वृद्धि हुई।

6. भूमिदारों के लिये अधिक मजदूरी देकर मजदूरों के द्वारा खेती कराना कठिन हो गया। अब कई जमींदार अपनी भूमि को किराए पर देने लगे थे।

7. लानार्डों की बदनामी हो गयी और उनके खिलाफ जबरदस्त आंदोलन शुरू हो गया।

8. कितने ही मजदूर एवं किसान खेती छोड़ चुके थे। उन्होंने अपना पेशा ही बदल दिया था। उन्होंने खेती छोड़कर भेड़ पालने का काम शुरू कर दिया था। अपने खेतों को चारागाह मे परिवर्तित कर दिया था। चारागाह के लिए खेतों की हदबंदी होने लगी। अत: हदबंदी आंदोलन शुरू हो गया। इस तरह खेती-बाड़ी का काम कम हो गया और ऊन का व्यापार बढ़ गया।

रिचर्ड द्वितीय के सम्बन्ध

रिचर्ड द्वितीय नाबालिग था इसलिए उसके सलाहकार आसानी से उसे अपनी बातों से संतुष्ट कर लेते थे। वे आसानी से अपना काम निकाल लेते थे। रिचर्ड द्वितीय के सम्बन्ध को दो भागों में बांटा जा सकता है–

1. पार्लियामेंट के साथ सम्बन्ध : 1389 में रिचर्ड द्वितीय ने अपने शासन की बागडोर को अपने हाथों में ले लिया। 8 वर्षों तक उसने पार्लियामेंट के साथ मिल-जुलकर काम किया परन्तु पिछले 2 वर्षों में वह निरंकुश बन गया। उसने चार्ल्स षष्ठम् की पुत्री के साथ विवाह कर लिया। लार्ड्स अपेलेंट और दूसरी बागी बैरनों के साथ बुरा व्यवहार करने लगा। दो अपेलेंट को फांसी पर लटका दिया गया और बाकी तीन अपेलेंट को देशनिकाला दे दिया। उसने अपने आपको ही कानून मान लिया था। वह समझने लगा था कि उसके द्वारा कहा गया हर लफ्ज़ कानून है, जो वह चाहेगा वही होगा, परन्तु उसका मनमाना शासन अधिक समय तक नहीं चल सका।

2. बैरनों के साथ सम्बन्ध : रिचर्ड द्वितीय के जो सलाहकार थे वे अच्छे नहीं थे। वे बैरनों के विरुद्ध राजा को भड़काते रहते थे। बैरन ऐसे सलाहकार को निकाल देना चाहते थे, किन्तु राजा सलाहकारों के करीब आ चुका

नोट

था। इसलिए राजा ने सलाहकारों को काम से नहीं निकाला। अत: जॉन ऑफ गौन्ट तथा ड्यूक ऑफ ग्लौसेस्टर की नाराजगी बढ़ गई और बैरनों ने उनके खिलाफ बगावत शुरू कर दी। राजा को सलाह देने के लिए 11 बैरनों की एक कौंसिल कायम की गई, परन्तु राजा इस कौंसिल को स्वीकारने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। इस तरह राजा और बैरनों के बीच युद्ध शुरू हो गया और इसमें जीत बैरनों की ही हुई। 1388 ई. में एक पार्लियामेंट बुलायी गयी। 5 सरदारों की एक समिति भी बनाई गई और इसके सदस्य लार्ड्स अपेलेंट कहलाए। पार्लियामेंट ने रिचर्ड के दोस्तों के साथ बड़ी सख्ती की। साथ ही बहुतों को फांसी दे दी गई। अत: रिचर्ड के शासनकाल में पार्लियामेंट, निर्दयी पार्लियामेंट के नाम से मशहूर हो गया।

रिचर्ड द्वितीय का महत्त्व

पार्लियामेंट ने 1327 ई. में दूसरे एडवर्ड को और 1399 ई. मे रिचर्ड द्वितीय को गद्दी से हटाया, परन्तु 1327 ई. में पार्लियामेंट ने अपने मन के मुताबिक किसी अपने आदमी को गद्दी नहीं दी। एडवर्ड द्वितीय का बड़ा पुत्र, जो वास्तविक उत्तराधिकारी था उसे ही गद्दी पर बैठाया, परन्तु 1399 ई. में गद्दी का वास्तविक उत्तराधिकारी मौजूद था अपितु उसे गद्दी न देकर दूसरे को गद्दी पर बिठाया गया। हेनरी चतुर्थ जोकि लंकास्टर का था, रिचर्ड द्वितीय का असली उत्तराधिकारी नहीं था, परन्तु पार्लियामेंट उसे चाहती थी। अत: उसे ही गद्दी दी गई। इसका परिणाम यह हुआ कि लंकास्टर वंश के काल में पार्लियामेंट का ही बोलबाला कायम रहा।

रिचर्ड द्वितीय का अंत

1399 ई. को रिचर्ड का चाचा जॉन ऑफ गौंट मर गया। उसका लड़का हेनरी बोलिंग ब्रोक था जिसे पहले ही देश से निकाल दिया गया था। पिता के मर जाने के बाद हेनरी की जो रियासत लंकास्टर में थी, वह जब्त कर ली गई। इस पर हेनरी बहुत गुस्सा हुआ। वह अपनी रियासत पर कब्जा करने के लिए इंग्लैण्ड पहुँच गया। सभी असंतुष्ट सरदारों ने भी उसका साथ दिया। इसी समय रिचर्ड एक विद्रोह को दबाने आयरलैंड गया था। अब उससे गद्दी छीन लेने का विचार किया गया। मौका पाकर उसे पकड़कर कैद में रखा गया और हेनरी को इंग्लैण्ड की गद्दी पर बिठाया गया। कुछ समय के बाद रिचर्ड द्वितीय की मृत्यु हो गयी क्योंकि उसे मार दिया गया। हेनरी चौथे 1399 ई. में गद्दी पर बैठा और लंकास्टर का वंश कायम हुआ।

सारांश

- हेनरी का वंश लगातार 245 वर्षों तक इंग्लैण्ड पर छाया रहा, परन्तु यह कथन भी सत्य है कि प्लैंटेजिनेट वंश के कारण ही देश में इतना सुधार और विकास हो पाया। हेनरी द्वितीय भी बहुत अच्छा शासक सिद्ध हुआ था। उसने देश की व्यवस्था को सुधारने के लिए कई प्रयास किए जिनमें से शासन सम्बन्धी सुधार, धर्म सम्बन्धी सुधार एवं न्याय सम्बन्धी सुधार प्रमुख थे।
- इनके संदर्भ में हेनरी द्वितीय ने अपने सुधार सम्बन्धी प्रयत्न को जारी रखा। उसने एक्सचेकर के कोर्ट को भी संगठित किया जोकि हिसाब-किताब भी जांच करता था। उसने सिक्कों का भी चलन शुरू किया।
- सामन्ती, धार्मिक कचहरियाँ बनाई। राजकीय न्यायालयों को भी बढ़ावा दिया तथा उसने दौरा जजों के महत्त्व को भी बढ़ाया।
- उसके काल में जूरी प्रथा इतनी लोकप्रिय बन गयी कि यह इंग्लैण्ड की न्याय-प्रणाली में स्थायी अंग बन गई। उसने गवाही देने का चलन भी शुरू किया। उसने कॉमन लॉ का भी विकास किया। उसने बेकेट के मतभेदों को भी मिटा दिया।
- महान अधिकार-पत्र अर्थात् मैग्नाकार्टा राजा के द्वारा जनता पर किए जा रहे अत्याचार को रोकने वाला पत्र था। नापतौल में एकरूपता इसी कारण आई। इसमें कुल 63 अनुच्छेद की व्यवस्था की गई है। 61वें अनुच्छेद के अनुसार 25 बैरनों की एक समिति बनाई गई जोकि राजा के विरुद्ध भी बगावत करने का अधिकार रखती थी।

नोट

- पहला एडवर्ड सबसे अच्छा शासक सिद्ध हुआ। लोग उस पर पूरा विश्वास करते थे। वह बहुत परिश्रमी था। वह मध्ययुग का सर्वश्रेष्ठ शासक था। उसने सामन्त व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंका। उसके सम्बन्ध सबसे साथ अच्छे थे। वह तो अपने दुश्मनों से भी सीखने में नहीं चूकता था। उसने भूमि एवं चर्च के सम्बन्ध में भी अनेक कानून बनाए थे। उसके द्वारा शान्ति स्थापना के लिए कई प्रयत्न किए गए थे।
- 1348–50 ई. के बीच ब्लैक डेथ का साया इंग्लैण्ड में आया था। यह एक महामारी थी जोकि आधे इंग्लैण्ड को खा गई थी। इसने मजदूरों की दशा पर कहर ढा दिया था। 1376 में राजा का इकलौता बेटा काला राजकुमार (ब्लैक प्रिंस) मर गया था। जिस कारण वियोग में एडवर्ड भी मर गया।
- रिचर्ड द्वितीय इंग्लैण्ड का निरंकुश शासक था जोकि बचपन से होशियार था। वह 11 वर्ष की आयु में राजा बन गया था। उसके शासनकाल में किसान-विद्रोह हुआ जिसका निदान उसने अपनी नीति द्वारा किया जो मजदूरों को धोखा देकर बनाई गई थी। यह विद्रोह बड़े पैमाने पर हुआ था परन्तु इससे मजदूरों को कोई खास अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं हुए थे। 1399 ई. में रिचर्ड द्वितीय को मार डाला गया जोकि उसका अंत था और लंकास्टर वंश की शुरुआत।

अभ्यास-प्रश्न

1. हेनरी द्वितीय की नीति एवं सुधार कार्यों का वर्णन करें।
2. हेनरी द्वितीय एवं बेकेट के सम्बन्धों की चर्चा कीजिए।
3. मैग्नाकार्टा पर निबंध लिखिए।
4. पहले एडवर्ड के प्राशसनिक और कानूनी सुधारों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. ब्लैक डेथ पर निबंध लिखिए।
6. रिचर्ड द्वितीय किस प्रकार का राजा था? उसके शासनकाल का वर्णन कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
2. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
3. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मौयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
4. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*
5. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
6. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
7. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*

इकाई–5

नोट

ट्यूडर वंश (1485–1603 ई.)
[Tuder Dynasty (1485-1603 A.D.)]

संरचना (Structure)

5.1 उद्देश्य
5.2 प्रस्तावना
5.3 आधुनिक युग की शुरुआत
5.4 हेनरी सप्तम
5.5 हेनरी सप्तम का मूल्यांकन
5.6 हेनरी सप्तम का शासनकाल : उपचार एवं बीजारोपण का काल
5.7 हेनरी अष्टम (1509-1547 ई.)
5.8 हेनरी अष्टम का विश्लेषण
5.9 एडवर्ड षष्ठ और मेरी ट्यूडर
5.10 महारानी एलिजाबेथ प्रथम (1558–1603 ई.)
5.11 एलिजाबेथ की उपलब्धियाँ
- सारांश
- अभ्यास–प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- ट्यूडर वंश के संस्थापक हेनरी सप्तम को समझने में।
- हेनरी सप्तम के वंशज के बारे में जानने में।
- इंग्लैण्ड की गद्दी के लिए हुए विवादों को समझने में

5.2 प्रस्तावना

इंग्लैण्ड में हुए धार्मिक आंदोलन ने किस तरह लोगों की मानसिक स्थिति में परिवर्तन करके उसे वैज्ञानिक रूप प्रदान किया व लोगों में बुद्धि का विकास हुआ। वह अब अंधविश्वास के अंधेरे में जीना छोड़कर उजाले में आए। हेनरी सप्तम जिसका इंग्लैण्ड की गद्दी पर अपना उत्तराधिकार नहीं था, परन्तु किस तरह उसने इंग्लैण्ड की गद्दी पर कब्जा कर लिया जिसने इंग्लैण्ड में एक नए वंश ट्यूडर वंश की स्थापना की। हेनरी सप्तम के काल को इंग्लैण्ड का उपचार का काल व बीजारोपण का काल भी कहा जाता है, क्योंकि इसने पहले इंग्लैण्ड में फैली बुराइयों

को समाप्त कर दिया। वहाँ पर एक नई व्यवस्था उत्पन्न की। इसके पश्चात् हेनरी अष्टम के व्यक्तित्व, बुल्जे की नीति के बारे में जानेंगे कि किस तरह इंग्लैण्ड का उत्तराधिकारी ना होकर भी उसने अपने राज्य पर शासन किया।

एडवर्ड छठा और मेरी ट्यूडर के बारे में पढ़ेंगे कि किस तरह एडवर्ड को 9 वर्ष की उम्र में राजगद्दी मिल गई और जबरन उससे वसीयत पर हस्ताक्षर करवाकर किस तरह मेरी ट्यूडर को गद्दी से वंचित करने का प्रयत्न किया गया, परन्तु मेरी ट्यूडर ने अपने प्रयासों से गद्दी को पा लिया किन्तु वह केवल 9 दिनों तक ही गद्दी पर बैठ सकी। इसके बाद एलिजाबेथ का शासनकाल शुरू हुआ जो इंग्लैण्ड के लिए स्वर्ण युग सिद्ध हुआ और एलिजाबेथ ने विवाह क्यों नहीं किया? यह सब आप इस पाठ को पढ़कर जानेंगे।

नोट

5.3 आधुनिक युग की शुरुआत

किसी भी देश के इतिहास को तीन भागों में बाँटा जाता है–प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक। किसी भी युग के अन्त व आरंभ की तिथि बता पाना तो बहुत कठिन है परन्तु उसके लक्षण धीरे-धीरे दिखने लगते हैं। जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि इस युग का अन्त व आरंभ इस सदी में हुआ है। दूसरे शब्दों में, अगर इसके बारे में बताएँ तो यह कहा जा सकता है कि हर युग की अपनी ही कुछ विशेषता होती है। यूरोप के इतिहास में 5वीं सदी से मध्यकाल का और 16वीं सदी से आधुनिक काल का आरंभ हो गया, लेकिन आधुनिक काल के कई लक्षण 15वीं सदी से ही दिखाई पड़ने लगे थे।

परिचय

1485 ई. में हेनरी सप्तम के गद्दी पर बैठने के बाद उसके द्वारा ट्यूडर वंश की शुरुआत हुई। यह माना जाता है कि हेनरी सप्तम के इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठने के बाद मध्य युग से आधुनिक युग की शुरुआत का काल था। उसके काल में अनेक ऐसी घटनाएँ घटीं जिससे आधुनिक युग का आरंभ होने लगा और मध्य युग का अन्त दिखाई देने लगा। उसके राज्यकाल को उपचार (रेमेडी) एवं बीजारोपण (सीडटाईम) का काल भी कहते हैं। हेनरी ने वहाँ पहले से व्याप्त बुराइयों को दूर किया। उसके द्वारा किए गए कामों के बहुत उत्कृष्ट परिणाम भविष्य में देखने को मिले। इस दृष्टि से उसका राज्यकाल बीजारोपण का काल था।

पुनर्जागरण (रिनेसाँ)

पुनर्जागरण एक बौद्धिक आंदोलन था। **बैनलून** के शब्दों में, वह राजनीतिक या धार्मिक नहीं, बल्कि मस्तिष्क की स्थिति थी। **स्वेन** के मतानुसार, मध्य युग के अन्त में जितने बौद्धिक परिवर्तन हुए, उन सबको सामूहिक रूप से पुनर्जागरण कहते हैं। इसके अनेक कारण थे।

किन्तु पुनर्जागरण के सबसे प्रमुख कारण थे कुस्तुन्तुनिया का पतन और कागज एवं छापाखाने का आविष्कार। 5वीं सदी में पश्चिमी रोम साम्राज्य का पतन हुआ तो अनेक विद्वान अपनी पुस्तकों एवं हस्तलिपियों को लेकर पूर्वी रोम साम्राज्य में चले गये और कुस्तुन्तुनिया में बस गये। 1453 ई. में तुर्कों के कुस्तुन्तुनिया पर कब्जा करने के बाद वहाँ के यूनानी एवं रोमन विद्वान अपनी पोथी लेकर इटली में आकर बस गए। यूनानी तथा लैटिन में लिखित प्राचीन साहित्य के अध्ययन में लोगों की रुचि बढ़ने लगी। इटली में उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। फ्लोरेंस नगर विद्या तथा साहित्य के लिए प्रसिद्ध हो गया।

इसी समय छापेखाने का आविष्कार हुआ। 1453 ई. में जर्मनी के गुटेनबर्ग नामक व्यक्ति ने इसका आविष्कार किया। 1476 ई. में इंग्लैण्ड में भी कैक्सटन के द्वारा इसका प्रचार किया गया। पहले पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थीं इसलिए इनकी संख्या कम थी और पुस्तक बहुत महंगी थी। छापेखाने के आविष्कार के बाद पुस्तकें अधिक छपने लगीं और पुस्तकों की संख्या ज्यादा होने लगी और पुस्तकें सस्ती हो गईं। अब लोगों का मानसिक विकास होने लगा और अब लोग संदेहवादी, तार्किक एवं आलोचक बन गए। मध्य युग में लैटिन में ही पुस्तकें लिखी जाती थीं। बाइबिल का भी देशी भाषाओं में अनुवाद होने लगा। इस तरह नयी विद्या का एक युग ही शुरू हो गया। इसका प्रादुर्भाव तो इटली में हुआ, किन्तु इससे समस्त पश्चिमी यूरोप प्रभावित हुआ।

नोट

इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण : पुनर्जागरण का इंग्लैण्ड पर गहरा प्रभाव पड़ा और वहाँ अनेक विद्वान पैदा हुए। ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की तरक्की होने लगी। इस युग के विद्वानों एवं लेखकों में चौसर, टॉमस मूर, शेक्सपीयर, मार्लो, स्पेंसर, ग्रोसीन, लिनेकर, जॉन कोलेट के नाम उल्लेखनीय हैं। महाकवि चौसर ने इटली के पेट्रार्क से प्रेरणा प्राप्त की और 'कैंटरबरी टेल्स' नामक पुस्तक की रचना की। टॉमस मूर बहुत बड़ा विद्वान था और उसने 1516 ई. में 'यूटोपिया' नामक पुस्तक लिखी। इसमें उसने कल्पना के आधार पर यूनानी विद्वान प्लेटो की तरह एक आदर्श समाज एवं शासन का चित्र प्रस्तुत किया। 'शेक्सपियर' सर्वश्रेष्ठ नाटककार था जिसने दुःखांत एवं सुखांत अनेक नाटकों को लिखा है। ग्रोसीन और जॉन कोलेट ने इटली (फ्लोरेंस) में शिक्षा प्राप्त की और वे ऑक्सफोर्ड में यूनानी भाषा के अध्यापक बहाल हुए थे। लिनेकर चिकित्साशास्त्र का विद्वान था। इन विद्वानों से अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के विकास को बड़ा प्रोत्साहन मिला।

पुनर्जागरण के कारण मनुष्यों में बुद्धि का विकास हुआ, तर्क करने की शक्ति बढ़ी, अंधविश्वास दूर हुआ और शिक्षा का प्रचार हुआ।

धर्म-सुधार

यूरोप में धर्म के क्षेत्र में सुधार के लिए भी कई आंदोलन शुरू हुए। इसके भी कई कारण थे।

पहला कारण तो पुनर्जागरण ही था। **दूसरा कारण** यह था कि चर्च केवल प्रतिक्रियावादी ही नहीं, बल्कि दमनकारी भी था। **तीसरा कारण** यह था कि चर्च आर्थिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में सूद एवं मुनाफे की प्रथाओं का विरोधी था।

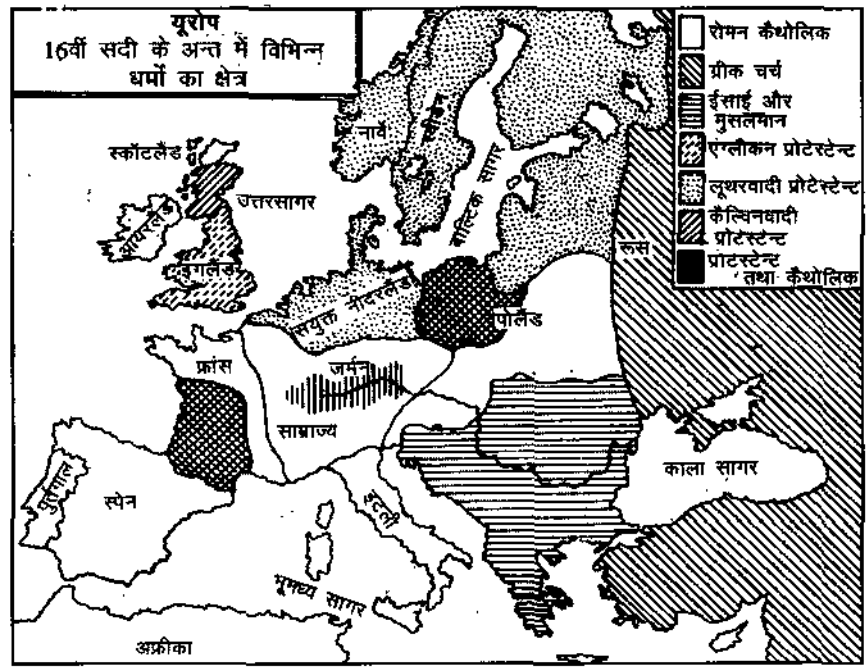

मानचित्र 5.1

चौथा कारण यह था कि चर्च के पास बहुत बड़ी सम्पत्ति थी और उधर धन के अभाव में राष्ट्र निर्माण की कई योजनाएँ खटाई में पड़ी हुई थीं। **पाँचवा कारण** यह था कि चर्च के पास बहुत अधिक सम्पत्ति होने के बाद भी वह आम जनता का शोषण करता रहता था।

इस आंदोलन का सबसे प्रमुख कारण यह था कि धार्मिक संस्थाओं, मठों एवं गिरिजाघरों में भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा था। ये संस्थाएँ कुरीतियों से भर चुकी थीं। पादरी एवं पुजारी भी सांसारिक हो गए थे। मोह-माया ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया था। सबसे अद्‌भुत बात तो यह हो गई थी कि लोगों से पोप पैसे लेकर उन्हें पापों से मुक्त करता था।

13वीं सदी में इस धर्म-सुधार आंदोलन का शुभारम्भ हो गया था। इस आंदोलन को 16वीं शताब्दी में सफलता प्राप्त हुई। जॉन विकलिफ और जॉन हस का नाम इसके प्रारम्भिक सुधारकों में से है और उत्तरकालीन सुधारकों में मार्टिन लूथर, ज्विंगली और कालविन के नाम उल्लेखनीय हैं।

नोट

परिणाम : इस धर्म-सुधार आंदोलन ने ईसाई जगत की धार्मिक एकता को लगभग खत्म कर दिया। अब दो धर्म सम्प्रदाय कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेंट कायम हो गए। पहले तो दोनों सम्प्रदाय के लोग आपस में बहुत झगड़ते थे तथा एक-दूसरे का खून बहाने से भी नहीं हिचकते थे परन्तु धीरे-धीरे सहिष्णुता-सहअस्तित्व (कोएक्जिसटेंस) का सिद्धांत स्थापित होने लगा। दूसरे, महाजनी और व्यापार को प्रोत्साहन मिला। तीसरे, राष्ट्रीयता की भावना बलवती हुई। चौथे, मनुष्य का दिमाग सोचने-विचारने के लिए स्वतंत्र हो गया। इससे नये-नये विचारों का उदय हुआ और विज्ञान की तरक्की होने लगी।

इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार : इंग्लैण्ड भी इस आंदोलन से अछूता नहीं रह पाया। जॉन कालेट नामक पादरी धर्मसुधार आंदोलन का पक्षपाती था। इंग्लैण्ड के जॉन विकलिफ (1325-84) ने 14वीं सदी में धर्म-सुधार आंदोलन का पथ-प्रदर्शन किया। जॉन विकलिफ को 'धर्म-सुधार का प्रातःकालीन नक्षत्र' की उपाधि से विभूषित किया गया है। वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था। उसने विश्वविद्यालय में एक अध्यापक के रूप में कार्य किया। उसे धर्म के विषय पर अध्ययन करने में खास रुचि थी। उसने धर्म का अध्ययन किया और उसके वास्तविक स्वरूप को समझा। उसे पोप के कुछ धार्मिक विश्वास स्वीकार नहीं थे। उसने द्रव्यांतरण के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया। इस मत के अनुसार ईसा की स्मृति में जो रोटी तथा मदिरा का पान किया जाता है, वे उनके शरीर तथा खून में बदल जाते हैं। विकलिफ ने इसे अंधविश्वास घोषित कर दिया और उसने बाइबिल के अध्ययन पर बड़ा जोर दिया। सर्वप्रथम उसने इसे अंग्रेजी में अनूदित कर दिया और सर्वसाधारण भी इसे बड़े चाव से पढ़ने लगे।

धर्म-सुधार आंदोलन में इस अनूदित बाइबिल से बड़ी सहायता मिली। विकलिफ उग्रवादी और निर्भीक था। वह चर्च के खिलाफ बोलने से बिलकुल नहीं डरता था। वह चर्च की सम्पत्ति जब्त करना चाहता था। 1381 ई. में किसान विद्रोह को भी उसके विचारों से कुछ प्रोत्साहन मिला था। उसके अनुयायी लोलार्ड कहलाते थे। विकलिफ के मरने के बाद उसके अनुयायी ने उसके काम को आगे बढ़ाया लेकिन चर्च के अधिकारियों ने लोलार्डों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया। 1401 ई. में उनके विरुद्ध कानून बने और बहुतों को प्राणदण्ड मिला, लेकिन उनका बलिदान व्यर्थ नहीं हुआ, इससे आंदोलन और सबल ही हुआ।

16वीं सदी के प्रथम चरण में और हेनरी अष्टम के राज्यकाल (1509-24 ई.) में इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार आंदोलन की वास्तविक प्रगति हुई। पुनर्जागरण एवं धर्म-सुधार आंदोलन के कारण व्यक्ति के महत्त्व में वृद्धि हुई। अब उसकी बुद्धि एवं व्यक्तित्व के विकास को बड़ा प्रोत्साहन मिला। अब मनुष्य अपनी बुद्धि के सहारे बहुत चमत्कारपूर्ण कार्य करने लगा। इससे वैज्ञानिक उन्नति संभव हो सकी।

भौगोलिक क्रान्ति

इसी समय भौगोलिक क्षेत्र में क्रान्ति हुई। दिशासूचक जिसका एशिया में आविष्कार हो चुका था यूरोपवालों को भी इसका पता चला। इसकी मदद से समुद्री यात्रा बहुत आसान हो गई। 1492 ई. में कोलम्बस ने अमरीका और 1498 में वास्कोडीगामा ने उत्तमाशा अंतरीप (केप ऑफ गुडहोप) के पास से होते हुए भारत की खोज की। इस तरह एक नई दुनिया का पता चला। मैगलेन ने जलमार्ग के द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी का चक्कर लगाया। हालांकि उसे मार्ग में ही मार दिया गया। कोपरनिकस तथा गैलीलियो नामक वैज्ञानिक ने घोषणा सहित सिद्ध किया कि पृथ्वी गोल है और वह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है।

नोट

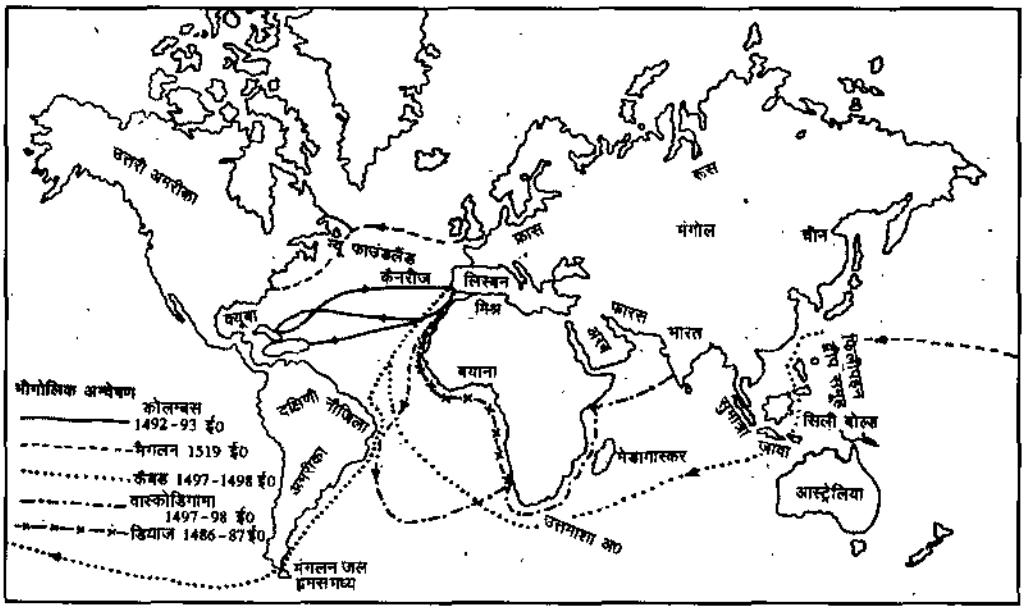

मानचित्र 5.2

इन भौगोलिक खोजों में इंग्लैण्ड ने भी हिस्सा लिया। ब्रिस्टनिवासी सेबेस्टियन कैबोट ने जलमार्ग के द्वारा अमेरिका के लिए 1497 ई. में प्रस्थान किया था। उसने न्यूफाउंडलैण्ड का पता लगाया।

आर्थिक परिवर्तन

वाणिज्य-व्यापार की वृद्धि में भौगोलिक खोजों का बहुत बड़ा योगदान है। समुद्री स्तर पर व्यापार होने के कारण व्यापार तेजी से फैलने लगा। अब भूमध्य सागर और अटलांटिक महासागर का महत्त्व बहुत बढ़ गया था। अतः इसके तट पर स्थित देश बहुत प्रसिद्ध होने लगे थे। लंदन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रमुख केन्द्र बन गया। अब यूरोप ने राज्य विस्तार की पुरानी नीति छोड़कर दुनिया में प्रसार की नीति अपना ली जिससे ब्रिटिश साम्राज्य का निर्माण शुरू हुआ।

व्यापार, व्यवसाय और उपनिवेश की उन्नति होने से जीवन-स्तर में क्रमिक सुधार होने लगा। सर्वसाधारण का जीवन और सुखमय होने लगा। धीरे-धीरे पूंजीवाद का विकास होने लगा। इसी से धनी एवं गरीब के बीच उत्तरोत्तर कटुता पैदा होने लगी।

राजनीतिक परिवर्तन

राजनीतिक क्षेत्र में भी अद्वितीय परिवर्तन हुए। मध्ययुग में धार्मिक क्षेत्र में पोप तंत्र ने और राजनीतिक क्षेत्र में पवित्र रोम साम्राज्य ने यूरोप में एकता कायम रखी थी। 15वीं सदी में यह एकता जाती रही। धर्म-सुधार आंदोलन ने इस धार्मिक और राजनीतिक एकता को खत्म-सा कर दिया। अब यूरोप छोटे-बड़े राज्यों में बँट गया था और हर राष्ट्र अपने आपको आत्मनिर्भर बनाने के लिए आपस में युद्ध करने लगा। अतः राजा की भी स्थिति मजबूत होने लगी जिससे निरंकुश राजतंत्र को प्रोत्साहन मिलने लगा।

राष्ट्रीयता के विकास से राष्ट्रीय गौरव की भावना बलवती हुई। अब राष्ट्रभाषा के विकास पर भी जोर दिया जाने लगा। इस तरह अंग्रेजी भाषा का विकास शुरू हुआ। इससे शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में भी अधिक प्रगति होने लगी। राष्ट्रीयता का असर इंग्लैण्ड पर बहुत ज्यादा हुआ और अब वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भी महत्त्वपूर्ण भाग लेने लगा। इसके लिए युद्ध, कूटनीति एवं वैवाहिक संबंध का सहारा लिया गया।

रैम्जे मूर के मतानुसार, "इंग्लैण्ड में ट्यूडरों के राज्यकाल में राज्य शक्ति के विकास का मुख्य कारण राष्ट्रीय भावना का विकास था जिसने राजा को पर्याप्त सम्मान प्रदान किया।"

इंग्लैण्ड की समुद्री शक्ति बहुत अच्छी थी और इसलिए उसने अपनी समुद्री शक्ति को बढ़ाने पर जोर दिया। वह नौसेना के क्षेत्र में एक सर्वोत्तम राष्ट्र बनने लगा। इससे देश के बाहर विजय पर प्रोत्साहन मिलने लगा। शक्तिशाली नौ-सेना व जहाज बनाए जाने लगे। नए अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण और बारूद का इस्तेमाल बढ़ने लगा। तोप का निर्माण हुआ। सैनिकों के लिए नई पोशाकें बनने लगीं जो पहले से बहुत मजबूत थीं।

नोट

सामाजिक परिवर्तन

मध्य युग में इंग्लैण्ड में दो ही वर्गों की प्रधानता थी–सामंत या जमींदार और किसान, लेकिन अब समाज में तीन वर्ग का उद्‌भव हो गया था। वह थे–पूँजीपति, मध्यम वर्ग और श्रमिक।

यही वह कारण है जिससे यह कहा जाता है कि इंग्लैण्ड में ट्यूडर शासनकाल के साथ आधुनिक युग का सूत्रपात हुआ। मध्य युग से आधुनिक युग में परिवर्तन कोई आकस्मिक घटना नहीं थी और न यह किसी निश्चित योजना के अनुसार हुआ। जो भी परिवर्तन हुए वे क्रमशः और विभिन्न समयों में विभिन्न तरीकों से हुए लेकिन ट्यूडर काल में ही इंग्लैण्ड में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

कुछ समय तक नई भावना प्राचीन विश्वासों, प्राचीन नीतियों और मध्यकालीन पोपतंत्र तथा मध्यकालीन साम्राज्य की पुरानी परम्पराओं से घिरी या दबी रही किन्तु धीरे-धीरे नई भावना घेरे से बाहर आ गई और एक नए समाज या राष्ट्र का उदय हुआ।

5.4 हेनरी सप्तम

गद्दी पर हेनरी का हक : इंग्लैण्ड की गद्दी पर हेनरी का हक कमजोर था किन्तु उसने कई तरह के उपायों से इसे मजबूत बना दिया। वह रिचमंड के ड्यूक एडमंड ट्यूडर का लड़का था। उसकी माँ मार्गरेट ब्युफोर्ट थी जो लंकास्टर घराने के गेट के जौन की वंशज थी। लेकिन लंकास्टर घराने का हक कमजोर था और यार्क घराने का हक अधिक मजबूत था। परन्तु हेनरी ने यार्क वंश के तीसरे रिचर्ड को बोसबर्थ की लड़ाई में हरा दिया और विजय के द्वारा गद्दी पर कब्जा कर लिया, लेकिन यार्क वंश के अभी भी दो उत्तराधिकारी थे–चौथे एडवर्ड की लड़की एलिजाबेथ और उसका भतीजा बार्विक का अर्ल। हेनरी ने एलिजाबेथ से विवाह कर गद्दी पर अपने हक को बहुत मजबूत बना दिया और अर्ल को कैद करवाकर बाद में मरवा दिया। पार्लियामेन्ट ने भी उसका साथ देते हुए इस संबंध में कानून बनाकर हेनरी के प्रतियोगी दावेदारों को गद्दी से वंचित कर दिया।

इस तरह हेनरी ने 1485 ई. में गद्दी पर अपना अधिकार जमा लिया और 24 वर्षों तक (1485-1509) उसने राज्य किया। उसका इंग्लैण्ड के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि उसी के काल में इंग्लैण्ड ने आधुनिक युग में प्रवेश लिया। ट्यूडर वंश की स्थापना भी उसी के द्वारा हुई और उसने इसकी नींव को मजबूत कर दिया। उसने देश में शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित कर बड़ी लोकप्रियता प्राप्त की। उसने प्रचलित अनेक बुराइयों को दूर किया और कई ऐसे कार्यों को किया जिसके महत्त्वपूर्ण परिणाम भविष्य में दिखाई पड़े।

हेनरी सातवें की राजसत्ता को मजबूत बनाने की कोशिशें

हेनरी एक महत्त्वाकांक्षी राजा था। वह अपनी राजसत्ता को मजबूत बनाना चाहता था जिसके लिए उसने कई प्रयत्न भी किए जो सफल सिद्ध हुए। इसके लिए उसने निम्नलिखित कार्यों को किया–

1. सामंतों के द्वारा निजी सेना रखने पर प्रतिबंध : हेनरी इस बात से भलीभाँति परिचित था कि सामंत ही उत्पात एवं अशांति के मुख्य (बैरन) कारण थे। वास्तव में सामंत वह छोटे-छोटे राजा थे जो आपस में युद्ध किया करते थे। कुछ सामंत गुलाब-युद्ध में हारकर खत्म हो चुके थे और जो कुछ बच गए थे वह गरीब हो गए थे, परन्तु फिर भी अभी कुछ सामंत रह गए थे। राजा को इनके प्रति डर बना हुआ था क्योंकि सामंतों के पास स्वयं की सेना होती थी जिसकी अपनी वर्दी होती थी और उनकी रोजी-रोटी की व्यवस्था भी सामंत ही करता था। हेनरी ने इस प्रथा को तोड़ने का निश्चय किया। इसके लिए हेनरी ने कड़ाई से कुछ कानून बनाए जिसके तहत सामंत एक निश्चित

संख्या से ज्यादा सेना नहीं रख सकता था, उन्हें वर्दी भी नहीं दे सकता था तथा सामंत उन सैनिकों के लिए न्यायालय में पैरवी नहीं कर सकता था। अब सामंती सेना के बदले पहले की मिलिशिया सेना के आधार पर सैनिकों की भर्ती की जाने लगी। ये सैनिक राजा के प्रति अधिक ईमानदार होते थे।

नोट

2. वैध एवं वास्तविक राजा में भेद : सातवें हेनरी के प्रारंभ के शासनकाल में लोग अपनी सम्पत्ति को लेकर स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करते थे। ऐसे में वह राजा के प्रति अपनी श्रद्धा भी नहीं रखते थे। तब हेनरी ने वैध राजा व वास्तविक राजा के सिद्धांत को बनाया जिसके तहत उसने कहा कि जो व्यक्ति वास्तविक राजा यानी जो राजा इस वक्त गद्दी पर बैठा होगा उसके प्रति भक्ति भाव रखेगा उसकी सम्पत्ति को एवं उसकी जिंदगी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा पाएगा। इससे लोगों के मन में हेनरी (सातवें) के प्रति भक्ति भाव बढ़ा।

3. पार्लियामेन्ट के साथ सहयोग : हेनरी ने पार्लियामेन्ट की उपेक्षा नहीं की, बल्कि इसके साथ सहयोग स्थापित किया। पार्लियामेन्ट शक्तिशाली, प्रतिष्ठित एवं राष्ट्रीय संस्था थी। अत: हेनरी ने इसे मिलाकर रखा, लेकिन जब वह अपने हित में इसकी बैठक आवश्यक समझता था, तभी इसे बुलाता था अन्यथा नहीं। अपने शासनकाल के पूर्वार्द्ध में हेनरी ने कई बार पार्लियामेन्ट बुलाई। पार्लियामेन्ट ने उत्तराधिकारियों की उपेक्षा कर उसे राजा स्वीकार किया और उसके हाथों को मजबूत बनाया, किन्तु उत्तरार्द्ध में केवल एक बार (1504) पार्लियामेन्ट बुलायी गयी।

4. बारूद एवं तोप पर अधिकार : मध्यकाल में सामंत अपने दुर्गों में सुरक्षित रहते थे, किन्तु बारूद एवं तोपखाने के सामने दुर्गों की महत्ता जाती रही। बारूद एवं तोपखानों पर राजा ने अपना अधिकार रखा। अब तोप के द्वारा दुर्ग भी नष्ट किया जा सकता था।

हेनरी अपने मंत्रियों को भी स्वयं ही नियुक्त करता था। ये साधारण श्रेणी के होते थे, किन्तु योग्य, ईमानदार होते थे। उसके मंत्रियों में मौर्टन, रिचार्ड फौक्स, एडमंड और रिचार्ड एम्पसन के नाम उल्लेखनीय हैं।

5. नवीन मध्य वर्ग को प्रोत्साहन : हेनरी ने सदैव पुराने सामंतों की उपेक्षा की। उन्हें महल, दरबार, शासन या न्यायालय कहीं भी स्थान नहीं दिया गया। एक नवीन मध्य वर्ग का उदय हो रहा था। उस वर्ग के लोग साधारण श्रेणी के थे, किन्तु वे अपने उत्थान के लिए राजा पर निर्भर करते थे। इसी वर्ग के लोगों को सभी क्षेत्रों में स्थान दिया गया। इस तरह उन्हें राजनैतिक अनुभव प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

6. स्थानीय प्रशासन में सुधार : सामंतों की शक्ति नष्ट करने के लिए हेनरी ने केवल केन्द्रीय क्षेत्र में ही सुधार नहीं किया। उसने स्थानीय क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सुधार किया। सामंत ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को डराते-धमकाते थे और लूटपाट मचाते थे। स्थानीय क्षेत्र में अधिकारियों में भी भ्रष्टाचार फैला हुआ था।

हेनरी ने भ्रष्टाचार रोकने का प्रयत्न किया। भ्रष्ट अधिकारियों को हटा दिया गया और उनके लिए दण्ड निर्धारित किये गये। शेरिफ और शान्ति न्यायाधीशों के कर्तव्यों की सूची बनाई गई। यह घोषणा की गई कि कर्तव्यों की उपेक्षा करने पर उन्हें भी दण्ड दिया जाएगा। जूरी प्रथा स्थगित की गई। न्यायालय में झूठी गवाही देने वालों को दण्ड दिया जाने लगा। 1506 ई. में शान्ति-न्यायाधीशों के पद के संबंध में सर्वप्रथम पुस्तिका भी निकाली गई।

इसके अतिरिक्त हेनरी ने कई और प्रयास भी किए जिसमें उसे सफलता मिली।

7. कौंसिल का संगठन : राजा के पथ-प्रदर्शन में कौंसिल का अधिकार-क्षेत्र बड़ा ही व्यापक था। कौंसिल शासन करती थी, नियम बनाती थी और न्याय भी किया करती थी। आर्थिक क्षेत्र में भी कौंसिल के अधिकार थे।

8. शक्तिशाली न्यायालय की स्थापना : सामंतों के न्यायालय के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार को खत्म करने के लिए एक खास अदालत की स्थापना की गयी। इसे स्टार चैम्बर कोर्ट कहते हैं। इस न्यायालय में जूरी का उपयोग नहीं होता था। अपराध की जांच के सिलसिले में यंत्रणा का उपयोग किया जाता था। इस न्यायालय में भारी अर्थदण्ड भी लगाया जाता था।

9. दूरस्थ स्थानों में कौंसिल की शाखाओं की स्थापना।

10. सामंतों की आर्थिक शक्ति पर चोट।

11. पोप तथा चर्च से संबंध : सातवाँ हेनरी कैथोलिक धर्म का अनुयायी था। अत: पोप से उसका निकट संबंध था। उसे पोप का समर्थन प्राप्त हुआ। चर्च ने भी उसके साथ सहयोग दिया।

आर्थिक दशा में सुधार : हेनरी को इस बात की अच्छी जानकारी थी कि उसके पूर्वगामी राजाओं को गरीबी के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। इसी के कारण उन्हें पार्लियामेन्ट की बाट जोहनी पड़ती थी। धन के लिए सामंतों का भी मुँह ताकना पड़ता था। अत: हेनरी ने आर्थिक स्थिति को भी सुधारने का सफल प्रयत्न किया।

नोट

15वीं सदी में जो जमीन दूसरों के अधीन हो गई थी वह शाही जमीन हेनरी को वापस मिल गयी। गुलाबों के युद्ध में मर चुके सामंतों की जमीन हेनरी ने अपने अधिकार में कर ली। **पहले**, उसने निजी भूमि पर कर लगा दिया और उसमें वृद्धि भी की। सामंती करों की वसूली पर विशेष ध्यान दिया गया। **दूसरे**, विरोधियों एवं अपराधियों पर कड़ा जुर्माना किया जाता था। **तीसरे**, वह क्षमा-पत्र बेचता था और भेंट-उपहार लेता था। **चौथे**, धनी लोगों से जबर्दस्ती कर्ज लिया जाता था। **पाँचवें**, पदों एवं उपाधियों को भी बेचा जाता था। **छठे**, धन जमा करने में मार्टिन ने बड़ी मदद की। वह धनिकों और गरीबों दोनों से धन लेता था। **सातवें**, पार्लियामेन्ट में भी उदारता थी। टनेस एवं पौंडेज जीवनभर के लिए मंजूर कर दिया गया था। **आठवें**, फ्रांस से भी उसे कुछ धन हाथ लगा था। **नवें**, उसने वाणिज्य-व्यापार को प्रोत्साहन दिया जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि और कर मिलने में सुविधा हुई।

हेनरी ने मितव्ययिता की नीति अपनाई। उसने शान्ति की नीति अपनाई। वह युद्ध के खिलाफ था क्योंकि युद्ध में व्यर्थ धन खर्च होता था। उसने राजमहल के खर्च को घटा दिया। वह बहुत सोच-विचारकर धन खर्च करता था। वह खजांची भी नियुक्त करता था। वह इस नियम में बहुत कठोर नियंत्रण रखता था।

इस प्रकार हेनरी के खजाने में लाखों पौंड जमा हो गये और वह बहुत धनी बन गया। अब वह आत्मनिर्भर हो गया था। उसे पार्लियामेन्ट का मुँह नहीं ताकना पड़ता था। अत: उसने अपने राज्यकाल के उत्तरार्द्ध में एक ही पार्लियामेन्ट बुलाई।

हेनरी पार्लियामेन्ट के नियंत्रण से मुक्ति पाना चाहता था। जिसके लिए उसने एक और काम किया। वाणिज्य-व्यापार की उन्नति के लिए शान्ति की जरूरत थी और हेनरी ने शान्ति कायम रखी। अत: मध्य-वर्ग वालों की उन्नति हुई जो राजा के प्रति कृतज्ञ थे। पार्लियामेन्ट में इसी वर्ग से अधिक लोग आने लगे।

वाणिज्य व्यापार का विकास : हेनरी ने अपने राज्यकाल में शान्ति बनाकर रखी और वाणिज्य व्यापार का भी अच्छा विकास किया। उसने 1485 ई. में भी एक नौवछन नियम (नेविगेशन ऐक्ट) पास किया जिससे जहाज-व्यवसाय को बड़ा प्रोत्साहन मिला। इसका उद्देश्य यह था कि फ्रांस से कोई माल अंग्रेजी जहाजों में ही लाया जाए, दूसरे देशों के जहाजों में नहीं। पूर्वी भूमध्य सागर (लेवांट) से व्यापार होने लगा। इंग्लैण्ड में हन्सा संघ, जो कि यूरोप के उत्तर में व्यापार करने के लिए जर्मनी द्वारा बनाया गया संघ था, का काफी प्रभाव था। हेनरी इस संघ, के प्रभाव को खत्म करने लगा। उसने ऊन के व्यवसाय को भी बढ़ाया। नीदरलैण्ड (फ्लैंडर्श) के साथ एक संधि हुई जिसे 'महान सम्पर्क' (ग्रेट इंटरकोर्स) कहते हैं। इसके द्वारा अंग्रेज व्यापारियों को वहाँ सुविधा दी गई, लेकिन नीदरलैण्ड के व्यापारी इसे पसंद नहीं करते थे। अत: वह इसे 'बुरा सम्पर्क' कहने लगे।

हेनरी ने कुछ विशेष प्रकार के कपड़ों और बहुमूल्य धातुओं के निर्यात पर (1487) प्रतिबंध लगाया। उसने घेरे के विरुद्ध नियम (1489-90) बनाया। उसने कर्ज पर लिये जाने वाले सूद को (1495) और साहसी व्यापारियों के द्वारा लिये जाने वाली फीस को (1497) नियंत्रित किया। नाप-तौल, मूल्य, मजदूरी आदि के संबंध में भी नियम बनाए गए।

कला में अभिरुचि : हेनरी सप्तम को कला में भी खास दिलचस्पी थी। उसने पुरानी इमारतों में मरम्मत करवाई और नयी इमारतों का निर्माण कराया। रिचमौन्ड का राजमहल और वेस्टमिंस्टर का गिरजाघर उसकी वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने थे। वह सौन्दर्य का पुजारी था। वह मितव्ययी था, किन्तु अपनी ठाठ-बाट का पूरा ख्याल रखता था। एक सीमा के अंदर दरबार की तड़क-भड़क पर ध्यान दिया जाता था। दरबारियों के लिए भोजन एवं मनोविनोद की समुचित व्यवस्था थी।

सेना का निर्माण : हेनरी ने अपनी समुद्री शक्ति के विकास की ओर भी विशेष ध्यान दिया। उसने कुछ जंगी बेड़ों का निर्माण किया। उसी के समय में साहसिकों ने अमेरिका की यात्रा की और न्यूफाउन्डलैंड की खोज

की। हेनरी ने स्थायी सेना की नींव रखी। उसने छोटी-सी सेना का निर्माण किया, लेकिन राज्य की सुरक्षा सभी समर्थ पुरुषों पर निर्भर थी वे पुरुष देश के लिए लड़ने को सदैव तैयार रहते थे। उन्हें हथियार रखने का भी अधिकार दे दिया गया था। तीर-धनुष का विशेष प्रचार था। बारूद, बन्दूक और तोप पर राजा का अधिकार था।

नोट

हेनरी सप्तम की वैदेशिक नीति

हेनरी सप्तम एक शान्तिप्रिय व्यक्ति था। वह इंग्लैण्ड की गद्दी अपने वंशज के लिए सुरक्षित रखना चाहता था। प्रारंभ में अर्थ की भी समस्या थी अत: वह युद्ध से बिलकुल अलग रहना चाहता था। वह जानता था कि युद्ध के कारण जान व माल की बहुत क्षति पहुँचती है। यदि युद्ध होगा तो उसकी भरपाई के लिए उसे राज्य की जनता पर टैक्स लगाना पड़ेगा और युद्ध के कारण बहुत से देश उसके दुश्मन बन सकते थे। वह इस कारण स्वयं को युद्ध से बहुत दूर रखता था। वह चाहता था कि सभी यूरोपीय देश के राजा उसके मित्र हों और सभी उसे इंग्लैण्ड के एक सबसे योग्य राजा के रूप में स्वीकार करें। वह साम्राज्य विस्तार में अधिक रुचि नहीं रखता था परन्तु उसे इंग्लैण्ड के वाणिज्य विस्तार को बहुत आगे बढ़ाने की प्रबल इच्छा थी। अत: वह अन्य देशों के साथ संबंध बढ़ाने में और उनके साथ अपने व्यापार को आगे बढ़ाने में बहुत अभिरुचि रखता था।

हेनरी सप्तम की वैदेशिक नीति सफल साबित हुई हालांकि उस समय के अन्य राजाओं को इस बात पर पूर्ण विश्वास नहीं था कि हेनरी की वैदेशिक नीति को इतनी सफलता मिलेगी और देश-विदेश में उसकी इतनी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मध्य काल के राजा युद्ध में विश्वास रखते थे और उन्होंने फ्रांस पर आक्रमण कर उसे जीतने का प्रयास किया जिसके भयंकर परिणाम निकलकर सामने आए। हेनरी ने इस नीति का परित्याग कर दिया। आगे चलकर जब लड़ाई की संभावना हुई तब हेनरी ने फ्रांस से धन लेकर संतुष्टि कर ली और फ्रांस और इंग्लैण्ड में आपस में संधि हो गई।

1. विदेशों से व्यापारिक संबंध : हेनरी ने कुछ देशों के साथ व्यापारिक संबंध के द्वारा मित्रता कायम की। उसने डेनमार्क, नीदरलैण्ड (बेल्जियम) और इटली से व्यापारिक समझौता किया। पूर्वी भूमध्य सागर के देशों से भी व्यापारिक संबंध स्थापित हुआ।

2. इंग्लैण्ड से दुश्मन देशों के प्रभाव का अंत : इंग्लैण्ड में कुछ दुश्मन देशों का प्रभाव था। इन देशों के एजेन्ट लुक-छिपकर इंग्लैण्ड में काम कर रहे थे। हेनरी ने इन्हें पकड़वाकर कड़ी सजा दी जिससे कुछ एजेंट तो इंग्लैण्ड छोड़कर भाग गए। हेनरी ने अपने देश में संघ को भी समाप्त कर दिया।

3. आयरलैण्ड : ट्यूडर राजवंश की स्थापना होने से पहले ही इंग्लैण्ड का आयरलैण्ड के साथ संबंध स्थापित हो चुका था। हेनरी द्वितीय के समय में ही (12वीं सदी) इस संबंध का प्रारंभ हो गया था। उसके शासन काल में कुछ नार्मन वहाँ जाकर बस गए थे। जब हेनरी आयरलैण्ड गया तब आयरलैण्डवालों ने उसे अपना शासक भी घोषित किया था। इस तरह आयरलैण्ड के कुछ भाग पर इंग्लैण्ड का प्रभाव कायम हो गया था। वह भाग पेल कहलाता था, किन्तु समस्त आयरलैण्ड पर प्रभाव क़ायम नहीं हुआ था। हेनरी सप्तम के पहले के राजाओं ने आयरलैण्ड के मामले में पूरी अभिरुचि भी नहीं दिखलायी।

आयरलैण्ड में कबीले सरदारों की प्रधानता थी। वे इंग्लैण्ड की अधीनता को कबूल करना नहीं चाहते थे। हेनरी के समय में फिजेराल्ड वंश बड़ा ही शक्तिशाली था। किलडेयर और डेसमोंड के अर्ल इसी वंश से संबंधित थे। हेनरी ने किलडेयर अर्ल को अपना शासक भी बहाल किया था किन्तु ये अर्ल हेनरी सप्तम के प्रति भक्त नहीं थे। वे उसके विद्रोहियों को भी प्रोत्साहित करते थे।

इस तरह हेनरी के दुश्मनों-सिग्नेल और बार्बिक को आयरलैण्ड में बहुत मदद मिलती थी। अत: 1494 ई. में हेनरी ने पोयनिंग्स को आयरलैण्ड का शासक नियुक्त किया। पोयनिंग्स ने एक कानून बनाकर आयरी पार्लियामेन्ट की विधायक शक्ति कम कर दी। आयरी पार्लियामेन्ट को इंग्लैण्ड के राजा की अनुमति लिये बिना कोई कानून बनाने से मना कर दिया गया। यह भी तय हुआ कि इंग्लैण्ड में जो कानून बनेंगे, वे आयरलैण्ड पर भी लागू होंगे। इस कानून को पोयनिंग्स कानून कहते हैं।

4. स्कॉटलैण्ड : स्कॉटलैण्ड भी इंग्लैण्ड को अपना मित्र नहीं समझता था और आवश्यकता पड़ने पर इंग्लैण्ड के दुश्मनों का साथ भी देता था अत: स्कॉटलैण्ड को अपनी ओर मिलाने के लिए हेनरी ने अपनी बड़ी लड़की मार्गरेट का विवाह स्कॉटलैण्ड के राजा जेम्स चतुर्थ से (1503) कर दिया। इस तरह दोनों राज्यों के बीच एकता लाने के लिए हेनरी सप्तम ने पहला कदम उठाया, लेकिन इससे तत्काल ही लाभ नहीं हुआ अभी भी दोनों में दोस्ती कायम नहीं हो सकी, लेकिन भविष्य में इसका महत्त्वपूर्ण परिणाम हुआ।

5. फ्रांस : इंग्लैण्ड को फ्रांस अपना मित्र नहीं समझता था अत: अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए हेनरी ने ब्रिटेनी ड्यूक फ्रांसिस से एक संधि कर ली। 1488 ई. में फ्रांसिस के मर जाने के बाद फ्रांसीसियों ने एन, जो फ्रांसिस की बेटी थी उसका विवाह चार्ल्स अष्टम से कर दिया क्योंकि वह ब्रिटेनी को अपने में शामिल करना चाहते थे परन्तु इंग्लैण्ड को यह बात कदाचित् स्वीकार्य नहीं थी। यदि फ्रांस ब्रिटेनी पर अपना अधिकार जमा लेता तो वह इंगलिश चैनल के समीप आ जाता और ऐसा होने पर वह इंग्लैण्ड का प्रतियोगी बन जाता। यह बात आस्ट्रिया (मैक्समिलियन) तथा स्पेन (फर्डिनेंड) को भी अच्छी नहीं लगी। ब्रिटेनी पर फ्रांस के आधिपत्य का तीनों राज्यों ने मिलकर विरोध किया, परन्तु इस विरोध का कोई लाभ नहीं हुआ और ब्रिटेनी पर फ्रांस का आधिपत्य स्थापित हो गया। 1491 ई. में चार्ल्स और एन की शादी हो गई। इस बात से हेनरी को इतना आघात पहुँचा कि उसने फ्रांस पर हमला करने की इच्छा जता दी और पार्लियामेन्ट की स्वीकृति भी प्राप्त कर ली। 1492 ई. में उसने फ्रांस के विरुद्ध सेना को प्रस्थान के लिए आदेश भी दे दिए। परन्तु फ्रांस की स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह युद्ध कर सके। अत: एटाप्ले (Etaples) की संधि (1492) हो गई। फ्रांस ने हेनरी को बहुत-सा धन दिया। फ्रांस ने वार्बिक की मदद करनी छोड़ दी। हेनरी ने सेना वापस बुला ली।

हेनरी को इस संधि के कारण बहुत लाभ हुआ। **पहला**, इस संधि के कारण हेनरी को बहुत-सा धन मिला। **दूसरा**, अब सभी यूरोपीय देशों ने इस बात को स्वीकार कर लिया था कि इंग्लैण्ड का राजा हेनरी है। **तीसरा**, अब हेनरी की ख्याति इंग्लैण्ड में बढ़ने लगी थी और उसका प्रभाव भी बढ़ने लगा था। लोगों का विश्वास भी उसके प्रति बढ़ने लगा। **चौथे**, हेनरी के विरोधियों को फ्रांस से मदद मिलने की संभावना जाती रही।

6. स्पेन : हेनरी अब फ्रांस के प्रति निश्चित हो गया था क्योंकि फ्रांस अब उसका दोस्त बन गया था। चार्ल्स अष्टम ने 1496 ई. में इटली पर चढ़ाई कर दी। इससे फ्रांस की शक्ति बढ़ जाती। यदि ऐसा होता तो यह स्पेन के लिए खतरनाक सिद्ध होता। अत: स्पेन डर गया और वह इंग्लैण्ड से मित्रता की कामना करने लगा। स्पेन के शासक फर्डिनेंड की बड़ी लड़की जोआना का विवाह फिलिप से हुआ था। फिलिप आस्ट्रिया के मैक्समिलियन और बरगंडी की मेरी का पुत्र था। फिलिप और जोआना को भी एक पुत्र हुआ (1500 ई.) जिसका नाम चार्ल्स था। वह एक विशाल साम्राज्य का उत्तराधिकारी था।

अत: हेनरी ने भी स्पेन से विवाह के द्वारा दोस्ती कर लेने का निश्चय कर लिया। इस समय आस्ट्रिया से भी दोस्ती हो जाती। उसने स्पेन के राजा फर्डिनेंड की लड़की कैथरिन ऑफ आर्गान से अपने पुत्र राजकुमार (आर्थर) की शादी (1501) कर दी, किन्तु आर्थर दूसरे ही साल मर गया। अब उसने कैथरिन का विवाह अपने दूसरे लड़के हेनरी से कर दिया। इसके लिए उसने पोप से आज्ञा प्राप्त कर ली थी। अब इंग्लैण्ड और स्पेन दोनों में मित्रता हो गई। दोनों देशों में व्यापारिक संबंध बढ़ने लगा। फ्रांस मित्रहीन हो गया और स्पेन के साथ उसकी शत्रुता बढ़ती रही। इस स्थिति से भी इंग्लैण्ड को फायदा हुआ। स्कॉटलैण्ड और स्पेन से वैवाहिक संबंधों के महत्त्वपूर्ण परिणाम हुए।

7. कूटनीतिक संगठन : हेनरी को कूटनीति में भी दृढ़विश्वास था। उसने विदेशों में स्थायी रूप से राजदूतों को नियुक्त किया। उसने गुप्तचर विभाग का भी संगठन किया। उसके गुप्तचर यूरोपीय देशों में भी रहते थे। यूरोपीय मामलों के संबंध में राजदूतों, गुप्तचरों और व्यापारियों के राजा को नियमित रूप से सूचनाएँ मिला करती थीं।

5.5 हेनरी सप्तम का मूल्यांकन

दृढ़ शासन, राष्ट्रीय एकता और आर्थिक समृद्धि यह वह नीतियाँ हैं जिसे हेनरी ने तब अपनाया जब इंग्लैण्ड को इनकी सबसे ज्यादा आवश्यकता थी। उसने यह सिद्ध किया कि वह एक सावधान, अनुभवी और व्यावहारिक

नोट

राजनीतिज्ञ है। इतिहासकार **रीज** के शब्दों में, उसने अपने पीछे संघर्षमुक्त सिंहासन, भरपूर खजाना और सुव्यवस्थित शासन छोड़ा।

नोट

राजतंत्र को सर्वशक्तिशाली बनाना और शान्ति स्थापित करना– घरेलू क्षेत्र में यह दो हेनरी के मुख्य उद्देश्य थे। हेनरी इस बात से भलीभांति परिचित था कि इंग्लैण्ड में फैली अशान्ति को सबल राजतंत्र के द्वारा ही शान्ति में परिवर्तित किया जा सकता है और इसी तरह वह अपने अधिकार को सुरक्षित रख सकता था। अतएव उसने सर्व सत्ताधारी राजतंत्र की स्थापना की। उसके द्वारा राज्य में शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित की गई। उसने वाणिज्य-व्यापार का विकास किया। उसने एक नए वर्ग का निर्माण किया और इस वर्ग के लोगों को उसने राजनैतिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए सुअवसर प्रदान किया। भविष्य में इस वर्ग के लोगों ने राजनीति में महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

वैदेशिक नीति में हेनरी शान्ति बनाए रखने का समर्थक था। वह यूरोपीय मामलों में बिना कारण कोई हस्तक्षेप नहीं करता था, किन्तु वह वैदेशिक क्षेत्र में उदासीन नहीं था। वह चाहता था कि विदेशी देशों में इंग्लैण्ड के प्रति प्रतिष्ठा हो। अपने इस उद्देश्य में भी वह सफल हुआ। उसने सफलतापूर्वक वैदेशिक नीति की नींव डाली। उसने विवाह तथा व्यापार के द्वारा अन्य देशों से मित्रता स्थापित की।

हेनरी एक दूरदर्शी, व्यावहारिक एवं चतुर व्यक्ति था। वह नियमानुमोदित (Constitutional) शासन का ही समर्थक था। अत: उसने कभी कानून एवं पार्लियामेन्ट की उपेक्षा नहीं की। उसने केन्द्रीय तथा स्थानीय दोनों क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण सुधार किया, परन्तु उसके द्वारा किसी नये आदेश या सिद्धांत का प्रचार नहीं किया गया। उसने बिना किसी मौलिक वैधानिक परिवर्तन के ही शासन को सुदृढ़ कर दिया। उसने मध्यकालीन संस्थाओं और कानूनों को ही कायम रखा, किन्तु उन्हें सजीव और सक्रिय बना दिया। हेनरी बहुत ही उद्यमी पुरुष था। हेनरी की पूरी रुचि राज्य के कामों में रहती थी। वह अपने अवकाश काल में भी राज्य-संबंधी बातों को सोचा करता था। वह सोचा करता था कि राज्य में किसे पुरस्कृत किया जाए एवं किसे दण्ड दिया जाए।

श्री चर्चिल के मतानुसार, इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठने वालों में हेनरी शायद सर्वोत्तम व्यवसायी व्यक्ति था। फ्रांसिस **बेकन** के मतानुसार, हेनरी सप्तम बुद्धिमान व्यक्तियों के लिए अचरज का विषय है। उसने जो चाहा, उसे पूरा करके ही दम लिया।

हेनरी सप्तम अपने राज्य को बहुत मजबूत बनाना चाहता था। एक मजबूत इमारत की तरह परन्तु इस मजबूत इमारत के लिए उसे एक मजबूत नींव की आवश्यकता थी परन्तु वह नींव उसे नहीं मिली जिस कारण उसे स्वयं एक मजबूत नींव को नए सिरे से बनाना पड़ा। **श्री चर्चिल** के शब्दों में, वास्तव में उसकी उपलब्धि ठोस एवं स्थायी थी। उसने अपने पूर्वजों के विध्वंसों एवं भस्मों के बीच अपनी शक्ति का निर्माण किया। पुनर्जागरणकालीन यूरोप के राजकुमारों में फ्रांस का ग्यारहवाँ लुई या स्पेन का फर्डिनेंड उपलब्धि तथा कीर्ति में उससे आगे नहीं बढ़ा था। एक अन्य लेखक के मतानुसार, हेनरी द्वितीय के बाद जो राज्यपद (क्राउन) था, उसकी तुलना में हेनरी सप्तम ने उसे अधिक शक्तिशाली बना दिया था। अत: हेनरी ने जो राजतंत्र स्थापित किया, उसे नवीन राजतंत्र (New Monarchy) कहा गया। उसी के दिखाये मार्ग पर उसके उत्तराधिकारी भी चलते रहे। उसने इंग्लैण्ड को आधुनिक एवं प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कर दिया। अत: श्री चर्चिल का मत है कि हेनरी के द्वारा स्थापित राजतंत्र इंग्लैण्ड को मध्यकालीन अराजकता से निकालकर अधिक शक्ति एवं विस्तृत समय की ओर ले गया।

हेनरी एक कुशल राजा था। उसका ध्यान राज्य एवं समाज में फैली बुराइयों की ओर गया और उसने इन बुराइयों को समाप्त करने के लिए कई कार्य किए। उसके कई कार्य भविष्य में बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए। अत: हेनरी के राज्यकाल को उपचार (Remedy) और बीजारोपण (Seed time) कहना ठीक ही होगा। हेनरी अपनी अद्भुत सफलता के कारण सर्वोच्च पद पर आसीन हो पाया। उसके पास बहुत सारा धन भी एकत्र हो गया था। उसके प्रयासों के कारण ही इंग्लैण्ड के राजतंत्र को एक शक्तिशाली रूप मिल पाया, लेकिन इंग्लैण्ड के वैभवशाली रूप के कारण भी हेनरी के स्वभाव एवं रहन-सहन में कोई खास बदलाव नहीं हुआ। शक्ति एवं समृद्धि के बीच उसने संयम को बनाए रखा। हेनरी सप्तम की नीति एवं आचरण से स्पष्ट हो जाता है कि वह बहुत ही सावधान एवं अनुभवी राजनीतिज्ञ था। अत: यदि उसे ट्यूडर वंश का सबसे बड़ा राजा कहा जाए तो इस कथन में कोई गलती नहीं होगी।

इतिहासकार बिनडोफ के मतानुसार, "हेनरी नाम धारण करने वाले सभी राजाओं में वह महान था।" ग्रीन के मतानुसार, "हेनरी सप्तम ने देश में सुख-शान्ति की स्थापना कर और विदेशों में देश का प्रभाव बढ़ाकर इंग्लैण्ड के इतिहास में एक गौरवपूर्ण पद प्राप्त किया था।" **ए.जे. ग्राण्ट** के कथनानुसार, "हेनरी सप्तम ने देश को गृहयुद्ध से विश्राम दिया और उसकी औद्योगिक तथा आर्थिक प्रगति के लिए अवसर प्रदान किया। अत: जनता ने उसके शासन का स्वागत किया।" **एम.एम. रीज** के मतानुसार, "वह अपने पीछे संघर्षरहित सिंहासन, भरपूर खजाना और कार्यरत सरकार छोड़ गया।"

रैम्जेमूर के अनुसार, उसने ट्यूडर शक्ति की सुदृढ़ नींव डाली और देश को शान्ति व्यवस्था तथा मजबूत सरकार प्रदान की।

नोट

5.6 हेनरी सप्तम का शासनकाल : उपचार एवं बीजारोपण का काल

हेनरी सप्तम का शासनकाल उपचार एवं बीजारोपण का काल कहा गया है।

उपचार का काल

हेनरी के राज्यारोहण के समय (1485) समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्र में बुराइयाँ फैली हुई थीं। ये बुराइयाँ भयंकर रोगों के समकक्ष थीं। हेनरी ने एक कुशल चिकित्सक की तरह इन रोगों का उचित निदान किया और स्थायी रूप से इन्हें दूर कर दिया।

1. युद्ध के वातावरण को खत्म करना : हेनरी के सत्ता में आने से पहले इंग्लैण्ड में युद्ध का वातावरण बना रहता था। सदैव युद्ध होते रहते थे। इन युद्धों के कारण इंग्लैण्ड को बहुत भारी खर्च का सामना करना पड़ता था और इन खर्चों की भरपाई इंग्लैण्ड की जनता को करनी पड़ती थी। इन खर्चों का सीधा प्रभाव वहाँ के निर्माण कार्यों पर पड़ता था अतएव हेनरी ने शान्ति की राह चुनी और इंग्लैण्ड में युद्ध को समाप्त करने की कोशिश की और जितने भी दुश्मन देश थे उनसे मित्रता स्थापित कर ली।

उत्तराधिकार को लेकर इंग्लैण्ड में गृहयुद्ध की सदैव संभावना बनी रहती थी। ऐसे ही गुलाबों के युद्ध के कारण भारी जन-धन की हानि हुई, परन्तु हेनरी ने राजकुमारी एलिजाबेथ से शादी कर लंकास्टर एवं यार्क घरानों की शत्रुता को खत्म कर दिया। हेनरी ने बाकी बचे विरोधियों को युद्ध में पराजित कर और कुछ को मरवाकर गृह-युद्ध की सम्भावना को लगभग समाप्त कर दिया। स्पेन और स्कॉटलैण्ड भी इंग्लैण्ड के दुश्मन थे। वैवाहिक संबंध स्थापित कर हेनरी ने इन देशों से मित्रता कर ली। इंग्लैण्ड और फ्रांस में भी सदैव युद्ध होते रहते थे। इंग्लैण्ड सदैव फ्रांस पर अपना अधिकार करना चाहता था। हेनरी ने इस हौसले का त्याग कर दिया और फ्रांस से बहुत ध न लेकर समझौता कर लिया।

2. सामंतों की शक्ति का नाश : सामंत वर्ग लड़ाकू, अशान्तिप्रिय और अन्यायी थे। वे सदैव आपस में झगड़ते रहते थे। वे राजा को महत्त्व नहीं देते थे, वे आम जनता का शोषण करते थे। हेनरी ने कई ऐसे उपाय किए जिनसे इन सामंतों की शक्ति का प्रभाव कम होता चला गया। हेनरी ने इन सामंतों के तोप तथा स्वयं की सेना रखने पर पाबंदी लगा दी। उसने सामंतों को शासन एवं महल से हटा दिया। विरोधियों को कठोर दण्ड दिया जाने लगा। उनके धन पर भी चोट की गई जिस कारण उनकी शक्ति दिन-प्रतिदिन कम होती चली गई।

3. राजतंत्र को शक्तिशाली बनाना : हेनरी के राजतंत्र में आने से पहले राजतंत्र बहुत कमजोर था। राजा शान्ति-व्यवस्था स्थापित करने में असमर्थ था। राजा पर सामंतों एवं पार्लियामेन्ट का भी प्रभाव था। हेनरी ने अपने प्रयासों से राजतंत्र को शक्तिशाली बना दिया। अब राजा को सामंतों या पार्लियामेन्ट के हाथ की कठपुतली बनकर काम नहीं करना पड़ता था। अन्य ट्यूडर शासकों ने भी इस परम्परा को बनाए रखा।

4. न्यायालय को शक्तिशाली बनाना : हेनरी के पूर्व साधारण न्यायालय की स्थिति भी बहुत निर्बल थी। न्यायाधीशों के न्यायों को उपद्रवी सामंत बहुत प्रभावित कर लिया करते थे। वे उन्हें डराते-धमकाते भी थे। अत:

नोट

उचित न्याय नहीं हो पाता था। हेनरी ने स्टार चैम्बर नामक एक शक्तिशाली न्यायालय की स्थापना की और न्याय विभाग की प्रचलित बुराइयों का अंत किया।

5. सबल शासक : लंकास्टर एवं यार्क वंश के समय में (15वीं सदी) शासन दुर्बल हो गया था। कहा जाता है कि शासन का अभाव (Lack of governance) ही था। हेनरी ने शासन के अभाव को दूर किया। उसने शक्तिशाली एवं सुदृढ़ शासन की स्थापना की।

6. आर्थिक बुराइयों का अन्त : आर्थिक क्षेत्र भी बुराइयों से भरा हुआ था। हेनरी ने वाणिज्य, व्यापार एवं व्यवस्था के क्षेत्रों में उन्नति की। उसके इन प्रयासों से देश में धन-दौलत की वृद्धि हुई। साथ ही साथ राजकोष को बढ़ाने में भी सुविधा हुई। हेनरी के शासनकाल के प्रारंभ में राजकोष समाप्त हो चुका था और यह खाली राजकोष राजा के सिरदर्द का कारण था। हेनरी ने अपने शासनकाल के अंत तक राजकोष को भर दिया। उसके मरने के समय (1509) राजकोष में 45 लाख पौंड की रकम जमा थी।

हेनरी ने यात्रा, नौकायान एवं उपनिवेशवाद को भी प्रोत्साहन दिया। इससे बेकारी को दूर करने में सहायता मिली।

7. जनता की कठिनाइयों का खात्मा : हेनरी ने देखा कि कमजोर राजतंत्र एवं दुर्बल शासन होने से शान्ति व्यवस्था का अभाव हो गया था। चारों ओर अराजकता (मत्स्य न्याय) की प्रधानता थी। अत: जनता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। हेनरी ने शक्तिशाली राजतंत्र और सबल शासन की स्थापना कर शान्ति-व्यवस्था का राज्य कायम किया। अब अधिकार शक्ति (Might) पर नहीं, कानून एवं न्याय पर आधारित था। इससे जनता को राहत मिली। जनता ने हेनरी की नीति का दिल से समर्थन किया।

बीजारोपण का काल

हेनरी ने कई ऐसे कार्य किये जिनके परिणाम महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए और वे भविष्य में दृष्टिगोचर हुए।

1. राजगद्दी की सुरक्षा : हेनरी ने अपने प्रयासों व दृढ़ निश्चय से अपने वंश के लिए राजगद्दी को सुरक्षित बना दिया। अत: ट्यूडर वंश का राज्य 118 वर्षों तक कायम रहा।

2. पार्लियामेन्ट की मजबूत स्थिति : ट्यूडर काल में राजा निरंकुश थे और पार्लियामेन्ट विनीत थी, किन्तु हेनरी सप्तम ने पार्लियामेन्ट की उपेक्षा कभी नहीं की। हेनरी की बात से सहमत होकर अन्य शासकों ने भी उसका अनुसरण किया। पार्लियामेन्ट के सहयोग से ट्यूडर शासकों ने शासन किया, जिस कारण उसकी शक्ति एवं महत्त्व में वृद्धि हुई। **डॉ. टैनर** के मतानुसार, वही पार्लियामेन्ट 17वीं सदी में राजाओं के साथ बराबरी का दावा करने लगी।

3. आधुनिकता को प्रोत्साहन : हेनरी ने आधुनिकता को प्रोत्साहित करने के लिए पुनर्जागरण धर्मसुधार और भौगोलिक खोज को प्रोत्साहित किया। इस आधुनिकता के विकास के कारण अंग्रेजी साहित्य के विकास में भी सहायता मिली।

4. स्कॉटलैण्ड से वैवाहिक संबंध : हेनरी ने विभिन्न देशों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करके बहुत से देशों को अपना मित्र बनाया। हेनरी ने स्कॉटलैण्ड के राजा जेम्स चतुर्थ से अपनी बड़ी लड़की मार्गरेट का विवाह किया। स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी, मार्गरेट की पोती थी। मेरी का लड़का जेम्स षष्ठ था। 1603 ई. में एलिजाबेथ प्रथम की मृत्यु पर जेम्स षष्ठ ही अपनी माता के पक्ष में इंग्लैण्ड की गद्दी का अधिकारी हुआ। अत: 1603 ई. में वह जेम्स प्रथम नाम से इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा और उसने स्टुअर्ट वंश की स्थापना की। अब दोनों देशों का मुकुट एक हो गया। इसके बाद दोनों देशों में पार्लियामेंटरी संयोग के लिए भी रास्ता खुल गया।

इस वैवाहिक संबंध का एक दूसरा भी परिणाम हुआ। स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी के मरने पर स्पेन के राजा ने यह प्रचार किया कि मेरी ने अपना अधिकार उसे सौंप दिया है। इस तरह उसने इंग्लैण्ड की गद्दी पर दावा उपस्थित किया। आर्मडा की लड़ाई का एक कारण यह भी था।

5. स्पेन से वैवाहिक संबंध : स्पेन के साथ हेनरी द्वारा वैवाहिक संबंध बनाने के बाद मुख्यत: दो नतीजे सामने आए– हेनरी ने स्पेन की राजकुमारी कैथरीन का विवाह आर्थर से करवा दिया तथा आर्थर के मरने पर, हेनरी ने अपने दूसरे लड़के हेनरी से कैथरीन का विवाह करवा दिया।

यही हेनरी, हेनरी अष्टम के नाम से गद्दी पर बैठा। इंग्लैण्ड और रोम का संबंध विच्छेद हेनरी और कैथरीन के विवाह के फलस्वरूप हुआ। इससे इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार को प्रोत्साहन मिला। दूसरा परिणाम यह सामने आया कि हेनरी अष्टम अपने ससुर स्पेन के राजा से प्रभावित होकर पवित्र संघ (होलीलीग) में सम्मिलित हुआ था। स्पेन और आस्ट्रिया ने यह संघ फ्रांस के विरुद्ध 1513 ई. में कायम किया था। हेनरी ने फ्रांस को स्पेन के युद्ध में परास्त भी किया।

नोट

6. ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना : हेनरी ने व्यापार एवं व्यवसाय को विस्तृत किया। हेनरी ने नौकायन एवं उपनिवेशवाद को प्रोत्साहन दिया। इस तरह आगे चलकर ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना में मदद मिली। समुद्री शक्ति के रूप में इंग्लैण्ड का विकास होने लगा।

7. संगठित स्थानीय शासन : *हेनरी ने स्थानीय शासन में भी कई सारे सुधार किए। अन्य ट्यूडर शासकों* ने भी स्थानीय शासन का पुनर्संगठन किया। यह स्थानीय शासन लगभग चार शताब्दियों तक कायम रहा।

8. राजतंत्र की शक्ति में वृद्धि : हेनरी ने राजतंत्र को शक्तिशाली बना दिया। उसी के दिखाए रास्ते पर उसके उत्तराधिकारी भी चलते रहे। 1603 ई. के बाद स्टुअर्ट वंश के राजा भी ट्यूडर राजाओं की नकल करना चाहते थे किन्तु परिस्थिति बदल चुकी थी। अब पार्लियामेन्ट,राजा की शक्ति को सीमित करना चाहती थी। अत: स्टुअर्टों का प्रयास हानिकारक सिद्ध हुआ। इसलिए **मांटेग्यू** ने ठीक ही कहा है कि "ट्यूडरों ने जिस रूप में राजपद को प्राप्त किया था उससे अधिक शक्तिशाली बनाकर उन्होंने इसे छोड़ा किन्तु शक्ति की यही अधिकता स्टुअर्टों के लिए घातक सिद्ध हुई।"

9. कौंसिल की सुदृढ़ स्थिति : हेनरी ने कौंसिल का संगठन किया और इसे भी सुदृढ़ बना दिया। यह कौंसिल प्रणाली 1641 ई. तक कायम रही।

10. राष्ट्रीयता का विकास : सामंत प्रथा का अन्त हेनरी (सप्तम) के प्रयासों का ही परिणाम था। उसने राष्ट्रीय भावना को प्रोत्साहित किया, यह भावना लोगों में समय के साथ और मजबूत होती रही। अब लोग देश की उन्नति के विषय पर चिंता करने लगे। वह देश की मान-मर्यादा में सहयोग करने लगे। इससे एक राष्ट्र के रूप में इंग्लैण्ड की शक्ति बढ़ने लगी। कालान्तर में इंग्लैण्ड एक शक्तिशाली देश बन गया।

11. नवीन मध्यम वर्ग : हेनरी सप्तम ने पुराने सामंतों को नष्ट कर एक नवीन मध्यम वर्ग का निर्माण किया। उसने इस वर्ग के लोगों को राजनैतिक शिक्षा प्रदान की। इस वर्ग ने 17वीं सदी में राजा से स्वतंत्रता की लड़ाई में महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

5.7 हेनरी अष्टम (1509-1547 ई.)

चरित्र : हेनरी सप्तम का दूसरा पुत्र हेनरी अष्टम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हेनरी के बड़े पुत्र राजकुमार आर्थर की मृत्यु हो जाने के कारण 1509 में हेनरी को गद्दी पर बैठाया गया जिसके बाद उसे हेनरी अष्टम का नाम दिया गया। वह एक बहुत सुन्दर 18 वर्ष का नवयुवक था जब उसे गद्दी पर बैठाया गया, उसे टेनिस खेलने व गाने-बजाने का बहुत शौक था। वह एक विद्वान बालक था तथा वह अन्य विद्वानों को भी आदर देता था। उसे लैटिन, फ्रेंच, अंग्रेजी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। वह एक तेज और व्यावहारिक बुद्धि का व्यक्ति था। उसे मनुष्यों को पहचानने की समझ थी। वह खूब सोच-विचारकर अपने मंत्रियों एवं सलाहकारों को बहाल करता था। वह साधारण श्रेणी के लोगों को ही अपना सलाहकार नियुक्त करता था।

हेनरी से पोप हमेशा खुश रहते थे। वे उसे धर्मरक्षक भी कहते थे। क्योंकि हेनरी एक धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह धार्मिक प्रवचनों एवं प्रार्थनाओं को बड़े प्रेम से सुना करता था।

हेनरी की इच्छाशक्ति बड़ी प्रबल थी। वह दृढ़प्रतिज्ञ व्यक्ति था। वह जो करना चाहता था उसे करके ही दम लेता था। उसे विरोध सहन नहीं होता था, परन्तु वह सब तरह के लोगों से बातचीत कर सकता था।

नोट

परन्तु हेनरी अष्टम में कुछ अवगुण भी थे। वह बिलकुल भी उदार व्यक्ति नहीं था। वह अपने विरोधियों को मारने से पहले एक पल का संकोच भी नहीं करता था। हेनरी ने अपने पिता के दो नामी सलाहकारों एम्पसन और डडले को फांसी दे दी थी। उसने अपने दो सलाहकारों बुल्जे और क्रामवेल को चैन से नहीं रहने दिया और उनके साथ कठोर व्यवहार किया। उसने अपनी पत्नियों की भी हत्या कराई।

वैवाहिक स्थिति : हेनरी एक अनैतिक प्राणी था परन्तु वह कामुकता से भरा हुआ था। इस कारण उसके विचार अत्यन्त संकुचित थे। हेनरी अष्टम ने छः महिलाओं से विवाह किया। सर्वप्रथम उसने अपने बड़े भाई की विधवा एरागन की कैथरीन से 1509 में शादी की, हालांकि ईसाई धर्म ऐसा करने की अनुमति नहीं देता परन्तु उसने पोप को भी इस विवाह के लिए मना लिया। हेनरी ने अपना दूसरा विवाह अपने ही दरबार की एक सुन्दर स्त्री एनबोलीन से 1533 ई. में किया, लेकिन यह औरत बहुत विश्वासी सिद्ध नहीं हुई। अतः विवाह के 3 वर्षों बाद हेनरी ने उसे मरवा दिया। हेनरी को अपने पहले विवाह से मेरी और दूसरी पत्नी से एलिजाबेथ दो पुत्रियाँ हुईं। अपना तीसरा विवाह हेनरी ने जेनसेमूर से 1536 ई. में किया, परन्तु विवाह के दूसरे वर्ष पुत्र को पैदा करते समय उसकी मृत्यु हो गई जिसका नाम एडवर्ड रखा गया। इसके उपरांत हेनरी ने क्लीव्स की एन से 1537 में अपना चौथा विवाह किया। इस विवाह को कराने का श्रेय क्रौमवेल नामक सलाहकार को जाता है। एन दिखने में बहुत ज्यादा सुन्दर नहीं थी अतः हेनरी ने एन और क्रौमवेल दोनों की ही शीघ्र हत्या करवा दी। इसके बाद उसने कैथरीन होबार्ड से पाँचवा विवाह किया। हेनरी को कैथरीन के चरित्र पर संदेह रहता था। इसी संदेह के कारण विवाह के दो वर्ष के भीतर हेनरी ने उसका भी कत्ल करवा दिया। इसके बाद उसने कैथोरीन वार से 1542 ई. में अपना छठा विवाह किया। इस विवाह से पहले कैथरीन के दो विवाह पहले भी हो चुके थे। विवाह के कुछ समय बाद 1547 ई. में हेनरी की मृत्यु हो गई और हेनरी की मृत्यु के बाद कैथरीन ने अपना चौथा विवाह भी कर लिया।

इस प्रकार हेनरी अष्टम की छः शादियों से उसे 3 पत्नियों से ही 3 संतानें पैदा हुईं– एक लड़का और दो लड़कियाँ। हेनरी ने अपने पुत्र एडवर्ड को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। एडवर्ड के निःसंतान मृत्यु हो जाने के कारण मेरी को और मेरी के निःसंतान मर जाने पर एलिजाबेथ को गद्दी पाने का अधिकार दिया गया।

हेनरी के चरित्र में बहुत से दोष थे परन्तु इसके बाद भी हेनरी अष्टम की गिनती इंग्लैण्ड के बड़े सम्राटों में की जाती है। यह भी कहा जाता है कि राष्ट्र पर किसी सम्राट ने इतना व्यक्तिगत प्रभाव नहीं डाला जितना हेनरी अष्टम ने डाला।

सलाहकार : आठवें हेनरी के दो प्रमुख सलाहकार थे–टॉमस बुल्जे और ठोमस क्रौमवेल।

टॉमस बुल्जे

प्रारम्भिक जीवन : बुल्जे का जन्म एक सौदागर के यहाँ हुआ था जिनका नाम इप्सबिच था जो ईस्टऐंग्लिया में रहते थे। उसने ऑक्सफोर्ड में शिक्षा प्राप्त की और करीब 15 वर्ष की उम्र में उसने बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर ली। उसके अंदर एक पुरोहित बनने की प्रबल इच्छा थी क्योंकि साधारण व्यक्ति के लिए धार्मिक क्षेत्र में बढ़ना आसान कार्य था। विनचेस्टर के बिशप फॉक्स से उसका सम्पर्क हुआ। इस कारण उसे हेनरी सप्तम के दरबार में आने-जाने का मौका मिला। 1504 ई. में ही वह पादरी के पद पर नियुक्त कर लिया गया। हेनरी के मरने के पूर्व वह शाही दान विभाग का अध्यक्ष और लिनकोन का डीन नियुक्त हो चुका था।

हेनरी अष्टम को राजा का पद मिलने से पहले ही वह बुल्जे को जानता था। जब हेनरी अष्टम को राजा का पद मिला तो जैसे बुल्जे के किस्मत का सितारा ही चमक उठा। हेनरी उसकी योग्यता देखकर उससे बहुत प्रसन्न रहता था। हेनरी बुल्जे का बहुत सम्मान भी करता था। हेनरी ने उसे 1511 ई. में प्रिवीकौंसिलर बना दिया। हेनरी ने उसे 1514 ई. में यार्क का आर्क-बिशप बना दिया। पोप ने उसे कैथोलिक चर्च का कार्डिनल नियुक्त किया। कई बिशपों से उसका संबंध कायम हो गया। 1515 ई. में हेनरी ने उसे चांसलर का प्रधान सचिव बना दिया। 3 वर्ष के बाद पोप ने उसे अपना राजदूत (लीगेट) नियुक्त कर दिया। इस हैसियत से बुल्जे को बहुत महत्त्वपूर्ण अधिकार मिल गए। इस तरह राज्य तथा चर्च दोनों ही में बुल्जे ने उच्च पदों को सुशोभित किया।

लगभग 15 वर्षों (1515–1529) तक राजा की छत्रछाया में बुल्जे इंग्लैण्ड का प्रभावशाली शासक बना रहा। हेनरी केवल नाम का राजा रह गया था असल में राज्य पर शासन वही कर रहा था। यह बुल्जे का ही प्रभाव था कि इंग्लैण्ड में दिन-दूनी रात चौगुनी तरक्की हो रही थी। उसके प्रभाव में राज्य का राजकोष भी लगातार बढ़ता जा रहा था। कुछ समय तक उसकी राष्ट्रीय आय आधुनिक मुद्रा में 50,00,000 पौंड थी। उसके कई महल भी थे। उसका महल (यार्क पैलेस) जो लंदन में था धन से भरा हुआ था। उसके पास नौकर-नौकरानियों की संख्या बहुत ज्यादा थी। वह बहुत से पदों पर अपने सगे-संबंधियों को बैठाता था। उसका एक अवैध बेटा भी था जो समृद्धि-सुख की गोद में लोटपोट करता था। उसने ऑक्सफोर्ड में कार्डिनल कालेज (क्राइस्ट चर्च) के निर्माण पर बहुत बड़ी रकम खर्च की। उसकी शान-शौकत किसी भी राजा से कम नहीं थी। कुछ समय तक धन एवं प्रभाव में वह हेनरी से भी आगे बढ़ गया था। विदेशी राजदूत भी उससे भेंट करने को आतुर रहते थे। यदि यह कहा जाए कि 15 वर्षों (1514–29) का इंग्लैण्ड का इतिहास बुल्जे की ही कहानी है तो इसमें कोई गलती नहीं होगी।

नोट

एक लेखक का मत है "उसने जिस सीमा तक राजनैतिक शक्ति एवं उसके उपयोग के लिए उत्तरदायित्व केन्द्रित किया था इसका समरूप ब्रिटिश इतिहास में नहीं है।" **श्री चर्चिल** का भी कथन है कि "कुछ समय तक जो लम्बा समय था उसने सत्ता को सफलतापूर्वक अपनी मुट्ठी में एकत्रित करके रखा और इसकी समता इंग्लैण्ड में शायद कोई नहीं कर सकता।"

बुल्जे की सफलता का श्रेय उसके जन्म में नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व को जाता है। उसका जन्म तो एक साधारण कुल में हुआ था, किन्तु बुल्जे का व्यक्तित्व आकर्षक था। वह एक हँसमुख एवं विनोदप्रिय था। वह बात बनाने, हँसी-मजाक और खुशामद करने में बड़ा कुशल था। कोई भी उसकी बात सुनकर प्रभावित हो जाता था। उसकी बातों के जादू के कारण वह हेनरी का कृपापात्र एवं विश्वासपात्र बन गया।

बुल्जे योग्य, परिश्रमी एवं अध्यवसायी भी था। वह बिना थके ही अकेले बहुत काम कर लेता था। वेनिस के राजदूत ने उसके परिश्रमी स्वभाव की बड़ी प्रशंसा (1519 ई. में) की थी। उसके मतानुसार बुल्जे अकेले जितने कामों को करता था, वेनिस में कई व्यक्ति मिलकर उतने कामों को करते थे।

हेनरी अष्टम ही बुल्जे के उत्थान का प्रमुख कारण था। हेनरी अष्टम के विश्वास के कारण वह उसका कृपापात्र बन गया था, परन्तु जब बुल्जे ने हेनरी का विश्वास खो दिया तो वह राजा की कृपा का पात्र भी नहीं रह गया। तभी उसके बुरे दिन शुरू हो गए और उसके पतन में तनिक भी देर न लगी।

5.8 हेनरी अष्टम का विश्लेषण

एक लेखक के मतानुसार ब्रिटिश राष्ट्र पर किसी अन्य राजा ने इतना प्रभाव नहीं छोड़ा जितना कि हेनरी अष्टम ने। **पोलर्ड** का कथन है कि सांसारिक दृष्टिकोण से अंग्रेज राजाओं में हेनरी अष्टम सबसे अधिक सफल शासक था। उसने जो कुछ प्राप्त करना चाहा, प्राप्त कर ही लिया। एक अन्य विद्वान का कहना है कि हेनरी अष्टम में अवगुण थे, फिर भी वह अपने समय के गौरवपूर्ण शासकों में एक स्थान रखता था। सामान्य रूप से देश में सर्वसाधारण के बीच उसे सम्मान प्राप्त था और विदेशों में भी उसे प्रतिष्ठा मिली।

प्रजा का हितैषी : हेनरी अष्टम निर्दयी और स्वेच्छाचारी शासक था, किन्तु वह प्रजा का हितैषी था। वह प्रजाहित और लोकमत की उपेक्षा नहीं करता था।

शान्ति व्यवस्था स्थापित करना : हेनरी एक निरंकुश शासक के रूप में सामने आया। देश में एक सबल एवं निरंकुश शासन के स्थापित होने के कारण वहाँ शान्ति व्यवस्था कायम रही।

राष्ट्रीय भावना का विकास : रोम के पोप का आधिपत्य इंग्लैण्ड पर था। धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विदेशी पोप और पादरी द्वारा इंग्लैण्ड का शोषण हो रहा था। अंग्रेज जाति के लोग इस बात को एक अपमान की दृष्टि से देख रहे थे। इंग्लैण्ड को पोप के आधिपत्य से मुक्त कराने का श्रेय हेनरी अष्टम को जाता है। इस प्रकार हेनरी अष्टम के प्रयासों के कारण इंग्लैण्ड का धार्मिक एवं आर्थिक शोषण बंद हो सका। इससे देश में राष्ट्रीय भावना के विकास में सहायता मिली।

नोट

शक्तिशाली जलसेना का विकास : हेनरी अष्टम जलशक्ति के महत्त्व को भलीभांति जानता था। जिस कारण उसने एक सशक्त जलसेना को निर्मित किया। उसने नाविकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की। उसने तेज गति वाले जहाजों का निर्माण करवाया व उनकी संख्या में वृद्धि भी करवाई। इन जहाजों में छोटी-बड़ी तोपें भी लगवाई गईं। इस तरह इंग्लैण्ड की समुद्री शक्ति के विकास के लिए मार्ग खुल गया।

निरंकुशता की पराकाष्ठा : हेनरी अष्टम ने 38 वर्षों तक एक शानदार राजा की तरह शासन किया। उसके समय में निरंकुशता अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई। उसने अपने मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को नष्ट कर दिया। वह किसी भी विरोधी के प्रति सहानुभूति नहीं रखता था। सभी संस्थाएँ उसके अधीन ही कार्य करती थीं।

वाणिज्य व्यापार को प्रोत्साहन : देश में शान्ति-व्यवस्था रहने से वाणिज्य-व्यापार और उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन मिला। इनसे देश के धन-दौलत की वृद्धि होती रही।

पार्लियामेन्ट का समर्थन : पार्लियामेन्ट देश की लोकप्रिय संस्था थी। ट्यूडर वंश के अन्य शासकों की तरह आठवें हेनरी ने पार्लियामेन्ट की उपेक्षा नहीं की। उसने उसके महत्त्व को बढ़ा दिया। वह जो कुछ करता था, पार्लियामेन्ट के सहयोग से ही करता था। इस तरह उसने पार्लियामेन्ट को सदैव खुश रखा और उसके माध्यम से अपने स्वार्थों को पूरा किया।

आयरलैण्ड और वेल्स में प्रभाव : हेनरी अष्टम ने आयरलैण्ड पर इंग्लैण्ड के शासन को मजबूत किया। अब आयरिश हेनरी को अपना शासक मानने लगे। वेल्स के साथ भी इंग्लैण्ड का घनिष्ठ संबंध कायम हो गया।

विदेशों में प्रभाव : विदेशों में इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हेनरी अष्टम ने अनेक प्रयास किए। उसने यूरोप में शक्ति-संतुलन की नीति अपनाई। अब प्रत्येक देश इंग्लैण्ड से मित्रता कायम करने के लिए उत्सुक हो गया उसने आवश्यकतानुसार स्कॉटलैण्ड, फ्रांस तथा स्पेन की शक्ति को चुनौती भी दी। इस तरह विदेशों में इंग्लैण्ड को प्रसिद्धि प्राप्त हुई, लेकिन **रैम्जे मूर** के मतानुसार, वैदेशिक क्षेत्र की उपलब्धि बहुत शानदार नहीं कही जा सकती।

हेनरी अष्टम की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए इतिहासकार **साउथगेट** ने लिखा है कि "उसने चर्च पर शाही आधिपत्य की स्थापना की और ट्यूडर निरंकुशता की इमारत को पूरा किया।" इतिहासकर **ट्रेवेलियन** के मतानुसार, हेनरी सप्तम और हेनरी अष्टम ने आधुनिक इंग्लैण्ड के निर्माण में बहुमूल्य योगदान दिया।

5.9 एडवर्ड षष्ठ और मेरी ट्यूडर

एडवर्ड षष्ठ

हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र एडवर्ड, एडवर्ड षष्ठ के नाम से 1547 ई. में गद्दी पर विराजमान हुआ, परन्तु वह अभी केवल 9 वर्ष का एक बालक ही था। अत: राजकाज देखने के लिए उसने अपनी जिंदगी में ही एक परिषद् की स्थापना कर दी। इसका प्रधान एडवर्ड का मामा (हर्टफोर्ड) था जिसे समरसेट के ड्यूक के नाम से जाना जाता था। समरसेट और एडवर्ड दोनों ही प्रोटेस्टेंट थे।

स्कॉटलैण्ड : हेनरी अष्टम अपने लड़के एडवर्ड की शादी स्कॉटलैण्ड की राजकुमारी मेरी से करवाना चाहता था। समरसेट का मत भी यही था, परन्तु जब स्कॉट तैयार नहीं हुए तो समरसेट ने 1547 ई. में ही स्कॉटलैण्ड पर धावा बोल दिया। पिंकी के युद्ध में स्कॉट हार गए, किन्तु यह सब होने के बाद भी वे मेरी की शादी एडवर्ड से करने को तैयार नहीं हुए, बल्कि उन्होंने मेरी को फ्रांस भिजवा दिया। फ्रांस के राजकुमार ने मेरी से विवाह रचा लिया। इससे इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड के बीच मनमुटाव और बढ़ गया।

अन्य घटनाएँ : एडवर्ड षष्ठ के समय में दो बगावतें हुईं। प्रोटेस्टेंट धर्म के पक्ष में परिवर्तन होने के कारण डेवनशायर के लोगों ने बगावत कर दी थी। नॉर्फीक के लोगों को मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा था। अत: केट के नेतृत्व में उन्होंने बगावत कर दी थी, लेकिन ये बगावतें बहुत कड़ाई के साथ दबा दी गईं, किन्तु इससे समरसेट की बड़ी बदनामी हो गई।

समरसेट और नौर्दम्बरलैण्ड : नौर्दम्बरलैण्ड और समरसेट के ड्यूक परस्पर दुश्मन थे। 1549 ई. में समरसेट को संरक्षण के पद से हटाकर नौर्दम्बरलैण्ड के ड्यूक को उसके स्थान पर नियुक्त किया गया। नौर्दम्बरलैण्ड ने राजद्रोह का अभियोग लगाकर उसे मरवा दिया। इस कारण नौर्दम्बरलैण्ड की प्रधानता कायम हो गई।

नोट

नौर्दम्बरलैण्ड बड़ा ही लोभी एवं स्वार्थी था। वह प्रोटेस्टेंट भी था। मेरी ट्यूडर एडवर्ड की उत्तराधिकारिणी थी। वह एडवर्ड से बड़ी थी। वह एक कैथोलिक थी। नौर्दम्बरलैण्ड यह नहीं चाहता था कि मेरी को गद्दी मिले। इसलिए नौर्दम्बरलैण्ड ने मेरी को गद्दी से वंचित करने के लिए एक उपाय सोचा। एक बार जब एडवर्ड बीमार हो गया तब नौर्दम्बरलैण्ड ने उससे जबरदस्ती एक वसीयत लिखवा ली और एलिजाबेथ और मेरी को वसीयत से बेदखल कर दिया। उसने जेन ग्रे को एडवर्ड का वारिस घोषित करवा दिया। जेन ग्रे, हेनरी सप्तम की लड़की मेरी की नतनी थी। जेन ग्रे उसके लड़के लार्ड डडले की पत्नी थी। 1553 ई. में एडवर्ड की मृत्यु हो गयी। उसके मरते ही नौर्दम्बरलैण्ड ने जेन ग्रे को रानी घोषित कर दिया, परन्तु मेरी एक निडर व विरोध करने वाली महिला थी। प्रजा ने भी उसका साथ दिया। इस कारण मेरी ने इंग्लैण्ड पर आक्रमण कर दिया। अन्ततः उसने जेन ग्रे को गद्दी से हटा दिया, परन्तु वह केवल 9 दिनों तक गद्दी पर रह सकी। अतः उसको 9 दिनों की रानी कहते हैं। मेरी ने गद्दी पर विराजमान होते ही नौर्दम्बरलैण्ड को फांसी दिलवा दी। जेन ग्रे को उसके पति के साथ कैदी बनाकर कारावास का दण्ड दे दिया गया।

मेरी ट्यूडर (1553-58 ई.)

भूमिका : मेरी को जीवन में बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा, परन्तु वह एक दृढ़विश्वासी महिला थी। वह जो ठान लेती थी उसे करके ही दम लेती थी। वह हेनरी अष्टम की प्रथम पत्नी कैथेरीन की पुत्री थी और हेनरी के कैथरीन से तलाक के बाद वह गद्दी से बेदखल कर दी गई थी, परन्तु इन सब बातों के बाद भी वह अपने प्रयासों से गद्दी पर बैठी और गद्दी पर बैठते ही उसने अपने विरोधियों को या तो कारागार में डलवा दिया या उन्हें मरवा दिया। एनबोलीन की बेटी एलिजाबेथ को भी कैद कर लिया गया था, परन्तु किसी तरह उसने स्वयं को बचा लिया। जेन ग्रे और उसके पति को भी उसने कत्ल करवा दिया था।

वैवाहिक स्थिति : मेरी एक कट्टर कैथोलिक थी और धर्म-सुधार की प्रगति को समाप्त कर देना चाहती थी। वह प्रोटेस्टेंटों को बिलकुल पसंद नहीं करती थी। उसके साथ मेरी ने बहुत कठोर व्यवहार किया। मेरी अपना विवाह स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय से करना चाहती थी। फिलिप पाँचवें चार्ल्स का लड़का था। फिलिप भी कैथोलिक धर्म का ही समर्थक था। उसकी प्रजा इस शादी के विपक्ष में थी। सर टॉमस ब्याट के नेतृत्व में मेरी के खिलाफ एक विद्रोह भी हुआ। इंग्लैण्ड में हर जगह स्पेन से वैवाहिक संबंध न जोड़े जाने के लिए विरोध होने शुरू हो गए, किन्तु इन विरोधों का मेरी के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने पार्लियामेन्ट को अपने पक्ष में लेकर 1554 ई. में फिलिप से शादी कर ली। फिलिप ने इंग्लैण्ड के राजा के रूप में पद भी ग्रहण कर लिया परन्तु पार्लियामेन्ट ने यह घोषणा की कि फिलिप के बच्चों को इंग्लैण्ड में उत्तराधिकारी बनने का कोई हक नहीं है।

आयरलैण्ड : मेरी ट्यूडर के राज्यकाल में स्कॉटलैण्ड के साथ कोई घटना नहीं हुई, परन्तु आयरलैण्ड के साथ कुछ छोटी-बड़ी घटनाएँ हुईं। मेरी के शासनकाल में आयरलैण्ड में 'राजा तथा रानी के प्रदेश' नामक अंग्रेजी उपनिवेशों की स्थापना हुई। मेरी और फिलिप के नाम पर दो नगर भी बसाए गए। उपनिवेशों को बसाने में आयरिशों के साथ बहुत अत्याचार किए गए। बहुत-से लोगों के जमीन-जायदाद को छीन लिया गया। अतः आयरिश अंग्रेजों से बहुत खफा हो गये। इसका भयंकर परिणाम हुआ जो एलिजाबेथ के राज्यकाल में दिखाई दिया।

फ्रांस से लड़ाई : फिलिप की मेरी के साथ विवाह करने में कोई खास रुचि नहीं थी। अतः वह शादी हो जाने पर केवल स्वयं को खुश रखने के लिए प्रयत्नशील रहा। मेरी ने फिलिप से प्रभावित होकर फ्रांस पर हमला कर दिया, किन्तु उसे निराशा का सामना करना पड़ा। उसके हाथ से कैले (1558 ई.) भी निकल गया। सौसाला जंग के बाद केवल कैले पर ही अंग्रेजों का आधिपत्य रह गया था। अब वह भी नहीं रहा। इससे अंग्रेजों का बहुत बड़ा नुकसान हो गया। मेरी भी इस क्षति से बहुत दुःखी थी, किन्तु अब करती ही क्या?

नोट

मेरी का अंत : मेरी ने अपने जीवनभर कठिनाइयों का सामना किया। वह कभी खुश नहीं रह सकी। उसका पति भी उससे कभी खुश नहीं रह सका। उसकी अपनी कोई औलाद भी नहीं थी। वह धार्मिक नीति में भी सफल सिद्ध नहीं हो पाई। वह धर्मसुधार की धारा को नहीं रोक पायी। इन कई असफलताओं ने मेरी के दिल को गहरा सदमा पहुँचाया जिस कारण 1558 ई. में वह चल बसी। वह केवल 6 वर्षों तक ही राज्य पर शासन कर सकी। वह अपनी प्रजा के प्रेम के लिए तरसती रह गयी, किन्तु उसे अंत तक प्रजा की घृणा ही प्राप्त हुई। उसके राज्यकाल में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा।

5.10 महारानी एलिजाबेथ प्रथम (1558-1603 ई.)

चरित्र : एलिजाबेथ, हेनरी अष्टम और एनबोलिन की पुत्री थी। 25 वर्ष की आयु में 1558 ई. में वह गद्दी पर बैठी। उसे अंग्रेजी, फ्रेंच, इटालियन, लैटिन तथा ग्रीक भाषाओं का ज्ञान था। वह एक विद्वान महिला थी। उसे शिकार करने, घुड़सवारी, नाच-गाना पसंद था। वह अपने लगन की पक्की थी।

एलिजाबेथ बहुत ही चतुर एवं कूटनीतिज्ञ महिला थी। वह बहुत ही धीर एवं गंभीर थी। वह कोई निर्णय जल्दबाजी में नहीं करती थी। एक लेखक का तो मत है कि वह शायद ही कभी कोई निर्णय लेती थी। किसी समस्या के निराकरण के लिए समय एवं परिस्थिति पर ही निर्भर रहती थी।

कठिनाइयाँ : गद्दी पर विराजमान होते ही एलिजाबेथ को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

पहला, खजाने में धन का अभाव था और सिक्के का मूल्य घट गया था। **दूसरा,** किसान-मजदूरों की दशा भी अच्छी नहीं थी। ट्रेवेलियन के मतानुसार, एलिजाबेथ के राज्यारोहण के समय देश विदेशी आक्रमणकारियों का सामना करने की स्थिति में नहीं था। भयंकर धार्मिक मतभेद एवं संघर्ष के कारण देश विभाजित तो था ही, इसकी आर्थिक साख, युद्ध के सामान और सैनिक सभी निम्नकोटि के थे। एलिजाबेथ ने धीरे-धीरे अपने राज्यकाल में इन सभी कठिनाइयों का सफलतापूर्वक सामना किया। **तीसरा,** स्कॉटलैण्ड तथा फ्रांस से दुश्मनी थी। ये दोनों देश भी मेरी के समर्थक थे। **चौथा,** देश में दो धार्मिक दल-कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट-कायम हो गये थे। इन दोनों दलों के बीच गहरी खाई थी। **पाँचवां,** कैथोलिक दल वाले एलिजाबेथ को गद्दी से उतारकर स्कॉट मेरी को बैठाना चाहते थे। एलिजाबेथ, हेनरी अष्टम की दूसरी पत्नी एनबोलिन की लड़की थी। हेनरी ने कैथरिन को तलाक देकर एनबोलिन से शादी कर ली थी। इसके लिए पोप ने अनुमति नहीं दी थी। अत: कैथोलिक इस विवाह को उचित नहीं मानते थे और एलिजाबेथ के उत्तराधिकार का विरोध करते थे। **छठा,** सेना का अभाव था। जल और स्थल कोई भी सेना संगठित नहीं थी। **सातवाँ,** स्पेन का दूसरा फिलिप भी कट्टर कैथोलिक था और मन-ही-मन इंग्लैण्ड से दुश्मनी रखता था, किन्तु एलिजाबेथ से विवाह करने की आशा में बहुत समय तक चुप रहा, लेकिन इस आशा का अन्त होते ही उसकी दुश्मनी प्रत्यक्ष हो गयी।

एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति का उद्देश्य

एलिजाबेथ एक शान्तिप्रिय महिला थी। उसका गद्दी पर अधिकार मजबूत नहीं था। इसलिए वह सदैव ट्यूडर वंश की सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील रहती थी। यदि इंग्लैण्ड में अशान्ति फैल जाती तो इससे ट्यूडर वंश के अस्तित्व को खतरा हो सकता था इसलिए वह हमेशा यह कोशिश करती थी कि इंग्लैण्ड में शान्ति बनी रहे। दूसरी बात यह थी कि एलिजाबेथ के राजकोष में धन की कमी थी और वह जानती थी कि युद्ध की स्थिति में बहुत-सा धन व्यय हो जाता है इसलिए वह युद्ध के खिलाफ थी।

एलिजाबेथ राष्ट्र की भावनाओं को संतुष्ट करना चाहती थी। इंग्लैण्ड के लोग स्पेन और रोम को नापसंद करते थे अत: एलिजाबेथ भरसक प्रयास करती थी कि यह दोनों राष्ट्र इंग्लैण्ड पर अपना कब्जा न कर सकें।

एलिजाबेथ ने अपने राष्ट्र के हित के लिए त्याग और समर्पण का परिचय दिया। उसने देश में शान्ति के लिए विदेशों से मित्रता कायम रखी। उसने विदेशों की मित्रता के लिए जीवनपर्यन्त अपना विवाह न करने का निश्चय किया। यूरोप के बहुत से ऐसे राजा थे जो एजिलाबेथ से शादी करने को आतुर थे। एलिजाबेथ उन सभी राजा को इस आशा में रखा कि वह उनसे शादी करेगी। वह इस प्रस्ताव पर कभी खुलकर बात नहीं करती थी। अतः प्रत्येक राजा आशा करता था कि वह उसी से विवाह करेगी। इस तरह कोई भी राजा उससे दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहता था। प्रत्येक राजा इंग्लैण्ड से मित्रता बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहा।

नोट

अतः एक लेखक ने ठीक ही कहा है कि एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति के उद्देश्य सरल एवं संयमित थे, किन्तु बड़ी दृढ़ता के साथ उसने उनका अनुसरण किया। एलिजाबेथ शान्ति चाहती थी। युद्ध करने के लिए साधनों का अवश्य ही अभाव था फिर भी इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाकर वह शान्ति कायम रखना नहीं चाहती थी। उसे कोई ऐसी बात मानने के लिए बाध्य नहीं कर सकता था जिससे देश की उज्ज्वल मान-मर्यादा में किसी तरह का काला दाग लग जाए।

मेरी की अलोकप्रियता : 1561 ई. मेरी के पति फ्रांसिस की मृत्यु हो गयी। अतः वह फ्रांस छोड़कर स्कॉटलैण्ड चली गई। वह एक कट्टर कैथोलिक थी। उसमें सदाचार की कमी थी। 1565 ई. में 19 वर्ष की आयु में उसने अपने चचेरे भाई डार्नले के साथ विवाह कर लिया। डार्नले एक कामचोर किस्म का व्यक्ति था और मेरी से दुर्व्यवहार करने लगा। इस कारण मेरी का लगाव डार्नले के प्रति कम होने लगा और उसका झुकाव अपने इटालियन मंत्री रीजियो की तरफ होने लगा। इस कारण डार्नले ने क्रुद्ध होकर रीजियो का कत्ल करवा दिया। इसके बाद मेरी बॉथवेल के अर्ल से प्रेम करने लगी। अब बॉथवेल ने डार्नले का वध करा दिया और इसके बाद मेरी से विवाह भी कर लिया।

उपर्युक्त घटनाओं से मेरी, जो स्कॉटों की रानी कहलाती थी, लोग उसे नापसंद करने लगे। स्कॉट सरदार इस हद तक उससे रुष्ट हो गए कि उन्होंने मेरी के खिलाफ विद्रोह कर दिया। बॉथवेल भी स्कॉटलैण्ड छोड़कर भाग गया और इसी कारण उसकी अकस्मात मृत्यु हो गई। मेरी को कैद कर लिया गया। मेरी और डार्नले से एक पुत्र हुआ जिसका नाम जेम्स था और वह स्कॉटलैण्ड की गद्दी पर बैठा। मेरी का सौतेला भाई जो प्रोटेस्टेंट था राजकाज देखने लगा। उधर एक वर्ष के अंदर ही मेरी कैदखाने से भी निकल भागी और बागियों से युद्ध की तैयारी करने लगी किन्तु 1568 ई. में वह फिर हार गयी और अपनी जान बचाकर इंग्लैण्ड भाग गयी।

एलिजाबेथ के साथ मेरी का संबंध : इंग्लैण्ड के कैथोलिक यह चाहते थे कि मेरी को इंग्लैण्ड की राजगद्दी सौंपी जाए। इंग्लैण्ड के पोप एलिजाबेथ को राजगद्दी का उत्तराधिकारी नहीं मानते थे। इसलिए मेरी को इंग्लैण्ड में देख कैथोलिक बहुत प्रसन्न थे। वह मेरी को एलिजाबेथ की जगह गद्दी पर बैठाना चाहते थे, परन्तु एलिजाबेथ ने ऐसा नहीं होने दिया और मेरी के इंग्लैण्ड पहुँचते ही उसे कैद करवा दिया। इंग्लैण्ड में एलिजाबेथ के खिलाफ षड्यंत्र होने लगे। (पंचपियस) पोप ने बागी कैथोलिकों को समर्थन दिया। उन्होंने एलिजाबेथ को *धर्म-बहिष्कृत एवं उत्तराधिकार से वंचित घोषित किया, परन्तु एलिजाबेथ को अपनी प्रजा का समर्थन प्राप्त था।* अंग्रेजी पार्लियामेन्ट एलिजाबेथ के पक्ष में था अतः वह इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मेरी पर एलिजाबेथ के खिलाफ षड्यंत्र चलाने का अभियोग लगाया गया और उसका जुर्म साबित भी हो गया। इस कारण 1587 ई. में मेरी को राजद्रोही के रूप में फांसी के तख्ते से लटका दिया गया। अब एलिजाबेथ के मार्ग में कोई कांटा नहीं रह गया।

5.11 एलिजाबेथ की उपलब्धियाँ

एलिजाबेथ के जीवन में बहुत-सी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ मिलीं। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में 45 वर्षों में जितनी प्रगति हुई वह यूरोप के कई देशों में शताब्दियों में भी नहीं हो पायी। उन्हीं उपलब्धियों को ध्यान में रखकर उसके राज्यकाल को इंग्लैण्ड के इतिहास में स्वर्ण युग (Golden Age) कहा जाता है। उसे विस्तीर्ण काल (Spacious Days) भी कहा जाता है।

नोट

उपनिवेश स्थापना : एलिजाबेथ के ही समय में इंग्लैण्ड से बाहर विदेशों में उपनिवेश स्थापना के लिए प्रयास शुरू हुए। आबादी बढ़ रही थी और उस अनुपात में पैदावार नहीं होती थी। अत: उपनिवेशों को बसाना आवश्यक समझा गया। 1583 ई. न्यूफाउण्डलैण्ड के आसपास उपनिवेश बसाने की चाहत में गिलबर्ट ने समुद्री चक्कर लगाए परन्तु वापसी के समय उसकी मृत्यु हो गई। इसके दो वर्ष बाद सर वाल्टर रैले ने फिर उत्तरी अमेरिका में (अविवाहित) वर्जिन एलिजाबेथ के सम्मान में वर्जिनिया नामक उपनिवेश बसाया। इस उपनिवेश का उतना विकास नहीं हो पाया। उपनिवेश स्थापना के प्रारंभिक प्रयास असफल रहे, परन्तु रैले के प्रयास से आलू और तम्बाकू जैसी कुछ चीजों का अमेरिका से यूरोप में प्रचार हुआ। प्रयत्न जारी रहा और 17वीं सदी में अधिक सफलता मिली।

सफल वैदेशिक नीति : एजिलाबेथ ने इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को विदेशों में बहुत बढ़ाया। उसने अपने सभी दुश्मनों को एक-एक करके हरा दिया और स्कॉटलैण्ड, स्पेन तथा आयरलैण्ड में अपनी धाक जमा ली। एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति के कारण यूरोप में इंग्लैण्ड को एक शक्तिशाली देश के रूप में देखा जाने लगा।

स्पेन भी बहुत ही खतरनाक और शक्तिशाली दुश्मन था। उसकी सेना और उसके राज्य दोनों ही विशाल थे। उसके पास जलसेना भी थी। इस तरह वह यूरोप का एक बहुत ही शक्तिशाली राज्य था। इंग्लैण्ड ने उसे भी पराजित कर दिया। स्पेन की पराजय ने इंग्लैण्ड को यूरोप में एक शक्तिशाली राज्य बना दिया। अब समुद्र पर इंग्लैण्ड का आधिपत्य कायम हो गया। अब इसके बाद स्पेन फिर संभल नहीं सका।

फ्रांस, इंग्लैण्ड का पुराना दुश्मन था, किन्तु एलिजाबेथ के समय में ब्लुआ की सन्धि (1572 ई.) के द्वारा दोनों देशों में मैत्रीपूर्ण संबंध कायम हो गया। 1587 ई. में मेरी स्कॉट के मरने के बाद स्कॉटलैण्ड के साथ भी इंग्लैण्ड के संबंध में सुधार होने लगा। 1603 ई. में दोनों देशों का मुकुट एक हो गया। एलिजाबेथ के समय में आयरिशों ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध विद्रोह किया था। एलिजाबेथ ने विद्रोह को दबा दिया और आयरलैण्ड पर पूर्ण अधिकार कायम कर लिया। यह आयरिशों को पसंद नहीं था, किन्तु अन्त में ब्रिटिश आधिपत्य से उन्हें फायदा भी नहीं हुआ। एल्टन के मतानुसार, अंग्रेजी आधिपत्य के ही कारण आयरिश राष्ट्र का विकास हो सका।

खेती : 14वीं-15वीं सदी में भेड़ पालने के लिए जमीन की घेराबंदी होने लगी थी। ट्यूडर-काल में भी यह प्रथा कायम रही। इससे ऊन व्यवसाय की तो तरक्की होती थी, किन्तु पैदावार की क्षति होती थी। एलिजाबेथ ने इस पर कुछ प्रतिबंध लगाकर खेती को प्रोत्साहित किया था। खेतों में खाद दी जाने लगी और हर साल फसल बदलने की प्रथा चलायी गयी। जमीन जोतने के तरीकों में भी हेर-फेर होने लगा। नयी-नयी चीजों की भी खेती होने लगी। इस तरह पैदावार बढ़ाने की ओर भी ध्यान दिया गया।

कठिनाइयाँ : सब कुछ होते हुए ट्यूडरकालीन इंग्लैण्ड में कुछ ऐसी त्रुटियाँ भी थीं जिनके कारण कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। देहातों में सड़कों का खासकर, अच्छी सड़कों की कमी थी। चोर-डाकू से भी समाज मुक्त नहीं था, चोरी डकैती और दंगा-फसाद भी हुआ करते थे। यात्रा करना कठिन कार्य था। सुरक्षा का अभाव था। **एफ.आर. वेस्ट** के शब्दों में, "यात्रा का अर्थ एक दिन का कार्य था। वास्तव में यात्रा स्त्री की प्रसव-वेदना की याद दिलाती थी जो बहुत ही कष्टदायक कार्य है।" कपड़े और खाद्यान्न का उत्पादन सीमित था। फसल खराब हो जाने से खाद्यान्न का अभाव हो जाता था। अभी औषधियों का आविष्कार और प्रयोग भी सीमित ही था। मृतकों की संख्या अधिक थी। गरीब एवं धनी दोनों ही अधिक संख्या में मरते थे। अत: **ट्रैवेलियन** के मतानुसार; जीवन सुन्दरता से परिपूर्ण था, किन्तु यह आजकल की अपेक्षा निश्चिंतता एवं आराम से वंचित था।

एलिजाबेथ ने उपर्युक्त असुविधाओं को दूर करने का प्रयास किया। नगरों के अंदर कई असुविधाएँ दूर भी हुईं, अब सफाई पर ध्यान दिया जाने लगा, सुरक्षा की व्यवस्था हुई तथा सड़कों की स्थिति में सुधार हुआ।

समाज-सुधार : इंग्लैण्ड में सभी लोग अमीर नहीं थे। कंगालों और भिखमंगों की भी कमी नहीं थी। घेराबंदी आंदोलन और मठों की बर्बादी के कारण इनकी संख्या में वृद्धि हो गयी थी। ये लोग सड़कों पर मारे-मारे फिरते थे और दाने-दाने के लिए मोहताज बनकर भीख माँगते थे। अपराधों की संख्या भी बढ़ने लगी थी। अत: सरकार का ध्यान इनकी ओर भी आकृष्ट हुआ। हेनरी अष्टम के ही समय में 1531 और 1536 ई. में इनके संबंध में दो नियम बने। इन्हें दरिद्र नियम कहते हैं। इनके मुताबिक गरीबों की सहायता के लिए प्रत्येक पेरिश (ग्राम) में एक

कोष खोला गया था। इसमें वहाँ के निवासियों को कुछ रकम जमा करनी पड़ती थी और उसी रकम से उस इलाके के दीन-दु:खियों को मदद दी जाती थी। जो काम करने लायक थे, उन्हें काम भी दिया जाता था। इन नियमों को लागू करने का भार शान्ति-रक्षकों (जे.पी.) पर सौंपा गया।

नोट

हेनरी अष्टम के समय में जो दरिद्र नियम बने, वे ठीक से लागू नहीं हो सके और उनसे गरीबों की समस्या हल नहीं हो सकी। अत: 1572 ई. में एक नियम जारी किया गया तथा भीख मांगना अपराध घोषित किया गया। दरिद्रों की स्थिति में सुधार लाने के लिए जस्टिसेज आफ पीस को भार सौंपा गया। अत: 1601 ई. में एलिजाबेथ ने एक दरिद्र नियम पास किया जो पहले के दरिद्र नियमों से अधिक व्यापक व व्यावहारिक था। इसे लागू करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया और कर की वसूली के लिए प्रत्येक पेरिश में एक ओवरसियर बहाल किया गया। यह नियम 1834 ई. तक जारी रहा। इसके मुताबिक भिखमंगों को आम सड़कों पर घूमने-फिरने से रोक दिया गया और उन्हें अपने-अपने पेरिश में लौट जाने को कहा गया। पेरिश में काम करने वालों के लिए काम का प्रबंध किया गया और अयोग्य लोगों को खाने एवं पहनने के लिए पेरिश-कोष से सहायता दी जाने लगी। एलिजाबेथ के ही शासनकाल में सर्वप्रथम यह स्वीकार किया गया कि उम्र, रोग तथा परिस्थिति से लाचार लोगों की देखभाल करना धर्म-संस्थाओं का ही नहीं, बल्कि पूरे समाज का उत्तरदायित्व है।

अत: एलिजाबेथ यशस्वी महारानी थी और उसका शासनकाल अंग्रेजी इतिहास का स्वर्ण-काल था। एफ. आर. वेस्ट के मतानुसार, अभी भी कुछ त्रुटियाँ अवश्य ही थीं फिर भी एक उदार सभ्यता की सम्भावनाएँ निश्चित ही उज्ज्वल थीं। वास्तव में एलिजाबेथ-युग आशावादिता, प्रयोग एवं रचनात्मक उपलब्धि का युग था। **रेनर** ने कहा है कि एलिजाबेथ के दिन शानदार दिन थे जब देश ने अपने आपको पहले से अधिक स्वाभिमानी, सुरक्षित और आत्मविश्वासी अनुभव किया। वार्नर और मार्टिन के कथनानुसार, एलिजाबेथ के राज्य-काल के अंत में घर में शान्ति कायम हो गयी, बाहर से प्रतिष्ठा मिली, राष्ट्र को अपने पर गर्व और अपने भविष्य में विश्वास का अनुभव होने लगा। **ग्रीन** नामक इतिहासकार के मतानुसार, "एलिजाबेथ की विदेश नीति की सफलता, विस्तृत व्यावसायिक एवं आर्थिक समृद्धि और उसके राज्य की धार्मिक सहिष्णुता ने इंग्लैण्ड को समाज का एक नया ढांचा दिया और उसे राजनीतिक स्थिरता दी।"

सारांश

- इस अध्याय में हमने आधुनिक युग के आरंभ के बारे में पढ़ा। हमने इंग्लैण्ड के पुनर्जागरण काल का अध्ययन किया। जिससे यह पता चला कि पुनर्जागरण काल के कारण इंग्लैण्ड के लोगों की बुद्धि का विकास होने लगा था। फिर हमने इंग्लैण्ड के धार्मिकसुधार आंदोलन के बारे में पढ़ा कि किस तरह चर्च व पोप के द्वारा स्थापित अंधविश्वास की समाप्ति होकर लोगों के मन में वैज्ञानिक सोच विकसित हो सकी। फिर हमने इंग्लैण्ड में हुए भौगोलिक, आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक परिवर्तन के बारे में जाना जिसने इंग्लैण्ड के लोगों के जीवनयापन व व्यवहार का नजरिया बदलकर रखा दिया।
- इसके पश्चात् हमने ट्यूडर वंश के बारे में पढ़ा। हेनरी सप्तम ने चौथे एडवर्ड की पुत्री से विवाह कर इंग्लैण्ड की गद्दी पर कब्जा कर लिया और ट्यूडर वंश की स्थापना की। हेनरी सप्तम ने 24 वर्षों तक इंग्लैण्ड पर राज किया और उसके शासनकाल को इंग्लैण्ड के उपचार एवं बीजारोपण का काल भी कहते हैं। हेनरी सप्तम ने वैदेशिक नीति में शांति बनाकर व विदेशों से वैवाहिक रिश्ते कायम कर इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा में बढ़ावा किया। इंग्लैण्ड के इतिहास में हेनरी सप्तम का काल बहुत महत्त्व रखता है।
- हेनरी सप्तम की मृत्यु के पश्चात् 1506 ई. में हेनरी अष्टम ने गद्दी को संभाला। हेनरी अष्टम में नैतिकता की कमी थी और वह कामुकता से भरा हुआ था। उसने 6 शादियाँ की जिससे उसके तीन बच्चे थे-- एडवर्ड (पुत्र), मेरी व एलिजाबेथ (पुत्री) थी। जिन्होंने बाद में इंग्लैण्ड की गद्दी को संभाला। हेनरी अष्टम के शासनकाल में उनके सलाहकार रहे ठोमस बुल्जे का बहुत महत्त्व था जिसके बारे में हमने अध्याय में पढ़ा।

नोट

- हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् एडवर्ड छठे को राजा घोषित किया गया लेकिन तब वह केवल 9 वर्ष का था अतः एक परिषद् का निर्माण किया गया जिसका प्रधान एडवर्ड का मामा हर्टफोर्ड था, परन्तु 1553 ई. में एडवर्ड की मृत्यु के वक्त उससे जबरन एक वसीयत लिखवाई गई जिसके तहत जेन ग्रे को जो हेनरी सप्तम की पुत्री और मेरी की नतनी थी, को रानी घोषित कर दिया।
- मेरी ट्यूडर, जो हेनरी अष्टम की पुत्री थी ने जेन ग्रे को हराकर इंग्लैण्ड पर अपना अधिकार कर लिया, परन्तु वह केवल 9 दिनों तक गद्दी पर रह सकी इसलिए उसे 9 दिन की रानी भी कहते हैं। मेरी ने अपने जीवन में बहुत दुख व असफलता का सामना किया जिस कारण वह गहरे सदमे के कारण 1558 ई. में मर गई। इसके बाद एलिजाबेथ ने गद्दी सम्भाली।
- एलिजाबेथ के शासनकाल को इंग्लैण्ड का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। इसके शासनकाल में इंग्लैण्ड की बहुत प्रतिष्ठा बढ़ी। एलिजाबेथ ने आजीवन विवाह नहीं किया और वह एक कुशल शासक थी। अन्त में हमने एलिजाबेथ की उपलब्धियों के बारे में पढ़ा।

अभ्यास-प्रश्न

1. इंग्लैण्ड में हुए पुनर्जागरण काल के बारे में टिप्पणी लिखिए।
2. हेनरी सप्तम ने अपनी राजसत्ता को मजबूत बनाने के लिए कौन-कौन से कार्य किए?
3. हेनरी सप्तम की वैदेशिक नीति पर प्रकाश डालिए।
4. प्रमाणित कीजिए कि "सातवें हेनरी का प्रशासन काल उपचार और बीजारोपण का काल था।"
5. हेनरी अष्टम के काल का वर्णन करते हुए यह बताइए कि बुल्जे का इसमें कितना महत्त्व था?
6. छठा एडवर्ड और मेरी ट्यूडर पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति व उसके शासनकाल के बारे में बताइए।
8. एलिजाबेथ के शासनकाल को स्वर्णयुग क्यों कहा जाता है?

अथवा

एलिजाबेथ के शासनकाल की उपलब्धियों के बारे में बताइए।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
2. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*
3. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
4. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
5. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
6. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
7. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*

नोट

इकाई–6

धार्मिक आंदोलन
(Religious Movement)

संरचना (Structure)

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रारम्भिक काल

6.4 धर्म-सुधार पार्लियामेन्ट

6.5 मठों की बरबादी

6.6 धर्म-सुधार में एडवर्ड षष्ठ की भूमिका

6.7 धर्म-सुधार विरोधी आंदोलन

6.8 स्कॉटलैण्ड और रानी मेरी के बीच संघर्ष

- सारांश
- अभ्यास प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

6.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे :

- राज्य और चर्च के सम्बन्ध को समझने में।
- धार्मिक सुधार आन्दोलन को समझने में।
- धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन को समझने में।

6.2 प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही लगभग हर राजा के काल में धर्म से जुड़ी कुछ न कुछ घटनाएँ होती ही रही हैं। परन्तु ट्यूडर वंश के बाद व उसके राजाओं के समय में कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हुई जिन्हें धार्मिक आंदोलन का नाम देना उचित होगा। हेनरी अष्टम ने अपने ही भाई की विधवा से विवाह कर लिया फिर कई कारणों से वह उसे तलाक देना चाहने लगा। इस बात का विवाद बहुत बढ़ गया और यह चर्च के वर्चस्व की समाप्ति का एक मुख्य कारण बना। कुछ पोप ने इस विवाह को स्वीकृति दे दी थी तथा कुछ ने इस विवाह को अमान्य घोषित कर दिया। इस

कारण चर्च का पोप दुविधा में पड़ गया था। हेनरी इस विवाह को अवैध ही घोषित कराना चाहता था इसलिए वह बेसब्री से इस विवाद के फैसले का इन्तजार कर रहा था। इस फैसले में हुई देरी का कसूरवार उसने बुल्जे को माना और उसे पदच्युत कर दिया। इस अपमान के कारण बुल्जे चल बसा।

नोट

धर्म में सुधार करने के लिए पार्लियामेन्ट ने जिन नियमों को पास किया, उसमें मुख्य था मठों को नष्ट करना, पोप व पादरियों के प्रभाव को कम करना। धर्म सुधार के लिए वैधानिक दृष्टि से भी कई महत्त्वपूर्ण सुधार किए गए। कुछ लोगों ने धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन भी किए, इनका मुख्य उद्देश्य कैथोलिक धर्म का विस्तार करना था। मेरी एक कैथोलिक और एलिजाबेथ एक प्रोटेस्टेंट थी अत: दोनों के बीच षड्यन्त्रों का काल चला जिसमें दोनों ने गद्दी को पाने के लिए चालें चलीं जिसमें एलिजाबेथ की विजय हुई।

6.3 धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रारम्भिक काल

मध्य युग में ईसाई जगत् में रोमन चर्च एवं रोम के पोप का बोलबाला था, किन्तु कालान्तर में इनमें अनेक बुराइयाँ आ गईं। जिन कारणों से इनका विरोध किया जाने लगा। मार्टिन लूथर जो कि जर्मनी का था वह भी विरोधियों में शामिल था और वह बहुत प्रसिद्ध भी हो गया था। धर्म-सुधार आन्दोलन की सफलता का श्रेय भी इन्हें ही जाता है। अब ईसाई जगत में दो दल हो गए थे – कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट। कैथोलिक दल वाले पोप के पक्षपाती थे और प्रोटेस्टेंट दल वाले पोप के विरोधी थे। इंग्लैण्ड में भी धर्म-सुधार आन्दोलन की लहर फैली जिसका विवरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है। हेनरी अष्टम और उसके बाद के शासकों का राज्यकाल बहुत ही प्रसिद्ध है। ट्यूडर वंश के पहले के भी कुछ राजाओं ने इंग्लैण्ड में पोप की शक्ति को कम करने की कोशिश की थी, परन्तु किसी को भी सफलता नहीं मिली।

धार्मिक क्षेत्र में 14वीं सदी के उत्तरार्द्ध में विक्लिफ के नेतृत्व में चर्च की बुराइयों पर आक्रमण शुरू हो गया था। इनके अनुयायियों को **लोलार्ड** कहा जाता था और लोलार्ड इस कार्य में बहुत ही सक्रिय थे। चर्च की बुराइयों को समाप्त करने के उद्देश्य से हेनरी सप्तम के समय में भी चर्च पर चोट की जाती रही। पोप को इंग्लैण्ड के पवित्र स्थानों के अभियोगों में हस्तक्षेप से रोका गया था।

हेनरी अष्टम (1509-47)

1. **हेनरी का कैथेरिन से विवाह करना :** कैथेरिन हेनरी के बड़े भाई की विधवा थी जिससे हेनरी ने अपने भाई की मृत्यु के बाद विवाह कर लिया, अब हेनरी कैथेरिन से तलाक लेना चाहता था। वैसे भी यह विवाह ईसाई धर्म के विरुद्ध था, परन्तु इसके लिए पोप से स्वीकृति ले ली गयी थी, किन्तु हेनरी को इस विवाह से सन्तोष नहीं हुआ। इस विवाह से हेनरी को कई बच्चे भी हुए, किन्तु वे सभी बच्चे मृत्यु के शिकार हो गए और उनमें से केवल मेरी नाम की एक लड़की ही बच सकी। हेनरी को ऐसा लगने लगा कि धर्मशास्त्र के विरुद्ध विधवा-विवाह करने का यह कुपरिणाम है जो उसे मिल रहा है।

एक बिशप ने यह घोषणा भी कर दी (1527 ई.) कि पोप ने कैथेरिन से विवाह के लिए हेनरी अष्टम को जो विशेष आज्ञा प्रदान की थी वह शास्त्रों के अनुकूल नहीं थी।

कैथेरिन की आयु हेनरी की आयु से 5 वर्ष ज्यादा थी। वह ज्यादातर बीमार ही रहा करती थी। अत: वह अपनी उम्र की अपेक्षा बहुत ज्यादे की लगती थी और हेनरी उससे छोटा दिखाई देता था। उन दोनों की जोड़ी भी एक साथ बहुत अच्छी दिखाई नहीं पड़ती थी इसलिए हेनरी ने कैथेरिन को तलाक दे दिया था।

2. उत्तराधिकारी की समस्या : हेनरी को कोई पुत्र नहीं था। अत: उसके बाद उत्तराधिकारी की कठिन समस्या थी। उसका उत्तराधिकारी 'मेरी' हो सकती थी, किन्तु लोगों को भय था कि वह राज्य के भार को कुशलतापूर्वक नहीं सम्भाल सकेगी। उसके पहले मेटिल्डा गद्दी पर बैठ चुकी थी, किन्तु वह राज्य का संचालन ठीक से नहीं कर सकी और अराजकता फैलने लगी थी। यदि वैसे ही हेनरी अष्टम के बाद स्थिति उत्पन्न हुई तो ट्यूडर वंश की गद्दी संकट में पड़ सकती थी। अत: किसी पुरुष उत्तराधिकारी का होना आवश्यक था।

हेनरी के हितैषी एवं खुशामदी भी बराबर उसके कान भरते रहते थे कि उसे एक पुत्र का होना अत्यावश्यक है। उसी समय हेनरी को दरबार की एक सुन्दर युवती एनबोलीन से प्रेम हो गया था। वह उससे विवाह कर लेने के लिए लालायित हो उठा, ताकि उससे जो पुत्र उत्पन्न हो, वह गद्दी पर बैठने का अधिकारी बन सके।

नोट

उपर्युक्त कारणों से हेनरी कैथेरिन को तलाक देकर एनबोलीन से शादी कर लेना आवश्यक समझता था, किन्तु इसके लिए पोप की स्वीकृति आवश्यक थी। पोप से स्वीकृति माँगी गई, किन्तु वह इसे देने में लाचार था। लेकिन यह स्मरणीय है कि कैथेरिन के तलाक के प्रश्न ने इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार के लिए अवसर प्रदान किया। वह अंग्रेजी धर्म-सुधार का कारण नहीं हुआ था।

3. पोप की समस्या : पोप के सामने एक बहुत बड़ी समस्या आ गई थी। उसे दोनों तरफ से परेशानियों ने घेर लिया था। एक पोप (दूसरा जूलियस) ने विधवा-विवाह करने के लिए स्वीकृति दी थी। दूसरे पोप (सातवाँ क्लीमेंट) के लिए उस विवाह को अनुचित घोषित कर तलाक के लिए इजाजत देना साधारण बात नहीं थी। इससे पोप की मान-मर्यादा एवं शक्ति दोनों को ही बहुत नुकसान पहुँचता। इसके अलावा कैथेरिन स्पेन के राज-परिवार की एक सदस्य थी। वह स्पेन के सम्राट की नातेदार थी। वह भी पोप चार्ल्स के हाथ में कैद था। चार्ल्स पंचम रोमन सम्राट भी था। इस तरह वह उस समय यूरोप में सबसे अधिक शक्तिशाली राजा था। अत: पोप चार्ल्स पंचम को क्रुद्ध नहीं कर सकता था। पोप हेनरी अष्टम को भी क्रोधित नहीं करना चाहता था। पोप के हेनरी से सम्बन्ध बहुत अच्छे थे और हेनरी पोप का भक्त था। इस तरह पोप इंग्लैण्ड तथा स्पेन किसी को भी रुष्ट नहीं करना चाहता था। अत: पोप ने टालमटोल की नीति को अपनाया।

4. आयोग की नियुक्ति : पोप के द्वारा एक आयोग (कमीशन) की स्थापना की गई जिसे तलाक के प्रश्न पर विचार करने का कार्य सौंपा गया। इसे डेक्रेटल कमीशन का नाम दिया गया। इसके दो सदस्य थे–

(क) इंग्लैण्ड का बुल्जे।

(ख) इटली का कैम्पेजियो।

बुल्जे हेनरी का चांसलर था। कैम्पेजियो कार्डिनल था। यह आयोग एक विशेष न्यायालय के रूप में था। इसका काम था हेनरी एवं कैथेरिन के विवाह की वैधता की जाँच करना। वास्तव में हेनरी कैथेरिन के साथ विवाह को अवैध ही घोषित कराने के लिए विशेष रूप से उत्सुक था।

1529 ई. में आयोग ने कार्य शुरू किया। लोगों का मानना यह था कि इस आयोग का निर्णय हेनरी के पक्ष में ही होगा क्योंकि दोनों सदस्यों पर हेनरी का प्रभाव था किन्तु वे लोग कैथेरिन के पक्ष में भी थे। आयोग का कार्य चल ही रहा था कि पोप ने हस्तक्षेप कर दिया। उसने तलाक-सम्बन्धी मामले को फिर अपने हाथ में ले लिया।

5. बुल्जे का पतन : हेनरी को आयोग के निर्णय की प्रतीक्षा थी, परन्तु अचानक पोप के हस्तक्षेप करने से उसका धैर्य टूट गया। जल्दी निर्णय न लेने के लिए हेनरी ने बुल्जे को उत्तरदायी समझा। वह बुल्जे पर बहुत क्रोधित हुआ। वह उससे इतना क्रोधित हुआ कि उसे मंत्रिपद से हटा दिया। बुल्जे के धन को भी जब्त कर लिया। बुल्जे को गिरफ्तार भी कर लिया गया। उस पर कई आरोप भी लगाये गये। इस तरह अपमान एवं विषाद की चोट से बुल्जे की मृत्यु हो गई।

6. राष्ट्रीयता का विकास : इंग्लैण्ड में राष्ट्रीय भावना का विकास हो रहा था। पोप का इंग्लैण्ड के चर्च पर आधिपत्य था। पोप विदेशी था। अत: विदेशी पोप के आधिपत्य से अंग्रेजों की राष्ट्रीय-भावना को ठेस लग रही थी। विवाह जैसे व्यक्तिगत मामले में भी पोप की स्वीकृति लेना राजा हेनरी अपमानजनक समझता था। उसमें भी उस समय पोप स्वयं स्पेन के राजा चार्ल्स पंचम के अधीन था।

7. अपार सम्पत्ति : चर्च में अपार सम्पत्ति थी। उधर राष्ट्र के विकास के लिये सम्पत्ति की बहुत जरूरत थी।

8. कुरीतियाँ : चर्च में कुरीतियाँ बहुत ज्यादा बढ़ गई थीं और चर्च इन बुराइयों का केन्द्र हो गया था। *पादरियों को बहुत सुविधाएँ थीं। जिनका दुरुपयोग किया जाता था अत: चर्च में सुधार जरूरी था।*

नोट

9. पोप से संघर्ष : बुल्जे इंग्लैण्ड में पोप का प्रतिनिधि भी था। बुल्जे के पतन के बाद पोप से भी हेनरी का संघर्ष अनिवार्य था। पोप तलाक के सम्बन्ध में निर्णय देना नहीं चाहता था। उसे स्पेन से अधिक भय था। अब हेनरी के लिए पोप के आधिपत्य से मुक्त होना आवश्यक हो गया।

10. पार्लियामेन्ट और रोम से सम्बन्ध-विच्छेद : अब हेनरी अष्टम ने इंग्लैण्ड से रोम का सम्बन्ध-विच्छेद कर देने के लिए मन में ठान लिया। इसके लिए उसने पार्लियामेन्ट बुलाई जिसे धर्म-सुधार (रिफॉर्मेशन) पार्लियामेन्ट कहते हैं। वह पार्लियामेन्ट 7 वर्षों तक (1529-37 ई.) कायम रही और इसने कई नियमों को पास कर इंग्लैण्ड से पोप के आधिपत्य का अन्त कर दिया। इस पार्लियामेन्ट में पोप एवं चर्च के विरोधियों की ही प्रधानता थी। उसमें मध्यम वर्ग के ही लोग अधिक थे। अत: उनसे हेनरी को बहुत सहयोग मिला। उसे क्रैमनर तथा क्रौमवेल नामक दो सलाहकारों से भी बहुत सहायता मिली। 6 वर्षों तक (1534-40 ई.) क्रौमवेल हेनरी का मुख्य सलाहकार था।

6.4 धर्म-सुधार पार्लियामेन्ट

पार्लियामेन्ट ने जिन नियमों को पास किया, वे तीन प्रकार के थे–

(क) पोप के प्रभाव को समाप्त करने के लिए,

(ख) पादरियों के प्रभाव को कम करने के लिए,

(ग) मठों को नष्ट करने के लिए।

1. प्रेमुनायर अधिनियम : प्रेमुनायर अधिनियम सबसे पहले 1531 ई. में पास हुआ। इस अधिनियम के अनुसार राजा को यह अधिकार प्रदान किया गया कि वह पादरियों को दण्ड दे सकता था। 14वीं सदी के उत्तरार्द्ध (1353 ई.) में प्रेमुनायर नियम पास हुआ था। इसके अनुसार इंग्लैण्ड का कोई भी पादरी अपने किसी मामले को बाहरी अधिकारी के विचारार्थ पेश नहीं कर सकता था। 1531 ई. में प्रेमुनायर के कानून को भंग करने के लिए पादरियों पर दोषारोपण किया गया। उन्होंने बुल्जे को इंग्लैण्ड में पोप का प्रतिनिधि (लिगेट) माना था। इसी आधार पर बुल्जे को दण्ड दिया गया था। इसलिए बहुत से पादरी डरकर राजा को बहुत-सी वस्तुएँ भेंट के रूप में देकर माफी माँगने लगे। इस तरह राजा को करीब सवा लाख पौंड की रकम प्राप्त हो गई।

2. धर्मकर-सम्बन्धी नियम : नये पादरी पोप को अपने प्रथम वर्ष की आमदनी दिया करते थे। इसे अनेट्स या फ्रूट्स कहते थे। 1532 ई. में पार्लियामेन्ट ने निश्चय किया कि इंग्लैण्ड से पोप के पास किसी प्रकार का कोई धार्मिक या अन्य कर नहीं भेजा जायेगा। यह भी कहा गया है कि अब इस तरह की चुकती राजकोष में ही की जाएगी। इस तरह इंग्लैण्ड से पोप की आय के साधन खत्म हो गए।

3. पीटर्सपेंस अधिनियम : पहले पोप के पास जो आर्थिक उपहार भेजे जाते थे, वे बन्द कर दिये गये।

4. अधिकता नियम : इस नियम (Pluralities Act) के द्वारा किसी पादरी को एक से अधिक चर्च का प्रबन्ध करने से रोक दिया गया।

5. पुनर्विचार अधिनियम : 1533 ई. में पुनर्विचार अधिनियम (अपील ऐक्ट) पास हुआ। इसके मुताबिक इंग्लैण्ड से पोप के पास अपील करने की प्रथा बन्द हो गई।

अब हेनरी का तलाक-सम्बन्धी मामला कैंटरबरी के आर्कबिशप के न्यायालय में पेश हुआ। आर्कबिशप क्रैमनर ने हेनरी के साथ कैथेरिन के विवाह को शास्त्र के प्रतिकूल घोषित किया। उसी वर्ष हेनरी ने कैथेरिन को तलाक देकर एनबोलिन से विवाह कर लिया। उत्तराधिकार नियम के द्वारा हेनरी और एनबोलिन की सन्तान को उत्तराधिकार का भी अधिकार दिया गया।

6. सर्वोच्चता अधिनियम : 1534 ई. में सर्वोच्चता अधिनियम (ऐक्ट ऑफ सुप्रिमेसी) पास हुआ। इसके अनुसार इंग्लैण्ड का राजा चर्च का प्रधान घोषित किया गया। अब वह राज्य और चर्च दोनों का प्रधान बन बैठा। जो लोग राजा को चर्च का प्रधान मानने से इन्कार करते थे या इस सम्बन्ध में शपथ लेने से आनाकानी करते थे, उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था। इस तरह फिशर, सर टोमस मूर तथा कई अन्य लोगों को मौत की सजा दी गई थी। अब राजा की निन्दा या आलोचना करना भी कठिन हो गया।

बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद कराया गया और प्रत्येक चर्च में इसकी एक-एक प्रति रख दी गई। यह कार्य हेनरी ने करवाया था। उसने घोषणा की कि इस धर्म-ग्रन्थ में पोप को प्रधान मानने के लिए कहीं आदेश नहीं है।

7. पादरियों का समर्पण : 1532 ई. में राजा की अनुमति के बिना किसी तरह का कोई कानून नहीं बनाने का वादा पादरियों ने अपनी सभा (कनवोकेशन) में दिया। धार्मिक कानूनों की जाँच के लिए 32 व्यक्तियों की एक समिति कायम हुई।

नोट

पादरियों द्वारा नियुक्त विषयों के लिए राजा की स्वीकृति अनिवार्य कर दी गई। एक बिशप एक ही चर्च की व्यवस्था कर सकता था। विवाह एवं मृत्यु सम्बन्धी कार्यों के लिए पादरियों की फीस निर्धारित कर दी गई, ताकि वे मनमर्जी से फीस वसूल न कर सकें।

इस तरह पादरियों के अधिकार बहुत सीमित हो गये और वे राजा की अधीनता में आ गये। धर्म-सुधार पार्लियामेन्ट, इंग्लैण्ड का पोप से नाता तोड़कर 1536 ई. में भंग हो गई।

6.5 मठों की बरबादी

टॉमस क्रॉमवेल और हेनरी का ध्यान मठों की ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने मठों को बरबाद कर देने के लिए निश्चय कर लिया। इसके कई कारण थे जो इस प्रकार हैं–

1. मठों के पास असीमित सम्पत्ति थी और राजा को सम्पत्ति की बहुत जरूरत थी।
2. मठ भी कुरीतियों एवं दुराचार के केन्द्र बन गए थे।
3. मध्यम वर्ग के लोग मठों का विरोध करने लगे थे और राजा इस मध्यम वर्ग के साथ समर्थन बनाए रखना चाहता था।
4. मठ कैथोलिक चर्च का ही एक हिस्सा था। मठ के अधिकारी पोप के ही भक्त एवं आज्ञाकारी थे। हेनरी चाहता था कि इंग्लैण्ड में पोप की सत्ता समाप्त हो जाए। इस कारण मठों को नष्ट करना उसे आवश्यक प्रतीत हुआ।

सबसे मुख्य बात तो यह थी कि राजा का आधिपत्य चर्च पर भी हो गया। अत: राजा अब चर्च का भी स्वामी हो गया था। इसलिए चर्च से सम्बन्धित सम्पत्ति पर भी राजा का ही अधिकार होना स्वाभाविक था। यह भी स्मरणीय है कि मध्य युग में मठों की कुछ उपयोगिताएँ थीं, किन्तु 15वीं सदी के अन्त तक उनकी उपयोगिताएँ खत्म हो गईं।

प्रथमत: तो छोटे-छोटे मठों को लूटा गया। क्योंकि छोटे मठों की संख्या ज्यादा थी। इन मठों की मासिक आमदनी दो सौ पौंड से कम थी, उन्हें तोड़कर उसकी जमीन-जायदाद व कुल सम्पत्ति पर राजा ने अपना अधिकार जमा लिया।

1. विद्रोह : हेनरी के इस कार्य से बहुत-से लोगों की धार्मिक भावना को गहरा धक्का लगा। उत्तरी इंग्लैण्ड के लोग उत्तेजित हो गए। सर रोबर्ट आस्क के नेतृत्व में उन्होंने विद्रोह की शुरुआत की। इसे पिलग्रिमेज ऑफ ग्रेस कहते हैं। विद्रोह करने वालों की मांग यह थी कि क्रौमवेल को पद से बर्खास्त कर दिया जाए और मठों की जमीन-जायदाद उन्हें वापस कर दी जाए। किन्तु इस विद्रोह का प्रभाव हेनरी पर जरा भी नहीं पड़ा। उसने विद्रोह को कड़ाई से दबा दिया। इसके कुछ नेताओं को फाँसी भी दे दी गई।

इसके बाद हेनरी ने बड़े मठों को भी साफ किया। कई मठाधीशों ने विद्रोह को बढ़ावा दिया था। वे पोप के भक्त ही थे। अत: हेनरी ने मठों को समाप्त ही कर दिया। 4 वर्षों के भीतर (1536-39 ई.) छोटे-बड़े सभी मठों का अन्त कर दिया गया।

2. परिणाम : मठों की बरबादी के कई परिणाम हुए। मठ शिक्षा एवं सेवा-सुश्रूषा के केन्द्र थे। वे सामाजिक क्षेत्र में अनेक उपयोगी काम करते थे। उनसे सर्वसाधारण को बहुत सुविधाएँ प्राप्त होती थीं। अब ये सभी सुविधाएँ समाप्त हो गईं। दूसरे मठों के विनाश से प्रोटेस्टेन्ट धर्म के प्रचार को सहायता मिली। जिन लोगों को मठों की जमीन-जायदाद मिली वे प्रोटेस्टेन्ट धर्म के समर्थक बन गये। उन्हें डर था कि कैथोलिक धर्म की प्रधानता होने से

नोट

उनकी जमीन-जायदाद वापस ले ली जायेगी। आगे चलकर मेरी ट्यूडर ने कैथोलिक धर्म का समर्थन किया, किन्तु वह मठों की जमीन-जायदाद वापस नहीं ले सका। राजनैतिक दृष्टि से राजा की शक्ति में वृद्धि हुई। जिन लोगों को मठों की जमीन-जायदाद मिली, वे दिल से राजा के समर्थक बन गये।

राजा की अपनी आय में भी बहुत वृद्धि हुई। सालाना 66000 पौंड की आमदनी बढ़ गई। उस समय राजा की जो कुल आय थी, उसकी यह लगभग आधी रकम थी।

3. धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति : कहा जाता है कि आठवें हेनरी के समय में धर्म-सुधार आन्दोलन धार्मिक नहीं बल्कि राजनैतिक था। यह कथन सत्य ही है। धर्म-सुधार आन्दोलन के दो पक्ष हैं--राजनैतिक व धार्मिक।

राजनैतिक दृष्टि से उसका उद्देश्य था–विदेशी पोप की सत्ता का अन्त करना।

धार्मिक दृष्टि से उसका उद्देश्य था–कैथोलिक धर्म में विद्यमान बुराइयों को दूर करना या मार्टिन लूथर द्वारा चलाये गये प्रोटेस्टेंट धर्म का समर्थन करना।

हेनरी अष्टम के पहले भी इंग्लैण्ड पोप की राजनैतिक सत्ता का प्रबल विरोधी था। पोप की राजनैतिक सत्ता के कारण इंग्लैण्ड को आर्थिक हानि होती थी। अंग्रेजों की राष्ट्रीय एवं स्वतन्त्र भावनाओं को चोट पहुँचती थी। अत: 14वीं सदी के उत्तरार्द्ध में ही प्रोमाइजर एवं प्रेमुनायर कानूनों के द्वारा पोप को नियुक्त करने एवं अपील सुनने के अधिकारों को चुनौती दी गई थी। लेकिन पोप की प्रधानता कायम रही।

1529 ई. तक हेनरी अष्टम भी पोप का समर्थक था। 1513 ई. में वह फ्रांस के खिलाफ पोप द्वारा स्थापित पवित्र संघ में शामिल हुआ था। 1521 ई. में हेनरी ने धर्म-सुधार आन्दोलन के महान नेता मार्टिन लूथर के विरुद्ध एक किताब लिखी थी। इससे पोप ने खुश होकर हेनरी को धर्म-रक्षक की पदवी से विभूषित किया था। उसके बाद इंग्लैण्ड के सभी राजा इस पदवी को अपने नामों के साथ जोड़ते रहे हैं। इसके बाद भी 8 वर्षों तक हेनरी और पोप का परस्पर सम्बन्ध अच्छा ही रहा। 1526 ई. में कैथेरिन के तलाक के सवाल पर दोनों के सम्बन्ध बिगड़ गए। हेनरी को पोप की सत्ता बुरी तरह खलने लगी और इससे छुटकारा पाने के लिए उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके ही दम लिया। इंग्लैण्ड में पोप की शक्तियाँ समाप्त हो गईं।

याद रहे कि हेनरी की दुश्मनी पोप से थी, कैथोलिक चर्च या धर्म से नहीं। अत: वह पोप के आधिपत्य से मुक्ति चाहता था, कैथोलिक धर्म में सुधार करना नहीं चाहता था। वह दिल से कैथोलिक था और जीनवभर कैथोलिक ही रहा। वह पुराने धर्म में हेर-फेर नहीं करना चाहता था। उसने प्रोटेस्टेंट धर्म के प्रचार को रोकने का प्रयत्न किया। उसने पुराने कैथोलिक धर्म के 6 सिद्धान्तों को लेकर एक नया कानून बनाया और इसे मानने के लिए लोगों पर दबाव डाला। जो इसे नहीं मानते थे उन्हें कठोर दण्ड मिलता था। इस तरह उसने उन प्रोटेस्टेंटों को कठोर सजा दी जो उसे अंग्रेजी चर्च का सर्वोत्तम अधिकारी मानने से इंकार करते थे। अत: स्पष्ट है कि हेनरी का उद्देश्य राजनैतिक था, धार्मिक नहीं। उसका कार्य मुख्यत: लौकिक था।

इस प्रकार इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार राजा के ही प्रयासों के कारण हुआ, जनता के प्रयास से नहीं। धर्म-सुधार के फलस्वरूप चर्च पर राज्य की विजय हुई। अब राजा चर्च का भी प्रधान बन गया अत: चर्च का रूप राष्ट्रीय हो गया। पहले इसे इंग्लैण्ड का चर्च कहा जाता था किन्तु बाद में वह अंग्रेजी चर्च कहलाने लगा। इस तरह धर्म-सुधार से राजा को बहुत फायदा हुआ। उसकी शक्ति का विस्तार हुआ। ट्यूडर की निरंकुशता का विकास हुआ। अत: यह कहा जाता है कि अंग्रेजी धर्म-सुधार राजतन्त्रीय निरंकुशता (Kingly Tyranny) का परिणाम था।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि, इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार एक साथ ही राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक घटना थी।

4. धर्म-सुधार की प्रगति : हेनरी के कार्यों से धर्म-सुधार में प्रगति के लिए बहुत सहायता मिल रही थी। उसका राजनैतिक उद्देश्य अवश्य पूरा हो गया परन्तु वह प्रोटेस्टेंट धर्म की प्रगति को रोकने में असफल हो गया। उसकी नीति एवं कार्यों से धार्मिक क्षेत्र में भी काफी परिवर्तन हुए। इससे इंग्लैण्ड में प्रोटेस्टेंट धर्म के प्रचार में सुविधा हुई। हेनरी एवं लूथर दोनों ही पोप रोम के आधिपत्य के कट्टर विरोधी थे। पोप का प्रभाव लगभग 1000 वर्षों से इंग्लैण्ड पर था। पोप ने राजा जौन के समय अर्थात् 13वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड पर अपना पूरा आधिपत्य जमा लिया

था। हेनरी अष्टम ने इसे समाप्त कर दिया। यह अवश्य ही महान क्रान्ति थी। लूथर ने भी पोप की प्रधानता को सफलतापूर्वक चुनौती दी थी।

हेनरी ने अंग्रेजी भाषा में बाइबिल के प्रकाशन एवं प्रचार में अभिरुचि दिखलाई थी। उसके पक्ष में पार्लियामेन्ट ने भी दो नियम बनाये, जिनसे धर्म-सुधार को बहुत बल मिला। उत्तराधिकार नियम (Act of Succession) के द्वारा एनबोलीन की सन्तान को गद्दी के लिए वैध उत्तराधिकारी स्वीकार किया गया। राजद्रोह नियम के द्वारा राजा के विरोधियों को दण्ड देने की व्यवस्था की गई।

यूरोप के अन्य देशों में धर्म-सुधार की प्रगति के साथ-साथ गृहयुद्ध का भी सूत्रपात हुआ। कई देशों में खासकर जर्मनी में धर्म के नाम पर भीषण रक्तपात हुआ, परन्तु इंग्लैण्ड में आठवें हेनरी के समय में धर्म-सुधार हुआ फिर भी युद्ध एवं रक्तपात का अभाव ही रहा।

धर्म-सुधार का वैधानिक महत्त्व

धर्म-सुधार में वैधानिक दृष्टि का बहुत महत्त्व है। इसके कई परिणाम भी निकले। इससे राष्ट्रीय भावना भी बदलती हुई नजर आई। धर्म-सुधार के वैधानिक परिणाम को निम्नलिखित रूपों से देखा जा सकता है–

1. लार्ड सभा में परिवर्तन : लार्ड सभा में पहले धर्माधिकारियों की ही प्रधानता होती थी परन्तु अब उनकी संख्या घट रही थी। धर्म-सुधार के बाद केवल 26 पादरी एवं प्रधान पादरी सदस्य के रूप में तथा लार्ड सभा के रूप में कायम रह सके। अब उनके स्थान पर भी नवीन वर्ग के लोग सदस्य बनने लगे।

इसी तरह हेनरी अष्टम की नीति एवं कार्य के महत्त्वपूर्ण तत्कालीन एवं दूरगामी परिणाम हुए। हेनरी अष्टम ने धर्म-सुधार के लिए निश्चित योजना नहीं बनाई थी फिर भी परिणाम महत्त्वपूर्ण निकले। उसने इस कहावत को चरितार्थ किया कि वह दूर तक जाता है जो यह नहीं जानता है कि वह कहाँ जा रहा है।

2. पार्लियामेन्ट की शक्ति में वृद्धि : धर्म-सुधार से पार्लियामेन्ट की शक्ति में भी वृद्धि हुई। सभी परिवर्तन पार्लियामेन्ट के पक्ष में थे। पार्लियामेन्ट ने कानून बनाकर इंग्लैण्ड से पोप का आधिपत्य समाप्त कर दिया। धार्मिक क्षेत्र में सुधार पार्लियामेन्ट के द्वारा ही किए गये थे। इसी प्रकार पार्लियामेन्ट की शक्ति एवं महत्त्व में वृद्धि हुई थी।

3. राजा की शक्ति में वृद्धि : धर्म-सुधार के कारण राजा की शक्ति में बहुत वृद्धि हुई। ट्यूडर काल के पूर्व सामन्तवाद एवं चर्च राजतन्त्र के दो प्रबल विरोधी थे। सामन्त और धर्माधिकारी राजा का विरोध किया करते थे। हेनरी सप्तम ने सामन्तों को कुचला। उसका लड़का हेनरी अष्टम ने धर्माधिकारियों को दबाया। उसने इंग्लैण्ड से पोप को निकाल दिया और वह स्वयं चर्च का प्रधान बन गया। अब धर्माधिकारी भी राजा के अधीन हो गये। इस तरह धर्म-सुधार से ट्यूडर की निरंकुशता को बड़ा बल मिला।

धर्म-सुधार से राष्ट्रीय भावना बलवती हुई। इससे भी राजा की शक्ति बढ़ने में सहायता मिली। जिन लोगों ने गिरजों एवं मठों की जमीन-जायदाद पर अधिकार किया वे लोग भी राजा के प्रति कृतज्ञ थे और सदा उसका समर्थन करने के लिए तैयार रहते थे।

राजा की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। राजा ने चर्च एवं मठ की सम्पत्ति जब्त कर ली थी। इसके अतिरिक्त पहले जो रकम रोम में भेजी जाती थी वह अब राजा के कोष में जमा होने लगी। आर्थिक स्थिति सुधरने से भी राजा की शक्ति बढ़ी।

4. राजा एवं पादरी में समझौता : पार्लियामेन्ट की शक्ति बढ़ती ही जा रही थी जिसे देखकर राजा और पादरी दोनों में भय उत्पन्न हो रहा था। चर्च के अधिकारी अब राजा के अधीन हो गये थे। राजा ही उन्हें नियुक्त एवं पदच्युत कर सकता था। अतः अब पादरी लोग राजा के ही समर्थक बन गये थे। दोनों में निकट सम्पर्क कायम हो गया। ट्यूडर काल के अंत तक यह सम्पर्क बहुत ही घनिष्ठ हो गया। अतः जेम्स प्रथम ने एक बार यह तक कह दिया था कि यदि बिशप नहीं रहेंगे तो राजा भी नहीं रहेंगे।

6.6 धर्म-सुधार में एडवर्ड षष्ठ की भूमिका

नोट

हेनरी अष्टम ने धर्म-सुधार के लिए बहुत काम किए परन्तु उसके समय में जो कार्य अधूरे रह गये थे उन्हें उसके पुत्र एडवर्ड षष्ठ ने पूरा किया। एडवर्ड प्रोटेस्टेंट था। शुरू के तीन वर्षों मे 1547 से लेकर 1549 ई. तक उसका संरक्षक समरसेट का ड्यूक था और वह भी प्रोटेस्टेंट धर्म का ही समर्थक था। उसके पथ-प्रदर्शन में, धार्मिक क्षेत्र में बड़ी तेजी से अनेक परिवर्तन हुए। समरसेट के बाद नौर्दम्बरलैण्ड का ड्यूक संरक्षक बना। वह भी प्रोटेस्टेंट ही था। अत: समरसेट लूथर के विचारों से बहुत प्रभावित था। वह सोचता था कि जब तक कैथोलिक चर्च एवं धर्म पर चोट नहीं की जाएगी, तब तक पोप से केवल सम्बन्ध-विच्छेद करने से वास्तविक लाभ नहीं होगा। राजनैतिक क्षेत्र में समरसेट और नौर्दम्बरलैण्ड परस्पर दुश्मन थे, परन्तु धार्मिक क्षेत्र में दोनों के विचार एक समान थे।

कैंटरबरी के आर्कबिशप क्रैमनर ने भी धर्म-सुधार के कार्य में भरपूर सहायता दी थी। अत: एडवर्ड षष्ठ के राज्यकाल में धर्म-सुधार आंदोलन का धार्मिक पक्ष सबल हो गया और प्रोटेस्टेंट धर्म का प्रचार हुआ। एडवर्ड षष्ठ किसी भी तरह की सहायता करने से नहीं चूकता था।

समरसेट की देन : समरसेट ने सबसे पहले धार्मिक स्वतंत्रता का वातावरण पैदा किया। हेनरी अष्टम के समय में एक 6 धारा वाला कानून स्थापित किया गया था जिसे समरसेट ने समाप्त कर दिया। उसने राजद्रोह के नियम को भी स्थगित कर दिया था। इंग्लैण्ड में यूरोप से धर्म प्रचारक आ रहे थे जिसे धर्म प्रचार में सुविधा हो रही थी। लैठीसर, हूपर रिडले आदि जैसे विद्वानों का इसी प्रकार से इंग्लैण्ड में आगमन हुआ था। वे प्रचलित धर्म में संशोधन चाहते थे। इसी तरह सैद्धान्तिक परिवर्तन के लिए बहुत प्रोत्साहन मिला। अब पुराने धर्म में बहुत तेजी से परिवर्तन लाया जा रहा था।

पादरियों को भी विवाह करने की अनुमति मिल गई थी। चर्च से, चित्रों, मूर्तियों और स्मारकों को हटाया जाने लगा और उनमें से कितने नष्ट कर दिये गये।

कैथोलिकों के प्रार्थना भवन नष्ट कर दिए गए। उनकी सामूहिक प्रार्थना (माससर्विस) पर रोक लगायी गई। बहुतों को बर्खास्त कर दिया गया, कितनों को देश से निकाल दिया गया और कितनों को मौत के घाट उतार दिया गया। उनके एक बड़े नेता डॉ. कार्टराइट को प्राध्यापक के पद से हटाकर जेल में बंद कर दिया गया। इसी तरह प्यूरीटनों को भी कुछ समय के लिए दबा दिया गया, परन्तु बहुत से प्यूरिटन चर्च के अंदर भी रहे और उन्होंने पार्लियामेन्ट में जाकर एलिजाबेथ की नीति की कटु आलोचना भी की।

उपसंहार : उपरोक्त तथ्यों से यह पता चलता है कि धार्मिक मामलों में एलिजाबेथ बहुत उदार थी। वह कभी भी दमन नीति नहीं अपनाना चाहती थी, परन्तु लाचार होकर उसे यह नीति अपनानी ही पड़ी। उग्र कैथोलिकों और उग्र प्रोटेस्टेंटों को दबाना जरूरी हो गया था। विदेशी कैथोलिकों के द्वारा उग्र कैथोलिक एलिजाबेथ को गद्दी से उतार देना चाहते थे। इस बात के लिए रोम के पोप और स्पेन के दूसरे फिलिप उनको भड़का (उकसा) रहे थे। उग्र प्रोटेस्टेंट भी ऐलिजाबेथ की धार्मिक व्यवस्था को मानने के लिए कतई तैयार नहीं थे। उनकी माँग राजनैतिक तथा धार्मिक सुधार दोनों ही थी। अत: उन्हें दबाना अनिर्वाय था। फिर भी एलिजाबेथ अपनी सौतेली बहन का (क्रूरता एवं रक्तपात में) मुकाबला नहीं कर सकी। **ट्रेवेलियन** का कथन है कि "एलिजाबेथ का धार्मिक प्रबन्ध सहिष्णुतारूपी औषधि की क्रमिक मात्राओं से इतना मृदु बना दिया गया था कि उसने आधुनिक इंग्लैण्ड की संस्थाओं में और उससे भी अधिक उसकी भावना में स्थायी स्थान प्राप्त कर लिया।" **रैम्जेमूर** का कथन है कि "एलिजाबेथ का धार्मिक प्रबंध, धार्मिक जोश का उत्पादन नहीं था। वह तो राजनीतिक आवश्यकता से उत्पन्न एक समझौता मात्र था। अत: वह दोनों मतों के लिए सन्तोषजनक था। इसका महान गुण यह था कि यह विवेकी मनुष्यों की सलाह से एक महान उपद्रवकाल के बाद जिसने राष्ट्र की एकता को संकट में डाल दिया था, बनाया गया था।"

6.7 धर्म-सुधार विरोधी आंदोलन

नोट

जैसा कि बताया जा चुका है कि यूरोप तथा इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार बहुत तेजी से प्रगति कर रहा था, परन्तु 16वीं शताब्दी में यूरोप में धर्म-सुधार विरोधी (Counter Reformation) आंदोलन शुरू हुआ। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य धर्म-सुधार या प्रोटेस्टेंट धर्म को समाप्त कर कैथोलिक धर्म का विस्तार करना था। इस आंदोलन के चलते प्रोटेस्टेंट धर्म के समर्थकों को बहुत ही कष्ट एवं कठिनाइयों को सहना पड़ा। फ्रांस के प्रोटेस्टेंटों (ह्यू जीनोट्स) और नीदरलैंड के प्रोटेस्टेंटों को अपने धर्म की रक्षा के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा था। इंग्लैण्ड अपवाद नहीं था। वहाँ के प्रोटेस्टेंटों को भी संकटों का सामना करना पड़ा।

एलिजाबेथ के समय में इंग्लैण्ड में प्रोटेस्टेंट धर्म का बहुत प्रचार हो चुका था। एलिजाबेथ का झुकाव भी उसी धर्म की ओर था। कैथोलिकों की दृष्टि में उसकी माँ का विवाह वैध नहीं था। अत: गद्दी पर उसका अधिकार भी वैध नहीं था। कैथोलिक चाहते थे कि एलिजाबेथ किसी तरह कैथोलिक धर्म स्वीकार कर ले। ऐसा लोगों का ख्याल था कि शासक जिस धर्म को मानता है उसी धर्म को अधिकांश जनता भी मानती है। यदि एलिजाबेथ कैथोलिक धर्म नहीं मानती है तो उसे गद्दी से हटाकर किसी कैथोलिक को उस पर बैठा देना आवश्यक समझा गया।

अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कैथोलिक निम्नलिखित कार्य आवश्यक समझते थे–

(*i*) किसी कैथोलिक से एलिजाबेथ का विवाह,

(*ii*) कैथोलिक धर्म में सुधार,

(*iii*) इंग्लैण्ड में कैथोलिक धर्म के प्रचार के लिए शक्ति का भी प्रयोग,

(*iv*) स्कॉटों की रानी मेरी को भी अंग्रेजों की रानी बनाने के लिए प्रयत्न।

कैथोलिक धर्म में सुधार

प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय के तीन प्रकार विशेष रूप से प्रचलित थे–

(*i*) लूथर के अनुयायी,

(*ii*) कल्विन के अनुयायी,

(*iii*) ऐंग्लिकन चर्च के अनुयायी।

कैथोलिक सम्प्रदाय इनकी लोकप्रियता से बहुत डर रहा था। उसे लग रहा था कि यदि लोकप्रियता इसी तरह से बढ़ती रही तो उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इसलिए वे इन कुरीतियों एवं प्रचलित बुराइयों को समाप्त कर देना चाहते थे। पाल चतुर्थ नामक पोप ने इस सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया। उसने भोग-विलास का परित्याग कर सादगी का उदाहरण उपस्थित किया। इस तरह अनेक कुशल पोपों के पथ-प्रदर्शन में बहुत से महत्त्वपूर्ण सुधार के लिए प्रयत्न किए गये। इसके दो रूप थे–धार्मिक सिद्धान्त की व्याख्या तथा धर्म प्रचार। इनकी पूर्ति हेतु तीन साधन अपनाये गये–ट्रेंट का सम्मेलन, जैसस-संस्था, धार्मिक न्यायालय। ट्रेंट के सम्मेलन ने धर्म की व्याख्या की और जेसस-संस्था और धार्मिक न्यायालय ने धर्म का प्रचार किया। ट्रेंट नगर में एक विशाल धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया था। 1545-63 ई. तक 18 वर्षों के अंदर इसकी कई बैठकें हुईं। कैथोलिक चर्च की कुरीतियाँ समाप्त कर दी गईं। प्राय: छोटे-बड़े सभी पदों पर योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की जाने लगी। धर्माधिकारियों की सच्चाई, पवित्रता तथा सादगी पर विशेष जोर दिया गया। भ्रष्टाचारी और अनुशासनहीन पादरियों को कठोर दण्ड देने का नियम बनाया गया। गिरजों, मठों तथा अन्य शिक्षण-संस्थाओं में बाइबिल के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था की गई। प्रोटेस्टेंट धर्म सम्बन्धी पुस्तकों तथा लेखों के प्रकाशन और प्रचार के अन्य साधनों पर प्रतिबन्ध लगाया गया।

कैथोलिक सम्प्रदाय में एक नयी संस्था का उदय हुआ जो जेस्विट संस्था के नाम से प्रसिद्ध है। इसे जीसस की संस्था भी कहा जाता है। इसके सदस्य जेस्विट (जीससवादी) कहलाते हैं। इसका संस्थापक एक स्पेन निवासी

नोट

था, जिसका नाम इग्नेशियम लायोला (1491-1556 ई.) था। वह मुख्यत: एक सैनिक था। अत: वह अनुशासन तथा नियमों के पालन पर विशेष जोर देता था। इस संस्था का एक प्रधान होता था, जो आजीवन इस पद पर विराजमान रहता था। इसका प्रथम प्रधान इग्नेशियम स्वयं था। इसके सदस्यों के लिये कठोर नियमों की व्यवस्था की गई थी। ईश्वर-भक्ति, पोपभक्ति, आज्ञाकारिता, सादगी, ब्रह्मचर्य आदि बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता था। शिक्षा का प्रचार तथा हीनों, आहतों और पीड़ितों की सेवा इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था। अत: इसकी ओर से अनेक शिक्षालय और चिकित्सालय जहाँ-तहाँ खोले गये। शिक्षा-प्रणाली में बाइबिल की प्रधानता थी। इस संस्था ने विदेशों में भी अपने धर्म-प्रचारकों को भेजा जिनके प्रयत्न से एशिया तथा अमेरिका के विभिन्न देशों में कैथोलिक ईसाई मत का प्रचार हुआ।

धार्मिक न्यायालय कोई बिल्कुल नयी संस्था नहीं थी। मध्यकाल से ही इसका उपयोग किया जा रहा था। धर्म-विरोधियों को दण्ड देने के लिये भी इसकी स्थापना हुई थी। यह न्यायालय चर्च के विरोधियों को क्रूर से क्रूर दण्ड देता था। धर्म-सुधार-आन्दोलन के युग में इस न्यायालय का विशेष प्रयोग होने लगा था। यह आतंक के द्वारा प्रोटेस्टेंट विचारधारा की गति को रोकना चाहता था, परन्तु इसके सारे प्रयत्न विफल रहे।

एलिजाबेथ को कैथोलिक धर्म से कोई विशेष सहानुभूति नहीं थी। वह फ्रांस और स्पेन से शत्रुता नहीं करना चाहती थी। फिलिप उससे विवाह करने के लिए उत्सुक था। एलिजाबेथ इस सम्बन्ध में उसे प्रलोभन देती रही। फ्रांस के कई राजकुमार उससे विवाह करना चाहते थे। वह सभी राजकुमारों को विवाह के लिए लालच देती रहती थी। साथ ही वह स्पेन तथा फ्रांस के बीच शत्रुता का भी फायदा उठाती रही।

एलिजाबेथ को जीवनभर धर्म-सुधार विरोधी आंदोलन का सामना करना पड़ा। यह ठीक ही कहा गया है कि एलिजाबेथ का राज्यकाल धर्म-सुधार विरोधक शक्तियों के विरुद्ध दीर्घ संघर्ष का समय था।

एलिजाबेथ अपनी शक्ति एवं कूटनीति, अपने बल एवं विवेक के आधार पर विरोधी शक्तियों एवं उत्पन्न संकटों का धैर्यपूर्वक सामना करती रही। उसके संघर्ष की लम्बी अवधि को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है–

(*i*) स्कॉट रानी मेरी के साथ संघर्ष (1568-1568 ई. तक)

(*ii*) षड्यंत्रों का काल (1568 ई.–1587 ई.)

(*iii*) स्पेन के साथ मतभेद एवं युद्ध (1587 ई.–1588 ई.) तथा

(*iv*) अंतिम भाग (1589 ई.–1603 ई.)।

6.8 स्कॉटलैण्ड और रानी मेरी के बीच संघर्ष

मेरी, हेनरी सप्तम के पुत्र की पोती थी। वह स्कॉटलैण्ड के राजा चतुर्थ जेम्स की भी पोती थी। वह एलिजाबेथ की भतीजी थी। उसका जन्म 1542 ई. को हुआ था। उसके पिता जेम्स पंचम की मृत्यु तभी हो गई थी जब वह बहुत छोटी थी। अत: उसे स्कॉट की रानी बना दिया गया। उसकी माता (मेरी ऑफ गाइज बीजो) फ्रांस से सम्बन्धित थी। वह मेरी की ओर से राजकाज सँभालने लगी थी।

जब वह 5 वर्ष (1547 ई. में) की थी तो उसे फ्रांस भेज दिया गया था। उसका पालन-पोषण एक कैथोलिक के रूप में हुआ था। 11 वर्षों के बाद 1558 ई. में जब वह 17 वर्ष की थी तब उसका विवाह डौफिन के साथ हुआ था। यह घटना एलिजाबेथ के गद्दी पर बैठने से 6 महीने पहले घटी थी। डौफीन फ्रांस का राजकुमार तथा गद्दी का उत्तराधिकारी बना।

मेरी का जन्म इंग्लैण्ड में हुआ था इसलिए वह स्वयं को इंग्लैण्ड की गद्दी का भी हकदार समझती थी। इस उद्देश्य में यूरोप के सभी कैथोलिक उसकी मदद करना चाहते थे। विवाह के बाद डौफीन मेरी के हर पद एवं अधिकार का अधिकारी बन चुका था। अर्थात् यदि मेरी की मृत्यु हो जाती तो डौफीन स्कॉटलैण्ड तथा इंग्लैण्ड दोनों

का राजा होता। इसी तरह एलिजाबेथ के रास्ते में मेरी की ओर से बहुत-सी रुकावटें थीं। इंग्लैण्ड में मेरी के विवाह के लिए प्रयास सफल नहीं हो सका।

मेरी का पति 1559 ई. में फ्रांसिस द्वितीय के नाम से फ्रांस का राजा बना। इसी तरह मेरी फ्रांस तथा स्कॉटलैण्ड दोनों की ही रानी बन गई, परन्तु मेरी बहुत भाग्यशाली नहीं थी। उसके पास सुख-शान्ति की बहुत कमी थी। *1560 ई. में उसका पति मर गया। मेरी अब विधवा हो चुकी थी और उसके पास कोई संतान भी नहीं थी।*

नोट

मेरी स्कॉटलैण्ड में : 1561 ई. में मेरी एक विधवा के रूप में स्कॉटलैण्ड वापिस आयी। वहाँ वह 7 वर्षों (1561-68 ई.) तक रही। वहाँ उसका जीवन चैन से नहीं बीता। इसके पहले से ही स्कॉटलैण्ड में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के बीच संघर्ष चल रहा था। एलिजाबेथ ने प्रोटेस्टेंटों को आर्थिक सहायता दी थी। जॉन नौक्स के नेतृत्व में प्रोटेस्टेंट धर्म को सहायता मिली। 1561 ई. तक स्कॉटलैण्ड प्रोटेस्टेंट हो चुका था। अब प्रोटेस्टेंट स्कॉटलैण्ड में कैथोलिक मेरी चैन से कैसे रह सकती थी? इसके अतिरिक्त फ्रांस में उसका जीवन अधिक सुखमय तथा सरस रह चुका था। उसकी तुलना में स्कॉटलैण्ड में उसका जीवन नीरस जैसा लगता था। इसी से स्कॉटलैण्ड के कई सरदार उसके विरोधी हो गए थे और कुछ तो उसका वध ही कर देना चाहते थे।

ऐसी स्थिति में स्कॉटलैण्ड में उसका मन नहीं लगता था। अब वह इंग्लैण्ड की ओर अधिक देखने लगी और वहाँ की गद्दी किसी तरह हथिया लेना चाहती थी। मेरी बहुत सुन्दर थी। कोई भी राजकुमार उससे शादी कर सकता था और वह भी किसी राजकुमार से शादी कर सकती थी। अब अफवाह फैलने लगी कि मेरी अमुक व्यक्ति से शादी करने वाली है। आखिर उसने एक दिन (1565 ई.) अपने चचेरे भाई हेनरी, अर्ल ऑफ डार्नले से शादी कर ही ली। डार्नले भी मारग्रेट ट्यूडर का पोता था। इंग्लैण्ड की गद्दी पर वह भी दावा कर सकता था। अवसर पाकर मेरी और डार्नले इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठ सकते थे। इस तरह इंग्लैण्ड में कैथोलिक शासन शुरू हो जाता। मेरी ने दूसरे साल एक पुत्र को भी जन्म दिया।

मेरी ने पुनर्विवाह कर लिया। एलिजाबेथ ने मेरी और डार्नले के विवाह में किसी तरह का खेद उत्पन्न नहीं किया। मेरी को अपने एक सचिव से प्रेम हो गया। डार्नले ने उस सचिव को 1566 ई. में मरवा डाला। डार्नले उसे भी मरवाना चाहता था किन्तु वह ऐसा नहीं कर पाया। मेरी एक कपटी और बेईमान स्त्री थी। डार्नले एक षड्यंत्र का शिकार होकर मारा गया।

डार्नले की हत्या में बोरवेल (एक सरदार) का हाथ था। सबको मेरी पर संदेह था। इस संदेह की पुष्टि भी हो गई। इसका सबूत यह था कि बोरवेल ने अपनी पत्नी को तलाक देकर मेरी से विवाह कर लिया था। इस विवाह का घोर विरोध किया गया था। कारबरी हिल के पास विरोधियों से संघर्ष हुआ। बोरवेल भाग गया परन्तु मेरी भाग नहीं पाई और पकड़ी गई। उसे जेल में रखा गया क्योंकि हत्यारिन और दुराचारिणी के रूप में उसकी बड़ी बदनामी हो चुकी थी। लगभग एक वर्ष तक वह जेल में रही (1567-68 ई.)। एक दिन वह जेलर को अपने साथ मिलाकर जेल से भी निकल भागी।

इस बीच मेरी को स्कॉटलैण्ड की गद्दी से हटा दिया गया। डार्नले से उत्पन्न उसके नाबालिग छोटे बच्चे को गद्दी पर बैठा दिया गया। लार्ड मोरे की अध्यक्षता में 12 व्यक्तियों की एक कौंसिल का गठन किया गया। उसी कौंसिल को राजकाज का भार सौंपा गया। मेरी फिर से गद्दी पाने के लिए प्रयत्न करने लगी। कुछ सरदारों ने उसे सहायता भी दी लेकिन मेरी को सफलता नहीं मिली। अब वह भागकर इंग्लैण्ड चली गई (1568 ई.)। *मेरी फ्रांस* जाना चाहती थी, लेकिन एलिजाबेथ ने उसे नहीं जाने दिया। ऐसा संदेह था कि वह फ्रांस जाकर फिर किसी से विवाह कर लेगी और इंग्लैण्ड के लिए संकट पैदा करेगी। अत: मेरी को बोल्टन में बन्द रखा गया। 19 वर्षों तक (1568-87 ई.) वह इंग्लैण्ड में एक कैदी के रूप में जीवित रही। यह समय एलिजाबेथ के घोर संकट का समय था, जबकि उसके विरुद्ध कई षड्यन्त्रों की रचना की गई। इंग्लैण्ड में मेरी की उपस्थिति से कैथोलिकों को प्रोत्साहन मिला। स्पेन और फ्रांस के शासक तथा रोम के पोप भी मेरी के सहायक थे।

नोट

षड्यंत्रों का काल (1568-87 ई.)

उपरोक्त घटनाओं से पता चलता है कि मेरी ठीक महिला नहीं थी, इसका पूरा लाभ एलिजाबेथ को हुआ। इस अवधि में एलिजाबेथ-स्कॉटलैण्ड की ओर से निश्चिंत हो गई। अब यहाँ पर प्रोटेस्टेंटों की प्रधानता कायम हो गई तथा वहाँ पर प्रोटेस्टेंट धर्म प्रचलित हो गया और प्रोटेस्टेंट शासन की स्थापना हो गई। पहले भी बताया जा चुका है कि फ्रांस और स्पेन के बीच खटास थी। फ्रांस इंग्लैण्ड से दोस्ती करना चाहता था। वहाँ कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट भी आपस में लड़ रहे थे। प्रोटेस्टेंटों को एलिजाबेथ की ओर से आर्थिक सहायता दी जा रही थी। प्रोटेस्टेंट दावेदार (हेनरी ऑफ नवारे) को भी फ्रांस की गद्दी पर दावा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा था। नीदरलैण्ड के प्रोटेस्टेंटों ने भी स्पेन के विरुद्ध विद्रोह शुरू कर दिया था। एलिजाबेथ उन विद्रोही प्रोटेस्टेंटों को मदद दे रही थी। इस तरह फ्रांस तथा स्पेन दीर्घकाल तक अपनी भीतरी तथा गहरी उलझनों में व्यस्त रहा।

परन्तु 19 वर्ष की इस लम्बी अवधि में एलिजाबेथ के विरुद्ध कई षड्यंत्र रचे गये। कुछ असफल हुए तथा कुछ सफल हो गये। षड्यंत्र का मुख्य उद्देश्य एलिजाबेथ का वध करना था और यदि वध न हो सका तो उसको गद्दी से उतार दिया जाए ताकि कोई कैथोलिक उस गद्दी पर बैठे।

1. नौरफोक का विद्रोह : 1569 ई. में उत्तर में नौरफोक के नेतृत्व में एक विद्रोह हुआ। नौरफोक इंग्लैण्ड का एक प्रसिद्ध कैथोलिक था। वह मेरी से विवाह करना चाहता था, परन्तु उसका उद्देश्य सफल नहीं हो सका। उसने कुछ सरदारों को मिलाकर एलिजाबेथ के विरुद्ध विद्रोह का षड्यंत्र रचा परन्तु इसकी खबर एलिजाबेथ को हो गई। षड्यंत्र के मुख्य नेताओं को पकड़कर कड़ी सजा दी गई।

2. एलिजाबेथ को ईसाई बिरादरी से बाहर करना : पोप पायस पंचम ने 1570 ई. में एलिजाबेथ को नास्तिक कहकर ईसाई बिरादरी से निकाल दिया। अब प्रत्येक कैथोलिक धर्म बहिष्कृत एलिजाबेथ को गद्दी से हटाना अपना परम पवित्र कर्तव्य मानने लगे। कुछ कैथोलिकों ने एलिजाबेथ को कत्ल कर देने के लिए थोक मोर्टन नामक व्यक्ति को नियुक्त किया, परन्तु इस षड्यंत्र का भी भेद खुल गया। थोक मोर्टन पकड़ा गया और उसको फांसी दे दी गई।

3. रिडोल्फी का षड्यंत्र : रिफोल्डी बैंक का एक कर्मचारी था। उसने नौरफोक के साथ मिलकर 1571 ई. में एक षड्यंत्र रचा। उसने फिलिप और पोप का भी सहयोग प्राप्त किया। इस षड्यंत्र की भी जानकारी एलिजाबेथ को हो गई। रिडोल्फी और नौरफोक को पकड़कर मृत्युदण्ड दे दिया गया।

4. बेविंगटन का षड्यंत्र : 1584 ई. में नीदरलैण्ड के विद्रोह के नेता विलियम का वध कर दिया गया। फ्रांस में कैथोलिकों ने स्पेन की मदद से प्रोटेस्टेंट हेनरी ऑफ नवारे को पराजित कर दिया। इन दोनों घटनाओं से कैथोलिक प्रोत्साहित हो गये। बेविंगटन के नेतृत्व में एलिजाबेथ की हत्या करने के लिए 1586 ई. में एक षड्यंत्र रचा गया। इस षड्यंत्र में मेरी का भी हाथ था। षड्यंत्रकारियों को पकड़कर कठोर सजा दी गई। 1587 ई. में मेरी को फांसी दे दी गई।

5. मेरी का चरित्र : मेरी का प्रारम्भिक जीवन भोग-विलास में व्यतीत हुआ था। फ्रांस में वह 10 वर्षों से अधिक समय तक रही थी। फ्रांस में रहने से ऐश-आराम को और भी अधिक प्रोत्साहन मिला। मेरी बहुत सुन्दर औरत थी और उसे अपनी सुन्दरता पर गर्व था, लेकिन उसमें सदाचार का अभाव था। उसकी बुद्धि संकुचित थी। वह कोई विदुषी महिला नहीं थी। उसमें लोगों को परखने की शक्ति नहीं थी। उसमें अनुभव एवं व्यावहारिकता की कमी थी और भावुकता की प्रधानता थी। अत: उसने कई विवाह किये और समाज में उसकी निन्दा की गई।

धार्मिक दृष्टि से मेरी कट्टर कैथोलिक थी। वह अपने विचारों को दूसरों पर लादने की कोशिश करती थी। एलिजाबेथ के विरोधियों को अब यह स्पष्ट हो गया कि उसका सामना खुलकर करना पड़ेगा। उसे पराजित करने के लिये उससे संघर्ष या युद्ध करना पड़ेगा।

6. स्पेन के साथ मतभेद एवं युद्ध : अब तीसरे युद्ध का आरम्भ हुआ। इस अवधि में षड्यंत्र बन्द हो गए, लेकिन स्पेन से खुला संघर्ष हुआ। 1588 ई. में स्पेन के साथ आर्मडा का युद्ध हुआ। स्पेन परास्त हुआ और उसकी शक्ति जाती रही।

7. एलिजाबेथ के जीवन का अंतिम भाग : 1588 ई. के बाद एलिजाबेथ लगभग 15 वर्षों तक जीवित रही। इस बीच उसे बहुत सफलता एवं शान्ति की प्राप्ति हुई। एलिजाबेथ की सहायता से प्रोटेस्टेंट नीदरलैण्ड कैथोलिक स्पेन के आधिपत्य से मुक्त हो गया। फ्रांस में हेनरी ऑफ नवारे ने कैथोलिकों को परास्त कर दिया। वह एक उदार प्रोटेस्टेंट था। 1589 ई. में हेनरी चतुर्थ के नाम से फ्रांस की गद्दी पर बैठा। उसने हॉलैण्ड तथा इंग्लैण्ड से एक संधि की और स्पेन से युद्ध किया। उसे भी एलिजाबेथ का समर्थन प्राप्त था।

निष्कर्ष : अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि एलिजाबेथ के जीवन का अधिकांश भाग धर्म-सुधार में ही बीता। उसे धर्म विरोधी आंदोलनों का भी सामना करना पड़ा। उसके द्वारा सबसे बड़ा एवं शक्तिशाली नेता स्पेन बुरी तरह परास्त हुआ। नीदरलैण्ड उसके हाथों से निकल गया। नयी दुनिया में भी उसका आधिपत्य जाता रहा। फ्रांस में एक व्यापक विचार वाला व्यक्ति राजगद्दी पर बैठा। स्कॉटलैण्ड में भी प्रोटेस्टेंट धर्म स्थापित हो गया।

नोट

सारांश

- 16वीं सदी में धर्म-सुधार की लहर दौड़ रही थी। पोप को इंग्लैण्ड के पवित्र स्थानों के अभियोगों के हस्तक्षेप से रोका गया था।
- 1509-47 ई. के बीच इंग्लैण्ड पर हेनरी अष्टम का शासन रहा। हेनरी अष्टम धर्म के प्रति बहुत कठोर था। उसने धर्म के सुधार में कोई कार्य नहीं किए। उसके शासनकाल में उत्तराधिकारी की समस्या थी। उसके परिवार में मेरी के अलावा और कोई नहीं बचा था। उसके समय में चर्च की कुरीतियाँ बढ़ गईं। चर्च बुराइयों का केंद्र बन गया था।
- पार्लियामेन्ट ने धर्म-सुधार में अहम् भूमिका निभाई थी। उसने पोप का शासन खत्म कर दिया था, पादरियों की शिक्षा छीन ली थी तथा मठों को नष्ट कर दिया था। उसने प्रेमुनायर अधिनियम पास किया जिसमें राजा को अधिकार दिए गए थे। उसने धर्म कर अधिनियम पास किया एवं पीटर्सपेंस अधिनियम भी लागू किया।
- हेनरी ने मठों को बरबाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उसके कार्यों से धार्मिक लोगों को बहुत धक्का लगा। धर्म-सुधार की प्रगति बहुत तेजी से हो रही थी। मठों के विनाश से प्रोटेस्टेंट धर्म को बहुत प्रगति मिली। परन्तु उस समय रक्तपात का अभाव था।
- धर्म-सुधार का वैधानिक दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्व था। उसमें लार्ड सभा में परिवर्तन किया गया, पार्लियामेन्ट की शक्ति में वृद्धि हुई। राजा की शक्ति में भी वृद्धि हुई। राजा और पादरी के बीच समझौता किया गया।
- धर्म-सुधार में एडवर्ड ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह कभी भी किसी भी प्रकार की सहायता करने से नहीं चूकता था।
- जहाँ एक ओर 16 शताब्दी में यूरोप तथा इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार चल रहा था, वहीं दूसरी ओर धर्म-विरोधी आंदोलन भी शुरू हो चुका था।
- कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय के बीच संघर्ष चल रहा था। कैथोलिक डर रहे थे कि कहीं प्रोटेस्टेंट धर्म की लोकप्रियता के कारण उनका अस्तित्व समाप्त न हो जाए।
- इसी बीच मेरी और एलिजाबेथ में भी गद्दी के लिए संघर्ष चालू था। मेरी चालबाज औरत थी और एलिजाबेथ को षड्यंत्रों द्वारा या तो मरवाना चाहती थी या फिर गद्दी से उतारकर कैथोलिक को गद्दी पर बैठाना चाहती थी।

नोट

अभ्यास-प्रश्न

1. हेनरी अष्टम के समय में (शासनकाल) धर्म में क्या-क्या परिवर्तन हुए थे? विस्तार से बताइए।
2. धर्म में सुधार के लिए पार्लियामेन्ट ने कौन-कौन से एक्ट पास किए?
3. धर्म-सुधार में वैधानिक दृष्टि का क्या महत्त्व है?
4. धर्म-सुधार विरोधी आंदोलन के बारे में बताइए। इससे कैथोलिक धर्म में किस प्रकार सुधार हुआ?
5. स्कॉटलैण्ड और रानी मेरी के बीच चल रहे संघर्ष के बारे में बताइए तथा षड्यंत्रों के काल की चर्चा कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
2. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
3. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
4. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*
5. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
6. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*
7. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*

इकाई–7

जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम की नीतियाँ (Policies of James I and Charles I)

नोट

संरचना (Structure)

7.1 उद्देश्य
7.2 प्रस्तावना
7.3 जेम्स प्रथम (1603-25 ई.)
7.4 चार्ल्स प्रथम
7.5 जेम्स प्रथम एवं उस समय के धार्मिक दल
7.6 जेम्स प्रथम का धार्मिक दलों के साथ संबंध
7.7 जेम्स की वैदेशिक नीति एवं वैवाहिक संबंध (1603-1649 ई.)
7.8 यूरोप का 30 वर्षीय युद्ध
7.9 30 वर्षीय युद्ध : आक्रमण एवं परिणाम
7.10 इंग्लैण्ड की वैदेशिक नीति की समीक्षा
- सारांश
- अभ्यास-प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

7.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम के चरित्र को समझने में।
- कैथोलिक दल वालों के जेम्स के विरुद्ध किए गए षड्यंत्र को समझने में।
- 30 वर्षीय युद्ध को समझने में।

7.2 प्रस्तावना

जेम्स एक बहुत अच्छा राजा तो अवश्य था, परन्तु वह एक कुशल व्यक्ति नहीं था। उसके अंदर गुण तो थे, परन्तु उससे ज्यादा दोष थे। उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम भी उसी के समान था। उसका व्यक्तित्व अपने पिता से अच्छा तो था परन्तु उसमें भी दोषों की कमी न थी। यह सब होते हुए भी दोनों कुशल एवं प्रतिभा के धनी थे। जेम्स

नोट

के राज्यकाल में तीन बहुत महत्त्वपूर्ण बातें हुई– (1) तीनों द्वीपों के संयोग का बीजारोपण, (2) बादशाह और पार्लियामेन्ट के बीच झगड़ा, (3) साम्राज्य और व्यापार की उन्नति। जेम्स के समय में कई सारे धार्मिक दल थे जो अलग-अलग तरीके से धर्म को मानते थे। ये सभी दल वाले दूसरे दल वालों को कुचल देना चाहते थे। जेम्स के गद्दी पर आने के बाद कैथोलिकों को उससे बहुत-सी उम्मीदें जाग उठी पर उन उम्मीदों पर जेम्स के खरा न उतरने के बाद उन्होंने जेम्स के खिलाफ षड्यंत्र रचने शुरू कर दिए जिनमें उन्हें सफलता तो नहीं मिल सकी, परन्तु इसका प्रभाव जेम्स पर अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य पड़ा। जेम्स के समय में इंग्लैण्ड की वैदेशिक नीति के परिणाम कुल मिलाकर ज्यादा सफल हो सके। उसने दूसरे देशों से संबंध बनाने की कोशिश की जिससे उसके अन्य देशों के साथ अच्छे संबंध बन सकें। इसके बाद 1619–1648 तक मुख्य रूप से इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच तीस वर्षों तक का युद्ध हुआ। यह युद्ध मुख्यतः इंग्लैण्ड ने अपनी प्रतिष्ठा मान-मर्यादा को वापस पाने के लिए लड़ा था।

जेम्स प्रथम व चार्ल्स प्रथम वे दो राजा हैं जो सत्रहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठे। वैसे तो किसी भी देश का इतिहास उस समय के राजाओं और शासकों के चरित्र व व्यवहार से प्रभावित होता है, परन्तु सत्रहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में इन दो राजाओं का इंग्लैण्ड के इतिहास पर बहुत प्रभाव पड़ा।

7.3 जेम्स प्रथम (1603–25 ई.)

1. चरित्र : जेम्स प्रथम स्कॉटलैण्ड के स्टुअर्ट वंश का व्यक्ति था और वहाँ वह जेम्स छठा के नाम से प्रसिद्ध था। उसे ट्यूडर राजाओं के निरंकुश शासन से ईर्ष्या थी एवं वैसे ही शासन, शान-शौकत और अधिकार के लिए ललायित था। इसका कारण यह था कि उसे वहाँ के अमीर और प्रेस्वाइटर सरदार बहुत परेशान करते थे। सौभाग्य से उसे इंग्लैण्ड की गद्दी मिल भी गई। वह इसे ईश्वर का वरदान समझने लगा। राजगद्दी पर बैठते समय जेम्स 37 वर्ष का था। इसके पहले वह 36 वर्ष तक वह स्कॉटलैण्ड का राजा रह चुका था। वह इंग्लैण्ड के हेनरी सप्तम की पुत्री और स्कॉटलैण्ड के जेम्स-चतुर्थ की पत्नी मार्गरेट का वंशज था। उसकी माता का नाम मेरी और पिता का नाम डार्नले था। उसका जन्म 1566 में हुआ था।

2. गुण : जेम्स बहुत बड़ा विद्वान था। वह विद्याव्यसनी था। उसे ब्रह्मविद्या, धर्मशास्त्र, इतिहास आदि कई विषयों का बहुत ज्ञान था। उसके गद्यलेख और भाषण ओजपूर्ण और सारगर्भित होते थे और वह कविताएँ भी करता था। वैदेशिक नीति में भी वह पारंगत था। वह एक विस्तृत सोच वाला व्यक्ति था। जब कभी देश में कट्टरता या युद्ध की स्थिति बन जाती थी तब भी वह शान्ति और सहिष्णुता का दूत था। वह पोप के साथ सुलहकर धार्मिक झगड़ों को समाप्त करना चाहता था। वह यूरोप का शान्ति संस्थापक बनना चाहता था। वही एक व्यक्ति था जो उस समय इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड की राजनैतिक एकता के असली महत्त्व को समझता था और जिसने सर्वप्रथम अपने को 'ग्रेट ब्रिटेन' का राजा कहा।

वह कोरी विद्या और पुस्तक प्रेमी ही नहीं था, वह व्यायाम प्रेमी भी था उसे शिकार करने व घुड़सवारी करने का शौक था। उसे हँसी-मजाक करना भी बहुत पसंद था। वह एक गम्भीर, कर्तव्यशील एवं सज्जन स्वभाव का था। इन्हीं सब गुणों के कारण यह कहा जा सकता है कि वह एक सफल और सुयोग्य प्रोफेसर हो सकता था।

3. दोष : जेम्स में जितने गुण थे उसके अंदर दोष उससे कहीं ज्यादा थे। यह बहुत दुर्भाग्य की बात थी। जेम्स का शारीरिक ढाँचा बहुत आकर्षक व मन मोहने वाला नहीं था। उसका रंग-रूप भद्दा था इसके अतिरिक्त स्कॉट होने के कारण वह अंग्रेजों के विधि-विधानों और भाषाओं से पूर्ण परिचित नहीं था। वह न किसी परिस्थिति की सूक्ष्मता समझता था और न राजकीय मामलों के लिए किसी योग्य व्यक्ति की नियुक्ति करता था। इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण उसका अहंकारी स्वभाव था। वह अपनी विद्वता पर बहुत घमण्ड करता था। उसे अपनी योग्यता पर आवश्यकता तथा सीमा से अधिक विश्वास था। वह स्वयं को पार्लियामेन्ट के सदस्यों के सामने एक प्राध्यापक की तरह भाषण देता था। वह विद्यार्थियों की तरह व्यवहार करता था। वह बहुत सिद्धांतवादी था। उसे कभी किसी दूसरे के विचारों की परवाह नहीं होती थी। वह बड़ा वक्ता था और प्रत्येक चीज को परिभाषा का रूप देना चाहता था। उसका दिल तो एकदम साफ था, परन्तु उसके दिमाग में हमेशा कुछ न कुछ चलता रहता था। उसके विचार

तो अच्छे होते थे, किन्तु उसकी योजनाएँ नहीं। वह एक सुस्त मिजाज का व्यक्ति था, उसे आराम करना बहुत अच्छा लगता था। वह स्वभाव से हठी भी था। वह अपनी ही बातों को करना चाहता था, परन्तु उसके नतीजों पर विचार नहीं करता था। वह अदूरदर्शी और कल्पनाहीन था। उसने प्यूरिटनों की शक्ति एवं प्रभाव को नहीं समझा और उनसे झगड़ा मोल ले लिया। यह उसकी एक महान भूल साबित हुई। वह अपनी क्षुद्र सोच के कारण योग्य व अयोग्य व्यक्तियों की पहचान नहीं कर सका। उसमें निर्णयात्मक शक्ति और व्यावहारिक चातुर्य की कमी थी। वह स्वार्थी स्वभाव का भी था और उसे अपनी बड़ाई करने वाले लोग पसंद थे। उसे व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वार्थों के भेद की पूर्णतः समझ थी। जो मंत्री उसकी प्रशंसा करते थे उन पर उसकी विशेष कृपा बनी रहती थी। दरबारी उसे 'इंग्लैण्ड का सोलोमन' कहते थे और वह घमंड से फूल उठता था।

इस प्रकार जेम्स के व्यक्तित्व में गुण और दोष दोनों का ही विचित्र समन्वय था। इसी वजह से फ्रांस के राजा हेनरी ने ठीक ही उसे 'ईसाई दुनिया का सबसे अक्लमंद बेवकूफ' कहा था।

7.4 चार्ल्स प्रथम

1. **चरित्र एवं गुण :** जब जेम्स की मृत्यु हुई तब उसका पुत्र गद्दी पर बैठा जिसका नाम चार्ल्स प्रथम था। उसमें कई मानुषिक गुण थे। उसे अपनी संतानों और परिवार से बहुत लगाव था। वह उनके प्रति बहुत सौहार्दपूर्ण व्यवहार करता था। वह एक सज्जन पुरुष था। उसमें सज्जनता भरी हुई थी। उसे कला और साहित्य का शौक था। उसे खासतौर पर शेक्सपीयर का साहित्य बहुत पसंद था। पूरे यूरोप में उसकी चित्रशाला बहुत प्रसिद्ध थी। उसका चाल-चलन अच्छा था, वह अपने धर्म में दिल से विश्वास करता था और अपने मित्रों और प्रेमियों के ऊपर विशेष कृपा रखता था। वह परिश्रमी था और राजकीय मामलों में काफी दिलचस्पी लेता था। शारीरिक दृष्टि से उसका व्यक्तित्व जेम्स की अपेक्षा अधिक आकर्षक था।

2. **दोष :** चार्ल्स में इतने गुण होते हुए भी उसके अंदर दोषों की कमी नहीं थीं। अपने पिता जेम्स की तरह उसके अंदर भी कई त्रुटियाँ थीं जिस कारण वह एक सफल शासक नहीं बन पाया। वह अपने पिता से भी कहीं ज्यादा बढ़कर अहंकारी, कट्टर और जिद्दी था। वह एक कल्पनाहीन व्यक्ति था। उसका पिता आवश्यकता से अधिक बोलता था और चार्ल्स आवश्यकता से कम बोलता था। अतः कोई भी चार्ल्स के मन की बात को समझ नहीं पाता था। किसी से वादा करना उसके स्वभाव में था वह बहुत जल्दी किसी से वादा कर देता था, परन्तु उस वादे को वह निभाए भी यह वह जरूरी नहीं समझता था। इस कारण वह अपने मित्रों और समर्थकों का विश्वास खोता रहा। वह एक अव्यावहारिक आदमी था, उसके दिमाग में जानें कितनी ही योजनाएँ बनती थीं, परन्तु एक को भी कार्यरूप में वह नहीं ला सकता था। वह कमजोर व्यक्तित्व का आदमी था और अपने खुशामदियों के जाल में बहुत जल्द फंस जाता था। वह अपने मंत्रियों और सलाहकारों के प्रति भी सशंकित रहता था। उसकी फ्रांसीसी पत्नी का उस पर गहरा प्रभाव था, किन्तु वह अस्थिर और षड्यंत्रकारी स्वभाव की महिला थी। उसके प्रभाव से उपयोगी एवं अच्छे कार्य को प्रोत्साहन नहीं मिलता था।

जेम्स के राज्यकाल का महत्त्व

जेम्स प्रथम का राज्यकाल 'प्रारंभ का समय' कहा जा सकता है। इंग्लैण्ड के इतिहास में सत्रहवीं सदी का महत्त्व तीन बातों में है–

1. **तीनों द्वीपों के संयोग का बीजारोपण :** इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड और आयरलैण्ड के बीच संयोग शुरू हुआ। इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड का संयोग 1707 ई. में तथा इंग्लैण्ड और आयरलैण्ड का संयोग 1800 ई. में हुआ, लेकिन इन संयोगों का प्रारंभ जेम्स प्रथम के ही राज्यकाल में हो गया। आयरलैण्ड और स्कॉटलैण्ड, दोनों ही विशेष रूप से इंग्लैण्ड के निकट सम्पर्क में आ गये। जेम्स के राज्यारोहण के साथ इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड का मुकुट एक हो गया। जेम्स स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी का ज्येष्ठ पुत्र था, लेकिन मेरी ट्यूडर-वंश के सातवें हेनरी की बड़ी पुत्री मार्गरेट की पोती थी। इसलिए एलिजाबेथ के मरने पर पार्लियामेन्ट ने इंग्लैण्ड की गद्दी जेम्स को ही दे दी, क्योंकि

नोट

एलिजाबेथ के कोई सन्तान नहीं थी। इस प्रकार इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड जो पहले दुश्मन थे, अब मित्र बन गये। लेकिन अभी दोनों द्वीपों के नियम, कानून, पार्लियामेन्ट आदि पृथक् ही रखे गये।

2. बादशाह और पार्लियामेन्ट के बीच मनमुटाव : दूसरी विशेषता बादशाह और पार्लियामेन्ट के बीच का मनमुटाव है। सत्रहवीं सदी की इसे एक मशहूर चीज समझी जाती है। जेम्स का राज्यकाल एलिजाबेथ और प्रथम चार्ल्स के राज्यों के बीच संक्रान्ति काल (Transition) है। जेम्स के समय में ही बादशाह और पार्लियामेन्ट के बीच झगड़े के लक्षण दिखाई देने लगे थे। जो चिंगारी जेम्स के समय में सुलगी थी उसने चार्ल्स के समय में दहकती ज्वाला का रूप ले लिया। यह भी कहा जा सकता है कि जेम्स ने बीज बोया और चार्ल्स ने फसल काटी। इसलिए ठीक ही कहा गया है–"यद्यपि जेम्स के राज्य में क्रान्ति नहीं हुई, तथापि राजा और प्रजा के बीच सहानुभूति का बंधन ढीला हो गया जो प्रायः क्रान्ति का ही सूचक है।"

3. साम्राज्य और व्यापार में प्रगति : सत्रहवीं सदी की तीसरी विशेषता साम्राज्य और व्यापार में प्रगति से है। यूं तो उपनिवेश कायम करने का कार्य एलिजाबेथ के ही समय में शुरू हो गया था, परन्तु उस समय में इसमें सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। जेम्स के समय में ही साम्राज्य और व्यापार की दृढ़ नींव पड़ी। उसी के समय में उत्तरी अमेरिका में प्रसिद्ध 'न्यू इंग्लैण्ड' नामक उपनिवेशों का बसना शुरू हुआ। उसी के समय में 1612 ई. में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने हिंदुस्तान में सूरत में पहले-पहल अपनी तिजारती कोठी कायम की।

7.5 जेम्स प्रथम एवं उस समय के धार्मिक दल

व्यक्ति के जीवन धर्म का बहुत प्रभाव पड़ता है। यह धर्म ही उनके जीवन के आदर्शों के निर्धारण में सहयोग भी देता है। यह बात प्रत्येक युग के मनुष्यों के लिए लागू होता है, परन्तु इंग्लैण्ड में 17वीं शताब्दी में धर्म का खास महत्त्व था। धर्म का प्रभाव लोगों के जीवन तक ही सीमित नहीं था, बल्कि राजनीति भी पूरे तौर से प्रभावित हो रही थी। उस समय इंग्लैण्ड में कई धार्मिक दल थे, लेकिन निम्नलिखित मशहूर हैं–

1. कैथोलिक दल : कैथोलिक दल बहुत पुराना दल था। कैथोलिक धर्म का सबसे बड़ा नेता रोम का पोप था। कैथोलिक लोग उसी पोप की प्रधानता में विश्वास रखते थे और वे रोम के चर्च के सिद्धांतों के समर्थक थे, परन्तु जेम्स के राज्यकाल के बहुत पहले ही से इस धर्म की श्रेष्ठता समाप्त हो गयी थी। इसमें बहुत बुराइयाँ व्याप्त हो गई थीं। यथार्थ से ज्यादा काल्पनिकता बढ़ने लगने लगी थी। इसमें कृत्रिमता बढ़ गई थी। इस वजह से इसका विरोध होने लगा था सर्वप्रथम विरोध की लहर जर्मनी में उठी और धीरे-धीरे इंग्लैण्ड आदि में भी फैल गई।

2. प्रोटेस्टेंट : दूसरा प्रधान दल प्रोटेस्टेंट दल था। इस दल के लोगों को प्रोटेस्टेंट कहा जाता था। उन लोगों ने रोमन चर्च के सिद्धांतों और पोप की प्रधानता का विरोध (Protest) किया था। यह दल मुख्यतः दो भागों में विभाजित था–(1) ऐंग्लिकन (2) प्यूरिटन।

(क) ऐंग्लिकन शाखा : इंग्लैण्ड में इस शाखा का मजबूत स्थान था। इस शाखा के बहुत-से लोग समर्थक थे, क्योंकि इंग्लैण्ड का यही स्थापित चर्च था। इस शाखा को आर्मीनियम शाखा भी कहा जाता था, क्योंकि आर्मीनियस नाम के एक डच प्रोफेसर इसके बड़े नेता थे। प्रथम चार्ल्स के राज्यकाल में इस शाखा का प्रधान विलियम लॉड था जिसकी असहिष्णुता की वजह से इसकी बड़ी बदनामी हुई। इसके समर्थक पोप के बदले राजा को अपना प्रधान मानते थे और राजा के दैवी अधिकार के सिद्धांत में भी विश्वास करते थे। ये लोग चर्च का प्रबंध बिशपों एवं पादरियों के हाथ में रखना चाहते थे और समझते थे कि उन्हें विशेषाधिकार प्राप्त है। ये लोग प्रारब्ध में नहीं, बल्कि कर्म में विश्वास रखते थे। धर्म-सुधार के समर्थक होते हुए भी वे पूजा-पाठ में विस्तृत रस्म-रिवाजों को पसंद करते थे, सामूहिक प्रार्थना को ईश्वरी कृपा का विशेष साधन समझते थे और अंग्रेजी चर्च के ऐतिहासिक विकास तथा मध्यकालीन चर्च के साथ संबंध पर पूरा जोर देते थे। इसी वजह से इन लोगों ने कुछ पुराने नियमों को भी स्वीकार कर लिया, जैसे ईसा की यादगारी में भोजन के समय घुटने टेकना, विवाह में अंगूठी पहनना, चर्च में बाजा, पूजा का समय, पादरियों का खास पहनावा आदि।

नोट

(ख) प्यूरिटन शाखा : इन लोगों को प्यूरिटन कहा जाता था, क्योंकि ये लोग पूजा-पाठ के तरीकों को विशेष रूप से शुद्ध (Purity) करना चाहते थे। 17वीं सदी के शुरू में 'प्यूरिटन' शब्द एक बुरा शब्द समझा जाता था और स्थापित चर्च के विरोधियों के लिए कटाक्ष के रूप में प्रयोग किया जाता था। लेकिन धीरे-धीरे प्यूरिटन शब्द सार्थक अर्थ में प्रचलित हो गया।

उस समय प्यूरिटनों से जुड़ी एक विचित्र अफवाह फैली हुई थी कि वे सभी नीचे दर्जे के लोग थे और सभी ऐश-आराम तथा मनोविनोद के विरोधी थे, लेकिन ऐसी बात बिल्कुल नहीं थी। प्यूरिटन दल में कुलीन श्रेणी के भी बहुत लोग थे। प्यूरिटन सभी प्रकार के मनोविनोद के साधनों का विरोध नहीं करते थे। उन्होंने केवल हानिकारक साधनों का ही विरोध किया था। इसके अलावा प्यूरिटन शाखा के अंदर भिन्न-भिन्न विचार रखने वाले लोग भी मौजूद थे। गृहयुद्ध के बाद, अनुमानतः इस सम्प्रदाय में डेढ़ सौ से अधिक भिन्न विचार वाले लोग थे, लेकिन इनमें से विशेष लोग अभी इंग्लैण्ड के स्थापित चर्च के ही अनुयायी थे। इनका विरोधियों (Nonconformists) के साथ चार्ल्स द्वितीय के राज्यकाल के बाद ही गहरा मतभेद हुआ। इनकी निम्नलिखित उपशाखाएँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं–

(*i*) कुछ ऐसे प्यूरिटन थे जो राजा, पादरी या सरदार किसी के द्वारा भी चर्च की व्यवस्था नहीं चाहते थे। इनका विचार था कि हरेक धार्मिक समूह को अपनी व्यवस्था करने के लिए पूरी स्वतंत्रता रहे। इन लोगों को ब्राउनिस्ट या इण्डिपेंडेंट कहते थे। ये कैथोलिकों को छोड़कर और सभी के लिए सहिष्णुता चाहते थे। धीरे-धीरे सैनिकों में इस मत का विशेष रूप से प्रचार होने लगा।

(*ii*) कुछ प्यूरिटन बिशपों के नरम शासन के समर्थक थे, परन्तु कुछ प्यूरिटन उतना भी सहने के लिए तैयार नहीं थे और वे सदा बिशपों की बड़ी आलोचना करते रहते थे।

(*iii*) उग्र विचार के भी कुछ प्यूरिटन थे जो किसी की व्यवस्था के पक्षपाती नहीं थे। वे व्यवस्था के मार्ग में बाधक थे। इन्हें उग्र या चरमपंथी कहते हैं।

(*iv*) कुछ प्यूरिटन लोग चर्च में बिशपों का शासन तथा राजा की प्रधानता नहीं चाहते थे। ये लोग धार्मिक समूह (Congregation) के सरदारों के द्वारा चर्च की व्यवस्था चाहते थे। इन लोगों को प्रेस्बिटेरियन कहते हैं। धीरे-धीरे आम लोगों में प्रेस्बिटेरियन मत का विशेष रूप से प्रचार होने लगा। ये पादरी तंत्र के विरोधी थे।

इन विभिन्न धार्मिक दलों के बीच एक विचित्र विशेषता यह थी कि हर एक दल अपने लिए सहिष्णुता चाहता था और दूसरे दल को कुचल देना या अपने अधीन कर लेना चाहता था। लेकिन ब्राउनिस्ट दल इस संकीर्णता से परे था।

इन सभी विभिन्नताओं के होते हुए भी कई बातों में इनमें गहरी समानताएँ भी थीं।

सभी प्यूरिटन सम्प्रदाय वाले रोमन कैथोलिक धर्म और पोप को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस धर्म को स्वीकार करना प्यूरिटन वालों के विचार में देश को बर्बाद करने जैसा था। वे कैथोलिक धर्म को देश के लिए हानिकारक मानते थे। देश के अंदर होने वाली हर बुरी घटनाओं की जवाबदेही कैथोलिकों के मत्थे मढ़ी जाती थी। सभी प्यूरिटन पोप को ईसा का दुश्मन और पादरियों को दुष्ट, पाखंडी और धोखेबाज समझते थे। इसके विचार बाइबिल पर आधारित थे।

इसके अतिरिक्त सभी प्यूरिटन कुछ-न-कुछ अंश में काल्विन के समर्थक थे। दूसरे शब्दों में, कालविनिस्टों के जैसा वे सभी प्रारब्ध में विश्वास करते थे। वे सभी बिशपों के विशेषाधिकारों में विश्वास नहीं रखते थे और चर्च के विस्तृत रस्म-रिवाज, मूर्तिपूजा और कर्मकाण्ड को नापसंद करते थे। वे पूजा-पाठ का तरीका सीधा-सादा चाहते थे। वे आचार और कर्म पर विशेष जोर देते थे, वे सामूहिक प्रार्थना को ईसा की मृत्यु का स्मारक चिह्न समझते थे, ईश्वर की कृपा का साधन नहीं। बाइबिल और ईश्वर में उन सभी का दृढ़ विश्वास था। वे सभी हानिकारक मनोविनोद के विरोधी थे।

7.6 जेम्स प्रथम का धार्मिक दलों के साथ संबंध

नोट

1. **कैथोलिक और जेम्स :** ऐलिजाबेथ के काल में कैथोलिकों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। उन्हें प्रतिबंधों के बोझ तले दबा दिया जाता था। जब जेम्स गद्दी पर बैठा तब कैथोलिक उससे बहुत आशा करने लगे। वह ऐसी उम्मीद इसलिए करने लगे थे क्योंकि जेम्स की माँ एक कट्टर कैथोलिक थी। इसके अलावा इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठने के पहले जेम्स सहिष्णुता की नीति की बड़ी प्रशंसा किया करता था। लेकिन कैथोलिकों की आशा पर पानी फिर गया और उन्हें कुछ भी लाभ न हुआ। इस पर रंज और हतोत्साह होकर कैथोलिक षड्यंत्र रचने लगे। इस प्रकार जेम्स के विरुद्ध तीन षड्यंत्र रचे गये।

(क) बाई प्लॉट : बाई प्लॉट यह वह पहला षड्यंत्र था जो कैथोलिकों ने जेम्स के खिलाफ रचा था। इस षड्यंत्र का रचयिता बाट्सन नामक एक पादरी था। इसका उद्देश्य यह था कि जेम्स को ग्रीनविच ले जाकर लंदन के टावर पर अधिकार कर लिया जाये और जेम्स को मजबूर कर कैथोलिकों के लिए सुविधाएँ प्राप्त की जायें, परन्तु सरकार को इस षड्यंत्र की सूचना पहले ही अपने जासूसों से मिल गई। उसके नेता को पकड़ लिया गया और उसे पकड़कर उसके खिलाफ मुकदमा चलाया गया।

(ख) मेन प्लॉट : जब पहले षड्यंत्र का मुकदमा न्यायालय में चल रहा था तो उसी मुकदमे की सुनवाई के बीच में एक-दूसरे षड्यंत्र के विषय में संदेह हुआ जिसे मेन प्लॉट कहते हैं। इस षड्यंत्र का रचियता एक लार्ड कॉमन नाम का एक पादरी समझा जाता है। इसका उद्देश्य यह था कि जेम्स की चचेरी बहन-लेडी अराबेला-को स्पेन की मदद से इंग्लैण्ड की गद्दी दी जाए। जेम्स और अराबेला एक ही वंश के थे, लेकिन उसका जन्म इंग्लैण्ड में ही हुआ था यही बात अराबेला के पक्ष में थी, परन्तु यह षड्यंत्र भी असफल रहा। लेडी अराबेला को कैद कर लिया गया, परन्तु इस षड्यंत्र के विषय में विशेष प्रमाण नहीं मिलता है। इसी षड्यंत्र के सिलसिले में प्रसिद्ध सर वाल्टर रैले का भी नाम आता है।

सर वाल्टर रैले की षड्यंत्र में भूमिका : सर वाल्टर रैले एलिजाबेथ के समय का एक प्रसिद्ध योद्धा, नाविक और विद्वान था। इसी ने तम्बाकू और आलू की फसल को अमेरिका से इंग्लैण्ड में प्रचलित किया। जेम्स उससे नाखुश रहता था, क्योंकि वह जेम्स के एक घनिष्ठ मित्र एसेक्स का दुश्मन था। मेन प्लॉट के सिलसिले में उसे अपराधी घोषित कर फांसी की सजा दी गई, लेकिन जेम्स के हुक्म से वह आजीवन कैद में रख दिया गया। कैद का समय उसने संसार का एक इतिहास लिखने और रसायन-संबंधी प्रयोग करने में व्यतीत किया। 13 वर्ष बाद 1616 ई. में उसे कैद से छुटकारा मिला क्योंकि उसने दक्षिण अमेरिका की ओरोनिको नदी की उपत्यका में जाकर सोने की खान खोजने की प्रतिज्ञा की, लेकिन जेम्स ने एक शर्त यह रखी थी कि वहाँ के स्पेनवासियों से किसी प्रकार झगड़ा न हो, लेकिन दुर्भाग्यवश रैले की यात्रा सफल न रही। बीमार होने के कारण उनके बहुत से योग्य आदमी मर गए। कुछ आदमियों से स्पेनवासियों के साथ मुठभेड़ भी हो गई, कुछ स्पेनवासी मारे भी गये। अतः सोने की खान का बिना पता लगाये ही रैले को इंग्लैण्ड लौटना पड़ा। लौटने पर स्पेनी राजदूत ने रैले की सजा की मांग पेश की। उसी समय जेम्स स्पेन के साथ वैवाहिक संबंध कायम करने की बातचीत चला रहा था। अतः स्पेनवासियों तथा स्पेनी सरकार को खुश करने के लिए 1618 ई. में जेम्स ने रैले को पुराने अपराध में ही फांसी की सजा दे दी। इससे इंग्लैण्ड में जेम्स की बड़ी बदनामी हुई।

(ग) गनपाउडर प्लॉट : (i) कारण : जेम्स के खिलाफ कैथोलिकों ने जो षड्यंत्र रचे थे वह दोनों षड्यंत्र असफल हो गए परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से जेम्स के ऊपर कुछ असर अवश्य पड़ा। जेम्स ने कैथोलिकों के लिए सहिष्णुता की नीति अपनायी। कैथोलिकों के खिलाफ जो कड़े कानून थे उनमें थोड़ी नरमी बरती गई और उनसे जो जुर्माना लिया जाता था उस प्रथा को समाप्त कर दिया गया। इन सबका यह नतीजा हुआ कि कैथोलिक लोग बहुत उत्साहित हो गए। कैथोलिक अपनी पूजा कराने लगे और इंग्लैण्ड में बाहर से कैथोलिकों के बड़े-बड़े झुण्ड पहुँचने लगे। यह सब देखकर जेम्स घबराने लगा और प्रोटेस्टेंट भी इसका विरोध करने लगे। अतः इन सब को रोकने के लिए जेम्स ने फिर से पुराने नियमों को कड़ाई से चालू किया और बाहर से आए हुए कैथोलिकों को इंग्लैण्ड से

चले जाने का हुक्म दिया। इस पर क्रुद्ध होकर कैथोलिकों ने जेम्स के विरुद्ध तीसरा षड्यंत्र रचा जिसे 'गनपाउडर प्लॉट' कहा जाता है।

राबर्ट कैटैस्वी और गाई फॉक्स इस षड्यंत्र के दो बड़े नेता थे। राबर्ट कैटेस्वी, मिडलैण्ड के जमींदार घराने का निवासी था। गाई फॉक्स यार्कशायर घराने का व्यक्ति था। इनके षड्यंत्र का उद्देश्य यह था कि जेम्स को मार कर उसके बेटे चार्ल्स को गद्दी पर बैठाकर एक कैथोलिक सरकार कायम की जाए। इनकी योजना यह थी कि जब राजा और दोनों सभाओं के सदस्य एक साथ सभा भवन में बैठें तो उस सभा भवन को बारूद से उड़ा दिया जाये। 1605 ई. की 5 नवम्बर को ऐसी ही एक सभा लार्डों के सभा भवन में होने वाली थी।

नोट

***(ii)* योजना :** इस षड्यंत्र को उसके परिणाम तक पहुँचाने के लिए षड्यंत्रकारियों ने एक सोची समझी योजना तैयार कर ली उन्होंने लार्ड सभा की दीवार के समीप के घर के नीचे-नीचे एक सुरंग खोद डाली। इसके बाद लार्ड सभा के निचले हिस्से में एक कोठरी किराए पर ली गई और उसमें 36 पीपों के अंदर करीब दो टन बारूद भर कर रख दी गई। आग लगाने का कार्य फॉक्स को सौंपा गया, लेकिन प्लॉट का भण्डा फूट गया। इस षड्यंत्र में शामिल हुए षड्यंत्रकारियों में से एक षड्यंत्रकारी लार्ड सभा का सदस्य था उसे बचाने के ख्याल से उसने अपने संबंधी को षड्यंत्र की सूचना दे दी। उस व्यक्ति ने इस षड्यंत्र की सूचना सरकार के पास भेज दिया। सरकार सावधान हो गई और चारों तरफ दूत नियुक्त कर दिये गए। गाई फॉक्स को पकड़ लिया गया और उसे फांसी पर लटका दिया गया। वहाँ कई और भी कैथोलिकों को पकड़ लिया गया एवं बहुत से तो वहीं मारे गए।

***(iii)* परिणाम :** इस तरह कैथोलिकों का यह तीसरा प्लॉट भी बुरी तरह असफल रहा। इन षड्यंत्रों और इसमें होने वाली असफलताओं के कारण कैथोलिकों का बहुत बड़ा नुकसान हुआ। उनके लिए जो पुराने नियम लागू थे उन्हें फिर से कड़ा करके लागू कर दिया गया। वे कैद और जुर्माने के शिकार होने लगे। उन्हें व्यापार के अतिरिक्त अन्य किसी कारण से लंदन से दस मील के अंदर आने के लिए मना कर दिया गया। इनके लिए कई पेशे बंद कर दिये गए। वे जनता की नजरों में गिर गए। जनता अब उनसे घृणा करने लगी वे उन्हें खूनी व बागी का दर्जा देने लगी।

परन्तु जेम्स की जो नीतियाँ थीं उनके कारण कड़े नियमों का ठीक से व्यवहार न हो सका, परन्तु जब जेम्स स्पेन के साथ वैवाहिक संबंध कायम करने के लिए दृढ़ हो गया, तब वह कैथोलिक के प्रति उदार व्यवहार करने लगा, किन्तु पार्लियामेन्ट इस उदार नीति को पसंद नहीं करती थी और इस प्रकार बादशाह और पार्लियामेन्ट के बीच झगड़ों की एक वजह यह भी थी।

2. जेम्स और प्रोटेस्टेंट ऐंग्लिकन : स्थापित चर्च का जेम्स समर्थन करता था और इसी कारण वह एक ऐंग्लिकन था। ऐंग्लिकनों और राजा के विचार धार्मिक और राजनीतिक दोनों ही दृष्टियों से एक से थे। ऐंग्लिकन दल वाले चर्च का प्रबंध बिशपों के द्वारा चाहते थे जो राजा को ही अपना सर्वेसर्वा मानते थे। इसके अलावा ये सभी राजा के दैवी हक के सिद्धांत के पक्ष में भी थे। राजा भी अपने तथा बिशपों के स्वार्थ को एक ही नजरिये से देखता था। उसका मानना था कि "यदि बिशप नहीं तो राजा भी नहीं।" इस तरह ऐंग्लिकन दल का पक्षपाती होने के कारण जेम्स ने ऐंग्लिकनों के साथ सहनशीलता दिखलाई और उन्हें कई सुविधाएँ दीं।

3. जेम्स और प्यूरिटन : एलिजाबेथ के समय में कैथोलिकों के समान ही प्यूरिटनों के भी बहुत बुरे दिन थे। उनके खिलाफ बहुत बुरे व कड़े नियम लागू किये गये थे। प्यूरिटन जेम्स के राजा बनने के बाद बहुत खुश हुए क्योंकि जेम्स स्कॉटलैण्ड का रहने वाला था जहाँ प्रेस्बिटेरियन धर्म प्रचलित था। अत: उन्हें बड़ी आशा हुई कि जेम्स उनके प्रति सहानुभूति रखेगा; लेकिन उनकी आशा पर पानी फिर गया।

जेम्स के राज्य के शुरू में ही प्यूरिटनों ने प्रार्थना-पत्र पेश किया। इसे 'मिलेनरी पेटीशन' कहते हैं क्योंकि कुछ लोगों के अनुमान से इस पर एक हजार आदमियों के हस्ताक्षर थे, लेकिन यथार्थ में इस पर किसी का भी हस्ताक्षर नहीं था, यद्यपि 800 व्यक्तियों ने इसका समर्थन किया था। इस प्रार्थना-पत्र में उनकी मांगें बहुत साधारण थीं। वे अपने विचारों तथा रस्म रिवाजों के लिए सहनशीलता चाहते थे। उन्होंने बिशपों को चर्च से हटाने की अपनी पुरानी मांग पेश नहीं की थी। इस बार यदि उनकी मांगे पूरी हो जातीं तो वे संतुष्ट हो जाते।

नोट

प्रार्थना-पत्र पर विचार करने के लिए हैम्पटन कोर्ट में एक सभा बुलाई गई जिसमें दोनों दल के प्रतिनिधि शामिल हुए। एक तरफ दो आर्कबिशप और छः बिशप तथा दूसरी तरफ चार प्यूरिटन थे। इस सभा का सभापति जेम्स स्वयं हुआ। पहले दिन तो कार्य सुचारु रूप से हुआ, लेकिन दूसरे दिन की बैठक में गड़बड़ी हो गई। किसी प्यूरिटन ने 'प्रेस्बिटरी' (धर्म सभा) शब्द का प्रयोग कर दिया। जेम्स ने इसे सुन लिया। वह प्रेस्बिटेरियन धर्म के संगठन से घृणा करता था, क्योंकि यह प्रजातंत्र के सिद्धांतों पर कायम था लेकिन प्यूरिटनों को इस बात की पूरी जानकारी नहीं थी। 'प्रेस्बिटरी' शब्द सुनते ही जेम्स बहुत क्रुद्ध हो गया और उसने कहा, "एक स्कॉट प्रेस्बिटरी राजतंत्र से उतना ही सहमत होता है जितना ईश्वर शैतान से।" तब उसने सभी प्यूरिटनों को सभा से निकाल बाहर कर दिया।

परिणाम

(क) प्यूरिटनों का विरोध : इस प्रकार प्यूरिटनों को किसी प्रकार न लाभ हुआ और उन्हें निराशा का सामना करना पड़ा। जेम्स के साथ उनका विरोध बढ़ गया और वे कॉमन्स सभा के विरोधी दल में सम्मिलित होने लगे।

(ख) प्रार्थना-पुस्तक में बदलाव : प्रार्थना-पुस्तक में कुछ बदलाव किए गए, परन्तु इससे भी प्यूरिटन दल वालों को संतुष्टि नहीं मिली और वह इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं थे इस प्रकार तीन सौ पादरी बर्खास्त कर दिये गए और वे स्थापित चर्च से अलग हो गए। उन्हें 'ननकन्फर्मिस' कहते हैं।

(ग) विदेश यात्रा : अब जेम्स का विश्वास -'न बिशप, न राजा' के सिद्धांत में पक्का हो गया। वह प्यूरिटनों पर अधिक अत्याचार करने लगा। निराश और दुःखी होकर बहुत से प्यूरिटन इंग्लैण्ड छोड़कर हॉलैण्ड चले गए। उनमें से कितने प्यूरिटन फिर इंग्लैण्ड से बहुत से प्यूरिटनों को साथ लेकर 1620 ई. में 'मेफ्लावर' नाम के जहाज में अमेरिका चले गये। इन प्यूरिटनों को पिलग्रिम फादर्स या धर्म यात्री कहते हैं।

(घ) बाइबिल का अनुवाद : नये ढंग से बाइबिल का अनुवाद करने के लिए प्यूरिटनों को आज्ञा मिली। यह अनुवाद 'ऑथराइज्ड वर्जन' (Authorised version) के नाम से 1611 ई. में प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद को बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई। इससे अंग्रेजी भाषा और जनता के जीवन दोनों ही बहुत प्रभावित हुए। यह सीधी-सादी भाषा में लिखा गया था और जनता इसे बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ने लगी। इससे लोगों की विचार-शक्ति का विकास होने लगा। इस प्रकार प्यूरिटनों के लिए यह बड़ा लाभदायक साबित हुआ, क्योंकि इससे उनके विचारों का पूरा प्रचार होने लगा।

7.7 जेम्स की वैदेशिक नीति एवं वैवाहिक संबंध (1603-1649 ई.)

सन् 1603 ई. में इंग्लैण्ड की स्थिति : इंग्लैण्ड पहले की अपेक्षा सन् 1603 ई. में विशेष सुरक्षित था। 1603 ई. से पहले उसके तीन बड़े दुश्मन थे– स्कॉटलैण्ड, फ्रांस और स्पेन। स्कॉटलैण्ड तो बराबर ही इंग्लैण्ड के दुश्मन का साथ देने को तैयार रहता था और इंग्लैण्ड पर आक्रमण भी किया करता था। इस प्रकार स्कॉटलैण्ड, इंग्लैण्ड का सनातन दुश्मन था, लेकिन अब तो एक स्कॉट ही इंग्लैण्ड का राजा हुआ और देश एक ही राजा की छात्रछाया में आने के कारण मित्र बन गये। एलिजाबेथ के राज्यकाल में ही अर्मडा की लड़ाई में स्पेन की शक्ति कम हो गई और समुद्र पर इंग्लैण्ड का प्रभुत्व जम गया। उसी समय फ्रांस की भी शक्ति कमजोर बना दी गयी। इस समय तक आयरलैण्ड पर भी इंग्लैण्ड का प्रभुत्व स्थापित हो रहा था। इंग्लैण्ड में भी गद्दी का कोई दूसरा अधिकारी नहीं रह गया था जिसको लेकर विदेशी राष्ट्र देश के घरेलू मामले में हस्तक्षेप करते।

सन् 1618 ई. तक की वैदेशिक नीति : जेम्स प्रथम एक शान्तिप्रिय व्यक्ति था। वह किसी देश के लड़ाई-झगड़े में नहीं पड़ना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि कभी किसी देश के साथ युद्ध हो। यदि कहीं पर युद्ध हो भी जाए तो उसका यही प्रयत्न रहता था कि उसका देश इस युद्ध से वंचित (सुरक्षित) रहे। उसके विचार वैदेशिक नीति संबंधी उत्तम और बुद्धिमत्तापूर्ण थे, लेकिन उन्हें कार्यरूप में लाने के लिए जेम्स में योग्यता का अभाव था।

नोट

स्पेन की संधि : स्पेन की संधि की नींव 1604 ई. को रखी गई और सन् 1618 ई. तक कायम रही। इसमें जेम्स के मंत्री लार्ड सेलिसबरी का विशेष हाथ था। 1618 ई. तक इस संधि के द्वारा शान्ति कायम रही। सन् 1612 में उसकी मृत्यु हो गई, परन्तु उस समय उसके व्यक्तित्व की छाप राष्ट्र पर पड़ चुकी थी। एलिजाबेथ के ही समय से स्पेन और इंग्लैण्ड में दुश्मनी चली आ आ रही थी। अत: सन् 1604 ई. में स्पेन के साथ एक संधि कर भेदभाव दूर करने की कोशिश की गई। ऊपर से तो दोनों देशों के बीच मित्रता कायम हो गई, लेकिन मनोमालिन्य पूर्ण रूप से साफ नहीं हो सका था।

वैवाहिक संबंध बनाने की योजना

जेम्स द्वारा बनायी गई वैवाहिक संबंध की नीति भी बहुत ही सफल रही थी। इस योजना का विवरण इस प्रकार है–

(क) राइन के एलेक्टर फ्रेडरिक के साथ वैवाहिक संबंध : जेम्स अपने सम्प्रदाय का विकास करना चाहता था। उसका विचार था कि शान्ति-स्थापना के लिए विभिन्न राज्यों और विभिन्न सम्प्रदायों के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित करना आवश्यक है। इसके लिए 1613 ई. में उसने अपनी बेटी एलिजाबेथ का विवाह काल्विनिष्ट सम्प्रदाय के नेता, राइन के एलेक्टर पैलेटिन आरेंज के विलियम के पौत्र अर्थात् फ्रेडरिक से कर दिया।

(ख) स्पेन के साथ वैवाहिक संबंध के प्रस्ताव : जेम्स स्पेन के साथ अपना रिश्ता बनाना चाहता था। वह इसके लिए स्पेन के साथ वैवाहिक संबंध कायम करने के लिए बहुत उत्सुक था। इंग्लैण्ड प्रोटेस्टेंट प्रधान देश था और स्पेन कैथोलिक प्रधान। जेम्स का पूरा ख्याल था कि यदि इन दोनों देशों में वैवाहिक संबंध स्थापित हो जाए, तो यूरोप में शान्ति कायम करने में आसानी होगी, क्योंकि इसी तरह कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों के बीच मैत्री-भाव का विकास होगा। स्पेन बहुत धनी देश भी नहीं था। अत: वह सोचता था कि यदि दहेज के रूप में उसे बहुत-सी धन सम्पत्ति मिलेगी जिससे उसकी आर्थिक कठिनाई कम हो जाएगी। इसीलिए जेम्स ने अपने ज्येष्ठ पुत्र (बड़े बेटे) हेनरी का विवाह स्पेन की राजकुमारी के साथ प्रस्तावित किया, परन्तु ऐसा नहीं हो सका। जेम्स के साथ एक दुर्घटना घटित हो गई। शादी के प्रस्ताव भेजने के बाद कुछ ही समय के भीतर हेनरी की मृत्यु हो गई, परन्तु जेम्स ने स्पेन के साथ संबंध बनाने का सपना नहीं तोड़ा और उसने अपने दूसरे पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी के साथ करने का निश्चिय किया। विवाह संबंध को पक्की तौर से निश्चित करने के लिए जेम्स ने स्पेनवासियों की खुशी हेतु एक प्रसिद्ध योद्धा (सर वाल्टर रैले) को भी उसने प्राणदण्ड दे दिया।

***(i)* प्रजा का विरोध :** उपरोक्त कथनों से यह साफ स्पष्ट होता है कि जेम्स स्पेन के साथ संबंध स्थापित करने हेतु कितना उत्सुक था, परन्तु प्रजा उसके इस निर्णय से अधिक खुश नहीं थी और वाल्टर को प्राणदण्ड देने वाले निर्णय से तो प्रजा और भी विक्षुब्ध थी। इसके तीन मुख्य कारण थे–

(क) वह स्पेन के कैथोलिकों का एक बड़ा नेता था, परन्तु इंग्लैण्ड प्रोटेस्टेंट-प्रधान देश था और अंग्रेजों की दृष्टि में कैथोलिक राजद्रोही बन गये थे।

(ख) स्पेन इंग्लैण्ड का पुराना शत्रु था। ऐलिजाबेथ के समय में जल और थल से इंग्लैण्ड का प्रभुत्व मिटाने के लिए स्पेन ने इंग्लैण्ड से युद्ध किया था और यदि अर्माडा के युद्ध में स्पेन विजयी हो जाता तो इंग्लैण्ड और संसार का इतिहास ही कुछ दूसरा होता। संसार से इंग्लैण्ड की हस्ती ही मिट जाती।

(ग) अंग्रेज लोग धन-दौलत से भरे स्पेन के जहाजों और शहरों पर आक्रमण कर लूटपाट के जरिये बहुत धन प्राप्त कर लेते थे। स्पेन के साथ मित्रता हो जाने पर यह संभव नहीं होता और अंग्रेज लुटेरों के रोजगार पिट जाते।

***(ii)* स्पेनवासियों की उदासीनता :** जहाँ एक ओर इंग्लैण्ड की प्रजा जेम्स के फैसले से नाखुश थी वहीं दूसरी ओर स्पेन भी इस वैवाहिक संबंध के पक्ष में नहीं था। स्पेन और इंग्लैण्ड दोनों पुराने शत्रु थे। अंग्रेज व्यापारी स्पेन के शहरों और जहाजों पर आक्रमण कर लूटपाट किया करते थे। कैथोलिक प्रधान देश होने के कारण स्पेन वाले अपनी राजकुमारी की शादी किसी कैथोलिक के साथ नहीं करना चाहते थे, लेकिन स्पेनवालों ने जेम्स के

प्रस्ताव को साफ अस्वीकार भी नहीं किया। वे लोग इसके जरिये अपने स्वार्थ की पूर्ति करने लगे। इंग्लैण्ड के कैथोलिकों को सुविधा दिलाने के लिए स्पेनवासी इसे सुअवसर समझने लगे। अत: वे जेम्स को दिलासा देते हुए टालमटोल की नीति पर चलने लगे। इस युद्ध में जेम्स प्रथम की विदेश नीति की कड़ी परीक्षा हुई।

नोट

7.8 यूरोप का 30 वर्षीय युद्ध

यूरोप का 30 वर्षीय युद्ध 1619-1648 ई. तक चला। यह युद्ध सन् 1619 ई. को जर्मनी में शुरू हुआ। तथा 30 वर्षों तक चला। यह युद्ध इतिहास में 30 वर्षीय युद्ध के नाम से ही प्रसिद्ध है। बढ़ते-बढ़ते यह युद्ध यूरोप के सभी देशों में फैल गया था।

1. जर्मनी की ओर से युद्ध की शुरुआत : इस युद्ध का आरंभ जर्मनी में हुआ था। उस समय जर्मनी में लगभग 300 छोटी-बड़ी रियासतें थीं। ये सभी एक संघ में शामिल थीं जो 'पवित्र रोमन साम्राज्य' नाम से प्रसिद्ध थी। इस संघ के सरदार का पद एक निर्वाचित सम्राट को ही मिलता था, परन्तु यह संघ कमजोर था। इसके सदस्यों के बीच कई बातों को लेकर काफी मतभेद थे, लेकिन सबसे प्रधान बात जो थी वह थी धर्म की। दक्षिणी जर्मनी में कैथोलिकों की और उत्तरी जर्मनी में प्रोटेस्टेंटों की प्रधानता थी और दोनों के बीच एक गहरी खाई थी।

2. बोहिमियाँ के राजत्व का प्रश्न : आस्ट्रिया का सम्राट संघ का अध्यक्ष होने के अलावा हंगरी और बोहिमियाँ का भी राजा था। यूँ तो बोहिमियाँ के राजा का निर्वाचन होता था, परन्तु आस्ट्रिया का सम्राट ही बोहिमियाँ का राजा होता था। आस्ट्रिया का सम्राट हैप्सबर्ग-वंश का ही व्यक्ति था। यह वंश कट्टर कैथोलिक था। बोहिमियाँ कट्टर प्रोटेस्टेंट थे। अत: बोहिमियाँ के लोग इस प्रथा का अंत कर देना चाहते थे। जर्मनी के युद्ध के बारे में जानकर उन्हें प्रसन्नता हुई और उन्हें प्रथा का अंत करने का अच्छा मौका मिल गया। सन् 1619 ई. में आस्ट्रिया के सम्राट की मृत्यु हो गई और उसका उत्तराधिकारी फर्डिनेण्ड-द्वितीय गद्दी पर बैठा। बोहिमियाँ के लोगों ने फर्डिनेण्ड द्वितीय को अपना राजा स्वीकार नहीं किया। अत: फ्रेडरिक (एक प्रोटेस्टेंट) को बोहिमियाँ का राजा बनने हेतु स्वीकार किया गया। फ्रेडरिक जेम्स प्रथम का दामाद था। अब बोहिमियों को यह आशा थी कि कैथोलिकों के द्वारा विरोध या युद्ध होने पर उन्हें इंग्लैण्ड से पूरी सहायता प्राप्त होगी। फ्रेडरिक ने इस संबंध में जेम्स के पास सूचना भेज कर यह जानना चाहा कि इंग्लैण्ड उसकी मदद अवश्य करेगा। जेम्स ने अपना जवाब जल्दी नहीं भेजा। दूसरी तरफ फ्रेडरिक ने बोहिमियों का राजमुकुट स्वीकार कर लिया।

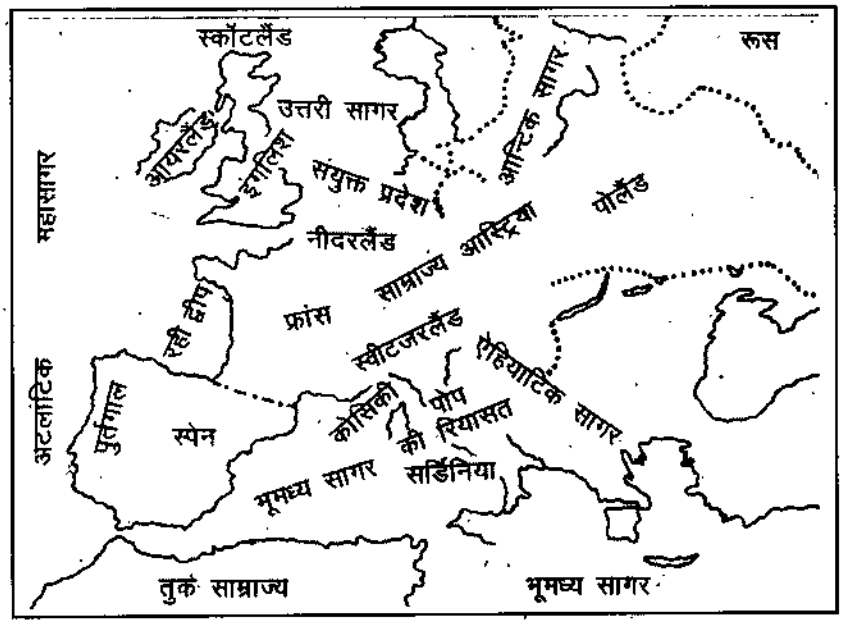

मानचित्र 7.1 यूरोप के 30 वर्षीय युद्ध के समय का मानचित्र

नोट

3. युद्ध का आरंभ : 30 वर्षीय युद्ध की शुरुआत 1619 ई. को हुई थी। आस्ट्रिया की सेना ने बोहिमियाँ पर आक्रमण कर दिया था। जर्मनी (कैथोलिक राज्यों) ने फर्डिनेण्ड की संगठित रूप से सहायता की थी, परन्तु फ्रेडरिक को प्रोटेस्टेंट राज्यों ने नाममात्र की सहायता की थी। इसका परिणाम तत्काल निकला। हाइटहिल के युद्ध में फ्रेडरिक की सेना की हार एक घंटे से भी कम समय में हो गई थी। 1620 ई. को फ्रेडरिक को बोहिमियाँ छोड़ कर भागना पड़ा। 1621 ई. में बेवेरिया के ड्यूक ने फ्रेडरिक के राज्य के अपर-पैलेटिनेट पर चढ़ाई कर उसे अपने कब्जे में ले लिया। यह डेन्यूब नदी के तट पर स्थित ड्यूक के राज्य की सीमा के निकट था। सन् 1622 ई. में राइन नदी के तट पर स्थित लोअर-पैलेटिनेट पर स्पेन के राजा ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इस प्रकार फ्रेडरिक के हाथ से बोहिमियाँ निकल गया और साथ ही साथ उसका अपना राज्य पैलेटिनेट भी उसके हाथों से निकल गया और वह बेघर होकर भटकने लगा।

4. इंग्लैण्ड की नीति : जब फ्रेडरिक ने बिना जेम्स की सलाह लिए बोहिमियाँ का राजमुकुट स्वीकार लिया तो यह बात जेम्स को नहीं जँची। इसी नाराजगी के कारण जेम्स ने फ्रेडरिक की युद्ध में जरा भी सहायता नहीं की। यही कारण था कि जर्मनी के भी कई प्रोटेस्टेंट राज्यों ने फ्रेडरिक की सहायता नहीं की। इसके फलस्वरूप फ्रेडरिक को पैलेटिनेट और बोहिमियाँ दोनों ही खो देना पड़ा। यदि उसके हाथ से केवल बोहिमियाँ ही जाता तब तो जेम्स को खुशी ही होती, क्योंकि वह तो ऐसा चाहता ही था लेकिन अब उसके पैतृक राज्य के चले जाने से जेम्स को भी दु:ख हुआ और वह इसकी पुनर्प्राप्ति के लिए कोशिश करने लगा।

इंग्लैण्ड के लोग तो शुरू से ही फ्रेडरिक के पक्ष में थे। जेम्स ने कुछ अंग्रेज स्वयंसेवकों को पैलेटिनेट पर आक्रमण करने के समय सहायता के लिए भेजा था, परन्तु दुर्भाग्यवश यह सहायता समय से नहीं पहुँच सकी। देश का लोकमत स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा चाहता था। इस संबंध में जेम्स ने एक पार्लियामेन्ट बुलाई। स्पेन के खिलाफ युद्ध में पार्लियामेन्ट ने समर्थन किया। इस आशय का प्रस्ताव भी पास किया गया, परन्तु जेम्स दो तरह की बातें कर रहा था। वह एक तरफ युद्ध चाहता था और दूसरी तरफ शान्ति स्थापित करना चाहता था। साथ ही वह स्पेन से समझौते की बात भी कर रहा था। पार्लियामेन्ट जेम्स की दोतरफा नीति को पसंद नहीं करता था। फिर भी जेम्स शान्ति और समझौते का प्रयत्न करता रहा। वह तो विजेता के स्थान पर यूरोप का शान्ति-विधायक बनना चाहता था। अत: वह सैनिकों के बदले विभिन्न देशों में दूत भेजने लगा। वह चाहता था कि फर्डिनेण्ड को बोहिमियाँ लौटा दिया जाए और फर्डिनेण्ड तथा फ्रेडरिक के बीच दुश्मनी न रहे। जेम्स की दृष्टि में यह बात स्पेन के द्वारा ही हो सकती थी।

5. स्पेन से वैवाहिक संबंध टूटना : उपरोक्त कारणों से यह स्पष्ट होता है कि स्पेन से विवाह संबंध बनाना अनिवार्य हो चुका था। पार्लियामेन्ट ने जेम्स से निवेदन किया कि चार्ल्स का विवाह किसी प्रोटेस्टेंट कुमारी से किया जाये। जेम्स को पार्लियामेन्ट की यह बात पसंद नहीं आई इसलिए उसने अपनी पार्लियामेन्ट को ही बर्खास्त कर दिया और स्पेन से वैवाहिक संबंध स्थापित करने के लिए प्रयत्न करता रहा। इसी विवाह संबंध को आगे बढ़ाने के लिए चार्ल्स और बकिंघम (टौम और जॉन के रूप में) स्पेन की राजधानी मैड्रिड पहुँचे। चार्ल्स इंफेंटा (स्पेन की राजकुमारी) से अकेले में मिलना तथा बात करना चाहता था परन्तु उसे ऐसा मौका नहीं दिया गया। वह अपनी मंशा की पूर्ति करना चाहता था इसलिए वह एक दिन इंफेंटा की फुलवारी में पहुँच गया जहाँ पर वह टहल रही थी। अचानक से चार्ल्स को अपने सामने पाकर इंफेंटा बहुत डर गई और वहाँ से भाग गई।

स्पेन तो अपनी राजकुमारी का विवाह वैसे भी चार्ल्स के साथ नहीं करना चाहता था। स्पेन विवाह के प्रश्न को बार-बार टालने लगा था। वहाँ के अधिकारियों ने चार्ल्स के सामने कई असम्भव मांगों को पेश किया था, परन्तु स्पेन अब यह जान चुका था कि चार्ल्स कभी भी उन मांगों की पूर्ति नहीं करेगा। चार्ल्स का विवाह इंफेंटा से नहीं हो पाया। जिससे वह बहुत क्रुद्ध एवं निराश हुआ और वापस इंग्लैण्ड लौट आया, परन्तु दूसरी ओर इंग्लैण्ड की जनता इस बात से बहुत प्रसन्न थी, उनके अंदर उल्लास तथा आनंद भर गया था।

6. स्पेन के विरुद्ध युद्ध की तैयारी (1624-25 ई.) : अब चार्ल्स और बकिंघम ने जेम्स पर दबाव डाला कि स्पेन के विरुद्ध युद्ध घोषित किया जाए। मजबूर होकर जेम्स को युद्ध के पक्ष में अपनी राय देनी पड़ी। पार्लियामेन्ट ने भी युद्ध के लिए कुछ धन मंजूर कर दिया। जेम्स फ्रांस से भी मित्रता करना चाहता था। अत: चार्ल्स

नोट

का विवाह फ्रांसीसी राजकुमारी हेनरिएटा मेरिया से निश्चित हुआ। जेम्स ने कैथोलिकों को सुविधा देने के लिए फ्रांस की मांग को भी स्वीकार कर लिया। यद्यपि धन पर्याप्त न था तो भी एक सेना तैयार की गई जिसमें 12,00 व्यक्ति थे। इस सेना को कई कठिनाइयों का सामना पड़ा। पहले तो ये सैनिक स्वयं की युद्ध-कुशल और अनुभवी नहीं थे। यह सेना नये रंगरूटों और भुक्खड़ों की एक झुण्ड मात्र थी। दूसरी बात यह थी कि यह सेना कुछ समय के लिए एक-दूसरे मोर्चे पर रख दी गई और इस प्रकार बहुत समय नष्ट हो गया। तीसरी बात यह थी कि यह सेना जब हॉलैण्ड से रवाना होकर राइन नदी पार करने की तैयारी कर रही थी, तब नदी का पानी जमने लगा और उसमें नौका चलाना कठिन हो गया। उस समय बहुत से व्यक्ति मर गये। इसी बीच मार्च, सन् 1625 ई. में जेम्स भी मर गया और उसका पुत्र चार्ल्स गद्दी पर बैठा।

7. सत्ता के लिए युद्ध : सन् 1625 ई. में स्थिति बिगड़ चुकी थी। चार्ल्स 1625 ई. को इंग्लैण्ड की गद्दी पर विराजमान हुआ। उस समय तक स्पेन के साथ युद्ध आरंभ हो चुका था, परन्तु इस युद्ध का कोई विशेष परिणाम नहीं निकल सका। पैलेटिनेट का पुनरुद्धार नहीं हो पाया। जन-धन की हानि हुई और फ्रेडरिक घर से बेघर होकर इधर-उधर घूम रहा था। जर्मनी में प्रोटेस्टेंट लोग अपनी सत्ता के लिए युद्ध कर रहे थे।

8. चार्ल्स प्रथम की नीतियाँ : चार्ल्स प्रथम की दो नीतियाँ थीं–(*i*) पैलेटिनेट के पुनरुद्धार में मदद करना और (*ii*) स्पेन पर चढ़ाई करना।

उसका यह ख्याल था कि इन दोनों नीतियों का अनुसरण करने से प्रोटेस्टेंट धर्म की रक्षा होगी और वह अपने देश में लोकप्रिय बन जायेगा।

9. फ्रांस से मित्रता : चूंकि चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी इंफेंटा से नहीं हो सका था इसलिए जेम्स प्रथम ने निश्चित कर दिया कि चार्ल्स का विवाह फ्रांस की राजकुमारी हेनरिएटा मेरिया से ही होगा। चार्ल्स भी फ्रांस से मित्रता करना चाहता था क्योंकि फ्रांस स्पेन का दुश्मन था। फ्रांस में स्पेन की अपेक्षा प्रोटेस्टेंटों पर कम अत्याचार होता था। अतः चार्ल्स ने जल्द-से-जल्द अपना विवाह हेनरिएटा से कर लिया।

10. डेनिश राजा को आर्थिक सहायता देने की प्रतिज्ञा : इस समय जर्मनी के प्रोटेस्टेंटों की सहायता करने के लिए डेनमार्क, हॉलैण्ड और वेनिस के बीच संघ स्थापित हो गया। डेनमार्क का राजा (चौथा क्रिश्चियन) इस संघ का प्रधान बना। स्थायी सेना-प्रबंध और प्रवीण न रहने के कारण चार्ल्स स्थल-युद्ध करने में असमर्थ था। अतः चार्ल्स ने डेनिस राजा को ही आर्थिक सहायता प्रदान करने की प्रतिज्ञा की। उसने मदद के रूप में डेनिस को 60,000 पौंड देने का वादा किया। यह रकम इकट्ठे न देकर किश्त में देने का निर्णय किया गया। उसने पहली किश्त में 46,000 पौंड की रकम अदा की, परन्तु यह किश्त पहली और अंतिम किश्त बनकर रह गई। चार्ल्स अगली किश्त नहीं दे पाया। चार्ल्स को पार्लियामेन्ट से पर्याप्त धन नहीं मिल पाया। इसमें गलती उसी की ही थी। उसने पार्लियामेन्ट को युद्ध के उद्देश्य (परिस्थिति) से पूर्णरूप से परिचित नहीं करवाया था।

11. केडिज पर आक्रमण करने की योजना एवं कारण : चार्ल्स की नजर अब केडिज पर थी। चार्ल्स और बकिंघम दोनों ने स्पेन के प्रसिद्ध बंदरगाह केडिज पर आक्रमण करने की योजना तैयार की। इसके पीछे कई कारण थे जिनसे लोग प्रभावित हुए थे–

(क) केडिज के बंदरगाह में, अमेरिका से खजाने भरे हुए जहाज लगते थे। इन जहाजों को लूटने से बहुत-सा धन हाथ लग सकता था और आर्थिक कठिनाई बहुत कुछ दूर हो जाती। इस प्रकार चार्ल्स डेनिस राजा के साथ अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में भी समर्थ हो जाता।

(ख) मध्य यूरोप में स्थल युद्ध की अपेक्षा स्पेन के साथ जल युद्ध अधिक आसान था।

(ग) घरेलू झंझटों में फंस जाने के कारण स्पेन बाहरी बातों में विशेष ध्यान नहीं देता और पैलेटिनेट पर अपना अधिकार हटा लेता। इसके अतिरिक्त वह फ्रेडरिक के राज्य को लौटाने के लिए सम्राट पर दबाव डालता।

(घ) इंग्लैण्ड की जनता स्पेन से युद्ध करना चाहती थी।

7.9 30 वर्षीय युद्ध : आक्रमण एवं परिणाम

नोट

1. केडिज पर आक्रमण और परिणाम : शीघ्र केडिज पर आक्रमण कर दिया गया। 10,000 सैनिक और 90 जंगी बेड़े भेजे गये। सर एडवर्ड सेसिल सेनापति था, लेकिन चार्ल्स की आशा पर पानी फिर गया। आक्रमण से लाभ के बदले हानि ही हुई। केडिज पर अधिकार न हो सका और न खजाने से भरे जहाज ही लूटे जा सके। सैनिकों ने स्वयं विद्रोह कर दिया और सेसिल बहुत हतोत्साह हो गया। इस हार से चार्ल्स की बड़ी बदनामी और बेइज्जती हुई। डेनमार्क का राजा चार्ल्स से आर्थिक सहायता पाने की प्रतीक्षा करता रहा और इसी आशा में वह एक बड़ी सेना भी तैयार करता रहा, लेकिन केडिज की हार के बाद तो आर्थिक सहायता मिलने की कोई आशा न रही। इतनी बड़ी सेना का खर्च चलाना क्रिश्चियन के लिए कठिन हो रहा था। सैनिक अपने वेतन के लिए शोर कर रहे थे। विद्रोह हो जाने की सम्भावना थी। अतः ऊबकर क्रिश्चियन ने जर्मनी के कैथोलिकों से शीघ्र ही युद्ध आरंभ कर दिया। लेकिन नतीजा बुरा हुआ। क्रिश्चियन को हारकर सन् 1625 ई. में अपने देश को लौट जाना पड़ा। इस प्रकार क्रिश्चियन भी चार्ल्स से खफा हो गया।

2. फ्रांस के साथ युद्ध : विवाह संबंध बन जाने के कारण जेम्स ने इंग्लैण्ड की तरफ से कैथोलिकों को सुविधाएँ देने की प्रतिज्ञा की थी। एक तरह से विवाह की शर्त यही थी। जेम्स ने फ्रांस को कुछ जहाज देने का भी वादा किया था, परन्तु वह अपना वादा करने से पूर्व ही मर गया था। फ्रांस चाहता था कि जेम्स का पुत्र चार्ल्स अपने पिता द्वारा किए वादों को पूरा करे। फ्रांसीसी सरकार इन जहाजों का प्रयोग फ्रांस के प्रोटेस्टेंटों ह्यूजिनों (Hyguenots) के विरुद्ध करना चाहती थी। चार्ल्स को इस बात की जानकारी प्राप्त हो चुकी थी। वैसे भी इंग्लैण्ड की जनता चार्ल्स से नाराज थी क्योंकि चार्ल्स का विवाह एक कैथोलिक से हुआ था। चार्ल्स को इस बात का भय था कि उसने फ्रांस को जहाज दे दिए तो उसकी जनता उसके प्रति अत्यधिक रुष्ट हो जाएगी।

वहीं दूसरी ओर फ्रांस ने स्पेन के साथ युद्ध में इंग्लैण्ड की सहायता की थी। अतः चार्ल्स को फ्रांस को जहाज देने के लिए बाध्य होना ही पड़ा। बेचारा चार्ल्स बीच में बुरी तरह से फंसा हुआ था। फ्रांसीसी सरकार ने जबरन जहाज लेकर जहाजों का उपयोग प्रोटेस्टेंटों के विरुद्ध किया और ब्रिटिश पार्लियामेन्ट चार्ल्स से बहुत रुष्ट हो गयी। स्पेन में इंग्लैण्ड की और जर्मनी में डेनमार्क ही हार से चार्ल्स अपने देश में अप्रिय बना ही हुआ था।

चार्ल्स अपनी जनता को खुश करना चाहता था। वह अपनी लोकप्रियता को बढ़ाने के लिए बहुत उत्सुक था। चार्ल्स को लगा कि यदि वह फ्रांस के साथ युद्ध करके उसमें विजयी हो जाए तो उसकी प्रतिष्ठा पुनः वापस मिल जाएगी। जब फ्रांस का राजा इंग्लैण्ड (चार्ल्स) पर कैथोलिकों को सुविधाएँ देने के लिए जोर देने लगा तो चार्ल्स और फ्रांस के राजा (लुई) के बीच तनाव पैदा हो गया और दोनों देशों के बीच युद्ध छिड़ गया। फ्रांस हमेशा चार्ल्स पर सुविधाएँ पाने हेतु दबाव डालता था और इंग्लैण्ड की जनता में चार्ल्स अपनी प्रतिष्ठा को वापस कायम करना चाहता था। मजबूरन चार्ल्स को फ्रांस के साथ युद्ध करना पड़ा था।

3. रही द्वीप पर आक्रमण (1627 ई.) : लुई (फ्रांस का राजा) फ्रांस के पश्चिमी किनारे पर ह्यूजिनों के किले लारोशेल को घेरे हुए थे। ह्यूजिनों की सहायता के लिए 'रही द्वीप' के एक किले पर चढ़ाई करने के लिए बकिंघम एक सेना के साथ भेजा गया। उसने उस किले को घेर लिया। किसी को भी किले के अंदर या बाहर जाने के लिए मना कर दिया, परन्तु इन सब में भाग्य ने बकिंघम का बिल्कुल भी साथ नहीं दिया।

(क) उसके सैनिक नये रंगरूट थे और प्रतिकूल हवा के कारण इंग्लैण्ड से समय पर सहायता न पहुँच सकी।

(ख) फ्रांसीसियों ने किले के भीतर किसी तरीके से खाद्य-सामग्री पहुँचा दी।

इन सबसे बकिंघम को बहुत निराशा हुई और वह हताश होकर इंग्लैण्ड वापस लौट आया।

परिणाम : बकिंघम उदास (हताश) अवश्य था किन्तु वह चुप बैठने वालों में से नहीं था। वह अतिशीघ्र द्वीप पर आक्रमण करने की योजना बनाने लगा, परन्तु सन् 1628 ई. को फेल्टन नाम के रुष्ट अफ़सर ने पोर्ट्समाउथ बंदरगाह में बकिंघम को मार डाला। इसी के परिणामस्वरूप बकिंघम का अंत हो गया।

नोट

4. चार्ल्स की कार्य-शिथिलता (1629-49 ई.) : बकिंघम के मरते ही इंग्लैण्ड की परराष्ट्र-नीति में महान परिवर्तन हो गया। जो नीति अब तक क्रियाशील और उत्साहपूर्ण थी, वह अचानक शिथिल और निराशपूर्ण हो गयी। यूरोपीय मामलों में चार्ल्स की दिलचस्पी समाप्त-सी हो गयी। उसने फ्रांस और स्पेन से संधि कर ली। अब वह अपने दिन किसी तरह काटने लगा। अब उसकी नीति में एकरूपता न रही। वह एक ही साथ फ्रांस के विरुद्ध स्पेन से और स्पेन के विरुद्ध फ्रांस से बातें करता था। कभी वह स्वीडन के राजा गुस्तबस अडल्फस को और कभी डेनमार्क के राजा क्रिश्चियन को सहायता करने की प्रतिज्ञा करता था। इस तरह उसकी नीति परस्पर-विरोधी थी। फल यह हुआ कि वैदेशिक मामलों में इंग्लैण्ड का अब कोई स्थान न रहा। चार्ल्स की नीति में इस परिवर्तन के दो कारण थे – उसे विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था जिससे उसकी एकाग्रता भंग हो गई थी। वह अपने परमप्रिय और विश्वासपात्र बकिंघम की निर्मम हत्या से दु:खी और क्षुब्ध हो गया था। दूसरी बात यह थी कि चार्ल्स ने इस समय अपने देश में अनियंत्रित शासन स्थापित किया था और उसे चलाने के लिए विशेष समय और धन की आवश्यकता थी। अत: बाहरी बातों के लिए उसे समय और धन दोनों का अभाव था।

5. तीस वर्षीय युद्ध का उत्तरार्द्ध : स्वीड़न का राजा गुस्तबस प्रोटेस्टेंटों की ओर से युद्ध लड़ रहा था। वह युद्ध में विजयी हुआ। अर्थात् प्रोटेस्टेंटों को सफलता प्राप्त हुई, परन्तु कुछ समय बाद ही वह युद्ध के क्षेत्र में मारा गया। गुस्तबस की मृत्यु से प्रोटेस्टेंटों को हताशा हुई, परन्तु उन्हें पुन: सहायता मिल गई। उस समय की फ्रांसीसी सरकार अपने देश के प्रोटेस्टेंटों पर अत्याचार करती थी परन्तु फिर भी वह जर्मनी के प्रोटेस्टेंटों की सहायता करने के लिए तैयार हो गई। यह फ्रांसीसी सरकार की कूटनीति थी। वह प्रोटेस्टेंटों की सहायता करके हैप्सबर्ग-राजवंश को कमजोर बनाना चाहती थी। इसमें फ्रांसीसी सरकार पूर्णत: सफल भी हो गई। सन् 1648 को यह युद्ध समाप्त हो गया। जर्मन प्रदेश के बँटवारे में फ्रांस और स्वीडन को सबसे अधिक फायदा और हिस्सा प्राप्त हुआ। इस युद्ध में जर्मन राज्य की एकता नष्ट हो गई।

7.10 इंग्लैण्ड की वैदेशिक नीति की समीक्षा

1. निंदायुक्त एवं प्रभावहीन नीति : जेम्स तथा चार्ल्स दोनों राजा अपनी-अपनी नीतियों से निंदनीय साबित हुए। साथ ही दोनों की नीतियाँ बुरी तरह से असफल भी हो गई थी। जिसके निम्नलिखित कारण थे–

***(i)* परिस्थितियाँ :** 17वीं सदी के पूर्वार्द्ध का समय जोशीली वैदेशिक नीति के उपयुक्त नहीं था। उस समय की परिस्थितियाँ ऐसी ही थीं कि राजा और पार्लियामेन्ट के बीच संघर्ष होना अनिवार्य था। अत: वैदेशिक मामलों में पूरी शक्ति लगाने के लिए जेम्स और चार्ल्स दोनों ही घरेलू झंझटों के कारण स्वतंत्र नहीं थे। जब राजा अपने घरेलू झंझटों में ही फंसा रहे तो वह अन्य तथ्यों पर ध्यान नहीं दे पाता है। यही कारण है कि उनकी नीतियाँ असफल हो गईं।

***(ii)* जलसेना की उपेक्षा :** इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा और शक्ति जलसेना पर निर्भर करती है, परन्तु जेम्स और चार्ल्स दोनों ने ही जलसेना की उपेक्षा की। दूसरी बात यह थी कि दोनों के पास धन का अभाव था जिस कारण समुद्र पार साम्राज्य के विकास की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया। अंग्रेजों की इस सामुद्रिक शक्ति की कमजोरी से डचों को विशेष लाभ पहुँचा।

***(iii)* स्थायी सेना का अभाव :** चूंकि जेम्स युद्ध पर विशेष ध्यान ही नहीं देता था। इंग्लैण्ड देश का प्रमुख पेशा युद्ध कभी भी नहीं था। इसलिए वहाँ पर स्थायी, योग्य पेशेवर सेना का अभाव था। ब्रिटिश कूटनीति के पीछे प्रबल सैन्यशक्ति नहीं थी और सत्य तो यह है कि अयोग्य कूटनीति सदैव असफल ही होती है। इसीलिए आवश्यकता पड़ने पर कुछ सेना को संगठित कर लिया गया और उन्हें शिक्षा देने की योजना तैयार की गई, परन्तु समय की कमी के कारण उन्हें समुचित शिक्षा नहीं मिल पाई जिससे उनमें अनुभव की कमी रही। अत: उस सेना के लिए यूरोप की अनुभवी और सेना से युद्ध सफल नहीं हो पाया क्योंकि वे अशिक्षित एवं अनुभवहीन थे।

***(iv)* पार्लियामेन्ट का दोष :** पार्लियामेन्ट तथा राजाओं के बीच मतभेद था। पार्लियामेन्ट कैथोलिक राज्यों से युद्ध करना चाहती थी, परन्तु जब युद्ध शुरू हुआ तब उसने राजाओं को आर्थिक सहायता देने से इंकार कर दिया और इसके विपरीत वह राजाओं से ऐसी मांगें करने लगे जिन्हें पूरा करना राजाओं के लिए संभव नहीं था।

नोट

(v) राजाओं का चरित्र : वैदेशिक नीति की असफलता में राजाओं का चरित्र विशेष रूप से उत्तरदायी है। जेम्स की नीति अनिश्चित तथा भीरु और चार्ल्स की नीति कुटिल और परस्पर-विरोधी थी। उनमें समय की गति पहचानने की शक्ति नहीं थी और वे सत्रहवीं सदी में सोलहवीं सदी के जैसा शासन करना चाहते थे। वे देश की लोकसभा की राय के विरुद्ध कार्य करने की कोशिश करते थे। चार्ल्स के विषय में राजदूत ने कहा था कि "एक हाथ से आप उतनी ही शीघ्रता से नष्ट करते हैं जितनी शीघ्रता से दूसरे हाथ से निर्माण।" एक लेखक का कहना है कि "इंग्लैण्ड के लिए यह बड़े दुर्भाग्य की बात थी कि चार्ल्स स्टुअर्ट जैसा शासक उसे उस समय प्राप्त हुआ जिस समय एक बुद्धिमान और दृढ़ शासक की आवश्यकता थी।"

2. महान एवं प्रशंसनीय नीति : 17वीं सदी के पूर्वार्द्ध में इंग्लैण्ड की वैदेशिक नीति रही थी। एक तरह से देखा जाए तो चार्ल्स तथा जेम्स दोनों की ही नीतियाँ अच्छी भी थीं। खासकर देखा जाए तो जेम्स की नीतियाँ चार्ल्स की नीतियों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण एवं प्रशंसनीय थी। युद्ध, मारकाट, लूटमार के युग में वह शांति और सुरक्षा का राज्य स्थापित करना चाहता था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने जी-जान से कोशिश भी की। विरोध या बदनामी की उसने तनिक भी परवाह नहीं की। शान्ति के नाम पर वह सब कुछ करने को तैयार था। इसीलिए उसने रैले जैसे प्रसिद्ध योद्धा को फांसी दे दी और अपने प्रिय दामाद फ्रेडरिक को आपत्तिकाल में सहायता नहीं दी। इस प्रकार वह इंग्लैण्ड को यूरोप के राज्यों के बीच नेता बनाना चाहता था।

चार्ल्स की नीति भी सदा खराब ही नहीं रही। पार्लियामेन्ट के विचार के अनुसार ही उसने स्पेन के विरुद्ध युद्ध आरंभ किया था और फ्रेडरिक तथा प्रोटेस्टेंटों की सहायता के लिए डेनिश राजा को धन देने की प्रतिज्ञा की थी। वह कैथोलिकों को सुविधा तथा फ्रांस को जहाज भी नहीं देना चाहता था।

3. असफल नीति का परिणाम : वैदेशिक नीति असफल हुई जिसके कई बुरे परिणाम निकले–

(i) फ्रांस की प्रतिष्ठा में वृद्धि : यूरोप में फ्रांस की धाक बहुत बढ़ गई। 30 वर्षीय युद्ध में भाग लेने से इसकी सैन्य-शक्ति का प्रचार हो गया और इसे कुछ प्रदेश भी प्राप्त हुए। फ्रांस की शक्ति बढ़ने से यूरोप के राज्यों के लिए भारी खतरा उपस्थित हो गया और शक्ति-संतुलन (Balance of Power) में बड़ी गड़बड़ी पैदा हो गई।

(ii) इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा पर धब्बा : ट्यूडर राजाओं के समय में इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई थी और ऐलिजाबेथ के समय में वह अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई। यूरोप की सभी शक्तियों में इंग्लैण्ड सिरमौर समझा जाता था, परन्तु जेम्स प्रथम और चार्ल्स के समय में वह प्रतिष्ठा लुप्त हो गई। वैदेशिक मामलों में इंग्लैण्ड का स्थान गिरता चला गया।

(iii) शासन पर प्रभाव : राजाओं की आर्थिक कठिनाई बहुत बढ़ गई। धन पार्लियामेन्ट से ही प्राप्त हो सकता था। अत: राजाओं को बार-बार पार्लियामेन्ट बुलानी पड़ती थी, परन्तु युद्ध में सफलता नहीं होने से पार्लियामेन्ट शासन क्षेत्र में दखल देने लगी। रुपया मंजूर करने से पहले वह सुधारों की मांग करने लगी और मंत्रियों की नियुक्ति में राय देने के लिए दावा करने लगी।

(iv) पार्लियामेन्ट से मनमुटाव : वैदेशिक नीति से यह स्पष्ट हो गया कि जेम्स और चार्ल्स दोनों ही कैथोलिकों से सहानुभूति रखते थे। स्पेन जैसे कैथोलिक-प्रधान देश से जेम्स वैवाहिक संबंध स्थापित करने के लिए लालायित था और चार्ल्स ने तो फ्रांसीसी राजकुमारी, जो कैथोलिक थी, से अपना विवाह किया। राजाओं का कैथोलिकों के प्रति यह झुकाव पार्लियामेन्ट के साथ मनमुटाव का एक प्रधान कारण बन गया था।

सारांश

- जेम्स प्रथम का जन्म 1566 ई. को हुआ था। वह उच्च दर्जे का विद्वान तथा विद्याव्यसनी था। वह ब्रह्मविद्या, धर्मशास्त्र, इतिहास आदि कई विषयों का अच्छा जानकार था।
- चार्ल्स प्रथम जेम्स प्रथम का पुत्र था। वह कला और साहित्य का शौकीन था तथा अपने परिवार से बहुत प्रेम करता था।

नोट

- जेम्स प्रथम का इंग्लैण्ड के इतिहास में विशेष महत्त्व है। उसने तीनों द्वीपों के संयोग का बीजारोपण किया था। उसके समय में राजा और पार्लियामेन्ट के बीच संघर्ष चलता रहता था। उसने 17वीं सदी में साम्राज्य और व्यापार में उन्नति की थी।
- जेम्स प्रथम के मंत्रियों की भी अपनी अलग पहचान थी। लार्ड सेलिसबरी (1603–12 ई.) 9 वर्षों तक मंत्री के पद पर कायम रहा। उसने शांति की नीति अपनाई थी। दूसरा था फ्रांसीसी बेकज (1561–1626 ई.) तक मंत्री था। उसने राजा को प्रजा की हालत से और प्रजा को राजा की हालत से परिचित रखा।
- उस समय इंग्लैण्ड के कई धार्मिक दल मशहूर थे–कैथोलिक दल, प्रोटेस्टेंट, ऐंग्लिकन शाखा प्यूरिटन शाखा इत्यादि।
- सबसे प्रसिद्ध प्लॉट था गनपाउडर प्लॉट। इस गन पाउडर प्लॉट का मुख्य उद्देश्य जेम्स को मारना तथा उसके स्थान पर चार्ल्स को बिठा कर कैथोलिकों की सरकार को कायम करना था जिसके लिए उन्होंने बहुत बड़ा षड्यंत्र रचा परन्तु यह षड्यंत्र सफल नहीं हो सका।
- फिर 1603–1649 ई. तक इंग्लैण्ड में जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम की वैदेशिक नीति कायम रही। इस बीच स्पेन के साथ संधि की गई। इस काल का सबसे बड़ा मुद्दा था चार्ल्स का विवाह। चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से होने वाला था परन्तु कुछ कारणवश उसका विवाह फ्रांस की राजकुमारी के साथ सम्पन्न हुआ जिसके कारण स्पेन और इंग्लैण्ड एक-दूसरे के दुश्मन बन गये। फ्रांस अब रिश्तेदार हो चुका था जिस कारण वह चार्ल्स पर कैथोलिकों के लिए सुविधाएँ दिलवाने के लिए बेबुनियाद मांगे करता था, जिस कारण फ्रांस और इंग्लैण्ड के बीच भी युद्ध हो गया। इंग्लैण्ड का अन्य राष्ट्रों के साथ 30 वर्षों तक युद्ध होता रहा।
- जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम की वैदेशिक नीति जो 30 वर्षीय युद्ध के लिए अपनाई गई थी वह कई कारणों से असफल रही तथा उस असफलता की कड़ी निंदा भी गई। जिसके कई परिणाम भी निकले। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इतनी सारी योग्यता, कुशलता एवं बुद्धि होने के बाद भी जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम की नीतियाँ सफल नहीं हो सकीं।

अभ्यास-प्रश्न

1. जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम के जीवन-चरित्र का वर्णन गुण व दोष के साथ कीजिए।
2. जेम्स प्रथम के राज्यकाल का महत्त्व बताइए।
3. जेम्स प्रथम के समय के धार्मिक दलों तथा उनके साथ जेम्स प्रथम के संबंधों की विवेचना कीजिए।
4. कैथोलिकों द्वारा जेम्स प्रथम के विरुद्ध किए गए षड्यंत्र पर निबंध लिखिए।
5. चार्ल्स द्वारा बनाई गई विवाह संबंध योजना के बारे में विस्तार से बताइए।
6. यूरोप में हुए 30 वर्षीय युद्ध का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*
2. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
3. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
4. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
5. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
6. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*
7. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*

इकाई–8

स्टुअर्ट वंश के समय की महान क्रान्ति एवं पुनर्स्थापना युग (Great Revolution during Stuart Dynasty and Re-establishment Age)

संरचना (Structure)

8.1 उद्देश्य
8.2 प्रस्तावना
8.3 जेम्स द्वितीय (1685–1688 ई.)
8.4 महान क्रान्ति के कारण
8.5 क्रान्ति के लक्षण, महत्त्व तथा प्रभाव
8.6 1688–89 ई. की अंग्रेजी क्रान्ति का स्वरूप
8.7 पुनर्स्थापना–युग की वैदेशिक नीति
- सारांश
- अभ्यास–प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

8.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- जेम्स द्वितीय के चरित्र को समझने में।
- इंग्लैण्ड में हुई महान क्रान्ति को समझने में।
- विलियम ऑफ औरेंज के इंग्लैण्ड के राजा बनने के कारण को समझने में।

8.2 प्रस्तावना

जेम्स द्वितीय, जेम्स प्रथम का छोटा पुत्र था। अपने बड़े भाई चार्ल्स प्रथम की मृत्यु के बाद जेम्स द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक नहीं था और न ही वह एक जिम्मेदार राजा सिद्ध हो पाया। उसके चरित्र में गुण से ज्यादा दोष थे और न ही वह एक दूरदर्शी राजा था। जिस समय वह राजगद्दी पर बैठा वह समय शासन करने के लिए सर्वथा उचित समय था पर वह इस उपयुक्त समय का लाभ नहीं उठा पाया और इस कारण वह केवल 4 वर्ष तक ही शासन कर पाया। उसके समय में जो महान क्रान्ति हुई इस क्रान्ति का बीजारोपण तो जेम्स

प्रथम के समय में ही हो गया था परन्तु जेम्स द्वितीय के समय में यह क्रान्ति पूर्ण रूप लेकर पूरे इंग्लैण्ड में फैल गई। इसी क्रान्ति के कारण जेम्स को अपने पुत्र को लेकर इंग्लैण्ड छोड़कर भागना पड़ा जिसके कारण विलियम इंग्लैण्ड का राजा बन पाया। इस महान क्रान्ति के कई कारण थे जैसे–असाधारण न्यायालय की स्थापना तथा चर्च पर हमला। इसके अतिरिक्त और भी कई कारण थे। इस क्रान्ति का इंग्लैण्ड की घरेलू तथा वैदेशिक नीति पर बहुत प्रभाव पड़ा। इस क्रान्ति के विषय में उस समय में दो तरह की राय लोग दे रहे थे– कुछ लोग रूढ़िवादी राय दे रहे थे और कुछ लोग उदारवादी राय दे रहे थे। जिसका वर्णन आप अध्याय में पढ़ेंगे। आगे आप पुनर्स्थापन-युग की वैदेशिक क्रान्ति के विषय में पढ़ेंगे। जिसमें आप दूसरे चार्ल्स और दूसरे जेम्स की कुछ नीतियों के बारे में जान पायेंगे।

8.3 जेम्स द्वितीय (1685-1688 ई.)

1. जेम्स द्वितीय का चरित्र : अपने बड़े भाई चार्ल्स की मृत्यु होने के बाद जेम्स-द्वितीय को गद्दी मिली। जब उसका राज्याभिषेक हुआ तब उसकी उम्र 52 वर्ष की थी। उसने 1685 से 1688 ई. तक शासन किया। जेम्स द्वितीय एक वीर सैनिक तथा कुशल नाविक था। चार्ल्स के राज्यकाल में ही उसने स्थल और जल दोनों ही युद्ध में अपनी कुशलता का परिचय दिया था एवं फ्रांसीसियों ने भी उसकी कुशलता की प्रशंसा की थी। जेम्स द्वितीय एक सच्चा, साहसी और सावधान पुरुष था, परन्तु उसमें गुणों की अपेक्षा त्रुटियाँ अधिक थीं। वह कुशल तथा व्यावहारिक राजनीतिज्ञ नहीं था। वह अपने भाई चार्ल्स प्रथम के जैसा जिद्दी और अदूरदर्शी था। वह दूसरों के द्वारा किए गए उपकारों की कद्र नहीं करता था। वह एक कठोर हृदय वाला व्यक्ति था जो दूसरे को क्षमा नहीं करता था। वह अपने शुभचिन्तकों को याद नहीं करता था और दुश्मनों को कभी भूलता भी नहीं था। 'अति सर्वत्र वर्जयेत' के सिद्धांत से वह पूर्ण अपरिचित था और विरोधियों को विधर्मी मानता था। राजनैतिक दृष्टि से वह एक कठोर स्वेच्छाचारी शासक था। वह फ्रांसीसी प्रथा का पक्ष लेता था, परन्तु वह यह नहीं समझता था कि उसकी प्रजा उस प्रथा से घृणा करती थी। उसने लुई के द्वारा नैन्टीज के नियम का खण्डन स्वीकार किया, परन्तु उसकी प्रजा ने प्रोटेस्टेंट शरणार्थियों का अपने देश में स्वागत किया। वह अपने देश में कैथोलिक धर्म तथा निरंकुश शासन की स्थापना करना चाहता था। वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति हर शर्त पर करना चाहता था चाहे इसके लिए उसे देश के स्थापित नियम तथा धर्म की उपेक्षा करनी पड़े या लोकमत को ठुकराना पड़े। उसका भाई चार्ल्स उससे अधिक दूरदर्शी, नम्र तथा समझदार था। चार्ल्स ने जो कार्य गुप्त नीति के द्वारा किए जेम्स द्वितीय ने उसे खुलेआम किया। इस प्रकार अपने ऊपर आए संकटों के लिए जेम्स स्वयं बहुत हद तक उत्तरदायी था। जब जेम्स द्वितीय ने गद्दी संभाली उस समय परिस्थितियाँ उसका साथ दे रही थीं, सफल शासन की स्थापना करने के लिए सुअवसर थे परन्तु उसकी व्यक्तिगत कमियों के कारण सुअवसर हाथ से निकल गया और परिस्थितियाँ विषम हो गईं। इसलिए जहाँ उसके पूर्वाधिकारी चार्ल्स-द्वितीय ने पच्चीस वर्ष तक शासन कर अपनी शक्ति पहले से भी अधिक संगठित कर ली, वहाँ जेम्स के शासन का चार वर्ष में ही अचानक अंत हो गया।

संक्षेप में, दूसरे जेम्स ने अनेक भूलें कीं। उसने उचित ढंग से अपने विवेक का उपयोग नहीं किया। वह घातक रूप से प्रतिक्रियावादी हो गया। नग्न वास्तविकता को देखते हुए भी वह निष्कपट नहीं बन सका। वह बिना विचारे बर्बादी की ओर बढ़ने लगा।

2. *राज्याभिषेक के समय हालात :* *जब जेम्स का राज्याभिषेक हुआ था उस समय के हालात शान्तिपूर्ण* थे। उसके लिए स्थिति लाभदायक थी और वैसी स्थिति उसके किसी पूर्वज को प्राप्त नहीं हुई थी। उसके राज्य काल का शुरुआती भाग चार्ल्स-द्वितीय के राज्य काल के अन्तिम भाग का ही विस्तार था। अपने शासन के अन्तिम चार वर्षों में चार्ल्स ने अपने मनमुताबिक शासन स्थापित कर लिया था और राजा के पक्ष में प्रतिक्रिया चल रही थी। बिशप और अंग्रेजी चर्च के पादरी निर्विरोध आज्ञाकारिता के सिद्धांत का प्रचार कर रहे थे। टोरी दल वाले भी उसके सहायक थे। हाई चर्च पार्टी और टोरी के सहयोग से ही चार्ल्स को गद्दी प्राप्त हो सकी थी। पार्लियामेन्ट की सहानुभूति भी उसे प्राप्त थी। इसने जितनी आमदनी की सम्पत्ति चार्ल्स-द्वितीय के लिए मंजूर की थी, उतनी संपत्ति और उसके अलावा भी इसने जेम्स के लिए मंजूर की। जेम्स के अधिकार में एक सेना भी आ गई थी। कैथोलिकों के षड्यंत्र

के विरोधियों को कड़ी सजा दी गई थी और स्कॉटलैण्ड से कोई विरोध नहीं था। जेम्स के कैथोलिक होने के कारण आयरिश राजभक्त ही थे। यूरोप का एक महान सम्राट फ्रांस का लुई-चतुर्दश भी जेम्स का सहायक ही था। उसे केवल दो विद्रोहों का सामना करना पड़ा था लेकिन वे साधारण दर्जे के विद्रोह थे और सुगमता तथा सफलतापूर्वक दबा दिये गये थे।

3. आर्जिल का विद्रोह : आर्जिल प्रेस्बिटेरियनों का एक नेता था जो हॉलैण्ड में रहता था। जब कैथोलिक जेम्स गद्दी पर बैठा तब आर्जिल वापस लौट आया और स्कॉटलैण्ड में मन्मथ के पक्ष में वह विद्रोह कराने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसकी सैनिक-शक्ति कमजोर थी और उसे पूरी सहायता न मिल सकी। अन्त में वह पकड़ा गया और उसे राजद्रोही घोषित कर फांसी दे दी गई।

4. मन्मथ का विद्रोह : मन्मथ ने स्वयं भी विद्रोह किया। उसने अपने को चार्ल्स-द्वितीय का जायज पुत्र तथा गद्दी का उचित हकदार घोषित किया। कुछ लोगों ने उसका समर्थन भी किया और उसने रेजमूर में राजा की सेना पर अचानक चढ़ाई कर दी, लेकिन सामने एक गढ़ मिलने के कारण उसे सफलता न मिली। मन्मथ को पकड़ लिया गया और उसे पकड़कर उसकी हत्या करवा दी गई। इन सभी विद्रोहियों को सजा देने के लिए और उन पर सुनवाई करने के लिए एक न्यायालय की स्थापना की गई। जेफ्रे को इस न्यायालय का जज नियुक्त किया गया। जेफ्रे एक निर्दयी तथा खुशामदी पुरुष था। वह अपनी कठोरता के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध होने लगा। इस समय स्त्रियों के साथ बहुत अमानुषिक व्यवहार होने लगा था। 300 व्यक्तियों को प्राणदण्ड दिया गया, 800 से अधिक व्यक्ति देश-निर्वासित कर दिये गये और उनमें से कितने गुलाम के रूप में बेच दिये गये और बहुतों के शरीर पर कोड़े लगाये गये। इस भयंकर कठोरता के कारण ही यह न्यायालय 'खूनी न्यायालय' कहा जाने लगा।

8.4 महान क्रान्ति के कारण

1. असाधारण न्यायालय की स्थापना : लम्बी पार्लियामेन्ट ने असाधारण न्यायालय को सन् 1641 में अवैध घोषित कर दिया था, पुनर्स्थापन-काल की असाधारण पार्लियामेन्ट ने भी 1661 ई. में इसे दृढ़ कर दिया। फिर भी जेम्स ने अपनी नीति को कार्यान्वित करने के लिए एक नया हाई कमीशन कोर्ट स्थापित किया। इसमें सात बिशप नियुक्त किये गये थे और जेफ्रे इसका प्रधान था।

2. चर्च पर हमला : चर्च पर भी यथाक्रम आक्रमण शुरू हो गये। चर्च पर नियंत्रण रखने के लिए हाई कमीशन कोर्ट का निर्माण हो चुका था। जेम्स ने कैथोलिक धर्म की समालोचना करना भी मना कर दिया था। लन्दन के एक पादरी डॉ. शार्प ने इस आज्ञा का पालन नहीं किया अतः उसे हटा देने के लिए बिशप को आज्ञा दी गई और वैसा न करने के कारण बिशप ही हटा दिया गया।

3. धार्मिक अनुग्रह की दूसरी घोषणा तथा 7 पादरियों का विद्रोह : 1688 ई. में परिस्थितियाँ नाजुक स्थिति की ओर पहुँच गईं जिसने क्रान्ति की आग को और भड़का दिया। मई महीने में जेम्स ने धार्मिक अनुग्रह की दूसरी घोषणा प्रकाशित की और गिरजाघरों में इसे पढ़ने की आज्ञा दी।

कैन्टबरी के बड़े पादरी सैक्रोफ्ट के नेतृत्व में 6 पादरियों ने एक प्रार्थना-पत्र तैयार कर जेम्स के यहाँ पेश किया। इस प्रार्थना-पत्र में यह निवेदन किया गया कि इस घोषणा को गिरजाघरों में पढ़ने की आज्ञा नहीं दी जाये। जेम्स ने इसे अपनी मानहानि समझा और उन लोगों पर विद्रोह के लिए अभियोग लगा दिया। मुकदमे की सुनवाई होने लगी, लेकिन सातों पादरी निर्दोष साबित हुए और 30 जून को वे मुक्त कर दिये गये। उस दिन सारे राष्ट्र ने असीम आनंद का अनुभव किया—सैनिकों तथा डिजेंटरों ने भी उस आनंदोत्सव में भाग लिया।

4. परीक्षा-नियम को रद्द करने की कोशिश : जेम्स कैथोलिकों के पक्ष में परीक्षा (टेस्ट) नियम हटाना चाहता था। इसके लिए उसने पार्लियामेन्ट को आज्ञा दी, लेकिन पार्लियामेन्ट ने अस्वीकार कर दिया। इस पर जेम्स ने उसकी बैठक ही स्थगित कर दी और उसके राज्य-काल में पार्लियामेन्ट की फिर बैठक नहीं हो पायी। अब उसने अपने विशेषाधिकारों का उपयोग शुरू किया। वह किसी कानून को स्थगित करने या उससे किसी व्यक्ति को मुक्त

करने का अपना अधिकार समझता था। यह राजा का निलम्बन विमोचन (सस्पेंडिंग तथा डिस्पेंडिंग) अधिकार कहलाता है। इसके अनुसार उसने परीक्षा-नियम आदि कठोर कानूनों से कैथोलिकों को मुक्त कर दिया। जजों से अपने पक्ष में उसने एक घोषणा भी करा ली और विरोधी जज पदच्युत कर दिये गये। अब वह राज्य तथा सेना में अधिक-से-अधिक कैथोलिकों को नियुक्त करने लगा। उसने अपने सहायक मंत्रियों तक को छोड़ दिया। हैलीफैक्स नाम का एक नरम शासक तथा रौचेस्टर नाम का एक हाई चर्चमैन दोनों पदच्युत कर दिये गये और उनकी जगह पर संडरलैण्ड नामक एक कैथोलिक नियुक्त कर दिया गया। हाल ही में इसने अपना धर्म-परिवर्तन किया था। स्ट्रिकलैण्ड को नौसेना का सेनापति नियुक्त किया गया।

5. गैरकानूनी कर वसूलना : जेम्स ने यह आदेश जारी कर दिया कि पहले जिस प्रकार कर वसूल किया जाता था उसी प्रकार अब भी वसूल किया जाए। यह आदेश उचित नहीं था क्योंकि इन करों की निश्चित अवधि दूसरे चार्ल्स की मृत्यु के साथ ही खत्म हो गई थी।

6. स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड : जेम्स के निरंकुश शासन से स्कॉटलैण्ड और आयरलैण्ड भी खुद को बचा न सके। इन देशों में भी कैथोलिकों को बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किया जाने लगा। टिस्कोनेल नाम के एक कट्टर कैथोलिक को आयरलैण्ड का वायसराय नियुक्त कर दिया गया और आयरिश सेना को बलपूर्वक हटा दिया गया।

7. विश्वविद्यालयों पर आक्रमण : विश्वविद्यालयों में ऐंग्लिकन चर्च का बड़ा प्रभाव था। अतः जेम्स का ध्यान इधर भी आकर्षित हुआ। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति ने एक पादरी को आवश्यक परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होने के कारण एम.ए. की उपाधि नहीं दी अतः उसे पद से हटा दिया गया। मैसी नामक एक कैथोलिक को क्राइस्ट चर्च का डीन मनोनीत किया गया।

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में सबसे प्रसिद्ध मैग्डेलन कॉलेज के प्रोटेस्टेंट सदस्य के स्थान पर कैथोलिक सदस्य को नियुक्त किया गया। देश के लोगों में जेम्स के इन कार्यों को देखकर असंतोष व क्षोभ फैल रहा था, लेकिन जेम्स में समय एवं जनता की नाड़ी परखने की शक्ति नहीं थी। वह अपने कदमों को आगे बढ़ाता ही गया जब तक कि वह स्वयं गहरी खाई में न गिर पड़ा।

8. धार्मिक अनुग्रह की घोषणा (1687 ई.) (डिक्लेरेशन ऑफ इंडल्जेन्स) : जेम्स ने प्रोटेस्टेंट डिजेंटरों की सहानुभूति प्राप्त करने की चेष्टा की। इसलिए अपने विशेषाधिकार के आधार पर उसने 1687 ई. में धार्मिक अनुग्रह की घोषणा प्रकाशित की। इसमें प्रोटेस्टेंट डिजेंटरों के विरुद्ध चालू कठोर नियमों को स्थगित कर दिया गया।

9. स्थायी सेना में वृद्धि : सुगम सफलता और आशाजनक परिस्थिति से उत्साहित होकर जेम्स अपने उद्देश्यों को पूरा करने की कोशिश करने लगा। उसके दो प्रधान उद्देश्य थे—(क) इंग्लैण्ड में स्वेच्छाचारी शासन की स्थापना। (ख) कैथोलिक धर्म का प्रचार।

इसका मतलब था देश के मौलिक नियम, जनता की आजादी और स्थापित चर्च की स्थिति पर भीषण खतरा। सर्वप्रथम जेम्स ने अपनी सैनिक शक्ति दृढ़ की। स्थायी सेना में सैनिकों की संख्या बढ़ाकर 30 हजार तक कर दी गई। इसमें कैथोलिक भी नियुक्त होने लगे। स्थायी सेना को पार्लियामेन्ट पसंद नहीं करता था। अतः सेना पर होने वाले खर्चे के लिए धन देने में पार्लियामेन्ट आनाकानी करने लगा। इस बात से जेम्स नाराज होने लगा।

10. हिंसाजनित आतंक : जेम्स की हिंसात्मक तरीकों के कारण राष्ट्र में आतंक-सा फैलने लगा, जनता भयभीत और सशंकित होने लगी। अतः संतोष तथा भक्ति की जगह असंतोष तथा घृणा पैदा होने लगी।

11. फ्रांस से गहरी दोस्ती : धन और सेना प्राप्त करने के उद्देश्य से फ्रांस के साथ मित्रता दृढ़तर हो गई। यूरोप में लुई-चतुर्दश की अधीनता में फ्रांस स्वेच्छाचारी शासन का एक नमूना था। वहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाम नहीं था। राजा ही स्टेट था। 1629 ई. में हेनरी चतुर्थ ने फ्रांसीसी प्रोटेस्टेंटों को मैन्टीज के नियम के द्वारा कुछ स्वतंत्रता दी थी, लेकिन 1685 ई. में लुई ने इसे रद्द कर दिया और प्रोटेस्टेंटों के साथ बड़ा अत्याचार किया। अतः अंग्रेजी जनता फ्रांस से मित्रता के कारण और भी भयभीत हो गई।

12. पुत्र-जन्म : इन सब परिस्थितियों के बीच जेम्स की दूसरी पत्नी से पुत्र का जन्म हुआ। अब तक तो लोग जेम्स के अत्याचारों को धैर्य तथा संतोषपूर्वक सह रहे थे। उन्हें यह आशा थी कि कुछ दिनों तक ही उन्हें यह सब सहना पड़ेगा क्योंकि जेम्स का कोई पुत्र नहीं था और उसके मरने के बाद गद्दी उसकी पुत्री मेरी को मिलेगी। मेरी और उसका पति विलियम ऑफ औरेंज कट्टर प्रोटेस्टेंट थे लेकिन पुत्र के जन्म से उनकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया। अब वे यह सोचने लगे कि इस पुत्र को कैथोलिक शिक्षा दी जायेगी और यह कैथोलिक शासन स्थापित करेगा। बहुत से लोगों को यह भी शंका थी कि वह किसी दूसरे का पुत्र है। अब लोगों के दिल में निराशा और भय उत्पन्न हो गया और उसके सामने क्रान्ति के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं रहा।

संसद की दृष्टि से दूसरे जेम्स ने अपनी नीतियों और कार्यों से 'राज्य के संविधान को पलटने' का प्रयास किया और 'मौलिक कानूनों का उल्लंघन' किया।

क्रान्ति की प्रगति

अतः 30 जून को ही, पादरियों के मुक्ति-दिवस के अवसर पर, भिन्न-भिन्न मत के सात प्रमुख व्यक्तियों ने इंग्लैण्ड में आने के लिए विलियम को निमंत्रित किया। उनमें ह्विग और टोरी दल के प्रतिनिधि भी शामिल थे। निमंत्रण का यही उद्देश्य था कि विलियम एक सेना के साथ इंग्लैण्ड आये, वहाँ का राजा बने और जनता के धर्म तथा आजादी की रक्षा करे। जल और स्थल सैनिक अफसरों ने भी विलियम को सहायता देने की प्रतिज्ञा की। विलियम को एक स्वर्ण अवसर प्राप्त हो गया, उसे मुँहमांगा दान मिल गया। वह लुई-चतुर्दश के विरुद्ध एक गुट स्थापित करने में लगा था और उसमें अंग्रेजों का सहयोग भी अत्यावश्यक समझता था। इसी समय जर्मनी पर हमला करने के लिए लुई ने नीदरलैण्ड की सीमा से अपनी सेना वापस बुला ली। अतः विलियम को अब फ्रांस से कोई भय न रहा। अतः उसने अंग्रेजों के निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

विलियम सन् 1688 के नवम्बर में एक बड़ी सेना के साथ, निर्विरोध इंग्लैण्ड में पहुँचा। यह 15000 सैनिकों की सबसे बड़ी पेशेवर सेना थी। जिसका रोमनों के बाद इंग्लैण्ड में प्रवेश हुआ था। इस सेना में अंग्रेज, डच, स्कॉट, स्वीड तथा जर्मन शामिल थे। सर्वसाधारण, नेता तथा अफसर सबों का सहयोग विलियम को प्राप्त हुआ। किसी ने भी अभागे जेम्स का साथ नहीं दिया। उसकी छोटी पुत्री एन (प्रोटेस्टेंट) ने भी उसका परित्याग कर दिया और यार्कशायर में विद्रोह का झण्डा खड़ा किया। जेम्स ने बेकार ही अपनी प्रजा को शान्त करने की कोशिश की, क्योंकि अब तो बहुत देर हो चुकी थी। उसे पकड़ लिया गया और शेचेस्टर में रख दिया गया, लेकिन ज्यादा पहरा न होने के कारण वह भागकर फ्रांस चला गया। एक कन्वेंशन पार्लियामेन्ट की बैठक हुई, उसने गद्दी को रिक्त घोषित कर मेरी तथा विलियम को संयुक्त शासक नियुक्त किया।

इसी घटना को इतिहास में 1688-89 ई. की महान या गौरवपूर्ण क्रान्ति कहते हैं।

8.5 क्रान्ति के लक्षण, महत्त्व तथा प्रभाव

इस क्रान्ति को महान व गौरवपूर्ण क्रान्ति का नाम दिया गया है। यह नाम इस क्रान्ति के लिए गलत नहीं सर्वथा उपयुक्त है। जिसे आप नीचे दिए गए पाँच कारणों के द्वारा अच्छी तरह समझ पायेंगे।

1. इस क्रान्ति में कम-से-कम हिंसा का प्रयोग हुआ और यह अधिक-से-अधिक उपयोगी साबित हुई। इसमें मारपीट, लूटपाट और खूनखराबी नहीं हुई, फिर भी राजा का परिवर्तन हो गया। राजा और पार्लियामेन्ट के बीच सत्रहवीं सदी में प्रधानता के लिए भीषण संघर्ष हो रहा था। इसका प्रारंभ जेम्स-प्रथम के राज्य-काल में ही हो गया और बड़ी पार्लियामेन्ट की बैठक के बाद से इसकी भीषणता बढ़ने लगी। क्रान्ति के द्वारा ही इस संघर्ष का अन्त हो पाया और इंग्लैण्ड से जेम्स-द्वितीय के भागने के साथ-साथ राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धांत की भी विदाई हो गयी। अब पार्लियामेन्ट राज्य में एक प्रधान अंग बन गई।

2. क्रान्ति के द्वारा जो निपटारा हुआ वह ह्विगों तथा टोरियों के सिद्धांतों का समन्वय था। क्रान्ति व्यवस्था समझौते तथा सहमति की नीति पर आधारित थी।

नोट

3. यह क्रान्ति रक्षात्मक तथा नरम प्रकृति की थी। अंग्रेज लोग स्वभाव से स्थिति पालक तथा सनातनी होते हैं, अतः इस क्रान्ति के द्वारा कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं किया गया जो परम्परा के बिलकुल विरुद्ध हो, बल्कि प्राचीन सिद्धांतों को ही दुहराया और पुष्ट किया गया।

4. यह क्रांति यूरोपीय दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। यूरोप में फ्रांस के लुई-चतुर्दश का शासन स्वेच्छाचारिता का नमूना था। यह यूरोप के लिए बहुत खतरनाक था। लुई विलियम का जानी दुश्मन था और विलियम ने लुई की शक्ति को कमजोर कर सारे यूरोप की भलाई की।

5. यह क्रान्ति विश्व-दृष्टि से भी प्रसिद्ध है। विचारों को सीमाबद्ध करना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव भी है। इस क्रान्ति के द्वारा इंग्लैण्ड में जिन विचारों का प्रादुर्भाव और प्रचार हुआ वह पूरे विश्व में फैलने लगा। प्रथम विश्व-युद्ध के समय तक शासन के क्षेत्र में इंग्लैण्ड एक नमूना का काम करता रहा और संसार के सभी प्रमुख देशों में उसके आधार पर पार्लियामेन्टरी शासन स्थापित हो चुका था।

परन्तु पूर्णरूप से इसके गौरव में कुछ कमियाँ दिखाई पड़ती हैं।

1. इंग्लैण्ड में अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए एक विदेशी शासक की शरण में जाना पड़ा जो कि एक महान राष्ट्र के लिए गौरव की बात कभी नहीं हो सकती।

2. क्रान्ति के फलस्वरूप वैदेशिक नीति में परिवर्तन हुआ, विदेशी युद्धों की बाढ़ आ गई जिसके कारण देश की आर्थिक शक्ति पर अधिक बोझ पड़ने लगा।

3. इस क्रान्ति से आयरिशों के दुर्भाग्य का अन्त नहीं हुआ, बल्कि उनकी तकलीफें और भी बढ़ गईं और उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ।

क्रान्ति के प्रभाव

घरेलू तथा वैदेशिक दोनों ही क्षेत्रों की नीति पर क्रान्ति का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

1. घरेलू स्तर पर

(क) पार्लियामेन्ट पर : इंग्लैण्ड में वैधानिक या नियमानुमोदित शासन की स्थापना हुई। उत्तराधिकार एवं धर्म पर ही नहीं बल्कि सेना और अर्थ पर भी पार्लियामेन्ट ने अपना प्रभुत्व कायम कर लिया। उसके विशेषाधिकार और वार्षिक अधिवेशन सुरक्षित हो गये। पार्लियामेन्ट ने भी कॉमन्स सभा को प्रधानता दी, क्योंकि देश के आय-व्यय पर इसी का अधिकार था। इसके अलावा मंत्रियों के उत्तरदायित्व का सिद्धांत भी स्थापित हो चुका था और इसी सभा के बहुमत दल से मंत्री नियुक्त होते थे–

इस प्रकार आधुनिक कैबिनेट प्रथा का विकास हुआ और लम्बी पार्लियामेन्ट के द्वारा आरंभ किया हुआ कार्य भी पूरा हो गया।

(ख) राजस्व कर : राजाओं के दैवी तथा पैतृक अधिकार के सिद्धांत का अन्त हो गया। इंग्लैण्ड 'राजकीय जनतंत्र' (Crowned Republic) के रूप में परिवर्तित हो गया। शाही शक्ति जनशक्ति के अधीन हो गयी। राजा को भी राज्य के किसी दूसरे अफसर की तरह जनता की इच्छानुसार पद दिया या छीना जा सकता था। अब लोकमत या लोकसभा की उपेक्षा करना सम्भव न रहा। विशेषाधिकार पर राज-नियम की विजय हुई। अब निश्चित रूप से राजसत्ता का केन्द्र राजा न होकर पार्लियामेन्ट में स्थित हो गया। वैध तथा राजनैतिक सत्ता का समन्वय स्थापित हो गया।

(ग) कुलीनों पर : कॉमन्स सभा की प्रधानता तो स्थापित हुई, लेकिन प्रजातंत्र राज्य अभी दूर था। दोनों सभाओं पर लार्डों या कुलीनों का प्रभाव था। सर्वसाधारण उनके शासन का विरोध करने या स्वयं शासन में भाग लेने के लिए तैयार नहीं थे। इसके अलावा दोषपूर्ण निर्वाचन-प्रणाली के कारण कुलीन लोग अपने उम्मीदवारों को ही पार्लियामेन्ट में भेजने में समर्थ होते थे अतः 1668 ई. से 1832 ई. तक शासन में कुलीनों का ही प्रभाव रहा।

(घ) धर्म पर : क्रान्ति के फलस्वरूप प्रोटेस्टेंट धर्म-ऐंग्लिकन चर्च की विजय हुई। राजा के उत्तराधिकार के साथ-साथ उसके धर्म पर भी पार्लियामेन्ट ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। प्रोटेस्टेंट धर्म सदा के लिए

राजधर्म घोषित कर दिया गया। दूसरे धर्मावलम्बियों के साथ सहिष्णुता की नीति अपनाई गई और उसकी सीमा पहले से अधिक विस्तृत कर दी गई।

(ङ) सर्वसाधारण पर : छापेखाने पर से नियंत्रण हटा लिया गया। न्यायविभाग कार्यकारिणी से स्वतंत्र हो गया, क्योंकि जजों की नियुक्ति, उन्नति तथा पदच्युति उनकी योग्यता तथा आचरण पर निर्धारित की जाने लगी, अधिकार-पत्र में जनता के लिए कई उपयोगी बातें थी। इस प्रकार व्यक्तिगत तथा नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा हुई।

2. वैदेशिक स्तर पर

(क) हॉलैण्ड से मित्रता : पिछले 40 वर्षों के अंदर इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड के बीच तीन युद्ध हो चुके थे। लेकिन विलियम तो हॉलैण्ड का ही एक निवासी और प्रोटेस्टेंट शासक था, अतः स्वभावतः दोनों देशों के बीच मित्रता की स्थापना हो गई।

(ख) फ्रांस से शत्रुता : चार्ल्स द्वितीय और जेम्स-द्वितीय लुई चतुर्दश के हाथ के खिलौने थे और उसी के इशारे पर नाचते थे। विलियम लुई का कट्टर दुश्मन था और फ्रांस विरोधी दल का नेता भी था। उसके आगमन से वैदेशिक नीति में खोई हुई स्वतंत्रता तथा प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त हो गई और यूरोप के राजनैतिक क्षेत्र में इंग्लैण्ड की गिनती प्रथम श्रेणी के देशों में होने लगी।

इस क्रान्ति ने इंग्लैण्ड की दशा को परिवर्तित कर दिया और उसे कुछ समय के लिए शान्त कर दिया।

8.6 1688-89 ई. की अंग्रेजी क्रान्ति का स्वरूप

अंग्रेजी क्रान्ति के स्वरूप को दो भागों में बांटा जा सकता है–(1) उदारवादी पक्ष और (2) रूढ़िवादी पक्ष।

रूढ़िवादी पक्ष में मत एवं तर्क : 1688-89 ई. की क्रान्ति के स्वरूप के संबंध में इतिहासकारों में मतभेद हैं। मैरिअट, बर्क एवं मैकाले तीन महान लेखक इस क्रान्ति को रूढ़िवादी (कन्जर्वेटिव) बतलाते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार **ट्रेवेलियन** का भी कथन है कि–"क्रान्ति का लक्ष्य परिवर्तन नहीं, बल्कि संरक्षण था।" **लार्ड ऐक्टन** का भी कहना है कि 1688 ई. की क्रान्ति क्रान्तिकारी ही नहीं, रूढ़िवादी थी। इन कथनों में सत्य का अंश पाया जाता है।

1. रक्तपात का अभाव : पहली बात यह है कि क्रान्ति में प्रायः मारकाट, खून-खराबा हुआ करता है, किन्तु 1688 ई. की अंग्रेजी क्रान्ति में कम-से-कम, यानी नाममात्र के लिए रक्तपात हुआ। दूसरा जेम्स इंग्लैण्ड छोड़कर भाग गया था। उसके पक्ष में कोई दल नहीं था। अतः विलियम तृतीय का कोई विशेष विरोध नहीं हुआ। गृहयुद्ध के अभाव में सेना शान्तिपूर्वक खड़ी रह गयी और तृतीय विलियम को गद्दी मिल गयी।

2. अल्पकाल में क्रांति की समाप्ति : कभी-कभी क्रान्ति शुरू हो जाने पर उसका अंत होने में बहुत समय लग जाता है और उसके दौरान बहुत उथल-पुथल हो जाती है। 20वीं सदी के प्रथम चरण में रूसी क्रान्ति का उदाहरण मौजूद है, क्रान्ति के चलते रूसी समाज एवं राज्य में बड़े-बड़े परिवर्तन हो गये और शान्ति-व्यवस्था कायम होने में बहुत समय लगा। 18वीं सदी के अंत में होने वाली फ्रांसीसी क्रान्ति का भी उदाहरण है। कई सालों तक क्रान्ति होती रही, हजारों लोग मारे गये और बड़े-बड़े परिवर्तन हुए लेकिन इंग्लैण्ड में 1688-89 ई. की क्रान्ति बहुत जल्द समाप्त हो गयी। तीन महीने के अंदर शान्तिपूर्ण ढंग से अंग्रेजी क्रान्ति का अंत हो गया।

3. न्यायपालिका की स्थिति में परिवर्तन नहीं : क्रान्ति के प्रारंभ में स्वतंत्र शासन के कई आवश्यक तत्वों पर जोर नहीं दिया गया। न्यायपालिका की स्थिति में भी तत्काल ही कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

4. धार्मिक समानता का अभाव : ऐंग्लिकन चर्च की प्रधानता कायम रही, प्रचलित प्रार्थना-पुस्तक में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। धार्मिक सहिष्णुता या स्वतंत्रता की तत्काल घोषणा नहीं की गई। धार्मिक समानता तो अभी बहुत दूर की बात रही। जब धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धांत की घोषणा भी हुई तो उसका क्षेत्र सीमित ही रखा गया। ऐकिकवादी तथा रोमन कैथोलिक उसके क्षेत्र से अलग रखे गए। अन्य गैर-प्रोटेस्टेंटों को भी उससे पूर्ण लाभ नहीं हुआ, क्योंकि उसके ऊपर लगाये गये धार्मिक प्रतिबंध का ही अंत हुआ, नागरिक प्रतिबंध का अभी तक अंत नहीं हुआ।

5. प्राचीनता की रक्षा : क्रान्ति के कारण किसी तरह की कोई उथल-पुथल नहीं हो रही थी। वहीं दूसरी ओर जेम्स द्वितीय सर्वमान्य संविधान में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने की कोशिश कर रहा था। वह देश के कानून एवं धर्म को बदलना चाहता था। वह अपने कार्यों के द्वारा देश के प्राचीन सिद्धांतों, संस्थाओं एवं परम्पराओं पर कुठाराघात कर रहा था। क्रान्ति के द्वारा जेम्स द्वितीय को ऐसा करने से रोका गया। उसे पुराने कानूनों एवं मान्यताओं की रक्षा करने के लिए ही कहा गया और इसे उसने सहर्ष स्वीकार भी कर लिया।

6. संविधान की अविच्छिन्नता : कोई नवीन संविधान नहीं बनाया गया। गणतंत्र की कोई चर्चा भी नहीं की गई। संविधान में राजा को आवश्यक अंग मान लिया था। सैद्धांतिक या कानूनी तौर पर उसके वैध अधिकारों में न तो कोई कमी हुई और न ही पार्लियामेन्ट के अधिकारों में वृद्धि हुई। संविधान की अविच्छिन्नता कायम रही। ट्रेवेलियम का तो मत है कि 1689 ई. के बाद इंग्लैण्ड के कानून एवं संस्थाओं में क्रान्ति के कारण अवनति के चिह्न उजागर होने लगे। अवनति के चिह्न केन्द्रीय तथा स्थानीय दोनों ही क्षेत्रों में दिखाई दे रहे थे। मताधिकार एवं प्रतिनिधित्व प्रणालियों में 1832 ई. तक कोई सुधार नहीं हुआ। स्थानीय क्षेत्रों में भ्रष्ट शान्ति-रक्षकों का बोलबाला रहा। देश के कानूनों में दीर्घकाल तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ। प्रजातंत्र की स्थापना तो दूर ही रही, कुलीनतंत्र को ही प्रोत्साहन मिला। लार्ड तथा कॉमन्स दोनों ही सभाओं में धनी भूमिपतियों की ही प्रधानता रही। नगर संघों (कार्पोरेशन) और विश्वविद्यालयों में भी लगभग 150 वर्षों तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ। मैरियट के मतानुसार भी वह क्रान्ति का अभिजात वर्ग था।

7. क्रान्ति (व्यवस्था समझौता के रूप में) : लार्ड ऐक्टन का कहना है कि "भविष्य टोरियों के हाथ में है या ह्विगों के—यह निर्णय करने के लिए कुछ भी नहीं किया गया। असल में क्रान्ति में जिन लोगों—टोरी या ह्विग—ने भाग लिया था, उनमें अनुदारवादियों की ही प्रधानता थी। क्रान्ति-व्यवस्था में टोरी तथा ह्विग दोनों के सिद्धांतों में समन्वय स्थापित किया गया था। इसके अलावा राजा तथा पार्लियामेन्ट के बीच भी संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न किया गया। अत: क्रान्ति-व्यवस्था एक समझौते के रूप में थी।"

यह भी याद रहे कि टोरियों का दृष्टिकोण रूढ़िवादी ही था। उन्हीं को खुश करने के लिए राजपद (क्राउन) के संबंध में ऐसी घोषणा हुई थी कि दूसरे जेम्स ने अपनी इच्छा से राजगद्दी को छोड़ा है, प्रजा के बाध्य करने से नहीं। टोरी, प्रजा के अविरोध में विश्वास करते थे और उक्त घोषणा से इस सिद्धांत की रक्षा होती थी।

उपर्युक्त कारणों से स्पष्ट है कि उक्त क्रान्ति का सर्वसाधारण पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। जनता यह नहीं समझती थी कि देश में कोई बहुत बड़ी क्रान्ति हुई है।

उदारवादी पक्ष में मत एवं तर्क : ऐसा समझना बिलकुल भी ठीक नहीं होगा कि अंग्रेजी क्रान्ति पूरी तरह से रूढ़िवादी था अपितु इस क्रान्ति में उदारवादीपन भी दिखाई देता था। इस क्रान्ति को यदि रूढ़िवादी का नाम दिया जा सकता है तो इसे उदारवादी क्रान्ति का नाम भी दिया जा सकता है। अत: सत्य रूप से कहा जा सकता है कि अंग्रेजी क्रान्ति रूढ़िवादी एवं उदारवादी दोनों ही प्रकार की थी। **ट्रेवेलियन** के अनुसार, "इतिहास की समस्त क्रान्तियाँ बहुत रूढ़िवादी होते हुए भी 1688-89 ई. की क्रान्ति बहुत ही उदारवादी भी थी।"

1. दैवी एवं वंशानुगत सिद्धांतों का अंत : 1688-89 ई. की क्रान्ति के द्वारा इंग्लैण्ड की शासन व्यवस्था में महान परिवर्तन भी लाये गये। इससे राजा और पार्लियामेन्ट के बीच नया संबंध निर्धारित हुआ। यह घोषित किया गया था कि जेम्स द्वितीय ने संविदा की शर्तों और प्रजा के मौलिक अधिकारों की उपेक्षा करने की कोशिश की थी। अत: उसे राजगद्दी छोड़नी पड़ी। विलियम तृतीय को न तो ईश्वर की कृपा से गद्दी मिली और न वंशानुगत अधिकार से। उसे गद्दी मिली थी पार्लियामेन्ट की कृपा से। अत: अब दैवी वंशानुगत अधिकारों का अंत हो गया। अब स्पष्ट हो गया कि इंग्लैण्ड का राजा वही हो सकता था जिसे पार्लियामेन्ट राजा स्वीकार कर सकती थी।

2. संविदा-संबंधी सिद्धांत : विलियम तृतीय को गद्दी पर बैठने के पहले कुछ शर्तें भी माननी पड़ी थीं। उन शर्तों का उल्लेख अधिकार-विधेयक (बिल ऑफ राइट्स) में हुआ था। पिछले लगभग 100 वर्षों में पार्लियामेन्ट की जो अभिलाषाएँ थीं, उन्हीं की पूर्ति अधिकार-विधेयक में हुई थी। 17वीं सदी के आरंभ से प्रधानता के लिए राजा और पार्लियामेन्ट में संघर्ष शुरू हुआ था। इस क्रान्ति के द्वारा पार्लियामेन्ट के पक्ष में निर्णय हो गया। इसीलिए

अब गद्दी पर बैठे रहने के लिए राजा के लिए सद्व्यवहार एवं कर्तव्य पालन आवश्यक हो गये। अब राज्य की स्थापना संविदा (कण्ट्रेक्ट) के सिद्धांत पर आधारित हो गई। अब आँख मूँद करके स्वामी की भक्ति करने के दिन खत्म हो चुके थे। पार्लियामेन्ट की शक्तियाँ बढ़ चुकी थीं तथा राजा की स्थिति राज्य के अन्य पदाधिकारियों की तरह ही हो गई थी। संविदा के नियमों का उल्लंघन होने पर राजा को भी पदच्युत किया जा सकता था। क्रान्ति काल में ऐसी भी घोषणा की गई थी। जेम्स ने कुछ बुरे सलाहकारों के प्रभाव से संविदा को भंग करके और जनता के मौलिक अधिकारों की उपेक्षा कर संविधान पलटने की कोशिश की थी। अत: राजा का पद रिक्त हो गया था। इसी से ह्विग या उदारवादी दृष्टिकोण की पुष्टि होती थी। अत: 1689 ई. में विलियम तृतीय का राजतंत्र चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय के राजतंत्र से पूरी तरह से भिन्न था। इंग्लैण्ड में अब संविदा की शर्तों एवं कर्तव्यों के पालन पर ही आज्ञाकारिता आधारित हो गई जबकि इंग्लैण्ड में पहले निष्क्रिय आज्ञाकारिता और अंध राजभक्ति पर ही जोर दिया जाता था। इस सिद्धांत को भी मान्यता मिल गई थी कि राजा द्वारा शर्तों की उपेक्षा करने का जनता विद्रोह भी कर सकती है।

3. पार्लियामेन्ट का नियंत्रण : अब राजा के धर्म पर भी पार्लियामेन्ट का ही नियंत्रण हो गया। प्रोटेस्टेंट धर्म राजधर्म बन गया था। अब राजा के लिए यही धर्म मानना अनिवार्य हो गया। राजा को प्रोटेस्टेंट धर्म की रक्षा करने तथा देश के प्रचलित एवं पार्लियामेन्ट के द्वारा निर्मित कानून के अनुसार राज्य करने के लिए प्रतिज्ञा करनी एवं शपथ लेना अनिवार्य हो चुका था। इसी तरह राजतंत्र की सीमा निश्चित हो गई। अब वह नियमबद्ध हो गया और उसकी राजशक्ति नियंत्रित हो गई।

उपरोक्त कथनों से यह पूर्णत: स्पष्ट होता है कि राज्य में पार्लियामेन्ट का स्थान सर्वोपरि हो गया। इसके बाद किसी भी राजा की हिम्मत नहीं हुई कि पार्लियामेन्ट को पुन: चुनौती दे। जार्ज तृतीय ने अपनी जवानी के जोश में शाही शक्ति को पुन: प्राप्त करना चाहा था और इसके लिए प्रयास भी शुरू कर दिया था, परन्तु वह भी कभी बिना पार्लियामेन्ट के शासन नहीं चाहता था। अत: व्यावहारिक दृष्टि से वास्तविक सत्ता पार्लियामेन्ट के हाथ में चली आयी थी। इस संदर्भ में **मौंटेग्यू** ने ठीक ही कहा था कि "अब तक पार्लियामेन्ट राजा की सर्वोच्च शक्ति पर रुकावट डालने का काम करती थी, परन्तु अब तो वह स्वयं ही सर्वोच्च शक्ति हो गई।" इस दृष्टि से यदि देखा जाए तो 1688-89 ई. की अंग्रेजी क्रान्ति अंतिम क्रान्ति मानी जाती है। इस क्रान्ति के द्वारा पार्लियामेन्ट की शक्तियाँ बढ़ गई थीं।

4. महत्त्वपूर्ण क्रमिक सुधार : क्रान्ति व्यवस्था में प्रारम्भिक काल में जो कुछ कमियाँ अथवा त्रुटियाँ रह गयी थीं, उन्हें धीरे-धीरे दूर किया गया। पार्लियामेन्ट का चुनाव 3 वर्ष पर आवश्यक हो गया था। पार्लियामेन्ट का वार्षिक अधिवेशन अर्थ और सेना के लिए आवश्यक हो गया था। राज्य के आय तथा व्यय पर भी पार्लियामेन्ट का ही नियंत्रण स्थापित हो चुका था। धार्मिक क्षेत्र में सहिष्णुता का सिद्धांत मान लिया गया। धर्म के पवित्र नाम पर हिंसा एवं अत्याचार बंद हो गया। कैथोलिकों के विरुद्ध बेकार यू ही कानूनों को लागू नहीं किया जा रहा था जिससे उन्हें भी कुछ राहत मिल ही गई थी। छापेखाने को भी स्वतंत्रता प्रदान की गई। लोगों को अपनी सुरक्षा के लिए भी विशेष सुविधाएँ मिलीं। 1701 ई. में न्यायपालिका भी कार्यपालिका में हस्तक्षेप करने से मुक्त हो गई। अब न्यायाधीशों पर पार्लियामेन्ट का नियंत्रण कायम हो गया। बस वहीं से इंग्लैण्ड में विधि राज्य का सूत्रपात हो गया था। अब यह पूर्णरूप से स्पष्ट हो चुका था कि 'कानून' राजा (शासक) के ऊपर है। राजा के मंत्री कॉमन्स सभा के बहुमत वाले दल से नियुक्त होने लगे थे और कॉमन्स सभा के प्रति उनके उत्तरदायित्व पर भी जोर दिया जाने लगा। 1701 ई. में इसे लिखित रूप भी दे दिया गया। इसी तरह कई नियमों के द्वारा राजनैतिक एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बहुत प्रोत्साहन मिला।

5. संवैधानिक विकास : इस तरह तीसरे विलियम के राज्य-काल में शासन, व्यवस्थापन तथा न्याय, तीनों पर पार्लियामेन्ट के नियंत्रण की स्थापना हो गई। वास्तव में क्रान्ति-व्यवस्था द्वारा ही इंग्लैण्ड में पार्लियामेन्टरी प्रणाली स्थापित हुई और आधुनिक कैबिनेट के विकास के लिए रास्ता साफ हो गया। अत: **ट्रेवेलियन** का मत ठीक ही है कि "अनुभव एवं तर्क के आधार पर क्रान्ति-व्यवस्था से ही वालपोल तथा पिटों के हैनोवर संविधान का प्रत्यक्ष

नोट

विकास हुआ।" **एडम्स** का भी मत है कि "महान् क्रान्ति ने राष्ट्र की संप्रभुता और कानून की सर्वप्रधानता के सिद्धांतों को स्थापित कर दिया और इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर ब्रिटिश संविधान का विकास होता रहा।"

उपर्युक्त कारणों से 1688-89 ई. की क्रान्ति को इंग्लैण्ड के संवैधानिक इतिहास में एक प्रमुख मोड़ कह सकते हैं।

8.7 पुनर्स्थापना-युग की वैदेशिक नीति

1660-1688 ई. के काल को पुनर्स्थापना युग कहा जाता है। यह वैदेशिक नीति चार्ल्स द्वितीय एवं जेम्स द्वितीय की थी। अभी तक यह स्पष्ट रूप से देखा जा चुका है कि प्रजातंत्र-काल में क्रॉमवेल ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इंग्लैण्ड का सिर ऊँचा कर दिया था। इसी के द्वारा यूरोप में इंग्लैण्ड ने एक बड़ा ही प्रभावशाली स्थान प्राप्त कर लिया था, परन्तु 1660 ई. में स्टुअर्टो के पुनरागमन से इंग्लैण्ड का सिर पुनः झुक गया था। उसका विश्व में प्रभावशाली स्थान भी समाप्त होने लगा। साधारणतः वैदेशिक नीति की प्रकृति वही रही जो प्रजातंत्र काल में थी, परन्तु उस नीति को अपनाने तथा अनुसरण का तरीका भिन्न था। जब तरीका भिन्न हो तो परिणाम भी भिन्न ही होगा।

1. फ्रांस के प्रति चार्ल्स का झुकाव : गद्दी प्राप्ति के लिए चार्ल्स द्वितीय किसी विदेशी राष्ट्र का ऋणी नहीं था, फिर भी प्रारंभ से ही वह फ्रांस के प्रति विशेष आकृष्ट था। इसके कई कारण थे–

(*i*) चार्ल्स द्वितीय की माता फ्रांसीसी महिला थी। अतः उसके अंदर फ्रांस का ही खून दौड़ रहा था। एक तरह से फ्रांस उसका ननिहाल था।

(*ii*) उसके निर्वासन के समय उसे फ्रांस में ही शरण मिली थी।

(*iii*) चार्ल्स द्वितीय का ममेरा भाई लुई चतुर्दश फ्रांस तथा यूरोप में प्रसिद्ध एवं शक्तिशाली राजा था। चार्ल्स हमेशा से उसको अपना आदर्श मानता था और उसके जैसा बनने की चाहत रखता था।

(*iv*) व्यापारिक क्षेत्र में वह फ्रांस से अधिक हॉलैण्ड को प्रतिस्पर्द्धी मानता था।

चार्ल्स द्वितीय फ्रांस में अपना संबंध स्थापित करना चाहता था, इसके लिए उसने निम्नलिखित कार्य किए–

(*i*) उसने अपना विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी बरजंगा की कैथेराइन से कर लिया था।

(*ii*) उसने अपनी प्यारी बहन (हेन रिएटा) का विवाह लुई के भाई ऑरलिन्स के ड्यूक के साथ कर दिया।

चार्ल्स द्वितीय ने अपना विवाह पुर्तगाल में किया क्योंकि इससे उसे बहुत फायदा था और इससे उसका रिश्ता फ्रांस से और अधिक मजबूत हो सकता था।

(*i*) चूंकि पुर्तगाल फ्रांस का अच्छा मित्र राष्ट्र था इसलिए फ्रांस से उसका रिश्ता और अधिक घनिष्ठ हो गया था।

(*ii*) दहेज के रूप में उसे बम्बई और टेञ्जियर दो मुख्य स्थान प्राप्त हुए। बम्बई हिन्दुस्तान के पश्चिमी किनारे पर एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था। यहाँ पर ईस्ट इंडिया कंपनी को और भी दूसरे स्थान प्राप्त थे, परन्तु वे मुगल सम्राट से मिले थे। चार्ल्स ने बम्बई को 10 पौंड सालाना जैसे मामूली किराये पर कंपनी को सौंप दिया। अतः बम्बई पर कंपनी का अधिकार मुगल सम्राट से स्वतंत्र रहा। इसके अधिकार के साथ कंपनी के व्यापार में बड़ी वृद्धि होने लगी। टेञ्जियर भी भूमध्य सागर में एक प्रसिद्ध बंदरगाह है जो सामरिक तथा व्यापारिक दृष्टि से प्रसिद्ध था। सन् 1683 ई. में वह अंग्रेजों के हाथ से निकल गया। जिब्राल्टर के द्वारा इस क्षति की पूर्ति हो गई। इन स्थानों के अलावा कैथेराइन ने अपने साथ भी कई लाख पौंड के रूप में बहुत धन लायी।

(*iii*) अगले कई वर्षों तक पुर्तगाल इंग्लैण्ड का घनिष्ठ मित्र बन गया। नेपोलियनिक युद्ध के समय अंग्रेज सैनिक नेपोलियन के विरुद्ध पुर्तगाल में लड़े।

(*iv*) पुर्तगाल के विश्व-स्थित सभी बंदरगाह अंग्रेज व्यापारियों के लिए खोल दिये गये।

नोट

इस संबंध से कुछ बुराई भी हुई। 1580 ई. में स्पेन ने पुर्तगाल को अपने राज्य में मिला लिया था। 1640 ई. में पुर्तगाल ने अपने को स्वतंत्र कर लिया। फ्रांस स्पेन के विरुद्ध पुर्तगाल का सहायक था। वैवाहिक संबंध के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से इंग्लैण्ड ने इस प्रचलित स्थिति को स्वीकार कर लिया।

विलियम तृतीय के फ्रांस की ओर झुकाव का फल यह हुआ कि चार्ल्स ने फ्रांस से 20,000,00 पौंड लेकर उसे डन्कर्क दे दिया। अपने जानते तो उसने बुद्धिमानी की। यह कुछ अंशों में ठीक भी था। डन्कर्क पर कब्जा रहने से यूरोपीय राजनीति में फँसने की संभावना थी। इसके अलावा डन्कर्क तथा टेञ्जियर दोनों की रक्षा के लिए सेना की आवश्यकता थी परन्तु इतनी पर्याप्त सेना नहीं थी। फिर भी डन्कर्क के बचने से इंग्लैण्ड में असंतोष फैल गया, क्योंकि यह अंग्रेजी गौरव का एक स्मारक-स्वरूप था। लोगों को यह ख्याल होने लगा कि इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को क्षति पहुँचाकर भी चार्ल्स फ्रांस को खुश रखना चाहता है।

2. दूसरा डच युद्ध (1665-67 ई.) : इंग्लैण्ड एक ओर फ्रांस से दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा था और दूसरी ओर हॉलैण्ड से शत्रुता बढ़ा रहा था। अत: दूसरा डच युद्ध होने के अनेक कारण थे–

(*i*) इंग्लैण्ड और हॉलैण्ड के बीच व्यापारिक प्रतियोगिता बहुत पहले से चली आ रही थी और प्रथम डच-युद्ध के बाद भी इसका पूर्णत: अन्त नहीं हुआ। सन् 1660 ई. में इंग्लैण्ड ने समुद्री व्यापार नियम को फिर से लागू किया। इस बार अंग्रेजी उपनिवेशों को इंग्लैण्ड के अलावा किसी दूसरे देश से व्यापार करने की मनाही कर दी गई।

(*ii*) इसी समय कई बातों को लेकर अमेरिका तथा अफ्रीका में अंग्रेज तथा डच व्यापारी आपस में लड़ने लगे थे जिसके कारण ईस्ट इंडिया कंपनी को बड़ी हानि हुई। इस संबंध में चार्ल्स के पास डचों के विरुद्ध कई शिकायत-पत्र भेजे गए।

(*iii*) चार्ल्स के निर्वासन के समय डचों ने क्रॉमवेल को खुश करने के लिए राज-पक्षियों को निकाल दिया था। इन्हीं सभी कारणों से 1665 ई. में युद्ध घोषित हो गया।

घटनाएँ : इस समय इंग्लैण्ड को कई कठिनाइयों तथा आपत्तियों का सामना करना पड़ा था। इसी समय अग्नि तथा प्लेग का भीषण प्रकोप हुआ था। पर्याप्त युद्ध-सामान भी नहीं थे, अच्छे जंगी जहाजों का अभाव था और ब्लेक जैसा सुयोग्य नौसेनापति भी कोई नहीं था। सबसे बढ़कर धन की कमी थी; क्योंकि चार्ल्स आवश्यकता से अधिक खर्च करता था, युद्ध में अनुमान से अधिक खर्च हो रहा था और टैक्स भी बहुत कम वसूल हो सका था। इन सब कारणों से युद्ध में अंग्रेजों को आशातीत सफलता नहीं मिली। 1665 ई. में ड्यूक ऑफ यार्क ने लोवेस्टोफ्ट में डचों के ऊपर विजय प्राप्त की। अंग्रेजों का एक जहाज नष्ट हुआ, लेकिन डचों के 12 जहाज नष्ट हुए, किन्तु दूसरे ही साल स्थिति बदलने लगी, डचों ने मौंक को डोवर की खाड़ी में हरा दिया। 1667 ई. में डच टेम्स नदी में मेडवे के ऊपर चैथम तक आसानी से बढ़ आये। उन्होंने 16 अंग्रेजी जहाजों को तहस-नहस कर दिया और कई दिनों तक लन्दन को घेरे में डाले रहे। इस बीच अंग्रेजों ने अमेरिका में डच उपनिवेशों पर चढ़ाई कर अपना कब्जा स्थापित कर लिया। लेकिन अब दोनों दल संधि के लिए उत्सुक थे और 1667 ई. में ब्रेडा की सन्धि के द्वारा युद्ध समाप्त किया गया।

ब्रेडा की सन्धि : युद्ध को समाप्त करने हेतु ब्रेडा की सन्धि की गई। जिसके अनुसार यह तय हुआ था कि लड़ाई में जिसने जो प्रदेश ले लिया है, वह उसी के अधिकार में रहे। इस तरह डचों में अमेरिका स्थित उपनिवेश, न्यूजर्सी तथा न्यू एम्स्टर्डम अंग्रेजों को प्राप्त हो गये। ड्यूक ऑफ यार्क के सम्मान में पिछले उपनिवेश का नाम न्यूयार्क रखा गया और उसकी प्राप्ति से उत्तरी अमेरिका के पूर्वी किनारे पर स्थित उत्तरी और दक्षिणी उपनिवेशों के बीच की खाई भर गई।

त्रिराष्ट्र-सन्धि (1668 ई.) + डोवर की सन्धि (1670 ई.) : जनता ब्रेडा की सन्धि के साथ नहीं थी और यह भी क्लैरेंडन के पतन में एक कारण बन गई। उसके पतन के बाद केबाल-मंत्रिमण्डल स्थापित हुआ। केबाल शान्ति स्थापना चाहता था, परन्तु यह फ्रांस के विरुद्ध था। अत: 1668 ई. में फ्रांसीसी साम्राज्य के विस्तार को रोकने के ब्रेडा की सन्धि को त्रिराष्ट्र की संधि में परिवर्तित कर दी गई, जब इसमें स्वीडन भी शामिल हो गया। परन्तु चार्ल्स

नोट

द्वितीय की आन्तरिक इच्छा कुछ दूसरी ही थी। वह तो कई बातों पर निर्भर करता था, अत: फ्रांस के विरुद्ध नहीं जा सकता था। सच तो यह था कि वह फ्रांस को हॉलैण्ड के विरुद्ध भड़काना चाहता था। फ्रांस ने भी इस सन्धि का उत्तरदायी मुख्यत: रूप से हॉलैण्ड को ही समझा था। अत: सन् 1670 ई. के डोवर की सन्धि को गुप्त रखने का प्रथम कारण यही था। चार्ल्स द्वितीय ने हॉलैण्ड पर चढ़ाई करने के लिए लुई को सैनिक सहायता देने की प्रतिज्ञा की, लुई ने चार्ल्स को धन तथा हॉलैण्ड में कुछ हिस्सा देने का वादा किया। यह सन्धि-पत्र का पहला भाग था। दूसरे भाग में चार्ल्स ने मौका पाकर अपने को कैथोलिक घोषित करने तथा कैथोलिक को सुविधाएँ देने के लिए प्रतिज्ञा की। लुई ने चार्ल्स को अतिरिक्त धन प्रदान करने के लिए तथा उसके विरुद्ध हुए विद्रोह को दबाने के लिए सैनिक सहायता तक भी देने की प्रतिज्ञा की। यह दूसरा भाग केबाल के दो कैथोलिक सदस्य, क्लिफोर्ट तथा आर्लिंगटन को ही मालूम था। बाकी मंत्रियों तथा जनता की आँखों में धूल झोंकने के लिए एक नकली सन्धि-पत्र प्रकाशित किया गया जिसमें केवल पहला भाग ही वर्णित था।

इस प्रकार चार्ल्स द्वितीय ने स्वतंत्र वैदेशिक नीति का अनुसरण करने की कोशिश की, परन्तु "डोवर की सन्धि के साथ उसकी वैदेशिक नीति का श्रेयस्कर भाग समाप्त हो जाता है।"

3. तीसरा डच युद्ध (1672-74 ई.) : इस प्रकार लुई और चार्ल्स ने हॉलैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। लेकिन इस बार की हालत आशाजनक नहीं थी। सामुद्रिक युद्ध अनिर्णायक सिद्ध हुए। धन का बहुत ही अभाव था और इसकी पूर्ति के लिए बुरे तरीके से कोशिश की गई। बैंकरों ने अस्थायी तौर पर खजाने में रुपया जमा किया था, चार्ल्स ने उन्हें लौटाने से इंकार कर दिया। उसकी इस योजना को 'स्टॉफ ऑफ दी एक्सचेकर' कहते हैं, अत: पिछले दो डच-युद्धों के समान यह युद्ध लोकप्रिय न बन सका। युद्ध में सफलता नहीं दिख पड़ती थी और जनता की दृष्टि में चार्ल्स लुई के इशारे पर नाच रहा था।

वेन्टमिन्सटर की सन्धि (1674 ई.) : इसी बीच इंग्लैण्ड में केबाल मंत्रिमण्डल का अंत हो गया और डैन्बी का मंत्रित्व शुरू हुआ। डैन्बी ने युद्ध को जल्दी ही खत्म कर दिया और इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड के बीच वेस्टमिन्सटर की सन्धि हुई। इस तरह युद्ध तो समाप्त हो गया परन्तु डचों की शक्ति बहुत कमजोर हो गई। अब वे अंग्रेजों के प्रतियोगी नहीं रह सके। डचों के अधिकांश व्यापार पर अंग्रेजों का अधिकार स्थापित हो गया।

4. प्रभावशून्य तथा कुटिल वैदेशिक नीति : 1674-88 ई. की वैदेशिक नीति कुटिल तथा प्रभावशून्य नीति कहलाती है। इंग्लैण्ड धीरे-धीरे अपना प्रभाव खो रहा था। 1674-1678 ई. के बीच तक अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इंग्लैण्ड का प्रभाव समाप्त हो गया। चार्ल्स द्वितीय के ऊपर पार्लियामेन्ट का बहुत दबाव बन गया था अत: वह अपने पर दबाव समाप्त करना चाहता था, परन्तु उसके पास धन की कमी थी जिसके द्वारा उसके लक्ष्य की पूर्ति होने में कठिनाई उत्पन्न हो रही थी। इसीलिए वह (धन की पूर्ति हेतु) लुई चतुर्दश पर विशेष तौर पर आश्रित रहने लगा और इसी तरह से वह लुई का पेंशनभोगी बन गया। लुई को भी यह भय हो रहा था कि इंग्लैण्ड कैथोलिक-विरोधी भावना के कारण फ्रांस के विरुद्ध कहीं युद्ध घोषित न कर दे, अत: वह भी चार्ल्स को धन देता रहा, ताकि चार्ल्स पार्लियामेन्ट के अधिवेशन को स्थापित करता रहे, परन्तु जब लुई चतुर्दश को यह संदेह होने लगा कि चार्ल्स की शक्ति विशेष बढ़ रही है, तब वह उसके विरोधी पक्ष को भी घूस देने लगा।

लुई चतुर्दश बहुत ही सफल शासक था साथ ही वह पूरे यूरोप में बहुत प्रसिद्ध भी था। इसलिए फ्रांस की शक्ति में अद्‌भुत सफलता को देखकर चार्ल्स का प्रधानमंत्री डैन्बी विचलित हो रहा था। वह लुई का दुश्मन था और फ्रांस के विरुद्ध सक्रिय नीति का अनुसरण करना चाहता था। चूंकि लुई विश्वविख्यात शासक था इसलिए चार्ल्स उसके बल तथा प्रभाव को देखकर भय और शंका में पड़ जाता था और ऐसी स्थिति में वह डैन्बी को अपनी नीति के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्रता देता था। इसी स्वतंत्रता का फायदा उठाकर डैन्बी ने चार्ल्स की भतीजी मेरी से विवाह विलियम ऑफ ऑरेंज से इंग्लैण्ड में ही करा दिया। मेरी इंग्लैण्ड की भावी प्रोटेस्टेंट उत्तराधिकारिणी थी। विलियम पक्का प्रोटेस्टेंट था और लुई का कट्टर दुश्मन था।

इस बात पर लुई बहुत असंतुष्ट हुआ और फ्लैंडर्स में शीघ्र युद्ध समाप्त करना चाहता था। इसके लिए वह विशेष तत्परता से कार्य करने लगा। अब डैन्बी भी फ्रांस से लड़ने तक के लिए तैयार हो गया और वह एक बड़ी

सेना इकट्ठी करने लगा, परन्तु तब तक चार्ल्स ने लुई से संधि करने की बात को शुरू कर दिया था। लुई डैन्बी से असंतुष्ट तो था ही, अत: उसे बदनाम करने के लिए लुई ने उससे गुप्त संधि का प्रचार शुरू कर दिया। पार्लियामेन्ट ने डैन्बी पर अभियोग चला दिया। 1679 ई. में उसका पतन हो गया। अब इंग्लैण्ड में लुई का कोई जानी दुश्मन नहीं रह गया था। 1679-88 ई. तक उसने इंग्लैण्ड पर अपना दबाव एवं प्रभाव कायम रखा। 1689 ई. में चार्ल्स ने टैञ्जियर भी लुई को दे दिया। जेम्स द्वितीय भी लुई पर ही निर्भर रहा। फ्रांसीसी राजदूत उसका प्रधान सहायक था।

सारांश

- जेम्स प्रथम के बाद चार्ल्स प्रथम इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा और चार्ल्स प्रथम की मृत्यु के बाद जेम्स द्वितीय (चार्ल्स प्रथम का भाई) गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी उम्र 52 वर्ष थी। वह कुशल नाविक, वीर सैनिक, सच्चा, साहसी पुरुष था। परन्तु उसमें गुण से अधिक अवगुण थे। उसके शासन के चार वर्ष बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।
- चार्ल्स द्वितीय (चार्ल्स प्रथम तथा द्वितीय जेम्स का भाई) अधिक दूरदर्शी, नम्र तथा बुद्धिमान था। उसने 25 वर्ष तक शासन किया था।
- आर्जिल विद्रोह सफल नहीं हो सका। मन्मथ विद्रोह में स्त्रियों के साथ अभद्र व्यवहार किया गया। 300 व्यक्तियों को मार दिया गया और 800 से भी अधिक व्यक्तियों को देश से निर्वासित कर दिया गया और भी अन्य अत्याचार लोगों पर किए गए इसलिए इसे 'खूनी न्यायालय' के नाम से जाना जाता है।
- इंग्लैण्ड में महान क्रान्ति होने के अनेक कारण थे—अवैध चुंगी की वसूली, हिंसाजनित आतंक, स्थायी सेना में वृद्धि, फ्रांस से घनिष्ठ मित्रता, असाधारण न्यायालय की स्थापना, परीक्षा निगम को रद्द करने की कोशिश, चर्च पर हमला, विश्वविद्यालयों पर हमला, धार्मिक अनुग्रह की घोषणा इत्यादि। यह क्रान्ति धीरे-धीरे बढ़ ही रही थी।
- 1688-89 ई. में अंग्रेजी क्रान्ति का स्वरूप ही बदल गया और क्रान्ति दो भागों में विभाजित हो गई रूढ़िवादी तथा उदारवादी। रूढ़िवादी पक्ष में रक्तपात का अभाव था, अल्पकाल में ही क्रान्ति की समाप्ति हो गई, न्यायपालिका की स्थिति में सुधार नहीं हो पाया, धार्मिक समानता का अभाव देखा गया, प्राचीनता की रक्षा की गई, क्रान्ति को व्यवस्था समझौते के रूप में देखा गया जबकि उदारवादी मतानुसार इस क्रान्ति में दैवी एवं वंशानुगत सिद्धांतों का अंत हो गया, संविदा संविधान सिद्धांत को महत्त्व दिया गया, हर क्षेत्र पर पार्लियामेन्ट का नियंत्रण हो गया, क्रमिक सुधार हुए और संवैधानिक विकास देखे गये।
- 1660-88 ई. का युग पुनर्स्थापना युग तथा चार्ल्स द्वितीय एवं जेम्स द्वितीय की वैदेशिक नीति के रूप में देखा जाता है। इसके लिए चार्ल्स द्वितीय अधिक जिम्मेदार है। चार्ल्स द्वितीय फ्रांस के साथ संबंध बनाने के लिए बहुत उत्सुक था। इसका कारण लुई चतुर्दश था और इसके लिए उसने बहुत उपाय किए।
- इस बीच दूसरा तथा तीसरा डच युद्ध भी हुआ जिसकी समाप्ति के लिए ब्रेडा की संधि, त्रिराष्ट्र संधि, डोवर की संधि तथा वेस्टमिन्सटर की सन्धि की गई। कुछ सन्धियाँ सफल हो गई और कुछ सन्धियाँ असफल हो गई थीं।
- अत: स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इन दोनों की वैदेशिक नीति अत्यन्त कुटिल तथा प्रभावहीन थी जिसमें बहुत असफलता हाथ लगी।

अभ्यास-प्रश्न

1. जेम्स द्वितीय के राज्याभिषेक तथा उस समय की परिस्थितियों के बारे में बताइए।
2. महान क्रान्ति होने के कारणों की चर्चा कीजिए।

नोट

3. क्रान्ति के प्रगति, लक्षण, महत्त्व तथा प्रभावों की विवेचना कीजिए।
4. महान अंग्रेजी क्रान्ति के दोनों पक्षों की विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।
5. 1660–88 ई. के पुनर्स्थापना युग के बारे में बताइए। इसमें चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय की भूमिका का वर्णन कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*
2. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
3. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
4. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
5. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
6. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*
7. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*

इकाई–9

स्टुअर्ट वंश (1689–1714 ई.)
[Stuart Dynasty (1689-1714 A.D.)]

नोट

संरचना (Structure)

9.1 उद्देश्य
9.2 प्रस्तावना
9.3 विलियम एवं मेरी
9.4 विलियम के राज्य का महत्त्व
9.5 नियम एवं कानून
9.6 आर्थिक प्रगति
9.7 रानी एन (1702–1714 ई.)
9.8 गुडोल्फिन मंत्रिमण्डल (1702–1710 ई.)
9.9 टोरी मंत्रिमण्डल (1710–1714 ई.)
9.10 वैदेशिक नीति (1689–1714 ई.)
9.11 1688 और 1717 ई. के बीच दो प्रमुख युद्ध
9.12 मार्लबरा
9.13 यूट्रेक्ट की संधि
- सारांश
- अभ्यास-प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

9.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- स्टुअर्ट वंश को जानने में।
- विलियम तृतीय और एन के राज्यकाल को समझने में।
- इंग्लैण्ड व फ्रांस के बीच 1668 से 1714 के बीच हुए युद्धों को समझने में।

9.2 प्रस्तावना

नोट

जब इंग्लैण्ड की राजगद्दी कुछ समय के लिए जेम्स द्वितीय के गद्दी छोड़कर भागने के बाद रिक्त हो गई थी तब किस तरह विलियम व उसकी पत्नी मेरी को संयुक्त रूप से इस गद्दी का उत्तराधिकारी घोषित किया गया था। विलियम के चरित्र को बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता परन्तु फिर भी उसके चरित्र में कुछ खूबियाँ थीं जिसके कारण उसे गद्दी के उत्तराधिकारी के रूप में चुना गया। इसके विपरीत मेरी का चरित्र एक मिलनसार महिला के रूप में था।

1689 ई. में पार्लियामेन्ट के द्वारा अधिकार विधान घोषणा-पत्र जारी किया गया जिसे राज नियम के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस घोषणा-पत्र ने राजा की शक्तियों को सीमित कर दिया तथा पार्लियामेन्ट को अधिक शक्तिशाली बना दिया। इस घोषणा-पत्र ने गद्दी के उत्तराधिकारी के लिए निर्णायक कानून बनाया जिसमें गद्दी के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी कौन हो, कानून बना।

1702 ई. में विलियम की मृत्यु के बाद एन को राजगद्दी सौंपी गई। एन का चरित्र अच्छा था पर वह बहुत जल्दी किसी से प्रभावित हो जाती थी। अपने समय के अधिकांश समय वह मार्लबरा की पत्नी के प्रभाव में थी। उसके समय में दो मंत्रिमण्डल बने थे– पहले ह्विग और बाद में टोरी दल। 1689–1714 ई. तक के बीच फ्रांस व इंग्लैण्ड के बीच 7 युद्ध हुए जिनका वर्णन अध्याय में है। इनमें दो मुख्य युद्ध हुए :

1. अंग्रेजी राज्य के उत्तराधिकार की लड़ाई जिसे खत्म करने के लिए रिजविक की संधि हुई।

2. स्पेन के उत्तराधिकार की लड़ाई जिसे खत्म करने के लिए युजेट्रेक की सन्धि हुई।

इन युद्धों का इंग्लैण्ड व समस्त यूरोप पर प्रभाव पड़ा। मार्लबरा जिसका व्यक्तित्व तो अच्छा था परन्तु वह किसी के भरोसे के लायक नहीं था क्योंकि उसने लुई, विलियम सभी के साथ धोखा किया था। आगे आप स्पेन की वंशावली के बारे में पढ़ेंगे कि किस प्रकार उसके उत्तराधिकारी का चुनाव हुआ।

9.3 विलियम एवं मेरी

इंग्लैण्ड के इतिहास में बहुत से राजाओं व रानियों ने इस पर शासन किया और अपना वर्चस्व इंग्लैण्ड पर कायम किया इन्हीं में से कुछ राजाओं ने अपनी क्षमता से अपना वर्चस्व इतना शक्तिशाली कर लिया कि उन्होंने अपने वंशजों के लिए राजगद्दी पर उनका उत्तराधिकार कायम कर लिया। इंग्लैण्ड पर बहुत से वंश स्थापित हुए। उन्हीं में से एक है स्टुअर्ट वंश जिनका 1603 ई. से 1714 ई. तक इंग्लैण्ड पर राज रहा। इनमें से विलियम तृतीय का राज्यकाल बहुत महत्त्वपूर्ण है। 22 जनवरी, 1689 ई. को जब जेम्स गद्दी छोड़कर भाग गया था तब विलियम और मेरी को संयुक्त रूप से गद्दी सौंपने का निश्चय किया गया। यह निर्णय पार्लियामेन्ट ने गद्दी के रिक्त हो जाने के कारण लिया था और इस तरह इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर स्टुअर्ट वंश की स्थापना हुई।

विलियम के विरुद्ध इंग्लैण्ड में कभी कोई खास आन्दोलन नहीं उठा था। केवल आर्कबिशप, 4 बिशप और 400 पादरियों ने राजभक्ति की शपथ लेना अस्वीकार किया था। ये 'नान-जूरर्स' कहे जाते हैं। इसका कारण यह था कि विलियम काल्विन मत का समर्थक था लेकिन विरोधियों का सहयोग नहीं मिला और राजा ने उन लोगों को चर्च से बर्खास्त कर दिया। परन्तु विलियम के चरित्र में कुछ कमियाँ थीं जिन कमियों के कारण वह कभी अंग्रेजों का प्रिय पात्र न बन सका। विलियम की वैदेशिक राजनीति में बहुत दिलचस्पी रहती थी। इसी वैदेशिक राजनीति में सफलता के कारण उसे गद्दी पर बैठने का अवसर मिला था। एक समकालीन के शब्दों में, "इंग्लैण्ड उसे फ्रांस के मार्ग में मिल गया था, अतः लुई-चतुर्दश को कमजोर करना ही उसके जीवन का प्रधान उद्देश्य था।"

उसका अंग्रेज राजनीतिज्ञों में पूर्ण विश्वास नहीं था और वह डचों के साथ पक्षपात करता था। उसने शासन के अधिकांश भाग में पार्लियामेन्ट की उपेक्षा की। वह दोनों दलों से अपने मंत्रियों को नियुक्त करता रहा जिससे वह किसी दल को भी खुश न कर सका। टोरियों की युद्ध विरोधी नीति के कारण विलियम ह्विगों पर विशेष निर्भर रहने लगा, तब टोरी उससे और अधिक नाखुश हो गये।

विलियम का व्यक्तित्व लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने वाला नहीं था। विलियम का शारीरिक ढाँचा दुबला-पतला था, उसका स्वास्थ्य खराब था और उसका स्वभाव बहुत क्रोधी और चिड़चिड़ा था। वह स्वभाव से मिलनसार नहीं था। 1694 ई. में जब विलियम की पत्नी मेरी की मौत हो गई, तब विलियम का स्वभाव और भी चिड़चिड़ा हो गया। जिस कारण विलियम के प्रति विरोध और बढ़ने लगा।

नोट

सन् 1697 ई. में फ्रांस के साथ युद्ध समाप्त हो जाने पर टोरियों ने विलियम का जोरदार विरोध करना शुरू कर दिया। डचों को आयरलैण्ड में जमीन देने की नीति का जमकर विरोध हुआ, स्थायी सेना की संख्या कम कर दी गई। उत्तराधिकार-निर्णय-नियम में यह भी जोर दिया गया कि विदेशी सियासत के लिए इंग्लैण्ड युद्ध में शामिल नहीं होगा। विलियम इन सभी बातों से घबराकर पदत्याग करने के लिए भी सोचने लगा था, लेकिन मरने के समय उसे सन्तोष था कि स्पेन के उत्तराधिकार-युद्ध में अंग्रेज लोग सहयोग दे रहे थे।

मेरी का चरित्र

मेरी विलियम की पत्नी का नाम था। मेरी जेम्स की पुत्री थी। सभी यह आशा कर रहे थे कि जेम्स के मरने के बाद उसकी गद्दी मेरी को ही मिलेगी, परन्तु जब जेम्स द्वितीय की दूसरी पत्नी को एक पुत्र पैदा हुआ तो मेरी का गद्दी पर से उत्तराधिकार को छीन लिया गया। विलियम की पत्नी अपने पति के स्वभाव से बिलकुल उल्टे स्वभाव की थी। उसमें दुर्गुणों का अभाव था। वह बहुत दयालु और विनम्र स्वभाव की थी। वह स्वभाव से एक मिलनसार महिला थी। वह लोगों से मेलजोल बढ़ाने में विश्वास रखती थी। उसने अपने जीवनकाल में अधिक लोगों को मिलाए रखा। 1694 ई. में मेरी की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद वे लोग जिन्हें मेरी ने अपना मित्र बना रखा था वह सभी अब विलियम के स्वभाव के कारण उसके विरोधी हो गए।

9.4 विलियम के राज्य का महत्त्व

इंग्लैण्ड के वैदेशिक तथा घरेलू इतिहास में विलियम का राज्य महत्त्वपूर्ण है। उसके समय में इंग्लैण्ड में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक सभी प्रकार के परिवर्तन हुए। जब जेम्स द्वितीय गद्दी छोड़कर भाग गया था, तब 22 जनवरी, 1689 ई. को एक पार्लियामेन्ट बुलाई गई थी जिसे कन्वेंशन पार्लियामेन्ट कहते है। पार्लियामेन्ट ने यह घोषणा की कि जेम्स के भागने के बाद अब इंग्लैण्ड की गद्दी रिक्त हो गई है। पार्लियामेन्ट ने गद्दी को विलियम और मेरी को सौंपने का निश्चय किया। पार्लियामेन्ट ने अधिकारों का घोषणा-पत्र भी तैयार किया था और इसे स्वीकार करने पर विलियम तथा मेरी को संयुक्त शासक घोषित कर दिया गया। ह्विग पार्लियामेन्ट में प्रबल थे।

अधिकार-विधान (1689 ई.) : उसके बाद कन्वेंशन पार्लियामेन्ट नियमित पार्लियामेन्ट के रूप में परिवर्तित हो गई। इस पार्लियामेन्ट ने अधिकारों के घोषणा-पत्र को एक राजनियम के रूप में घोषित कर दिया। यही राजनियम, अधिकार-विधान (बिल ऑफ राइट्स) के नाम से विख्यात हुआ। इस अधिकार-विधान में चार प्रकार की बातें थी। इन्हीं के द्वारा कानून तथा न्याय सम्बन्धी बुराइयों को दूर करने में सहायता मिली। इसी के द्वारा पार्लियामेन्ट के अधिकार तथा जनता की स्वतन्त्रता की रक्षा हुई। इस अधिकार-विधान में बहुत सी ऐसी बातें लिखी गई थीं जिनसे देश की शान्ति व्यवस्था को बरकरार करने की कोशिश की गई। इनमें मुख्य बातें निम्नलिखित थीं–

1. किसी कानून को स्थगित करने, किसी व्यक्ति को किसी कानून से बरी करने तथा हाई कमीशन कोर्ट के जैसा विशेष प्रकार के कोर्ट की स्थापना करने के लिए राजा का अधिकार गैरकानूनी घोषित किया गया।
2. राजा के लिए यह नियम बनाया गया कि शान्तिकाल के समय राजा कोई स्थायी सेना नहीं रख सकता था।
3. कुछ बातें और भी निश्चित की गईं जैसे पार्लियामेन्ट का स्वतन्त्र निर्वाचन, नियमित अधिवेशन सदस्यों की स्वतन्त्रता आदि। राजा के लिए यह नियम भी बनाया गया कि पार्लियामेन्ट की राय लिए बिना प्रजा पर कोई भी कर नहीं लगाया जा सकता।

नोट

4. इसमें इंग्लैण्ड का अगला उत्तराधिकारी कौन होगा? यह भी निश्चित किया गया।
   (क) विलियम तथा मेरी को संयुक्त शासक घोषित किया गया।
   (ख) विलियम तथा मेरी की संतान को उत्तराधिकारी माना जाएगा, परन्तु यदि दोनों की कोई सन्तान न हो तो;
   (ग) जेम्स की दूसरी प्रोटेस्टेंट पुत्री एन और उसकी सन्तान को अगला उत्तराधिकारी समझा जाएगा और यदि एन की भी कोई सन्तान न हो तो ऐसी स्थिति में;
   (घ) विलियम की दूसरी पत्नी की सन्तान को अगला उत्तराधिकारी माना जाएगा।
   (ङ) यदि इन सभी उत्तराधिकारी में से या अन्य कोई भी राजघराने का सदस्य यदि किसी रोमन कैथोलिक या कैथोलिक की लड़की से विवाह करने वाले व्यक्ति को उत्तराधिकार से सदा के लिए वंचित कर दिया गया।
5. बहुत अधिक कठोर दंड देने, अधिक जुर्माना लगाने तथा जमानत के लिए अधिक रकम की माँग करने की प्रथा पर रोक लगा दी गई। जूरियों के नियमित संगठन पर जोर दिया गया।

अधिकार-विधान का महत्त्व : इंग्लैण्ड के संवैधानिक इतिहास में अधिकार-विधान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह अंग्रेजों की स्वतन्त्रता का तीसरा प्रपत्र समझा जाता है। पहले दो हैं– मैग्नाकार्टा और अधिकार-याचना। कई इतिहासकारों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। **एडम्स** के शब्दों में, "1688 ई. की क्रान्ति एवं अधिकार-विधान अंग्रेजी संवैधानिक विकास की पराकाष्ठा के चिह्न हैं।" एक अन्य लेखक के मतानुसार अधिकार-विधान का बहुत महत्त्व है।

1. **राजा की शक्ति पर प्रतिबन्ध :** स्टुअर्ट वंश के राजा स्वयं को सर्वज्ञ समझते थे और सदैव अपने मन की करते थे, किन्तु अधिकार-विधान ने राजा की शक्ति पर बहुत सारे प्रतिबन्ध लगा दिए। इस प्रतिबन्ध के कारण अब राजा न तो अपने मनमाने ढंग से कोई कर लगा सकता था और न ही कोई कानून लागू या स्थगित कर सकता था। अब वह पार्लियामेन्ट के अधिकारों पर आघात नहीं कर सकता था। वह स्थायी सेना भी नहीं रख सकता था। इस तरह अब राजाओं की निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता सदा के लिए खत्म हो गई।

2. **कानून की प्रधानता :** इस विधान ने न केवल राष्ट्र की संप्रभुता स्थापित की बल्कि कानून की भी प्रधानता स्थापित की। ये दोनों चीजें मिलकर ही जनतांत्रिक संविधान का आधार बन उनका निर्माण करती हैं। इसने यह स्पष्ट कर दिया है कि सम्प्रभुता ब्रिटिश राष्ट्र में है और देश में प्रचलित एवं पार्लियामेन्ट के द्वारा कानूनों एवं नियमों का स्थान सर्वोपरि है। राजा के द्वारा भी इन नियमों एवं कानूनों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता है।

3. **राष्ट्र की सम्प्रभुता :** एडम्स का मत है कि 17वीं सदी में सामन्ती युग के किसी समझौते या अनुबन्ध का कोई अवरोध नहीं था, किन्तु जैसे हेनरी-प्रथम और राजा जोन तथा बैरनों के बीच अनुबन्ध हुआ था, वैसे ही अधिकार-विधान भी राजा और राष्ट्र के बीच एक अनुबन्ध की ही तरह था। विलियम तथा मेरी ने दूसरे जेम्स के द्वारा किये गये कामों की अवैधता को और कुछ शर्तों को स्वीकार किया तब उन्हें गद्दी मिली। अतः अब राजा तथा अन्य पदाधिकारियों में कोई अन्तर नहीं रह गया। कुशासन एंवं भ्रष्टाचार के लिए जैसे किसी पदाधिकारी को पदच्युत किया जा सकता था, वैसे ही राजा भी पदच्युत हो सकता था। इस तरह राष्ट्र में सम्प्रभुता निर्धारित हो गई।

4. **पैतृक एवं दैवी अधिकार के सिद्धान्त का अंत :** पहले राजा स्वयं को राजा की गद्दी का उत्तराधिकारी बताते थे कि इस गद्दी पर उनका पैतृक एवं दैवी अधिकार है। वह कहते थे कि ईश्वर की कृपा से और पैतृक सिद्धान्त पर उत्तराधिकार निश्चित होता है जिसे कोई छीन या बदल नहीं सकता है, किन्तु अब इस सिद्धान्त का अन्त हो गया। 11 दिसम्बर, 1688 से फरवरी 1689 ई. तक इंग्लैण्ड की गद्दी खाली थी। दूसरे जेम्स के गद्दी छोड़कर भाग जाने के कारण यह गद्दी खाली हो गई थी। अतः पार्लियामेन्ट ने गद्दी को रिक्त घोषित कर दिया था। इसके साथ ही यह निर्णय भी ले लिया गया कि दूसरे जेम्स तथा उसके पुत्र को उत्तराधिकार से वंचित कर दिया जाए तथा उनके स्थान पर पार्लियामेन्ट ने तीसरे विलियम और उसकी पत्नी मेरी को संयुक्त राजा घोषित कर दिया।

5. दीर्घ कालीन संघर्ष का अन्त : 17वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही राजा और पार्लियामेन्ट में संघर्ष का सूत्रपात हो गया था। इसके परिणामस्वरूप राजनैतिक वातावरण अशान्त हो गया था और सरकार की स्थिति संकटपूर्ण हो गई थी। ऐसी स्थिति में देश की प्रगति का मार्ग ही अवरुद्ध हो जाता है, किन्तु अब उस संघर्ष की समाप्ति हो गई। संविधान की मूल समस्या हल हो गई। अब देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ।

नोट

6. पार्लियामेन्ट की सर्वोच्चता : जिस हद तक राजा की शक्ति सीमित हुई, उस हद तक पार्लियामेन्ट की शक्ति में वृद्धि हुई। अब राजा पार्लियामेन्ट को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकता था। वह पार्लियामेन्ट को मनमाने ढंग से भंग या स्थगित भी नहीं कर सकता था। राजकीय कामों में राजा के लिए पार्लियामेन्ट का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त करना अनिवार्य हो गया। अब यह निश्चित हो गया कि वास्तविक सत्ता पार्लियामेन्ट के हाथ में है और राजा अपनी शक्ति एवं सुरक्षा के लिए उस पर निर्भर है। राजा को पार्लियामेन्ट की नीति के अनुसार चलना आवश्यक हो गया।

राजा के धर्म पर भी पार्लियामेन्ट का नियंत्रण कायम हो गया। राजा के लिए प्रोटेस्टेंट का अनुयायी और अंग्रेजी चर्च का समर्थक होना अनिवार्य हो गया।

7. जनता के अधिकारों एवं स्वतन्त्रता की रक्षा : उपर्युक्त बातों के कारण अधिकार-विधान से जनता के अधिकारों एवं स्वतन्त्रता की भी रक्षा हुई। अब राष्ट्र पर पार्लियामेन्ट की संप्रभुता निर्धारित हो गई और राजा की स्वेच्छाचारिता का अन्त हो गया। कानून की भी प्रधानता स्थापित हो गई। अब संविधान की अवहेलना नहीं की जा सकती थी। इसलिए अब जनता के मौलिक अधिकार सुरक्षित हो गये।

क्रान्ति-व्यवस्था के ही फलस्वरूप कार्यपालिका के हस्तक्षेप से न्यायपालिका भी मुक्त हो गई। इन सभी बातों के कारण ही नागरिक स्वतन्त्रता को सुरक्षा प्राप्त हुई। इस तरह मैग्नाकार्टा के द्वारा प्रारंभ किये गये राजनीतिक एवं वैधानिक कार्य को अधिकार ने पूरा कर दिया।

नवीनता की कमी : इस बात में कोई दो राय नहीं है कि इस अधिकार-विधान का उस समय में इंग्लैण्ड में बहुत महत्त्व था परन्तु फिर भी यह कहा जा सकता है कि इस विधान में नवीनता की कमी थी। इसमें कोई नई बात नहीं कही गई, कोई सिद्धान्त नहीं स्थापित किया। इसमें इस बात का उल्लेख भी स्पष्ट रूप से नहीं किया गया है कि दूसरे जेम्स को गद्दी से हटाया गया। यह भी नहीं कहा गया कि अब से राजा का केवल निर्वाचन ही हुआ करेगा। पुरानी बातें ही दोहराई गईं अतः अधिकार-विधान की बातें व्यावहारिक ढंग की थी।

धन व सेना सम्बन्धी कानून (1689 ई.) : पार्लियामेन्ट के द्वारा धन और सेना पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। वह सरकारी खर्च (सिविल लिस्ट) के लिए राजा को एक साल के लिए निश्चित रकम (7 लाख पौंड) मंजूर करने लगी। इसके पहले राजा किसी भी काम के लिये खजाने से रकम निकालकर खर्च करता था परन्तु अब यह सुविधा जाती रही। अब राजा खजाने से रकम निकालकर उसी कार्य पर खर्च कर सकेगा जिस काम के लिए पार्लियामेन्ट ने उसे स्वीकृति दे दी हो। राजा के द्वारा किए गए खर्च की जाँच के लिए निरीक्षक भी नियुक्त किए जाने लगे। इस तरह खजाने पर अब पार्लियामेन्ट का अधिकार हो गया और उसी के आदेशानुसार खर्च होने लगा।

म्यूटिनी ऐक्ट (गदर कानून) : इसके द्वारा सेना पार्लियामेन्ट के अधिकार में आ गई। राजा को सेना रखने के लिए एक वर्ष की स्वीकृति दी जाने लगी। अब पार्लियामेन्ट की स्वीकृति के बिना देश में कोई सेना नहीं रखी जा सकती थी।

ऊपर दिए गए दोनों नियमों के कारण पार्लियामेन्ट का वार्षिक अधिवेशन अनिवार्य हो गया और देश के शासन में पार्लियामेन्ट विशेष रूप से भाग लेने लगी।

9.5 नियम एवं कानून

(क) सहिष्णुता नियम (1689 ई.) : पार्लियामेन्ट ने एक सहिष्णुता नियम (Toleration Act) पास किया, जिसके अनुसार पहले की अपेक्षा लोगों को अधिक धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी गई, लेकिन कैथोलिक और

नोट

यूनिटेरियन इस नियम के दायरे से बाहर रखे गए, यद्यपि अभी भी धार्मिक नियंत्रण जारी रहा, फिर भी अब यह सिद्धान्त स्थापित हो गया कि सभी लोग एक ही प्रकार से नहीं सोच सकते, लेकिन सभी को रहने का अधिकार है। इस नियम ने आगे के लिए रास्ता सहज कर दिया। 19वीं सदी के अन्त तक पूर्णरूप से धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित हो गई।

(ख) त्रैवार्षिक कानून (1694 ई.) : उस समय यह बात बहुत साधारण थी कि एकबार निर्वाचित हुई पार्लियामेन्ट कई वर्षों तक कायम रखी जाए। कैवोलियर पार्लियामेन्ट जो कि चार्ल्स-द्वितीय के समय में राजा के बिलकुल अनुकुल थी। यह पार्लियामेन्ट 18 वर्षों तक जीवित रह सकी। अत: यह बिलकुल सम्भव था कि जनमत का ठीक-ठीक पता न लग सके। 1694 ई. में त्रैवार्षिक कानून पास हुआ जिसके द्वारा पार्लियामेन्ट की अवधि 3 वर्ष निश्चित कर दी गई। यह कानून 1716 ई. तक लागू रहा।

(ग) प्रेस की स्वतन्त्रता (1695 ई.) : इस समय तक किताबों के प्रकाशन पर बहुत कड़ा नियन्त्रण था। जब भी कोई नई पुस्तक छापनी होती थी तो पहले उस पुस्तक की जाँच होती थी फिर उसके लिए अनुमति (लाइसेन्स) ली जाती थी। 1695 ई. में इस प्रथा को बन्द कर दिया गया और प्रेस को स्वतन्त्रता दे दी गई। अब अखबार और पुस्तक अधिक संख्या में निकलने लगे और अधिक लोगों की दिलचस्पी सार्वजनिक कार्यों में बढ़ने लगी।

(घ) राजद्रोह नियम (1696 ई.) : पहले न्याय करने के लिए किसी प्रकार की कोई समुचित व्यवस्था नहीं थी। न्याय करने के लिए अमानुषिक तरीकों का प्रयोग किया जाता था। अपराधियों के अपराध का विवरण नहीं बताया जाता था, उन्हें वकील रखने का अधिकार नहीं था। अत: न्याय करने में व्याप्त इन बुराइयों को दूर करने के लिए राजद्रोह नियम पास हुआ। अब अपराधियों को अपराध का विवरण तथा जूरियों की सूची पहले ही दिए जाने का निर्णय लिया गया। उन्हें अपने बचाव के लिए वकील तथा गवाह पेश करने का अधिकार प्रदान किया गया।

(ङ) उत्तराधिकार-निर्णायक कानून (1701 ई.) : सन् 1701 में इंग्लैण्ड की राजगद्दी का उत्तराधिकारी कौन हो इस बात की समस्या उत्पन्न हो गई थी, क्योंकि 1694 ई. में मेरी की मृत्यु हो गई थी तथा 1700 ई. तक एन की संतानें भी मर गईं। अत: अब गद्दी के लिए स्टुअर्ट-वंश का केवल एक ही प्रोटेस्टेंट अधिकारी कायम रहा। वह उत्तराधिकारी थी हैनोवर के एलेक्टर की पत्नी सोफिया जो जेम्स-प्रथम की पौत्री होती थी। अत: 1701 ई. में उत्तराधिकार-निर्णायक कानून (Act of Settlement) पास कर एन के मरने के बाद गद्दी सोफिया या उसकी सन्तान को दी गई। इस कानून के अन्दर कुछ और भी बातें शामिल थीं–

1. कॉमन्स सभा द्वारा चलाए गए अभियोग में राजा के द्वारा दी हुई क्षमा का कोई मूल्य नहीं समझा जाएगा। इससे यह सिद्ध कर दिया गया कि राज्य के प्रत्येक कार्य के लिए मंत्री ही उत्तरदायी समझे जायेंगे।
2. राजा किसी जज को पदच्युत नहीं कर सकता जब तक वह सच्चरित्र और कर्तव्यशील रहेगा। न्यायालय में दोषी घोषित होने पर तथा पार्लियामेन्ट की दोनों सभाओं द्वारा इस आशय का प्रस्ताव पास होने पर ही पदच्युत किया जा सकता है।
3. भविष्य में सभी राजा को इंग्लैण्ड के चर्च का ही समर्थक होना पड़ेगा और कोई विदेशी पार्लियामेन्ट में नहीं बैठ सकता।

ऊपर जो बातें दी गई हैं उसके अलावा तीन बातें और भी थीं जो कुछ समय के बाद रद्द कर दी गईं। जो इस प्रकार हैं–

1. पार्लियामेन्ट की आज्ञा लिए बिना राजा को विदेश जाने की इजाजत नहीं थी और उसकी विदेशी रियासत के लिए इंग्लैण्ड युद्ध में शामिल नहीं हो सकता।
2. कोर्ट मन्त्री, प्लेस होल्डर, पेंशन प्राप्त व्यक्ति कॉमन्स सभा में नहीं बैठ सकता।
3. राज्य के सभी कामों का विचार प्रिवी कौंसिल की बैठक में होना चाहिए और सभी सदस्यों को हस्ताक्षर करना चाहिए।

निर्णायक कानून का महत्त्व

नोट

निर्णायक कानून का इंग्लैण्ड के संवैधानिक इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। निर्णायक कानून ने उस कार्य को एक सफल रूप प्रदान किया जो अधिकार-विधान के द्वारा शुरू किया गया था। इसने क्रान्ति-व्यवस्था को पूर्ण बना दिया।

1. पैतृक एवं दैवी हक के सिद्धान्तों को गहरा धक्का : अधिकार-विधान के द्वारा इन सिद्धान्तों को तो धक्का लगा ही था, अब निर्णायक कानून ने इन्हें और भी अधिक गहरा धक्का दिया। अधिकार-विधान ने तो मेरी और विलियम को गद्दी प्रदान की थी। मेरी दूसरे जेम्स की बड़ी पुत्री थी। मेरी और विलियम के बाद एन को गद्दी दी गई थी और एन भी दूसरे जेम्स की छोटी पुत्री थी। लेकिन निर्णायक कानून ने बहुत से निकटवर्ती उत्तराधिकारियों को छोड़कर दूरवर्ती उत्तराधिकारी को गद्दी दी। इसके द्वारा हैनोवर की एलेक्ट्रेस सोफिया को गद्दी प्रदान की गई थी। एन और सोफिया के बीच कई उत्तराधिकारी मौजूद थे, किन्तु उन्हें गद्दी नहीं मिली क्योंकि वे कैथोलिक थे। अत: अब उत्तराधिकार के निर्णय करने का अधिकार निश्चित रूप से पार्लियामेन्ट और राष्ट्र के हाथ में आ गया। हैनोवर-वंश के राजा इस वस्तुस्थिति को अच्छी तरह समझते थे और सार्वजनिक रूप से स्वीकार भी करते थे।

2. नागरिकों की स्वतन्त्रता की रक्षा : जब न्यायपालिका के कार्यों में राज्यपालिका हस्तक्षेप करने लगती है, तो इससे साधारण नागरिकों की स्वतन्त्रता खतरे में पड़ जाती है। यही स्थिति इंग्लैण्ड की न्यायपालिका की भी थी जब उस पर कार्यपालिका का प्रभाव था, तब राजा न्यायाधीशों के द्वारा लिए गए फैसले को प्रभावित करने की कोशिश करते थे, किन्तु निर्णायक कानून ने न्यायपालिका के न्यायाधीशों को कार्यपालिका से मुक्त कर दिया और इस संकटपूर्ण स्थिति का खात्मा कर दिया। अब जनता के अधिकार एवं स्वतन्त्रता बहुत सुरक्षित हो गई।

3. राजा की शक्तियों पर प्रतिबन्ध : राजा के ऊपर कुछ प्रतिबन्ध लगाकर उनकी शक्तियों को कम करने की कोशिश की गई। राजा पोप या कैथोलिक मतावलम्बी से कोई रिश्ता नहीं रख सकता था। राजा के द्वारा क्षमा पाकर कोई भी मंत्री या पदाधिकारी पार्लियामेन्ट के महाभियोग से मुक्ति नहीं पा सकता था। अत: राजा के क्षमा द्वारा किसी मंत्री को बचाने की शक्ति समाप्त हो गई थी। राजा पार्लियामेन्ट की इजाजत बिना न तो विदेश जा सकता था और न ही विदेश से कोई युद्ध की घोषणा कर सकता था। अब देश के कानूनों का पालन करना उसके लिए भी अनिवार्य हो गया।

4. मंत्रियों के उत्तरदायित्व : निर्णायक कानून के द्वारा यह घोषित कर दिया गया कि राजा की क्षमा के द्वारा कोई व्यक्ति महाभियोग से मुक्त नहीं हो सकता। इससे मंत्रियों के उत्तरदायित्व में दृढ़ता आयी।

इतना ही नहीं, इस अधिनियम से आधुनिक कैबिनेट शासन-प्रणाली के विकास में दूसरी दृष्टि से भी बड़ी सहायता मिली। इसी अधिनियम के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में हैनोवर वंश का राज्यारोहण हुआ और प्रधानमंत्री के पद का प्रारम्भ हुआ।

5. न्यायपालिका की स्वतन्त्रता : निर्णायक कानून ने न्यायपालिका को कार्यपालिका के हस्तक्षेप से मुक्त कर दिया। अब राजा न्यायाधीशों को नियुक्त तो कर सकते थे, किन्तु पदच्युत नहीं कर सकते थे। अब न्यायाधीशों का वेतन निश्चित हो गया और कोई दोष साबित होने पर वे पार्लियामेन्ट के आवेदन पर ही पदच्युत किए जा सकते थे। इस तरह न्यायाधीशों पर भी पार्लियामेन्ट का नियन्त्रण कायम हो गया, किन्तु वे कार्यपालिका से स्वतन्त्र हो गए। अब न्यायाधीश निर्भीक होकर अपने अंत:करण के अनुसार न्याय का कार्य करने लगे। अब वे कानून एवं विधान के संरक्षक हो गए और यहीं से इंग्लैण्ड में विधिराज्य का सूत्रपात हुआ।

6. पार्लियामेन्ट की शक्ति में बढ़त : राजा की शक्ति में जिस रफ्तार से कमी की गई उसी रफ्तार से पार्लियामेन्ट की शक्ति में बढ़त हुई। पार्लियामेन्ट की शक्तियाँ तो पिछले कुछ समय से बढ़ रही थीं पर निर्णायक कानून के लागू होने के बाद तो पार्लियामेन्ट की शक्तियाँ दोगुनी हो गईं। अब देश की वैदेशिक नीति भी पार्लियामेन्ट के हाथों में आ गई।

वैधानिक प्रगति : आधुनिक कैबिनेट की कई विशेषताओं में एक विशेषता यह है कि उसके सभी सदस्य छोटी सभा के बहुमत दल के सदस्य होते हैं। यह सिद्धान्त विलियम तृतीय के राज्यकाल में एक प्रकार से स्थापित हो गया।

नोट

कैबिनेट शासन का विकास : अब तक की स्थिति के अनुसार दो दल की स्थापना हो चुकी थी। वह दल थे टोरी तथा ह्विग दल। दोनों दलों की गृह तथा वैदेशिक नीति अलग-अलग थी। विलियम दोनों दलों के प्रति कृतज्ञ था क्योंकि दोनों दलों के द्वारा उसे बुलाया गया था। इसके अतिरिक्त वह अपनी वैदेशिक नीति की सफलता के लिए समूचे राष्ट्र का समर्थन चाहता था। अत: वह पार्लियामेन्ट में किसी एक दल का बहुमत रहने पर भी दोनों दलों के लोगों को अपने मंत्री के पदों पर नियुक्त करने लगा। विलियम की मंशा तो दोनों दलों को समान अधिकार देने की थी परन्तु इस नीति का प्रभाव उल्टा ही पड़ा दोनों दल के मंत्री आपस में लड़ने-झगड़ने लगे। तब संडरलैण्ड की राय से एक ही पार्टी से मंत्रिमण्डल स्थापित करने के लिये निश्चय हुआ। अत: 1695 ई. में केवल ह्विग पार्टी से ही मन्त्री नियुक्त किए गए। यह मन्त्रिमण्डल, ह्विग जन्टों के नाम से प्रसिद्ध है। संयोगवश उस समय कॉमन्स सभा में ह्विग पार्टी का बहुमत था। अत: यह सिद्धान्त कायम हो गया कि जिस पार्टी का बहुमत कॉमन्स सभा में होगा। उसी पार्टी के सदस्यों को मंत्री पद पर नियुक्त किया जायेगा, परन्तु फिर भी इस सिद्धान्त को पूर्णरूप से लागू नहीं किया गया था, क्योंकि कभी-कभी एक पार्टी का बहुमत रहने पर भी संयुक्त मंत्रिमण्डल की स्थापना की गई थी।

9.6 आर्थिक प्रगति

विलियम के राज्य काल में जिस प्रकार राजनैतिक तथा वैधानिक प्रगति हुई उसी प्रकार उसके काल की आर्थिक प्रगति भी बहुत प्रशंसनीय है। उसके आर्थिक प्रगति के लिए किए गए कार्यों के द्वारा ही इंग्लैण्ड को आर्थिक रूप से समृद्ध होने में सहायता मिल सकी। उसका एक सबसे महत्त्वपूर्ण सुधार सिक्का सुधार है इसके अतिरिक्त अन्य आर्थिक सुधारों का वर्णन नीचे है।

1. राष्ट्रीय कर्ज की शुरुआत (1693 ई.) : विलियम का राज्यकाल युद्धों का जमाना था जिनके कारण बहुत खर्चा होता था। अधिक टैक्स लगाने से प्रजा तबाह थी और आवश्यकतानुसार रुपये भी नहीं मिलते थे। अत: विलियम पेटर्सन नाम के एक स्कॉच की राय से तत्कालीन चांसलर मौंटेग एक नया तरीका कार्यरूप में लाया। सरकार के उत्तरदायित्व पर अधिक संख्या में कर्ज लिया जाने लगा और उसका सिर्फ सूद ही देने का वादा किया जाता था। यह कर्ज राजा को व्यक्तिगत रूप से नहीं, बल्कि राष्ट्र को दिया जाता था। इस प्रकार 1693 ई. में इंग्लैण्ड में राष्ट्रीय कर्ज का आरम्भ हुआ। 1697 ई. में यह क़र्ज 2 करोड़ पौंड था, 1713 ई. में 7 करोड़ 80 लाख पौंड और 1815 में 84 करोड़ पौंड तक बढ़ गया।

2. बैंकों की स्थापना (1694 ई.) : इस काल तक इंग्लैण्ड में किसी प्रकार का कोई बड़ा बैंक नहीं था। अत: लोग अपना रुपया सुनारों के यहाँ जमा करते थे तथा जरूरत पड़ने पर उन्हीं सुनारों से सूद पर धन भी ले लेते थे। शुरुआती समय में तो सरकार को केवल कुछ बड़े-बड़े व्यापारियों ने ही कर्जे दिए थे। अत: इन लोगों को एक बैंक स्थापित करने की आज्ञा दे दी गई। इसी प्रकार 1694 ई. में इंग्लैण्ड के बैंकों की स्थापना हुई। इसने बहुत उन्नति की। यह बैंक रुपया जमा करता और नोट भी निकालता था। लोगों का इस पर विश्वास बढ़ने लगा था क्योंकि इसके सभी कार्य सरकार की देखरेख में होता था। अतएव लोग निधड़क अपनी धन-सम्पत्ति को बैंकों में जमा करने लगे। बैंक लोगों को सूद देता था।

3. सिक्का-सुधार : यह विलियम द्वारा किया गया एक बहुत महत्त्वपूर्ण सुधार है। विलियम ने देखा कि बाजार में जो सिक्के चल रहे थे वे बहुत पुराने व घिसे हुए थे। अत: उसने यह आज्ञा दी कि उन सिक्कों के स्थान पर नए तथा मजबूत सिक्के बाजार में चलाए जाएँ व पुराने सिक्कों को खजाने में लौटा दिया जाये।

परिणाम : इन आर्थिक सुधारों के कारण इंग्लैण्ड के व्यापार तथा साम्राज्य की वृद्धि में बहुत बड़ी सहायता मिलने लगी। देश की आर्थिक-प्रणाली सुदृढ़ हो गई। अब किसी प्रकार के संकट का डर नहीं रह गया था।

क्रान्तिकारी व्यवस्था भी दृढ़ हो गई थी। जिसके कारण विलियम का स्थान भी दृढ़ हो गया। साथ ही हैनोवर राजवंश के पक्ष में प्रतिक्रिया हुई। बड़े-बड़े धनी-मानी लोगों ने कर्ज दिया था या बैंक में धन जमा किया था। उन्हें डर था कि स्टुअर्ट-पुनर्स्थापन से उनका कर्ज या धन बर्बाद हो जाएगा। अत: उन लोगों ने जी-जान से क्रान्तिकारी व्यवस्था का समर्थन किया। अब जेम्स-द्वितीय, उसके पुत्र या उन दोनों के समर्थकों के लिए क्रान्तिकारी सरकार को उलटना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव हो गया।

नोट

9.7 रानी एन (1702-1714 ई.)

रानी एन का चरित्र : सन् 1702 ई. में विलियम के मरने के बाद जेम्स-द्वितीय की दूसरी लड़की एन गद्दी पर बैठी। एन का विवाह डेनमार्क के राजा जार्ज से हुआ था। जार्ज एक सख्त मिजाज का व्यक्ति था। वह एक मिलनसार व्यक्ति नहीं था। वह एक जटिल प्रकृति का व्यक्ति था। इसके विपरीत एन का स्वभाव बहुत अच्छा था। वह अपने मित्रों के प्रति सच्चा व्यवहार रखती थी। वह टोरी पार्टी एवं चर्च की समर्थक थी। वह बहुत से लोगों की दृष्टि में प्रिय थी, परन्तु उसके स्वभाव में कुछ कमियाँ भी थीं। वह जिद्दी तथा छोटे विचार की औरत थी, उसमें दृढ़ता की कमी थी। अत: वह बहुत जल्दी ही दूसरों के प्रभाव जाल में आ जाती थी। इस प्रकार वह अपने राज्यकाल के अधिकांश भाग में वह मार्लबरा की पत्नी के प्रभाव में थी। वह अपने को पूर्णरूप से अंग्रेज मानती थी। उसे साहित्य और संगीत से कोई लगाव नहीं था। उसे शिकार करने का बहुत शौक था।

एन के राज्य-काल की विशेषताएँ : एन के राज्यकाल की दो मुख्य विशेषताएँ थीं।

पहली विशेषता तो यह थी कि उसके राज्यकाल में दोनों राजनीतिक दलों ह्विग तथा टोरी के बीच भीषण विरोध पैदा हो गया। एन के शासन के पिछले भाग में यह भीषणता और भी बढ़ गई। अब दोनों दलों के अपने-अपने सिद्धान्त निश्चित रूप से कायम हो गए-

1. ह्विग लोग जनता के अधिकार के समर्थक थे, अत: वे नियमानुमोदित शासक के पक्ष में थे। टोरी राजा के विशेषाधिकार के समर्थक थे, अत: वे राजा के दैवी अधिकार के सिद्धान्त के पक्ष में थे।
2. ह्विग चर्च पर राज्य का अधिकार चाहते थे और डिसेंटरों के साथ सहिष्णुता की नीति लागू करना चाहते थे। टोरी अंग्रेजी चर्च के कट्टर पक्षपाती थे और उपर्युक्त नीति के विरोधी थे।
3. ह्विग हैनोवर-वंश के राज्याभिषेक के समर्थक थे, लेकिन टोरी जेम्स-द्वितीय के पुत्र के पक्ष में थे।
4. ह्विग इंग्लैण्ड में व्यापारिक अथवा औद्योगिक विकास चाहते थे, अत: वे स्वतंत्र व्यापार की नीति के पक्ष में थे, लेकिन टोरियों को इससे विशेष दिलचस्पी नहीं थी और वे संरक्षण की नीति के पक्ष में थे।
5. ह्विग नवीन वर्गों एवं विचारों के समर्थक थे किन्तु टोरी इनके विरोधी थे।
6. वैदेशिक नीति में भी दोनों दलों के बीच भिन्नता थी। ह्विग युद्धनीति के पक्ष में थे तो टोरी इसके विरोधी थे।

दूसरी विशेषता यह है कि राजनीति और साहित्य में घना सम्बन्ध स्थापित हो गया। दोनों दलों में भीषण विरोध होने लगे। इन विरोधों के कारण तत्कालीन समाज और साहित्य बहुत प्रभावित हुआ। लोगों की दिलचस्पी सार्वजनिक कामों में बढ़ने लगी। पार्लियामेन्ट की प्रसिद्धि भी उस समय बहुत बढ़ने लगी थी। अत: विरोधी दलों के लिए यह आवश्यक था कि देश की जनता को अधिक-से-अधिक प्रभावित करें। इसके लिए प्रेस और प्लेटफार्म उत्तम साधन थे। अत: साहित्यिक लोगों से पार्टी का सम्पर्क आवश्यक हो गया।

एडीसन और स्टील ह्विगों की ओर से और स्विफ्ट टोरियों की ओर से काम कर रहे थे।

9.8 गुडोल्फिन मंत्रिमण्डल (1702-1710 ई.)

नोट

एन के 12 वर्षों के राज्यकाल में दो मंत्रिमण्डलों की स्थापना हुई। प्रथम मंत्रिमण्डल का प्रधान गुडोल्फिन था। गुडोल्फिन एक योग्य, अनुभवी तथा कुशल राजनीतिज्ञ था। वह एक कुशल अर्थशास्त्री भी था। वह मार्लबरा का पक्का मित्र था। वह मंत्रिमण्डल के रूप में प्रारम्भ हुआ और ह्विग मंत्रिमंडल के रूप में समाप्त हुआ; क्योंकि टोरी लोग युद्धनीति के विरोध के कारण मंत्रिमण्डल से क्रमशः हटाए जाने लगे। 1702 से 1710 ई. तक यह मंत्रिमण्डल कायम रहा।

इसकी प्रसिद्धि के कारण : गुडोल्फिन का मंत्रिमंण्डल इंग्लैण्ड के इतिहास में महत्त्वपूर्ण मंत्रिमण्डलों में से एक है। इसी के समय में स्पेन के उत्तराधिकार की लड़ाई में मार्लबरा अद्‌भुत सफलता प्राप्त कर रहा था। इंग्लैण्ड का जिब्राल्टर और माइनोर्का पर अधिकार हो गया। जिस कारण भूमध्य सागर में अंग्रेजों की सामुद्रिक प्रधानता कायम होने लगी। इसके शासनकाल की दूसरी बड़ी घटना थी-इंग्लैण्ड और स्कॉटलैंड का पार्लियामेन्टरी संयोग।

इसके पतन के कारण : 1710 ई. में अचानक गुडोल्फिन मंत्रिमण्डल टूट गया। इस मंत्रिमण्डल के पतन के कई कारण थे–

1. रानी एन का रवैया : रानी एन स्वभाव से टोरी थी। अतएव रानी एन को एक शुद्ध ह्विग मंत्रिमण्डल पसंद नहीं था। कारण और भी थे जिनकी वजह से वह ह्विगों को पसंद नहीं करती थी। ह्विगों ने एन के पति पर अभियोग लगाया था एवं जब एन के पति की मृत्यु हो गई थी तब ह्विगों ने एन को दूसरी शादी करने की सलाह भी दी थी।

रानी एन पर कुछ विशेष स्त्रियों का प्रभाव था। सबसे पहले उस पर मार्लबरा की पत्नी का प्रभाव था, परन्तु 1708 ई. में किन्ही कारणों से उन दोनों के बीच में मतभेद उत्पन्न हो गए। दोनों में झगड़ा होने के बाद दोनों अलग हो गए। उसके बाद एन, मैशम के प्रभाव में आ गई। मैशम टोरी पार्टी की समर्थक थी और वह ह्विगों के विरुद्ध रानी के कान भरने लगी।

2. युद्ध में अप्रियता : फ्रांस के साथ युद्ध करने के लिए ह्विगों के अलावा किसी की रजामंदी नहीं थी। इसमें ह्विगों का अपना स्वार्थ निहित था। ह्विग वाले जानते थे की फ्रांस के साथ इंग्लैण्ड को सुलह कर लेने में इंग्लैण्ड का फायदा होगा परन्तु यह जानते हुए भी 1706 ई. और 1709 ई. में ह्विगों ने सुलह करने से अस्वीकार कर दिया। अतः स्वार्थमय युद्ध नीति के कारण ह्विग जनता की दृष्टि में अपना सम्मान खोने लगे।

3. मार्लबरा के हौसले : मार्लबरा की इच्छा थी कि वह अंग्रेजी सेना का आजीवन कैप्टन जनरल बना रहे। अतः सर्वसाधारण को इस बात का सन्देह तथा भय होने लगा था कि वह दूसरा क्रॉमवेल बनेगा, यद्यपि सरकार ने इस बात का समर्थन नहीं किया था फिर भी इससे मंत्रिमण्डल की और भी बदनामी हो गई।

4. डा. सैकवेरेल पर अभियोग : रानी एन इंग्लैण्ड के चर्च की कट्टर समर्थक थी। उस समय यह अफवाह जोरों से उड़ रही थी कि चर्च खतरे में है। डॉ. सैकवेरेल नाम का टोरी पादरी ह्विगों के विरुद्ध प्रचार कर रहा था और जनता के बीच प्रिय हो रहा था। उसने ह्विग मंत्रिमण्डल की कड़ी आलोचना की। अतः ह्विग सरकार ने उस पर अभियोग चला दिया। यह सरकार की बड़ी भूल साबित हुई। सैकवेरेल के पक्ष में जनता की आवाज उठने लगी। लोग यह नारा लगाने लगे कि रानी और सैकवेरेल का समर्थन करें। फल यह हुआ कि उसे बहुत साधारण सजा देकर मुक्त करना पड़ा। उसे अपने प्रचार-कार्य से सिर्फ तीन वर्ष के लिए रोक दिया गया। मुक्त होने पर जनता ने उसका बड़ा सत्कार किया।

इन सभी कारणों ने ह्विगों के पतन को निश्चित कर दिया था। रानी ने ह्विग मंत्रिमण्डल को भंग कर दिया। रानी ने शासन की जिम्मेदारी टोरियों के हाथ में सौंप दी। पार्लियामेन्ट को भंग कर दिया गया और नया चुनाव हुआ जिसमें टोरियों को बहुमत प्राप्त हुआ। अब शेष राज्यकाल (1710-1714 ई.) में टोरियों की प्रधानता रही।

9.9 टोरी मंत्रिमण्डल (1710-1714 ई.)

नोट

हार्ली और सेन्ट जान टोरियों के दो बड़े नेता थे। वे क्रमश: अर्ल आफ ऑक्सफोर्ड और वाइकाउन्ट बोलिंगब्रुक के नाम से भी प्रसिद्ध थे। हार्ली प्रधानमंत्री था। वह राजनीति में मध्यम श्रेणी का व्यक्ति था। वह कुशल वक्ता तो नहीं था, लेकिन पार्टी का सफल मैनेजर था। उसकी साहित्य में बहुत रुचि थी। उसने कई पुस्तकें भी लिखी थीं। सेन्ट जान का व्यक्तित्व उससे कहीं अधिक आकर्षक और प्रभावशाली था। वह कुशल वक्ता और योग्य लेखक भी था।

कार्य :

1. मार्लबरा पर अभियोग चलाया गया और उसे सेनापति पद से हटा दिया गया। देश छोड़कर वह कहीं बाहर चला गया। उसका उत्तराधिकारी अयोग्य व्यक्ति था। जिसे युद्ध में कोई दिलचस्पी नहीं थी। 1713 ई. में यूट्रेक्ट की सन्धि के द्वारा युद्ध समाप्त हो गया।
2. कॉमन्स सभा की सदस्यता पर ह्विगों के लिए प्रतिबन्ध लगा दिए गए। इस ऐक्ट द्वारा यह निश्चित किया गया कि कौंटी में 600 पौंड और बोरो में 300 पौंड वार्षिक मूल्य की सम्पत्ति वाले ही कॉमन्स सभा के सदस्य हो सकते हैं।
3. 1714 ई. में शिज्म ऐक्ट पास हुआ जिसके अनुसार शिक्षक का कार्य करने के लिए बिशप से प्रमाणपत्र लेना अनिवार्य कर दिया गया।
4. धार्मिक विद्रोही (नान-कनफर्मिस्ट) लोग कभी-कभी टेस्ट और कॉरपोरेशन ऐक्ट प्रतिबन्धों से बचने के लिए अंग्रेजी चर्च के सिद्धान्तों को ऊपर से मान लेते थे। 1711 ई. में ओकेजनल कनफर्मिटी ऐक्ट पास कर इसे रोक दिया गया।
5. लार्ड सभा में टोरियों को बहुमत प्राप्त कराने के लिए रानी ने 12 नई टोरी लार्डों का निर्माण किया।

उत्तराधिकार की समस्या : ऑक्सफोर्ड और बोलिंगब्रुक ने यह आशा की थी कि टोरी सरकार अधिक दिनों तक कायम रहेगी, क्योंकि राज्य में शान्ति की स्थापना हो चुकी थी और देश में उन्नति हो रही थी, लेकिन बदलती परिस्थितियों के कारण उनकी उम्मीदों पर पानी फिर गया। एन का स्वास्थ्य खराब हो रहा था। इसी समय सोफिया की भी मृत्यु हो गई। अब सोफिया का पुत्र जार्ज-प्रथम ही गद्दी के लिए एक वैध अधिकारी था, लेकिन जार्ज का राज्याभिषेक टोरियों के लिये आफत का घर था, क्योंकि वह ह्विगों का ऋणी तथा मित्र था। अत: जेम्स द्वितीय का पुत्र ओल्ड प्रिटेंडर को गद्दी पर बिठाने की कोशिश की जाने लगी। टोरियों ने उसके साथ गुप्त पत्र व्यवहार करना शुरू कर दिया। ह्विगों और टोरियों के बीच संघर्ष निश्चित-सा मालूम पड़ने लगा, लेकिन स्टुअर्ट-पुनर्स्थापन के मार्ग में दो बड़ी बाधाएँ थीं। पहली बाधा यह थी कि जेम्स तृतीय कैथोलिक था और गद्दी के लिए भी अपना धर्म छोड़ने को तैयार नहीं था। अत: ऑक्सफोर्ड को स्टुअर्ट-पुनर्स्थापन की सफलता में सन्देह होने लगा और वह बोलिंगब्रुक को सहयोग देने में आनाकानी करने लगा। अत: बोलिंगब्रुक उससे क्रुद्ध हो बदला लेने की बात सोचने लगा।

दूसरी बाधा यह उपस्थित हुई कि रानी एन थोड़े ही समय के बाद मर गयी। जब वह बीमार पड़ी, तब उसने बोलिंगब्रुक के प्रभाव में आकर ऑक्सफोर्ड को पदच्युत कर दिया। यह घटना 1714 ई. की 27 जुलाई को हुई। उसके दो दिनों के बाद एन की हालत नाजुक होने लगी और परिस्थिति पर विचार करने के लिए बैठक कर दी गई। दो और ह्विग सदस्य, आर्जिल और समरसेट, कौंसिल में अचानक घुस गए और बहस में भाग लेने लगे। एक तीसरा ह्विग ड्यूक श्रूजबरी भी शामिल हो गया। इसी श्रूजबरी को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। 1 अगस्त, 1714 ई. को रानी एन की मृत्यु हो गई। बैठक में सभी प्रीवी कौंसिलर बुला दिए गए जिसमें ह्विगों का बहुमत था। अब हैनोवर के एलेक्टर जार्जप्रथम का राज्याभिषेक घोषित किया गया। बोलिंगब्रुक की योजना असफल हो गई और वह भाग कर फ्रांस चला गया।

नोट

9.10 वैदेशिक नीति (1689-1714 ई.)

इंग्लैण्ड और फ्रांस की शत्रुता : सन् 1689 ई. से 1714 ई. तक के युग को विदेशी युद्धों का युग कहा जा सकता है। राज्य-क्रान्ति के बाद इंग्लैण्ड को कई युद्धों में शामिल होना पड़ा। 1689 ई. से 1815 ई. तक यानी 126 वर्षों में 56 वर्ष युद्ध में व्यतीत हुए। इसी बीच सात युद्ध हुए। फ्रांस इंग्लैण्ड का खास दुश्मन था। अब दोनों देशों के बीच की दुश्मनी के बारे में वर्णन नीचे किया गया है–

1. यूरोप में फ्रांस के हमले : अभी फ्रांस की कोई प्राकृतिक सीमा तय नहीं थी। फ्रांस का राजा लुई-चतुर्दश चाहता था कि वह राइन नदी को फ्रांस की सीमा निर्धारित करे, परन्तु ऐसा करने के लिए उसे दक्षिण-पूर्व में जर्मन रियासतों पर और उत्तर-पूर्व में नीदरलैण्ड पर अधिकार स्थापित करना पड़ता। उस समय नीदरलैण्ड के दो हिस्से थे-हॉलैंड जो 1609 ई. में स्पेन से स्वतन्त्र हो गया था और बेल्जियम की ओर के किलों पर अधिकार स्थापित करने के लिए फ्रांस प्रयास कर रहा था। यदि फ्रांस को इसमें स्वतन्त्रता मिल जाती तो हॉलैण्ड स्वत: उसके अधिकार में आ जाता, परन्तु इंग्लैण्ड चाहता था कि हॉलैण्ड स्वतन्त्र रहे क्योंकि इसमें उसका अपना स्वार्थ था। यदि हॉलैण्ड पर फ्रांस का कब्जा हो जाता तो इंग्लैण्ड की सामुद्रिक स्थिति और उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों ही खतरे में पड़ जाती। अत: इंग्लैण्ड यह कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि हॉलैण्ड पर फ्रांस का कब्जा हो जाए। इस स्थिति से भयभीत होकर सम्राट और जर्मन राजाओं ने 1686 ई. में एक संघ कायम किया जो लीग ऑग्सबर्ग के नाम से प्रसिद्ध था।

2. स्पेन में फ्रांस का हौसला : स्पेन पर फ्रांस अपना अधिकार स्थापित करना चाहता था। फ्रांस यह अधिकार सन्धि या वैवाहिक सम्बन्धों के द्वारा स्थापित करना चाहता था। यदि फ्रांस स्पेन पर अपना अधिकार स्थापित कर लेता तो इससे फ्रांस की शक्ति बहुत बढ़ जाती और इससे शक्ति संतुलन की नीति में बाधा उत्पन्न हो जाती।

3. इंग्लैण्ड और फ्रांस के विश्वव्यापी हौसले : इंग्लैण्ड और फ्रांस के संघर्ष केवल यूरोप तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि विश्व के अन्य भागों में भी फैले हुए थे। दोनों देशों की साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षा इस संघर्ष का महत्त्वपूर्ण कारण थी। भारतवर्ष पश्चिमी द्वीप-समूह, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका आदि विश्व के कई भाग इस संघर्ष के क्षेत्र बने हुए थे।

4. लुई-चतुर्दश की बहुमुखी प्रतिभा : लुई-चतुर्दश (1643-1714 ई.) फ्रांस का प्रसिद्ध स्वेच्छाचारी शासक था। सारे यूरोप में 1688-89 ई. तक उसका कीर्तिमान था। उसकी सेना को अजेय सेना माना जाता था। उसकी जलसेना की शक्ति को इंग्लैण्ड व हॉलैण्ड की कुल जलसेना की शक्ति के बराबर माना गया था। उसके सभी अफसर बड़े ही कुशल और योग्य थे। वह बहुत तेजी के साथ पूर्व की ओर बढ़ रहा था, इंग्लैण्ड के राजा चार्ल्स-द्वितीय तथा जेम्स-द्वितीय उसके हाथों की कठपुतली थे। इस प्रकार लुई की धाक जमी हुई थी, लेकिन राज्य-क्रान्ति ने उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया। क्रान्ति के फलस्वरूप विलियम तृतीय का इंग्लैण्ड की गद्दी पर राज्यारोहण हुआ और वह लुई का कट्टर दुश्मन था। राजा होने से पहले ही वह ऑग्सबर्ग के संघ में शामिल हो गया।

9.11 1688 और 1717 ई. के बीच दो प्रमुख युद्ध

1688 और 1717 ई. के बीच दो प्रमुख युद्ध हुए। अंग्रेजी राज्य के उत्तराधिकार का युद्ध और स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध।

1. अंग्रेजी राज्य के उत्तराधिकार की लड़ाई (1689-97 ई.) : यूरोप के इतिहास में यह युद्ध ऑग्सबर्ग के संघ के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। उस समय मुख्य प्रश्न यह उठ खड़ा हुआ था कि आखिर इंग्लैण्ड का राजा वास्तव में कौन है? जेम्स-द्वितीय या विलियम-तृतीय। फ्रांस का लुई-चतुर्दश जेम्स-द्वितीय को इंग्लैण्ड की गद्दी दिलाने में सहायता कर रहा था। इस कारण युद्ध छिड़ गया जो आठ वर्षों तक विभिन्न जगहों में चलता रहा।

(i) स्कॉटलैण्ड में : वाइकाउन्ट डंडी ने पहाड़ी बाशिन्दों को आपस में मिलाकर स्कॉटलैण्ड में जेम्स-द्वितीय के पक्ष में विद्रोह किया। किल्लीकांकी घाटी के युद्ध में उसने अंग्रेजों और डचों की सम्मिलित सेना को हरा दिया था, परन्तु दुर्भाग्यवश वह इस युद्ध में बुरी तरह से घायल हो गया था और थोड़े समय के बाद उसकी मृत्यु भी हो गई। उसकी मृत्यु के साथ ही विद्रोह भी दब गया।

(ii) आयरलैण्ड में : आयरलैण्ड में भी भीषण विद्रोह शुरू हुआ। फ्रांसीसी धन-जन की सहायता पाकर जेम्स-द्वितीय स्वयं आयरलैंड पहुँच गया था। आयरिश लोग जेम्स के पक्ष में खूब दिलचस्पी रखते थे, क्योंकि दोनों ही कैथोलिक धर्म के अनुयायी थे। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंटों के बीच युद्ध छिड़ गया। उत्तर के प्रोटेस्टेंटों पर हमला हुआ और उनके दो किले लंडनडेरी और एन्सक्लीन घेर लिए गए, लेकिन कैथोलिकों को दबा दिया गया। इसके बाद 1 जुलाई 1690 ई. को विलियम स्वयं आयरलैण्ड पहुँचा और उसने बोयन के युद्ध में जेम्स को हरा दिया। यह अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध था जिसमें कई राष्ट्र सम्मिलित थे। जेम्स की सेना में अंग्रेज और फ्रांसीसी थे और विलियम की सेना में अंग्रेज, फ्रांसीसी (ह्यू जिन्स), आयरिश, डच, प्रशियन, डेन और फिन्स थे। जेम्स हारकर फ्रांस भाग गया। डच जनरल ग्रिनकेल आउग्रिम के युद्ध में विजयी हुआ। 1691 ई. में कैथोलिक दुर्ग लिमेरिक का पतन हुआ और इसके साथ आयरलैंड में युद्ध समाप्त हो गया तथा विलियम की जड़ जम गई।

(iii) समुद्र में : फ्रांस ने जल सेना को बहुत शक्तिशाली बना लिया था। 1690-91 ई. में समुद्र पर फ्रांसीसियों की प्रधानता थी। बीचीहेड की लड़ाई में फ्रांस के ऐडमिरल डरविल ने संयुक्त अंग्रेजी और डच बेड़े को बुरी तरह पराजित कर दिया। इस बात से लुई चतुर्दश का मनोबल इतना बढ़ गया कि वह अब इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने की बात सोचने लगा, परन्तु इस बार भाग्य ने लुई का साथ नहीं दिया और लड़ाई के शेष काल में 1692 ई. से 1697 ई. तक समुद्र पर अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित हो गया। लाहोंग के युद्ध में अंग्रेज नौ-सेनापति रसेल ने 1692 ई. में फ्रांसीसी बेड़े पर निर्णयात्मक विजय प्राप्त की। अंग्रेजों ने इस जीत का जश्न मनाया। अंग्रेजों का अधिकार अब इंग्लिश चैनलों पर हो गया था जिसके कारण फ्रांसीसी व्यापार को बड़ी हानि पहुँची।

इसके पश्चात् भूमध्य सागर में भी एक अंग्रेजी बेड़ा भेजा गया जिसने बार्सिलोना की फ्रांसीसी हमले से और स्पेन की उनके प्रभुत्व से रक्षा की।

(iv) जमीन पर : स्थल पर युद्ध का प्रधान स्पेनी नीदरलैण्ड था। कई बार यहाँ विलियम को हार का मुँह देखना पड़ा फिर भी इन हारों के आगे उसने अपने जीत की उम्मीद नहीं छोड़ी और धैर्यपूर्वक वह लड़ता रहा और अन्त में उसने विजय का परचम लहरा दिया। 1695 ई. में उसने नामूर के दृढ़ किले पर हमला किया और विजयी हुआ।

(v) रिजविक की संधि : अब दोनों इस युद्ध की समाप्ति चाहते थे क्योंकि वह इस बेहद खर्चीले और लम्बे युद्ध से ऊब गए थे, अतः 1697 ई. में रिजविक की सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार लुई के द्वारा 1678 ई. के बाद के सभी जीते हुए प्रदेशों को स्ट्रासवर्ग के सिवा, लौटा दिया गया। उसने विलियम को इंग्लैण्ड का राजा और एन को गद्दी की भावी उत्तराधिकारिणी के रूप में स्वीकार कर लिया। उसने वचन दिया कि वह भविष्य में जेम्स को सहायता नहीं देगा और सीमा-स्थित किलों में सेना रखने के लिए डचों के अधिकार को स्वीकार किया। इंग्लैण्ड ने भी फ्रांस के कुछ जीते हुए प्रदेशों को वापस लौटा दिया।

(vi) उसका महत्त्व : इस प्रकार इंग्लैण्ड ने फ्रांस के साथ सम्मानपूर्ण सन्धि की। अब लुई की कमजोरी प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने लगी थी। यह लुई का प्रथम युद्ध था जिसमें उसकी निश्चित हार हुई थी। पहली बार उसके हौसले में रुकावट पैदा हुई थी। **टाउट** के शब्दों में, "उसकी शक्ति अभी महती थी, लेकिन अब उसका विकास रुक गया।" विजित प्रदेशों को वापस लौटा कर उसने अपनी नैतिक हार को भी स्वीकार कर लिया।

इन सब बातों के कारण अब अंग्रेजों की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। अंग्रेजों का आधिपत्य समुद्र पर भी स्थापित हो गया। विलियम के नेतृत्व में अंग्रेजों ने कई बातें सीखी जिसका फायदा आगे चलकर विशेष रूप से हुआ। **रैम्जेमूर** के अनुसार, इस सन्धि में सबसे प्रमुख बात यह थी कि 14वें लुई ने तीसरे विलियम को इंग्लैण्ड के राजा के रूप में स्वीकृति प्रदान कर दी। अंग्रेजी उत्तराधिकार के युद्ध ने क्रान्ति को सुरक्षित कर दिया।

नोट

2. स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध (1702–1713 ई.)

इस युद्ध के कारण निम्नलिखित हैं :

नोट

(i) राज्य के उत्तराधिकार का प्रश्न : रिजविक की सन्धि से स्थायी शान्ति स्थापित न हो सकी और जल्द ही एक दूसरा युद्ध प्रारम्भ हो गया जो इतिहास में "स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध" के नाम से विख्यात है। इस समय स्पेन का राजा चार्ल्स-द्वितीय (1665–1700 ई.) था। वह बूढ़ा हो गया था और मरने के समीप था। उसके कोई सन्तान नहीं थी, लेकिन उसकी दो बहनें और दो फूफियाँ (पिता की बहनें) थीं। उसकी बड़ी फूफी एन का विवाह फ्रांस के राजा लुई तेरहवें के साथ हुआ था और छोटी फूफी मेरिया का विवाह आस्ट्रिया के सम्राट फर्डिनेन्ड तृतीय के साथ हुआ था। ये दोनों फूफियाँ तो मर चुकी थीं, लेकिन उनकी सन्तानें जीवित थीं। बड़ी फूफी का पुत्र लुई चतुर्दश था जिसने चार्ल्स-द्वितीय की बड़ी बहन मेरिया थेरेसा के साथ विवाह किया और छोटी फूफी का पुत्र लियोपोल्ड था जिसने मार्गरेट थेरेसा के साथ विवाह किया। लुई-चतुर्दश को एक पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम लुई डौफिन था, लेकिन वह थोड़े अन्तराल के बाद मर गया। डौफिन के दो पुत्र थे–लुई, बर्गेन्डी का ड्यूक और फिलिप, आंजू का ड्यूक। प्रथम पुत्र लुई भी एक पुत्र छोड़कर मर गया। लियोपोल्ड की मेरिया अन्टोनिया नाम की एक पुत्री थी जिसका विवाह बेवेरिया के एलेक्टर एमानुयेल से हुआ और उससे एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका नाम जोसेफ फर्डिनेन्ड था। मार्गरेट के मरने पर लियोपोल्ड ने अपनी दूसरी शादी की जिससे दो पुत्र पैदा हुए–जोसेफ और आर्कड्यूक चार्ल्स। नीचे एक चार्ट दिया गया है जिसके अध्ययन से उपर्युक्त वंशावली को स्पष्ट रूप से समझा जा सकेगा–

स्पेन के राजा की वंशावली

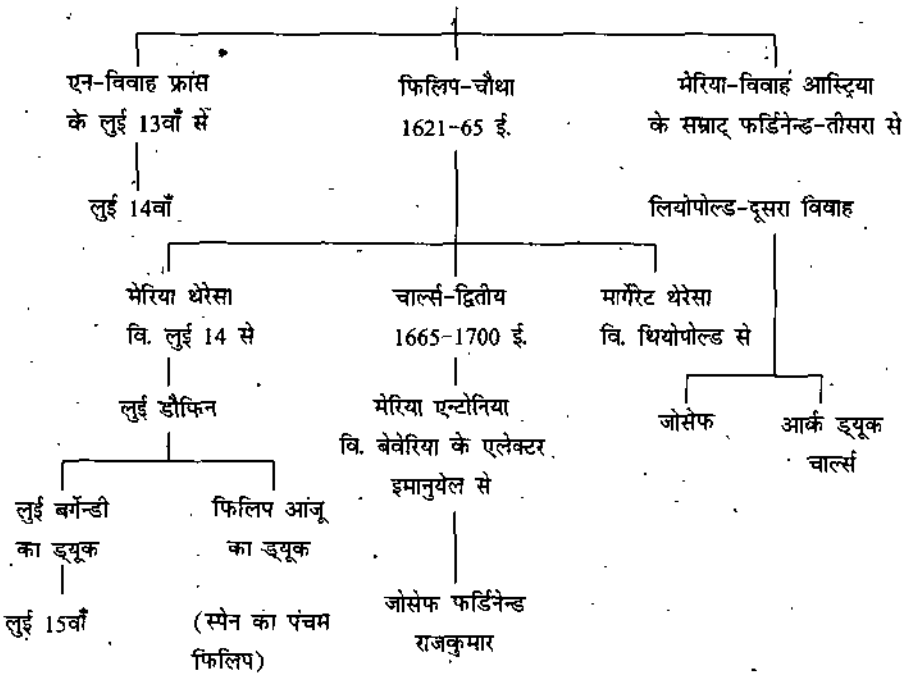

इस प्रकार चार्ल्स-द्वितीय के सन्तानहीन मरणासन्न होने के कारण बड़ी ही विकट परिस्थिति उपस्थित हुई। उसका साम्राज्य बहुत ही विस्तृत था। स्पेन के अलावा नीदरलैण्ड मिलान और नेपल्स, सिसली और सार्डीनियाँ, पश्चिमी द्वीपसमूह और दक्षिणी अमेरिका का कुछ हिस्सा उसके राज्य में सम्मिलित थे। गद्दी के अधिकारी लुई डौफिन और जोसेफ फर्डिनेन्ड हो सकते थे, लेकिन दोनों बहनों ने विवाह के समय स्पेन की गद्दी पर अपना अधिकार छोड़ दिया था। अब दोनों फूफियों की सन्तानें-लुई 14वाँ और लियोपोल्ड ही गद्दी के उचित अधिकारी थे और ये दोनों ही स्पेन में राज्य के लिये उत्सुक थे, लेकिन इनमें से किसी एक का राज्यारोहण शक्ति-सन्तुलन की नीति के विरुद्ध होता और यूरोप के दूसरे राज्यों के लिये खतरनाक साबित होता, क्योंकि इस हालत में फ्रांस या आस्ट्रिया की

शक्ति कई गुनी अधिक बढ़ जाती। इसके अलावा ये दोनों राज्य भी परस्पर प्रतिद्वन्द्वी थे और स्पेन के सम्पूर्ण राज्य पर किसी एक का निर्विरोध अधिकार चुपचाप देख नहीं सकते थे। अत: युद्ध अवश्यम्भावी मालूम पड़ता था जिसका रूप भीषण होता। अत: विलियम-तृतीय के नेतृत्व में यूरोप के राजनीतिज्ञों ने इसे टालने की सतत् चेष्टा की।

नोट

***(ii)* बँटवारे की योजना :** इस योजना के फलस्वरूप 1698 ई. को इंग्लैण्ड फ्रांस और हॉलैंड ने स्पेन राज्य के बँटवारे की पहली संधि की। इस संधि के अनुसार बेवेरिया का राजकुमार स्पेन की गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठने के साथ ही वह अधिकतर प्रदेश का अधिकारी बन गया। फ्रांस को नेपल्स तथा सम्राट को मिलान दिया गया। वैसे देखा जाए तो यह एक अच्छी योजना थी। इससे यूरोप के शक्ति संतुलन की नीति का रक्षा हो जाती थी, परन्तु इस बीच एक बेहद दर्दनाक घटना घटी। बेवेरिया के राजकुमार की अगले ही साल चेचक की बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। इसी कारण 1700 ई. को दूसरी विभाजन संधि की गई। अब आस्ट्रिया का राजकुमार आर्कड्यूक चार्ल्स स्पेन के अधिकांश राज्य का अधिकारी बना, परन्तु इसके लिए उसे आस्ट्रिया की गद्दी का त्याग करना पड़ा। फ्रांस को इटली स्थित स्पेनी सूबे दिए गए।

***(iii)* चार्ल्स की वसीयत और लुई द्वारा इसकी स्वीकृति :** इस नीति की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि स्पेन के राज्य का बँटवारा हो रहा था, परन्तु इसमें वहाँ के राजा अथवा मंत्री के साथ किसी भी प्रकार का कोई विचार-विमर्श या राय नहीं लिया गया था। इससे स्पेनवासियों को बहुत बुरा लगा। यह एक अपमानजनक एवं अस्वाभाविक स्थिति थी। इससे स्पेनवासी पूरी तरह से असंतुष्ट थे। तभी चार्ल्स द्वितीय बीमार हो गया और उसने एक वसीयत बनवाई। इस वसीयत में उसने अपने पूरे राज्य का अधिकारी लुई-चतुर्दश के द्वितीय पोते फिलिप के नाम कर दिया, परन्तु वह फ्रांस की गद्दी पर नहीं बैठ सकता था। लालच में पड़कर लुई ने विभाजन-संधि की शर्तों की उपेक्षा कर वसीयत को स्वीकार कर लिया। कुछ ही दिनों के बाद चार्ल्स की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद फिलिप स्पेन का राजा बना। इस तरह हैप्सबर्ग घराने का उत्तराधिकार बोबर्न घराने के एक राजकुमार के हाथ में चला गया। फिर भी युद्ध का कारण लुई नहीं था क्योंकि संतोष की बात यह थी कि उसने प्रथम पोते के बदले दूसरे पोते को राज्य का अधिकारी बनाया था। अपितु लुई ने ऐसे कारणों को जन्म दिया जिससे युद्ध होकर ही रहा।

1. लुई ने रिजविक की संधि की और संधि की शर्तों पर कार्य करना भी शुरू कर दिया। 1701 ई. में जेम्स द्वितीय की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद लुई ने जेम्स के पुत्र जेम्स तृतीय (ओल्ड प्रिटेंडर) को इंग्लैण्ड का राजा बना दिया। वह क्रान्तिजनित व्यवस्था को ही पलटने की कोशिश करता रहा।
2. उसने सीमा स्थित दुर्गों में से डच सैनिक निकाल दिए और उसके स्थान पर फ्रांसीसी सैनिकों को रख लिया। उस समय हॉलैंड की स्वतंत्रता खतरे में थी जिसका अर्थ था इंग्लैंड पर भी खतरा।
3. लुई ने फ्रांस की गद्दी पर फिलिप का अधिकार सुरक्षित रखा। उसने कहा था कि "स्पेन और फ्रांस को अब पिरेनीज, पहाड़ अलग नहीं कर सकता।"
4. वह इंग्लैण्ड तथा हालैंड को क्षति पहुँचाकर अमेरिका के स्पेनिश उपनिवेशों के व्यापार पर स्वयं अधिकार करना चाहता था।

लुई के इन मनमाने और स्वार्थपूर्ण कार्यों को स्वाभिमानी अंग्रेज कब तक सह सकते थे? उनकी राष्ट्रीय भावना जागृत हो उठी और वे फ्रांस से युद्ध करने के लिए तैयार हो गये। वे स्पेन तथा फ्रांस के संयोग को रोक कर दूसरी विभाजक संधि की शर्तों को कार्यान्वित करना चाहते थे। वे विप्लवी व्यवस्था को भी सुरक्षित रखना चाहते थे।

1702 ई. में युद्ध प्रारम्भ हो गया। विलियम ने हॉलैंड तथा जर्मनी को मिलाकर फ्रांस के विरुद्ध एक संघ स्थापित किया था, परन्तु युद्ध में किसी तरह से भाग लेने से पहले ही वह मर गया। अत: रानी एन के गद्दी पर बैठते ही युद्ध चालू हो गया और करीब उसका शासन काल (1702–1713 ई.) तक चलता रहा।

***(iv)* दलबंदियाँ और युद्ध सम्भावनाएँ :** फ्रांस स्पेन और बेवेरिया एक ओर थे। स्थलसेना और धन की दृष्टि से फ्रांस का स्थान सुदृढ़ मालूम होता था। वह यूरोप में एक बड़ा ही शक्तिशाली राष्ट्र था। फ्रांस की सहायता करने के लिए स्पेन तथा बेवेरिया हमेशा तत्पर रहते थे। स्पेनिश, नीदरलैण्ड फ्रांस के अधीन थे और हंगरी, इटली की सहानुभूति भी फ्रांस के ही साथ थे।

नोट

दूसरी तरफ इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया और जर्मनी (कुछ रियासतों को छोड़कर) एक साथ थे। 1703 ई. में सेवाय तथा पुर्तगाल भी शामिल हो गए। इंग्लैण्ड तथा पुर्तगाल के बीच एक अलग संधि हुई थी। यह संधि जॉन मेथ्यून के प्रयास से हुई थी। अत: यह मेथ्यून संधि कही जाने लगी थी। जलशक्ति की दृष्टि से मित्रराष्ट्रों का भविष्य उज्ज्वल था, क्योंकि इसी पर युद्ध की सफलता निर्भर थी। मित्रराष्ट्रों की ओर एक बड़ा ही विलक्षण सेनानायक भी था जिसका कुछ विस्तारपूर्वक उल्लेख कर देना यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है।

9.12 मार्लबरा

मार्लबरा का वास्तविक नाम जॉन चर्चिल था, परन्तु ड्यूक ऑफ मार्लबरा के नाम से वह अधिक प्रसिद्ध था। वह बचपन से ही युद्ध प्रवृत्ति का था। वह सैनिक तथा राजनीतिज्ञ दोनों ही था। वह इंग्लैण्ड के इतिहास में एक सफल सेनानी की हैसियत से नामांकित है। उससे कोई भी लोहा लेने की हिम्मत नहीं कर पाता था। वह केवल इंग्लैण्ड का ही नहीं अपितु सबसे सर्वश्रेष्ठ (विश्व में) सेनापति माना जाता था। वह बड़ी ही विलक्षणता से और सफलतापूर्वक युद्ध का संचालन करता था। तोप के व्यवहार में वह सिद्धहस्त था और शत्रुओं की कमजोरी परखने में उसकी दृष्टि बहुत तेज थी। वह संयम परस्त व्यक्ति था। वह संकट के समय भी धीरज और शान्ति रखता था। व्यूह रचना में भी कोई उसका हाथ नहीं पकड़ सकता था। एक लेखक के शब्दों में–"उसने कोई ऐसा युद्ध नहीं किया जिसमें वह विजयी नहीं हुआ और किसी ऐसे स्थान पर घेरा नहीं डाला जिसे उसने न लिया हो।" वह अपनी विजयी योग्यता के कारण सबका मित्र बन गया था। वैसे तो विलियम मार्लबरा का व्यक्तिगत शत्रु था परन्तु उसकी योग्यता एवं कुशलता के कारण विलियम उसका प्रशंसक था। विलियम ने मरते समय युद्ध का भार मार्लबरा पर सौंप दिया था।

इतनी अच्छाइयाँ होते हुए भी उसमें कुछ दोष भी थे। वह स्वभाव से स्वार्थी, लोभी, संकीर्ण था। उसमें निर्णयात्मक और निश्चित शक्ति का अभाव था। उसका कोई एक सिद्धान्त नहीं था। वह अवसरवादी था। उसने बहिष्कार-बिल के अवसर पर जेम्स द्वितीय का पक्ष लिया था, परन्तु कुछ समय बाद वह जेम्स का विरोधी हो गया। इसका कारण यह था कि वह राजा बन चुका था। राजा बनने के बाद वह बदल गया। वह विलियम का समर्थक बन गया। इस तरह उसने दो बार जेम्स से मित्रता की और मित्रता को तोड़ दिया। बाद में वह विलियम का भी समर्थक नहीं रहा। वह विलियम के खिलाफ लुई से काना-फूसी करने लगा था। चूंकि उसका स्वभाव ही स्वार्थी था इसलिए वह अधिक समय तक लुई का मित्र भी बनकर न रह सका। विलियम के ही समय में उसने एक वर्ष के अंदर लुई से दो बार धोखा किया। उसने दो बार उसके विरुद्ध षड्यंत्र की रचना की। वह टोरी तथा ह्वीग का भी विश्वासपात्र नहीं था। उसने अपना जीवन टोरी के रूप में शुरू किया और ह्वीग के रूप में समाप्त किया।

अत: मार्लबरा दोष-गुण का समिश्रित व्यक्ति था। उसके अंदर जितने गुण थे उतने ही अवगुण भी थे। इसलिए एक लेखक ने उसे–"मानव जाति का सर्वोत्तम तथा निम्नतम व्यक्ति" कहा है।

1. **उद्देश्य :** उसके दो मुख्य उद्देश्य थे–1. पूर्वकालीन युद्ध में स्पेनिक नीदरलैण्ड से फ्रांसीसियों को निकलवाना। 2. उत्तरकालीन युद्ध में सीमांत किलों को अपने अधिकार में कर फ्रांस के भीतरी प्रदेश पर आक्रमण करना, परन्तु उसे युद्ध के बीच में से ही बुला लिया गया जिससे उसका उद्देश्य असफल हो गया।

2. **युद्ध क्षेत्र :** इंग्लैण्ड के इतिहास में यह युद्ध बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उस समय तक जितने भी युद्ध हुए थे उसमें इसका भी एक स्थान था। युद्ध के मुख्य क्षेत्र उस समय यूरोप, अमेरिका, अटलांटिक और भूमध्यसागर थे। यूरोप के अंदर भी चार केन्द्र थे-स्पेनिश नीदरलैंड, जर्मनी, इटली और स्पेन।

3. **लड़ाइयाँ :** मार्लबरा के समय में कई सारी लड़ाइयाँ अलग-अलग देशों में हुईं जो कि निम्नलिखित हैं–

(*i*) **ब्लेनहिम का युद्ध :** उस समय पहले दो वर्षों 1702-1703 ई. में कोई घटना नहीं घटी जोकि महत्त्वपूर्ण हो, परन्तु 1704 का वर्ष बहुत संकटमय था। यह खतरा सबसे अधिक आस्ट्रिया की राजधानी वियना के लिए थी।

नोट

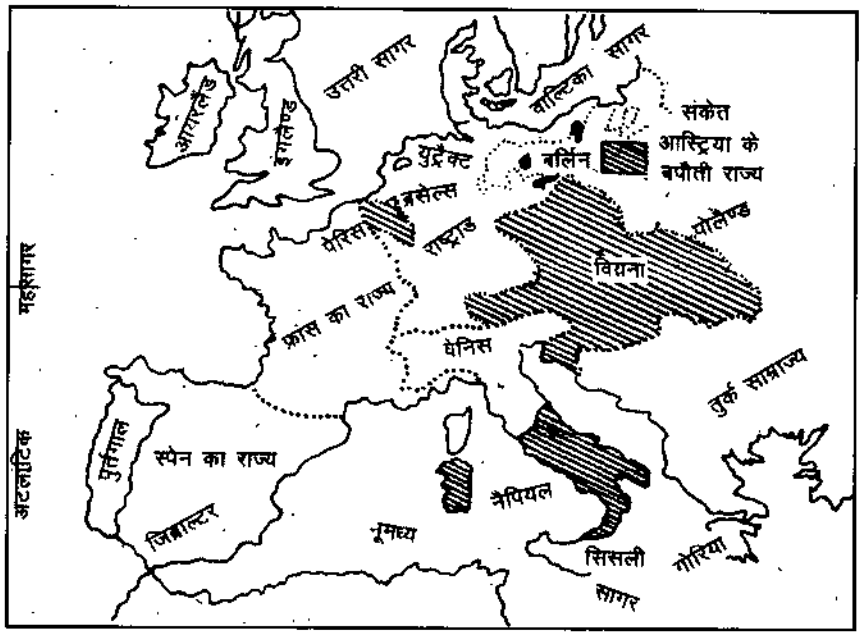

मानचित्र 9.1 : 1702 ई. का पश्चिमी यूरोप का मानचित्र

उसे पश्चिम से (बेबेरिया के द्वारा) तथा पूर्व से (हंगरी के द्वारा) खतरे का डर था। अत: इस बात की भी सम्भावना थी कि सम्राट घबरा जाता और अपमानजनक संधि के लिए राजी हो जाता। ऐसे में केवल एक ही रास्ता था। केवल मार्लबरा की सेना ही उसकी रक्षा कर सकती थी, परन्तु इसके उलट मार्लबरा की सेना डच सीमा की रक्षा के लिए नियुक्त कर ली गई। डच के लोग उस सेना को छोड़ने के लिए तैयार ही नहीं थे। इसके अतिरिक्त वह सेना बहुत विशाल और मंद गति वाली थी। यदि मार्लबरा वहाँ उपस्थित नहीं होता तो उस स्थिति पर कभी भी काबू नहीं किया जा सकता था। मार्लबरा के वहाँ होने से उस नाजुक परिस्थिति को अपने काबू में कर लिया गया। वह डचों को प्रभावित कर अपनी सेना को राइन के निचले भाग से डैन्यूब के ऊपरी भाग में लाया। पश्चिम की ओर से मार्लबरा ने बेबेरिया पर चढ़ाई कर दी। सेवाय के ड्यूक ने भी अपनी सेना लेकर मार्लबरा का साथ दिया।

महत्त्व : (क) यह अंग्रेजों की गौरवपूर्ण विजय थी। उसके पक्ष के 1000 से भी कम लोगों की जान गई थी। फ्रांसीसियों को बहुत हानि सहनी पड़ी थी। उनके दो सेनापति और 10,000 से अधिक सैनिक कैदी बनाये गये और कई युद्ध के सामान जब्त कर लिए गए। खुले मैदान के युद्ध में पहले-पहल लुई की यह हार थी। उस ओर फ्रांसीसियों के हमले के भय का अंत हो गया। उनकी प्रतिष्ठा में धब्बा लग गया और स्थल युद्ध में उनकी अजेयता की स्थापित धाक मिट्टी में मिल गई थी।

(ख) फ्रांसीसी लोग डैन्यूब पार खदेड़ दिए गए। इस प्रकार उनके आधिपत्य से आस्ट्रिया तथा जर्मनी की रक्षा हुई।

(ग) मार्लबरा को बहुत यश प्राप्त हुआ। उसका नाम और अधिक प्रसिद्ध हो गया और इंग्लैण्ड की खोई प्रतिष्ठा फिर से लौट आई।

***(ii)* स्पेन की लड़ाई** : अब मित्रराष्ट्रों का सितारा चमक उठा था। विजय पर विजय प्राप्त होने लगी थी। मार्लबरा ने भूमध्यसागर के महत्त्व को समझा और रूस की अधीनता में 1704 ई. में एक नौसेना भेजी। अंग्रेजों ने स्पेन से जिब्राल्टर को लेकर अपने अधिकार में कर लिया। इससे उन्हें कई प्रकार के फायदे हुए। भूमध्यसागर का प्रवेश-द्वारा उनके हाथ में आ गया और भविष्य में मिस्र तथा लाल सागर पर अधिकार स्थापित करने के लिए रास्ता साफ हो गया।

***(iii)* नीदरलैण्ड की लड़ाई** : अगले साल बार्सीलोना भी लिया गया। इसका श्रेय पीटर बरो अर्ल को जाता था। 1704 ई. में नीदरलैण्ड रैमेलिज का युद्ध हुआ। फिर दूसरी बार मार्लबरा ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इसमें मित्रराष्ट्र विजयी हुआ और फ्रांसीसी नीदरलैण्ड से भगा दिया गया।

नोट

(iv) इटली में : 1704 ई. को ही इटली में तूरीन की लड़ाई हुई जिसमें राजकुमार यूजेन को फ्रांसीसियों के विरुद्ध विजय प्राप्त हुई। वह आस्ट्रिया की सेना का सेनापति था। अब फ्रांसीसी इटली से भगा दिए गए और वहाँ आर्कड्यूक चार्ल्स का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

(v) अलमंजा का युद्ध : फ्रांस को हर बार युद्ध में हार ही प्राप्त हो रही थी। वह अपनी हार से ऊब चुका था। इसलिए वह अनचाही संधि के लिए भी राजी हो गया, परन्तु उसके मित्रराष्ट्रों ने उसकी एक भी नहीं सुनी। अब शत्रु भी लड़ने को तैयार नहीं थे। 1707 ई. में अलमंजा के युद्ध में मित्रराष्ट्रों की हार हो गई। इस तरह स्पेन की गद्दी पर फिलिप को फिर से बैठाया गया। नीदरलैंड में भी फ्रांसीसियों ने बहुत से किलों को फिर से अपने कब्जे में ले लिया। इन सभी घटनाओं से यह बात साबित हो गया कि फ्रांसीसियों में अब भी कुछ ताकत बाकी थी।

(vi) आडेनार्डे (1708 ई.) तथा मालप्लाके का युद्ध (1709 ई.) : दूसरे साल नीदरलैण्ड में मार्लबरा और यूजेन ने आडेनार्डे के युद्ध में विजय प्राप्त की और खोये हुए किलों को पुनः अपने अधिकार में ले लिया। अंत में प्रमुख फ्रांसीसी किला, फ्रांसीसी फ्लैंडर्स की कूंजी, लील सभी मित्रराष्ट्रों के कब्जे में आ गए थे। लुई ने फिर से एक बार सुलह की बात की। वह फिलिप के लिए केवल नेपुल्स तथा मिलन को ही लेकर सब कुछ त्याग देने को तैयार था, लेकिन मित्रराष्ट्रों ने एक कठिन शर्त लगा दी। वे चाहते थे कि स्पेनवासी आर्कड्यूक को अपना राजा मानने में आनाकानी करें तो स्पेन से फिलिप को निकालने में लुई भी सेना के द्वारा सहायता करे। लुई ने इस शर्त को कबूल नहीं किया। इसी कारण युद्ध चलता ही रहा। 1709 ई. में मालप्लाके (नीदरलैण्ड) में भीषण संघर्ष हुआ, परन्तु अंत में विजय मार्लबरा की ही हुई लेकिन बड़ी हानि उठाने के बाद। युद्ध में उसके धन जन की बहुत क्षति हुई। यह उसकी अंतिम विजय थी।

अंग्रेजी तथा यूरोपीय परिस्थिति में परिवर्तन (1710-11 ई.) : 1710 ई. में इंग्लैण्ड में भारी परिवर्तन शुरू हो गया। मित्रराष्ट्रों के एक सेनापति स्टैनहोप ने मैड्रिड को अपने अधिकार में किया था, परन्तु कुछ समय बाद ही उसे हार का मुँह देखना पड़ा। उसे शत्रु के सामने झुकना पड़ा। अब स्पेन में फिलिप की धाक जम गई। वही वहाँ का राजा रहा। सिर्फ एक स्थान कैटलोनियाँ के निवासी अभी उसके विरोधी थे। इसी समय इंग्लैण्ड में ह्विग मंत्रिमण्डल का पतन हो गया। इसके बाद टोरी मंत्रिमण्डल का आगमन हुआ। यह नया मंत्रिमण्डल युद्ध-विरोधी था। टोरी तो युद्ध के विरुद्ध पहले से थे ही, मालप्लाके की क्षति से वे और भी बेचैन हो गये। अब उन्होंने लड़ाई समाप्त करने के लिए दृढ़निश्चय कर लिया। मार्लबरा को उसके पद से हटा दिया गया। उसके स्थान पर औरमौंड के ड्यूक को नियुक्त किया गया तथा उसे युद्ध में सक्रिय भाग न लेने के लिए आदेश दिया गया। अब मित्रराष्ट्रों में सुस्ती आ गई तथा उनके सैनिक हतोत्साहित हो गये।

9.13 यूट्रेक्ट की संधि

यह संधि 1713 ई. को की गई थी। इसी समय आस्ट्रिया का राजकुमार आर्क ड्यूक चार्ल्स, जिसे मित्रराष्ट्र स्पेन की गद्दी पर बैठाना चाहते थे, सम्राट के पद पर आसीन हो गया। उसका पक्ष लेना शक्ति संतुलन की नीति के विरुद्ध होता। अतः 1713 ई. में इंग्लैण्ड तथा हॉलैंड ने फ्रांस तथा स्पेन से यूट्रेक्ट की सुलह कर ली, लेकिन दूसरे ही साल फ्रांस तथा आस्ट्रिया के बीच भी रास्टाट की संधि हुई।

1. इस संधि की कुछ शर्तें थीं।

1. आर्क-ड्यूक चार्ल्स को इटली के स्पेनिश प्रदेश (नेपुल्स, मिलान और सार्डिनियाँ) तथा नीदरलैण्ड मिलें, परन्तु एक बार बेरियर संधि के द्वारा सीमांत किलों में अपनी सेना रखने के लिये डचों को अधिकार दिया गया। इसके अतिरिक्त उनकी व्यापारिक प्रगति के लिये शेल्ट नदी दूसरे राष्ट्र के लिए बंद कर दी गई थी।
2. फ्रांस सहित यूरोप के राज्यों ने इंग्लैण्ड में रानी एन के बाद हैनोवर-वंश के उत्तराधिकार को स्वीकार किया गया।
3. स्पेन ने ब्रिटेन को स्पेनिश अमेरिका में गुलामों के व्यापार का एकाधिकार दे दिया और दक्षिणी अमेरिका में पोर्टोबेलो नामक बंदरगाह में प्रतिवर्ष एक जहाज भेजने की आज्ञा दे दी।

नोट

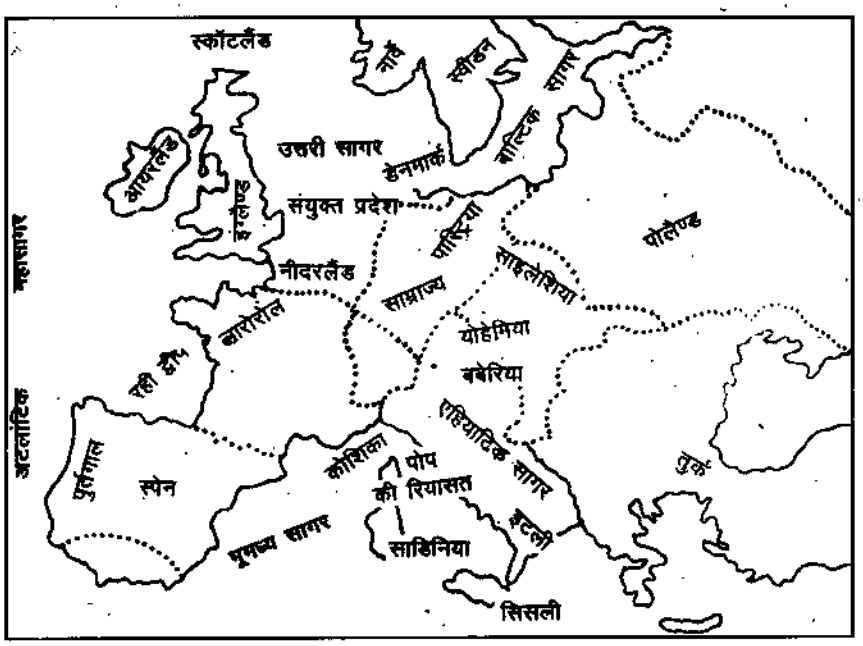

मानचित्र 9.2 : 1713 ई. का पश्चिमी यूरोप और यूट्रैक्ट संधि का मानचित्र

4. सेवाय के ड्यूक को राजा की पदवी के साथ सिसली दे दिया।
5. फिलिप स्पेन तथा स्पेनिश अमेरिका का राजा स्वीकार किया गया, परन्तु फ्रांस की गद्दी के अधिकार से उसे वंचित कर दिया गया।
6. ब्रिटेन को फ्रांस से अमेरिका में नोवास्कोशिया तथा न्यूफाउंडलैण्ड और स्पेन से यूरोप में जिब्राल्टर तथा माइनोर्का मिले।

2. यूट्रेक्ट संधि का महत्त्व : यूट्रेक्ट संधि बहुत ही महत्त्वपूर्ण संधि थी। इसने यूरोप तथा इंग्लैण्ड के इतिहास में युगान्तर उपस्थित कर दिया।

(i) इंग्लैण्ड के लिए : ह्विगों ने यह शिकायत की थी यह संधि करके टोरियों ने अंग्रेजी राष्ट्र के स्वार्थ में बहुत बड़ा धक्का पहुँचाया, परन्तु उनके इस कथन में सत्यता पूरी तरह से नहीं है। अंग्रेजों को इस संधि से अनेक महत्त्वपूर्ण लाभ हुए। युद्ध में प्रवेश करने में इंग्लैण्ड के तीन प्रधान उद्देश्य थे–

(क) विप्लवी व्यवस्था की रक्षा करना,

(ख) इंग्लैण्ड की औपनिवेशिक, व्यापारिक तथा सामुद्रिक प्रधानता को सुदृढ़ करना, तथा

(ग) यूरोप में शक्ति संतुलन के सिद्धान्त को कायम रखना।

यूट्रेक्ट की संधि के द्वारा ये तीनों उद्देश्य पूरे हो गये। उद्देश्य 'ख' की पूर्ति में अद्‌भुत सफलता प्राप्त हुई। वह विश्व का प्रमुख समुद्री तथा व्यापारी राष्ट्र बन गया। स्पेन के उत्तराधिकार की लड़ाई के पहले इंग्लैण्ड समुद्री शक्तियों में से एक था, परन्तु इसके बाद उसकी समुद्री शक्ति के समान अन्य कोई राज्य नहीं रहा। न्यूफाउंडलैण्ड तथा नोवास्कोशिया पर अधिकार होने से सेंट लारेंस नदी के दोनों मुहाने से सम्बन्ध स्थापित हो गया। जिब्राल्टर और माइनोर्का कब्जे में आने से भूमध्य सागर पर अधिकार हो गया। जिब्राल्टर तो 'भूमध्य सागर का द्वार' ही था, अब पूर्वी देशो में आवागमन के लिए आसान रास्ता प्राप्त हो गया। गुलामों के व्यापार का एकाधिकार तथा प्रत्येक वर्ष एक व्यापारी जहाज भेजने का अधिकार आर्थिक दृष्टि से बड़ा ही लाभप्रद हुआ। इंग्लैण्ड के इन लाभों को ध्यान में रखते हुए एक इतिहासकार ने कहा है कि "यदि आर्मेडा के समय इंग्लैण्ड ने औपनिवेशिक विस्तार के लिए दौड़ प्रारम्भ की तो, यूट्रेक्ट संधि के समय उसकी जीत हो गई।" इसका आशय यह है कि स्पेनिक आर्मेडा के समय

इंग्लैण्ड में औपनिवेशिक प्रगति शुरू हो गई और यह यूट्रेक्ट की संधि के द्वारा पूरी हो गई, अर्थात् इंग्लैण्ड को विस्तृत साम्राज्य प्राप्त हो गया।

नोट

यह कथन सौ प्रतिशत सत्य नहीं है। औपनिवेशिक इतिहास में इस संधि ने पूरी तरह से युग-परिवर्तन कर लिया था, परन्तु फिर भी इससे इंग्लैण्ड को निश्चित तौर पर औपनिवेशिक प्रधानता प्राप्त नहीं हुई थी। अभी उसे और कठिनाइयों का सामना करना बाकी था। अत: यह कहना ठीक होगा कि यूट्रेक्ट की संधि के द्वारा उपनिवेश-विस्तार के लिए आर्मेडा के समय में जो दौड़ प्रारम्भ हुई, उसमें इंग्लैण्ड ने विशेष प्रगति प्राप्त की थी परन्तु 1763 ई. में पेरिस की संधि के समय उसकी पूरी जीत हो सकी, यूट्रेक्ट की संधि ही अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। फ्रांसीसी क्रांति के होने के समय तक यूरोप के लिए फ्रांस की ओर से कोई अन्य संकट पैदा नहीं हुआ। अत: इंग्लैण्ड में यूट्रेक्ट की संधि के द्वारा ही दीर्घकालीन व्यवस्था कायम रह सकी।

***(ii)* यूरोप के लिए :** यूट्रेक्ट की संधि फ्रांस के लिए घातक सिद्ध हुई। इस संधि के कारण लुई की महत्त्वाकांक्षाएँ मिट्टी में मिल गईं। वह फ्रांस का सर्वश्रेष्ठ राजा बनना चाहता था। साथ ही वह स्पेन को भी हड़पना चाहता था, परन्तु 1714 ई. (यूट्रेक्ट संधि के अगले वर्ष) लुई की मृत्यु हो गई। लुई के पोते फिलिप को स्पेन का राजा बनाया गया। स्पेन का राजा बनने के कारण वह फ्रांस का राजा नहीं बन सका। इसी तरह स्पेन तथा फ्रांस दो भागों में बँट गए।

परन्तु मित्र-राष्ट्रों ने फ्रांस के साथ सदैव अच्छा ही व्यवहार किया। वह युद्ध में हार चुका था परन्तु फिर भी उसे किसी तरह का अपमान नहीं सहना पड़ा और न ही उसके साथ किसी ने कठोर व्यवहार किया। फ्रांस के मन में भी कभी बदला लेने की इच्छा जागृत नहीं हुई, परन्तु स्पेन में कैटोलोनियाँ के निवासियों के साथ मित्र-राष्ट्रों का व्यवहार न्यायपूर्ण नहीं रहा। ये लोग अंत तक बड़ी ही निर्भयतापूर्वक मित्र-राष्ट्रों का पक्ष लेते रहे थे। फिर भी इन्हें फिलिप की इच्छा पर छोड़ दिया गया और इसकी रक्षा के लिए कोई विशेष शर्त नहीं लगाई गई।

युद्ध में आस्ट्रिया के प्रवेश का मुख्य उद्देश्य था कि स्पेन के राजा का उत्तराधिकार बोर्बन-वंश को न मिले। उसका यह उद्देश्य पूरा नहीं हो सका, परन्तु स्पेनिश प्रदेशों को पाकर यह इटली में प्रबल राष्ट्र हो गया, किन्तु इटली में सेवाय की भी प्रधानता स्थापित हो गई और यहाँ एक नये राजवंश का प्रादुर्भाव हुआ जिसके नेतृत्व में आगे चलकर इटली में एकता स्थापित हुई।

डचों को अपनी सीमा की रक्षा का अधिकार मिल गया, परन्तु बेल्जियम के लिए कुछ नहीं हुआ। इसे भी हॉलैंड की रक्षा के लिए एक साधनमात्र ही समझा गया। शेल्ट नदी के यातायात पर प्रतिबंध लगाने से इसके प्रसिद्ध बंदरगाह ऐन्टवर्थ की प्रगति रुक गई।

इस संधि से स्पेन को नवजीवन प्राप्त हो गया। स्पेनी राज्य के टुकड़े-टुकड़े नहीं हुए और अब उसका पुनरुत्थान होने लगा। फिर भी स्पेन का सम्पूर्ण राज्य सुरक्षित नहीं रह सका जो स्पेनवासी चाहते थे।

सबसे बड़ी बात यह हुई कि प्रादेशिक प्रबंध के द्वारा यूरोप में शक्ति संतुलन सिद्धान्त की रक्षा की गई। अत: स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि यूट्रेक्ट की संधि का इतिहास में विशेष स्थान है तथा इस संधि ने इंग्लैण्ड तथा यूरोप पर भी प्रभाव डाला जिससे दोनो राष्ट्रों को लाभ हुआ।

सारांश

- इस अध्याय में हमने स्टुअर्टवंश के बारे में पढ़ा। विलियम का चरित्र कुछ खास नहीं था और न ही उसके समय में किसी प्रकार का आंदोलन हुआ। लुई चतुर्दश को कमजोर करना उसका मुख्य उद्देश्य था।
- 1697 ई. में उसके खिलाफ विद्रोह शुरू हुआ। उस समय वह जीवित भी नहीं था। परन्तु बुराइयों के बावजूद विलियम परिश्रमी, धीर, कर्तव्यशील था।
- 1689 ई. को अधिकार विधान पास हुआ जिसके द्वारा पार्लियामेन्ट के अधिकार तथा जनता की स्वतंत्रता की रक्षा हो पाई। उसके बाद 1689 में ही धन और सेना संबंधी कानून पास हुआ। इसके अन्तर्गत पार्लियामेन्ट ने राष्ट्रीय धन और सेना पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। इसके बाद एक के बाद एक नए कानून पास

हुए। जैसे–गदर कानून, सहिष्णुता नियम (1689 ई.), वार्षिक कानून (1694 ई.), प्रेस की स्वतंत्रता का कानून (1695 ई.), राजद्रोह कानून (1696 ई.), उत्तराधिकार निर्णायक कानून (1701 ई.), वैधानिक प्रगति, कैबिनेट शासन की प्रगति, आर्थिक प्रगति जिसके अंतर्गत सिक्कों में सुधार, इंग्लैण्ड बैंक की स्थापना आदि की गई।

नोट

- 1702 ई. को इंग्लैण्ड की गृहनीति शुरू हुई। इस बीच 1702 ई. को विलियम की मृत्यु हो गई इसलिए गद्दी पर जेम्स द्वितीय की दूसरी लड़की 'एन' बैठी। उसका विवाह डेनमार्क के राजा जार्ज से हुआ था। एन अच्छे स्वभाव की स्त्री थी। एन के राज्यकाल की यह विशेषता थी कि उस समय एडीसन और स्टील ह्विगों की ओर से और स्विफ्ट टोरियों की ओर से काम कर रहे थे, परन्तु 1710 ई. को उसके मंत्रिमण्डल का पतन हो गया।
- उसके बाद 1710–1714 ई. तक टोरी मंत्रिमण्डल आया। इस मंत्रिमण्डल ने मार्लबरा पर अभियोग चलाया, 1714 ई. को ओकेजनल कनफर्मिटी ऐक्ट पास कर दिया, फिर 1714 में ही शिज्म ऐक्ट पास कर दिया गया। इन सबके बाद एन की मृत्यु हो गई और उत्तराधिकारी की समस्या उत्पन्न हो गई और सभी बातों पर विचार-विमर्श करने के बाद जार्ज प्रथम को गद्दी पर बिठाया गया।
- 1689–1714 ई. तक देश में वैदेशिक नीति आई। इसके कुछ साधारण कारण थे–यूरोप में फ्रांस के हौसले, स्पेन में फ्रांस का हमला, लुई 14वें की बहुमुखी प्रतिभा, अमेरिका में भी उत्तराधिकार की लड़ाई (1689–1697 ई.) फिर स्पेन में उत्तराधिकार की लड़ाई (1702–1713 ई.)।
- मार्लबरा एक सेनानी था जो बाद में राजा बन गया। वह सबसे सर्वोत्तम तथा निम्नतम व्यक्ति था। उसके काल में युद्ध क्षेत्रों में बहुत युद्ध तथा लड़ाइयाँ देखने को मिलीं। जिसकी रोक के लिए यूट्रेक्ट की संधि 1713 ई. में की गई। इस संधि की कुछ शर्तें थी। जिनको न चाहकर भी उन्हें मानना ही पड़ा। यह संधि यूरोप तथा इंग्लैण्ड के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थीं। यूरोप में सबसे बड़ी बात यह हुई कि इस संधि द्वारा यूरोप में *शक्ति संतुलन के सिद्धान्त की रक्षा हो गई और इंग्लैण्ड में शांति व्यवस्था दीर्घकाल तक बनी रही।*

अभ्यास-प्रश्न

1. विलियम के चरित्र तथा उसके घरेलू मामलों का विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए।
2. रानी एन के जीवन तथा राज्यकाल की विशेषताएँ बताइए।
3. वैदेशिक नीति (1689–1714 ई.) पर चर्चा कीजिए।
4. तीसरे विलियम के समय के महत्त्वपूर्ण सुधारों का वर्णन कीजिए।
5. अमेरिका तथा स्पेन में हुई उत्तराधिकार की लड़ाई के बारे में बताइए।
6. यूट्रेक्ट की संधि पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
2. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
3. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
4. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*
5. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*
6. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
7. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*

इकाई–10

नोट

17वीं शताब्दी तक इंग्लैण्ड की स्थिति (England till 17th Century)

संरचना (Structure)

10.1 उद्देश्य
10.2 प्रस्तावना
10.3 सत्रहवीं सदी तक मंत्रिपरिषद् का विकास
10.4 सत्रहवीं सदी में राजनीति पर धर्म का प्रभाव
10.5 सत्रहवीं सदी में व्यक्तिगत स्वाधीनता की समस्या
10.6 17वीं सदी की प्रमुख घटनाएँ
10.7 17वीं सदी का महत्त्व (रचनात्मक युग के रूप में)
10.8 17वीं सदी में इंग्लैण्ड की दशा
- सारांश
- अभ्यास-प्रश्न
- संदर्भ ग्रंथ

10.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :

- 14वीं से 17वीं सदी तक के मंत्रिमण्डल के विकास को समझने में।
- विभिन्न राजाओं के राज्यकाल को समझने में।
- सत्रहवीं सदी में राजनीति पर धर्म के प्रभाव को समझने में।
- सत्रहवीं सदी में इंग्लैण्ड की दशा को समझने में।

10.2 प्रस्तावना

14वीं सदी तक कौंसिल में राजा के कुछ विश्वासी पदाधिकारी एवं कुछ बैरन बैठते थे। 14वीं शताब्दी के अन्त तक कौंसिल ने एक निश्चित रूप प्राप्त कर लिया। 15वीं सदी में राजा की स्थिति कमजोर व पार्लियामेन्ट की स्थिति मजबूत हो गई थी। 16वीं सदी में कौंसिल बड़ी कुशलता के साथ शासन-प्रबन्ध करने लगी।

नोट

17वीं सदी के प्रारम्भ में कौंसिल के सदस्यों की संख्या बहुत ज्यादा हो गई थी। इसी सदी में बैकम ने कैबिनेट शब्द का प्रयोग किया। 17वीं सदी के उत्तरार्द्ध में चार्ल्स-द्वितीय, विलियम तृतीय और रानी एन तथा कई राजा व रानियाँ बनीं जिसके बारे में आप अध्याय में पढ़ेंगे। सत्रहवीं सदी में राजनीति पर धर्म का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। पहला जेम्स के समय में तो धार्मिक क्रांति भी हुई जिससे सारी जनता उसके विरुद्ध हो गई और उसके विरोध में धार्मिक क्रांति शुरू कर दी, जिस कारण जेम्स को इंग्लैण्ड छोड़कर भागना पड़ा व विलियम व मेरी को गद्दी मिली। विलियम ने धर्म के क्षेत्र में कई सुधार किए एवं प्रोटेस्टेंट व कैथोलिक दोनों धर्मों को बराबर का दर्जा दिया। सत्रहवीं सदी में व्यक्तिगत स्वाधीनता की समस्या उत्पन्न हो गई थी जिसका निवारण करने के लिए इंग्लैण्ड में बहुत से सुधार हुए। 17वीं सदी में कुछ घटनाएँ भी हुईं। इसमें से एक प्रमुख घटना लंदन का अग्निकांड थी। 17वीं सदी के अन्दर में इंग्लैण्ड के अन्दर बहुत सी ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं जिससे इंग्लैण्ड की दशा में बहुत परिवर्तन हुए और उसमें बहुत सुधार हुए। जिसके बारे में विस्तृत रूप से इस अध्याय में आप पढ़कर जानेंगे।

10.3 सत्रहवीं सदी तक मंत्रिपरिषद् का विकास

आधुनिक काल में कार्यपालिका से सम्बन्धित तीन प्रमुख संस्थाएँ हैं: प्रिवीकौंसिल, मंत्रिमंडल (मिनिस्ट्री) और मंत्रिपरिषद् (कैबिनेट)। प्रिवीकौंसिल संस्था का काम रहा है, राजा को सलाह देना। वह संस्था वैध थी, कानून द्वारा इसे स्वीकार कर लिया गया। इसमें लगभग 350 सदस्य होते हैं। किन्हीं खास मौकों पर ही औपचारिक रूप से सभी सदस्यों को बुलाया जाता था। इसकी बैठक राजा के सभापतित्व में ही हुआ करती थी। मंत्रिमंडल के सदस्यों की संख्या 60-65 होती थी और ये कॉमन्स सभा में भी सदस्य होते थे।

मंत्रिपरिषद् के सदस्यों की संख्या लगभग 20 होती थी। ये सभी सदस्य प्रिवीकौंसिल और मंत्रिमंडल के भी सदस्य होते थे। साधारण चुनाव के बाद कॉमन्स सभा में जिस राजनैतिक दल का बहुमत होता था, वह अपना एक नेता चुनता था। उसी नेता को राजा मंत्रिपरिषद् बनाने के लिए आमंत्रित करता था। वही प्रधानमंत्री कहलाता था। मंत्रिपरिषद् का मुख्य काम होता था नीति निर्धारण करना। इसकी कई विशेषताएँ होती थीं।

(क) इसके सदस्य कॉमन्स सभा में बहुमत वाले दल के सदस्य होते थे।

(ख) ये सदस्य सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से कॉमन्स सभा के प्रति उत्तरदायी होते थे।

(ग) ये सभी सदस्य सार्वजनिक रूप से एक ही मत के होते थे।

(घ) सभी प्रधानमन्त्री के नेतृत्व को स्वीकार करते थे।

(ङ) मंत्रिपरिषद् में राजा के लिए कोई स्थान नहीं रहता था।

कैबिनेट के सदस्यों को नियुक्त करने का कार्य 1688 ई. तक राजा ही करता था। इसका अस्तित्व राजा के व्यवहार पर निर्भर करता था। 1689 ई. के कैबिनेट सदस्यों की नियुक्ति तो राजा ही करता था, परन्तु वे कॉमन्स सभा के बहुमत दल के सदस्य होते थे। अब कैबिनेट का अस्तित्व पार्लियामेन्ट की खुशहाली पर निर्भर रहने लगा। 1714 ई. के बाद प्रधानमन्त्री के पद के प्रादुर्भाव के साथ कैबिनेट पर कॉमन्स-सभा का पूरा नियंत्रण कायम हो गया।

उत्पत्ति एवं विकास

1. **14वीं सदी तक :** कैबिनेट का बीज नार्मन कौंसिल को कहा जा सकता है। राजा के कुछ विश्वासपात्र पदाधिकारी एवं कुछ बैरन इस कौंसिल में बैठते थे। यह कौंसिल शासन-सम्बन्धी कामों को देखती थी। हेनरी तृतीय की बाल्यावस्था में कौंसिल पूरी सरकारी संस्था बन गयी क्योंकि इसमें पदाधिकारियों की ही प्रधानता थी। हेनरी जब एक वयस्क पुरुष बना तब किन्हीं कारणों से उसका बैरनों से झगड़ा हो गया और उसने बैरनों के जगह अपने मित्रों से परामर्श लेना शुरू कर दिया। एडवर्ड प्रथम और उसके उत्तराधिकारियों के समय में कौंसिल सरकारी संस्था के रूप में कायम रही। इसमें सरकारी पदाधिकारियों की ही नियुक्ति होती थी। वे साधारण वर्ग (कॉमनर) के ही होते थे बैरनों की श्रेणी के नहीं। इस काल में कौंसिल का कार्य भी बढ़ने लगा था। वह घोषणाओं को भी जारी करने लगी थी।

नोट

कौंसिल ने चौदहवीं सदी के अन्त तक एक निश्चित रूप प्राप्त कर लिया। इसके सदस्यों की राजा द्वारा ही नियुक्ति होती थी। इसकी कार्यवाही का रिकार्ड रखा जाता था। यह कई प्रकार के कामों को करती थी, किन्तु इसका मुख्य काम था राजा को परामर्श देना, परन्तु राजा इसकी सलाह मानने के लिए बाध्य नहीं था। कौंसिल के सदस्य राजा के नौकर के समान थे। उन पर पार्लियामेन्ट को कोई अधिकार नहीं था, हालाँकि पार्लियामेन्ट महाभियोग (इम्पीचमेंट) द्वारा उन पर नियन्त्रण कायम् करना चाहती थी।

2. 14वीं सदी का पूर्वार्द्ध : 15वीं सदी में परिस्थिति में परिवर्तन आ गया। राजा की स्थिति कमजोर हो गई थी। पार्लियामेंट की शक्ति बढ़ गई थी। अत: कौंसिल पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी बन गयी।

(क) पार्लियामेंट ही कार्यवाही-सम्बन्धी नियमों को बनाती थी।

(ख) महाभियोग पर भी वह जोर देने लगी।

(ग) सदस्यों का वेतन भी पार्लियामेंट के द्वारा स्वीकृत किया जाने लगा और अयोग्य सदस्यों के वेतन में वह कटौती भी करने लगी।

(घ) सदस्यों को गुप्तता (सिक्रेसी) के सम्बन्ध में शपथ लेनी आवश्यक हो गयी।

15वीं सदी के मध्य में कौंसिल के सदस्यों की संख्या लगभग 40 तक पहुँच गयी। अब शीघ्रतापूर्वक काम करने में असुविधा होने लगी। अत: राजा अब कुछ प्रमुख सदस्यों की गुप्त मंडली से ही सलाह लेने लगा। यही गुप्त मंडली प्रिवीकौंसिल के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसमें बड़े-बड़े बैरनों तथा पादरियों को स्थान मिलने लगा। यही प्रिवीकौंसिल शासन-सम्बन्धी वास्तविक काम करने लगी। बड़ी कौंसिल साधारण कौंसिल कहलाने लगी और अब विशेष उत्सव के मौके पर उसकी बैठक बुलायी जाने लगी।

3. 15 वीं सदी का उत्तरार्द्ध और 16वीं सदी : उत्तरकालीन लंकास्टर और यार्किस्ट युग में (1450-85 ई.) कौंसिल सदस्य सत्ता के लिए आपस में लड़ने लगे। सदस्यों की संख्या भी फिर बढ़ने लगी। प्रिवीकौंसिल का पुन: संगठन ट्यूडरकाल (1485-1603 ई.) में हुआ। सदस्यों की संख्या कम कर दी गई। इसके अतिरिक्त इसमें केवल साधारण श्रेणी के व्यक्ति (कौमनर) ही नियुक्त किए गए। ट्यूडरकाल में कौंसिल बड़ी कुशलता के साथ शासन-प्रबन्ध करने लगी।

4. 17 वीं सदी का पूर्वार्द्ध : 17वीं सदी की शुरुआत में कौंसिल के सदस्यों की संख्या फिर बहुत बढ़ गयी। अत: चार्ल्स-प्रथम के समय में कौंसिलों के सदस्यों की संख्या ज्यादा होने के कारण उन सभी से परामर्श लेना कठिन हो गया था। अत: अब इसे दो भागों में विभक्त कर दिया गया। एक भाग स्थायी रूप से लंदन में रहने लगा तथा दूसरा भाग राजा के साथ भ्रमण करने लगा।

17वीं सदी के पूर्वार्द्ध में सर्वप्रथम बेकन ने अपने लेखों में 'कैबिनेट' शब्द का प्रयोग किया। उसके बाद 1640 ई. में लार्ड क्लैरेंडन ने भी इस शब्द का उपयोग किया। इसी अवधि में पार्लियामेंट बर्किंघम पर महाभियोग लगाकर अपने प्रति मन्त्रियों के उत्तरदायित्व पर जोर दे रही थी। पार्लियामेंट ने स्ट्रेफर्ड और लार्ड को भी दण्ड दिया था, किन्तु अभी मन्त्रियों के उत्तरदायित्व का सिद्धान्त स्पष्ट रूप से लागू नहीं हुआ।

5. 17वीं सदी का उत्तरार्द्ध

(क) चार्ल्स-द्वितीय

***(i)* केबाल**–चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में पुनर्स्थापना के साथ पुरानी बड़ी प्रिवीकौंसिल भी आयी। अब उतनी बड़ी कौंसिल से सलाह लेकर शासन करना राजा के लिए असुविधाजनक हो गया। अत: प्रिवीकौंसिल को 4 समितियों में विभाजित कर दिया गया और प्रत्येक समिति को कुछ निश्चित काम सौंप दिया गया। सामान्य नीति के सम्बन्ध में चार्ल्स अपने कुछ मित्रों से गुप्त रूप से सलाह लेकर काम करने लगा। इस तरह उसने 5 व्यक्तियों की एक मंडली कायम की जिसे 'केबाल' कहते हैं। यह शब्द पाँचों मंत्रियों के नामों के पहले अक्षरों को मिलाने से बना है। इससे मिलता-जुलता फ्रेंच भाषा में एक शब्द है 'केबेल' जिसका अर्थ होता है गुप्त मंडली। केबाल के सभी सदस्य पार्लियामेंट के भी सदस्य थे और इसकी बैठक राजा के कमरे में गुप्त रूप से हुआ करती थी। मुख्य बातों पर वहीं अनौपचारिक ढंग से विचार-विमर्श किया जाता था। डन्कर्क की ब्रिकी और डोवर की सन्धि पर पहले उसी

गुप्त मंडली में वार्ता कर ली गई थी। उसके बाद ही बड़ी कौंसिल की औपचारिक स्वीकृति से लिए विषय को उपस्थित किया गया था।

इस तरह आधुनिक कैबिनेट का बीजारोपण इसी केबाल मंत्रिमंडल में बताया जाता है; किन्तु यह स्मरणीय है कि आधुनिक कैबिनेट की कोई विशेषता केबाल में नहीं पायी जाती है। केबाल में न तो कोई प्रधानमंत्री ही था और न उसके सदस्यों में कॉमन्ससभा के प्रति उत्तरदायित्व की ही कोई भावना थी।

नोट

***(ii)* डैनबी मन्त्रिमण्डल**–डैनबी 1673 से 1678 ई. तक चार्ल्स का मुख्य मन्त्री था। पार्लियामेन्ट ने उस पर महाभियोग लगाकर उसे दण्ड दिया। राजा ने डैनबी की रक्षा के लिए उसे क्षमा प्रदान की तथा पार्लियामेंट को भंग किया गया परन्तु इससे कोई फायदा नहीं हुआ। इससे पार्लियामेंट के प्रति मंत्रियों के उत्तरदायित्व के सिद्धान्त को बड़ा प्रोत्साहन मिला।

***(iii)* टेम्पल की योजना**–पार्लियामेन्ट को यह पसन्द नहीं था कि राजा गुप्त मण्डली से परामर्श ले। अत: मन्त्रियों का उत्तरदायित्व निर्धारित करना जरूरी था, किन्तु राजा अपने मन्त्रियों को पार्लियामेंट से स्वतन्त्र रखना चाहता था। अत: राजा तथा पार्लियामेन्ट के बीच संघर्ष अनिवार्य हो गया। सर रिचर्ड टैम्पल ने 1979 ई. में इसे दूर करने के लिए एक योजना उपस्थित की। टेम्पल पार्लियामेंट का ही एक सदस्य था। उसकी योजना यह थी कि 30 सदस्यों की एक नयी प्रिवीकौंसिल बनायी जाये। इनमें 15 सदस्यों का पार्लियामेंट चुनाव करे और 15 सदस्यों को राजा मनोनीत करे। इस प्रकार उसमें राजा और पार्लियामेंट दोनों का प्रतिनिधित्व होता, परन्तु इस योजना को इतनी सफलता नहीं मिल सकी क्योंकि इस योजना में कुछ कमियाँ थीं।

(क) एक तो यह संस्था बहुत बड़ी थी जिस कारण शीघ्र निर्णय पर पहुँचना कठिन कार्य था।

(ख) इसकी गुप्तता की रक्षा करना भी मुश्किल काम था।

(ग) राजा और पार्लियामेन्ट दोनों के प्रतिनिधि होने के कारण सदस्यों का एकमत होना कठिन था।

अत: दूसरा चार्ल्स कुछ खास व्यक्तियों के परामर्श लेता रहा। अब कार्यकारिणी के रूप में प्रिवीकौंसिल का महत्त्व कम होता रहा। दूसरे जेम्स ने भी इस नीति का अनुसरण किया।

(ख) तीसरा विलियम और रानी एन : तीसरे विलियम और रानी एन के शासनकाल में (1689–1714 ई.) ह्विग तथा टोरी नाम के दो नैतिक दलों का विकास हुआ। इससे कैबिनेट-प्रणाली के विकास में बहुत सहायता मिली। शुरुआत के 7 वर्षों (1689–96 ई.) तक विलियम दोनों दलों में से मन्त्रियों को चुना करता था क्योंकि वह दोनों दलों के सदस्यों द्वारा चुना गया था इसलिए वह ऐसा करता था। इसके अलावा विलियम यह विचार रखता था कि इस तरह दोनों दल आपस में मिले रहेंगे तो शासन को इससे सुविधा मिलेगी। पर विलियम के इस ख्याल पर पानी फिर गया क्योंकि दोनों दलों में मतभेद था। इस कारण शासन में कठिनाइयाँ पैदा होने लगीं। अत: 1696 ई. में ह्विग दल के नेता सण्डरलैंड की सलाह के अनुसार विलियम ने केवल ह्विग दल से ही अपने मंत्रियों को नियुक्त किया। उस समय कॉमन्स-सभा में ह्विग दल का बहुमत भी था। इस मंत्रिमंडल को ह्विगजंटो या ह्विगों की गुप्त मंडली कहते हैं। इस एकदलीय मंत्रिमंडल ने बहुत कुशलतापूर्वक काम किया अत: इसी समय से कॉमन्स-सभा बहुसंख्यक दल से मन्त्रियों की नियुक्ति की परिपाटी चल पड़ी।

1701 ई. में 'निर्णायक कानून (ऐक्ट आफ सेटलमेंट)' पास हुआ। इसमें दो ऐसी धाराएँ थीं जिससे कैबिनेट-प्रणाली को आघात पहुँचता था। ये धाराएँ थीं–

(*i*) कोई भी पेंशनभोगी या सरकारी कर्मचारी कॉमन्स-संभा का सदस्य नहीं बन सकता।

(*ii*) भविष्य में कोई भी विचार-विमर्श प्रिवी कौंसिल की पूरी बैठक में हो–उसकी एक समिति में नहीं।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति अपनी सलाह के साथ अपना हस्ताक्षर भी किया करे, ताकि व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की स्पष्ट रूप से जानकारी प्राप्त हो सके। यदि ये धाराएँ कायम रह जातीं तो मंत्री कॉमन्स-सभा के सदस्य नहीं हो सकते और सामूहिक उत्तरदायित्व का सिद्धान्त भी कायम नहीं हो सकता, किन्तु एन के राज्यकाल (1705–6 ई.) में ये धाराएँ समाप्त कर दी गईं। एन के राज्यकाल में मन्त्रियों की नियुक्ति उसी दल से होती थी जिसको बहुमत मिलता था। रानी एन का झुकाव टोरी दल के प्रति अधिक था इसीलिए उसके शासनकाल में

सर्वप्रथम टोरी दल का शासन हुआ, किन्तु कुछ समय पश्चात् जब कॉमन्स सभा में ह्विगों को बहुमत प्राप्त हो गया तब उनकी मंत्रिमंडल में प्रधानता हुई। 1700 से 1744 ई. तक मंत्रिमंडल में टोरियो की प्रधानता स्थापित हुई क्योंकि कॉमन्स-सभा में उनका ही बहुमत था।

नोट

उपसंहार

इस प्रकार क्रांति-व्यवस्था ने दीर्घ पार्लियामेंट के अपूर्ण काम को पूर्ण कर दिया। अब राजा के मन्त्री, कॉमन्स सभा के विश्वास-पात्र व्यक्ति ही बन सकते थे। राजा एवं पार्लियामेंट के बीच संघर्ष में क्रान्ति एक महत्त्वपूर्ण तथा निर्णयात्मक कदम थी, लेकिन इनसे अभी वैधानिक समस्या का पूरा निराकरण नहीं हो सका। 1714 ई. तक राजा राज्य करता था और शासन भी करता था। राजा को ही यह अधिकार प्राप्त था कि वह मन्त्रियों को नियुक्त व पदच्युत कर सकता था। मंत्रिमण्डल का सभापति भी वही होता था तथा नीति का निर्धारण भी राजा ही करता था। उसे पार्लियामेंटरी कार्यपालिका के बदले राजतन्त्रात्मक कार्यपालिका ही कहना ज्यादा उपयुक्त है। अत: क्रान्ति-व्यवस्था के द्वारा पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना नहीं हो सकी। यह कार्य 1714 ई. में हैनोवर-राजवंश की स्थापना के साथ पूरा हुआ।

10.4 सत्रहवीं सदी में राजनीति पर धर्म का प्रभाव

मनुष्य के जीवन पर धर्म का गहरा प्रभाव पड़ता है। प्राचीन एवं मध्यकाल में यह बात विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है। अतीत के उन दिनों में मानव अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से प्रभावित था। वह अपने सामाजिक रूप में भी धर्म के प्रभाव से मुक्त नहीं था। धर्म के ही नाम पर अच्छे और बुरे सब तरह के काम हुआ करते थे। धर्म और राजनीति में गहरा सम्बन्ध था।

धर्म और राजनीति का पृथक्करण आधुनिक काल का लक्षण माना जाता है। इंग्लैंड के इतिहास में 15वीं सदी के अन्तिम चरण से ही आधुनिक युग का आरम्भ माना जाता है, किन्तु इसके बावजूद भी धर्म एवं राजनीति के बीच गहरा सम्बन्ध कायम रहा। 16वीं सदी के ट्यूडर-काल में यह बात स्पष्ट रूप से दिख पड़ती है। 17वीं सदी में स्टुअर्टों के आगमन के साथ धर्म और राजनीति का पृथक्करण नहीं हुआ, बल्कि वे परस्पर इतने मिलजुल गये कि उनके बीच कोई विभाजन-रेखा खींचना कठिन ही नहीं, असम्भव प्रतीत होता है। 17वीं सदी में इंग्लैण्ड के राजनैतिक एवं वैधानिक इतिहास पर धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा।

1. पहला जेम्स (1603-25 ई.) : धार्मिक समस्या को महारानी एलिजाबेथ ने कुछ हद तक हल किया था, परन्तु जब जेम्स प्रथम गद्दी पर बैठा तो उसके गद्दी पर बैठते ही यह समस्या फिर उठ खड़ी हुई। जेम्स प्रथम के समय में कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेंट दो प्रमुख धर्म सम्प्रदाय थे। प्रोटेस्टेंट लोग भी छोटे-मोटे अनेक सम्प्रदायों में विभाजित थे। इसमें प्रमुख प्यूरिटन का सम्प्रदाय था। सभी समुदाय जेम्स से उम्मीद करते थे किन्तु जब उनकी उम्मीदें पूरी नहीं हुईं तो वे राजा के विरोधी बन गये।

(*i*) प्यूरिटन–प्यूरिटनों को जेम्स से बहुत उम्मीद थी क्योंकि वह प्रेस्बिटेरिन स्कॉटलैण्ड से आया था। उन्हें लगता था जेम्स उनकी हर माँग को पूरा करेगा। जेम्स ने उनकी माँग पर विचार करने के लिए हैम्पकोर्ट सम्मेलन बुलाया, परन्तु वह सम्मेलन कामयाब नहीं हुआ। प्यूरिटन इस कारण असन्तुष्ट हो गये और कॉमन्स सभा में राजा के विरोधी बन गये। 17 वीं सदी में राजा और पार्लियामेंट के बीच होने वाले वैधानिक संघर्ष में इन प्युरिटनों ने प्रमुख हिस्सा लिया।

(*ii*) **कैथोलिक :** जेम्स की माता एक कैथोलिक महिला थी एवं जेम्स स्वयं सहिष्णुता का पक्षधर था। अत: सभी कैथोलिक जेम्स से उनके लिए विशेष सुविधाएँ उपलब्ध कराने की उम्मीद करने लगे। पार्लियामेन्ट ने कैथोलिकों के विरुद्ध कई कड़े कानून को पास कर रखा था। प्रारम्भ में जॉर्ज ने कैथोलिकों के प्रति बहुत उदारता दिखलायी, किन्तु प्रोटेस्टेंट-प्रधान पार्लियामेन्ट को राजा की यह नीति बिल्कुल पसंद नहीं थी। दूसरी ओर राजा की उदारता का कैथोलिक फायदा उठाने लगे। अत: कैथोलिकों के विरुद्ध फिर कड़ाई की जाने लगी। इसके परिणाम

नोट

के रूप में राजा के विरुद्ध षड्यंत्र एवं विद्रोह शुरू हो गये, किन्तु उनके सभी षड्यन्त्र एवं विद्रोह के प्रयत्न असफल रहे।

(*iii*) **ऐंग्लिकन :** जेम्स की ऐंग्लिकन सम्प्रदाय से विशेष पटरी बैठती थी। ऐंग्लिकन-व्यवस्था में धर्माध्यक्षों या पादरियों की प्रधानता थी। जेम्स इस व्यवस्था का समर्थन करता था। पादरी भी जेम्स के राजतन्त्र सम्बन्धी दैवी हक के सिद्धान्त के समर्थक थे। अत: दोनों में घना सम्बन्ध था और जेम्स कहा करता था कि यदि पादरी (बिशप) नहीं तो फिर राजा भी नहीं। स्वाभाविक ही उन्हें राजा से विशेष सुविधाएँ प्राप्त हुईं।

(*iv*) **वैदेशिक नीति :** धर्म का जेम्स की वैदशिक नीति पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसने अपनी लड़की की शादी पैलेटाइन के एलेक्टर फ्रेडरिक से की। फ्रेडरिक प्रोटेस्टेंट था। इससे पार्लियामेंट तो खुश थी, किन्तु इसके चलते इंग्लैण्ड को यूरोप के तीस वर्षीय युद्ध में फँसना पड़ा। जेम्स अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन जो कि एक कैथोलिक शासन वाला देश था, की राजकुमारी से करना चाहता था की इस बात का पार्लियामेन्ट ने खुलकर विरोध किया। इसके चलते राजा ने क्षुब्ध होकर अपने इस पार्लियामेंट को भी भंग कर दिया किन्तु अन्त में उसे स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करनी पड़ी जिसमें उसे पार्लियामेंट से मदद लेनी पड़ी।

जब जेम्स के पुत्र का विवाह स्पेन की राजकुमारी से नहीं हो पाया तो फ्रांस से विवाह की बातचीत पक्की हो गई, किन्तु फ्रांस भी तो कैथोलिक ही था। जेम्स ने फ्रांस को कुछ जहाज तथा इंग्लैण्ड के कैंथोलिकों को विशेष सुविधाएँ देने के लिए भी प्रतिज्ञा कीं। इससे पार्लियामेंट की जेम्स की ईमानदारी पर शंका बनी रही और इससे पार्लियामेन्ट ने कभी भी खुलकर जेम्स की सहायता नहीं की।

2. चार्ल्स प्रथम (1625-49 ई.) : चार्ल्स प्रथम के समय में धर्म के चलते राजा तथा पार्लियामेंट के बीच खाई और भी अधिक गहरी हो गयी। इस समय प्यूरिटनों की संख्या बढ़ गयी थी और वे विशेष रूप से संगठित भी हो गये थे। वे राजा के राजनैतिक एवं धार्मिक सिद्धान्त के विरोधी थे। चार्ल्स आर्मीनियन सम्प्रदाय का समर्थन करता था। यह सम्प्रदाय कैथोलिक सम्प्रदाय के बहुत निकट था। चार्ल्स कैथोलिकों के प्रति भी विशेष सहानुभूति दिखाने लगा था। इसका कारण यह था कि चार्ल्स की शादी फ्रांस की एक कैथोलिक राजकुमारी से हो गयी थी। अत: उसने कैथोलिकों को विशेष सुविधाएँ देने के लिए प्रतिज्ञा की थी। इस तरह धर्म को लेकर चार्ल्स को स्पेन के साथ लड़ने के लिए पूरी सहायता नहीं दी।

11 वर्षीय अनियंत्रित शासनकाल में चार्ल्स ने विलियम लॉड को अपना धार्मिक सलाहकार नियुक्त किया था। लॉड आर्मीनियन मत का था और निरंकुश शासन का भी समर्थक था अत: चर्च और ताज में घना सम्बन्ध था। इस अवधि में इंग्लैंड में प्रोटेस्टेंटों के ऊपर अत्याचार किया गया।

इंग्लैंड में ही नहीं, स्कॉटलैंड में भी अत्याचार किया गया। वहाँ प्रेस्बिटेरियन प्रणाली को नष्ट कर देने की कोशिश हुई जिसका फल हुआ दो बिशप-युद्ध। युद्ध के कारण चार्ल्स बड़े संकट में पड़ गया और वह फिर पाँचवीं पार्लियामेंट बुलाने के लिए बाध्य हुआ। इस तरह उसके व्यक्तिगत शासन का अन्त हो गया और दीर्घ (लौंग) पार्लियामेंट का प्रादुर्भाव हुआ।

(*i*) **दीर्घ पार्लियामेंट :** लगभग एक वर्ष तक तो दीर्घ पार्लियामेंट के सदस्यों ने मिलजुल कर कार्य किया और राजा की निरंकुशता पर नियंत्रण किया, किन्तु यह मेलजोल ज्यादा समय तक नहीं चला और दलबन्दी शुरू हो गई। इस दलबन्दी के निर्माण में धर्म ने अपनी अहम भूमिका निभाई।

दीर्घ पार्लियामेंट में ऐसे लोगों की संख्या बढ़ गई थी जो लॉड की चर्च व्यवस्था से बहुत ही असंतुष्ट थे। उनका झुकाव प्रेस्बिटेरियन मत की ओर अधिक था अत: वे चर्च तथा लॉर्ड सभा से बिशपों को बाहर कर देना चाहते थे। ये लोग प्रेस्बिटेरियन-प्रणाली से बिशप प्रणाली को ही अधिक अच्छा मानते थे।

इस प्रकार धर्म ने दोनों दलों के बीच दूरी बढ़ाने का कार्य किया। गृह-युद्ध शुरू होने के बाद यह दूरी और बढ़ गई। प्रेबिस्टेरियन स्कॉटलैण्ड ने पार्लियामेंटरी दल की और कैथोलिक आयरलैंड ने राजा के दल की सहायता की। जब गृह युद्ध (1642-48 ई.) हो रहा था तब क्रॉमवेल की प्रधानता स्थापित हो गई थी। क्रॉमवेल और उसके अनुयायी प्यूरिटन एवं स्वतन्त्रतावादी (इंडिपेंडेण्ट) थे। ये सहिष्णुता के प्रबल समर्थक थे।

नोट

(ii) **गणतन्त्र-काल (1649-60 ई.)** : गणतन्त्र-काल (कॉमनवेल्थ) में स्वतन्त्रतावादियों की प्रधानता कायम रही। सभी सम्प्रदायों के साथ सहिष्णुता की नीति अपनायी गई। 1649 से 1653 ई. तक रम्प की और उसके बाद क्रॉमवेल की प्रधानता रही।

(iii) **प्यूरिटन क्रान्ति के परिणाम** : प्यूरिटन क्रान्ति का खात्मा 1660 ई. में राज्य पुनर्स्थापन के साथ ही हो गया, किन्तु यह क्रांति यूँ ही व्यर्थ ही नहीं हुई। इसके कुछ महत्त्वपूर्ण परिणाम हुए।

इतिहासकार **टेसवेल लैंगमीड** का मत है कि इस क्रान्ति के चार परिणाम हुए। पहले तो कैथोलिक सम्प्रदाय कमजोर हो गया और अंग्रेजी समाज से उसका बहिष्कार हो गया, हलाँकि 1660 ई. के बाद भी उस सम्प्रदाय से समय-समय पर कठिनाई उत्पन्न होती रही। दूसरे लोगों में उग्रवादियों के प्रति अविश्वास और सेना के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न हो गया। तीसरे, राजतन्त्र की निरंकुशता का अन्त निश्चित हो गया। चौथे, राष्ट्रीय सरकार में कॉमन्स-सभा का विशेष प्रभाव कायम हो गया और उसका स्थान सर्वोपरि हो गया।

इन परिणामों के अलावा वैधानिक इतिहासकार **एडम्स** के मतानुसार तीन परिणाम और हुए–1. गणतन्त्रवादियों का पतन हो गया और यह निश्चित हो गया कि ग्रेट ब्रिटेन में गणतन्त्र (रिपब्लिक) की स्थापना नहीं होगी। 2. विशेष न्यायालय और उनके साथ परमाधिकार (प्रिरोगेटिव) से उत्पन्न होने वाले सभी खतरे समाप्त हो गये। 3. राजा की आर्थिक स्वतन्त्रता भी समाप्त हो गयी।

3. दूसरा चार्ल्स (1660-80 ई.) : राज्य की पुनर्स्थापना के साथ 1660 ई. में बिशप व्यवस्था की भी स्थापना हुई। ऐंग्लिकन चर्च की फिर से प्रभुता हो गयी। जिन बिशपों को गणतंत्र काल में निकाल दिया गया था। उन्हें दोबारा नियुक्त कर लिया गया, किन्तु प्रारंभ में प्रेस्बिटेरियनों तथा स्वतंत्रतावादियों के प्रति भी सहिष्णुता दिखलाई गई। फिर भी ऐंग्लिकन चर्च की प्रधानता कायम होने से ननकैफर्मिस्टों (डिसेंटर) की संख्या बढ़ने लगी।

(i) **क्लैरेंडन कोड** : कैवेलियर पार्लियामेंट के आगमन के साथ सहिष्णुता का भी अन्त हो गया। कहा जाता है कि यह कैवेलियर पार्लियामेंट राजा से भी अधिक राजतन्त्रवादी और बिशप से अधिक ऐंग्लिकन थी। अत: अब ऐंग्लिकनों का सितारा चमक उठा। कैवेलियर पार्लियामेंट ने बिशपों के पक्ष में चार कानूनों को पास किया। इन कानूनों को क्लैरेंडन कोड कहते हैं। इससे प्रेस्बिटेरियन तथा अन्य सम्प्रदाय बहुत ही निराश एवं चिन्तित हुए। इससे राजतन्त्र का पक्ष सबल हुआ। राजा की मान-मर्यादा में वृद्धि हुई।

चार्ल्स लेकिन इतने ही से खुश नहीं हुआ। वह कैथोलिकवाद के प्रचार में बड़ी रुचि रखता था और कैथोलिकों के पक्ष में कुछ नियम बनाकर उन्हें सुविधाएँ देना चाहता था। अत: 1672 ई. में उसने धार्मिक अनुग्रह की घोषणा जारी की। इसके लिये उसने पार्लियामेंट की अनुमति नहीं ली थी और इसके द्वारा कैथोलिकों पर लगाये गये प्रतिबंधों को हटा दिया। राजा के इस कार्य से पार्लियामेंट के अधिकारों का हनन हो रहा था। अब पार्लियामेंट ने राजा के इस नियम का घोर विरोध किया तब चार्ल्स ने इस नियम को हटा दिया।

(ii) **परीक्षा-नियम** : पार्लियामेन्ट को इससे संतुष्टि नहीं मिली। उसने 1673 ई. तक परीक्षा-नियम (टेस्ट-ऐक्ट) पास किया। इसके अनुसार जो व्यक्ति अंग्रेजी चर्च के सिद्धान्त को नहीं मानता और उसके अनुकूल शपथ ग्रहण नहीं करता, वह किसी सरकारी पद पर नहीं रह सकता था। कुछ समय के पश्चात् पार्लियामेंट के सदस्यों के लिए भी यह अनिवार्य कर दिया गया। अत: अब गैर ऐंग्लिकनों के लिए पार्लियामेंट का सदस्य अथवा सरकारी कर्मचारी होना मुश्किल हो गया। इसी परीक्षा नियम के कारण केबाल मंत्रिमंडल टूट गया और राजा के भाई जेम्स को अपने पद को छोड़ना पड़ा।

(iii) **दलबन्दी की शुरुआत** : चार्ल्स द्वितीय का भाई जेम्स द्वितीय एक कैथोलिक था किन्तु वह गद्दी का उत्तराधिकारी भी था। अत: पार्लियामेंट ने एक बिल पास कर उसे गद्दी के उत्तराधिकार से वंचित कर दिया। इसे बहिष्कार बिल कहते हैं। अपने भाई की रक्षा करने के लिए चार्ल्स ने 1679 ई. में कैवेलियर पार्लियामेंट को ही भंग कर दिया लेकिन जब नई पार्लियामेंट का चुनाव हुआ तो चार्ल्स डरकर उसकी बैठक ही नहीं बुलाता था। अत: राजा के पास कुछ लोगों ने यह आवेदन भेजा कि वह पार्लियामेंट की बैठक करवाएँ। ये निवेदक (पेटीशनर्स) कहलाये,

किन्तु कुछ लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगी और वे इन निवेदकों से घृणा करने लगे। अत: वे उपेक्षक (एभोरर्स) कहलाये। ये ही बाद में क्रमश: ह्विग तथा टोरी के नाम से प्रसिद्ध हुए। 19वीं सदी में उदारवादी (लिबरल) तथा अनुदारवादी (कन्जर्वेटिव) कहलाने लगे। इस प्रकार धर्म के ही आधार पर राजनैतिक दलों का प्रारम्भ हुआ।

नोट

चार्ल्स ने पार्लियामेंट और प्रोटेस्टेंटों को प्रसन्न करने के लिए केबाल मंत्रिमंडल के पतन के बाद डैनबी को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया। डैनबी प्रोटेस्टेंट था और फ्रांस-विरोधी भी था। उसी के प्रयत्न से दूसरे चार्ल्स की भतीजी मेरी की शादी औरेंज के विलियम के साथ हुई। इस तरह डैनबी ने भावी उत्तराधिकारी का मार्ग खोल दिया। यही विलियम 'विलियम तृतीय' के नाम से 1689 ई. में इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा।

चार्ल्स अपने शासनकाल के अन्तिम 4 वर्षों (1681-85 ई.) में निरंकुश बन गया था। इस अवधि में उसने कैथोलिकों को बहुत सुविधाएँ प्रदान की।

4. दूसरा जेम्स (1685-88 ई.) : जेम्स जो कि चार्ल्स द्वितीय का भाई था। 1685 ई. में गद्दी पर बैठा। उसने निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना की और कैथोलिकवाद के प्रचार के लिए चार्ल्स के प्रयत्न को जेम्स ने जारी रखा। जेम्स ने अपनी सारी शक्ति का प्रयोग कर इन सिद्धान्तों को कार्यान्वित करने की कोशिश की। वह फिर परमाधिकार की जोरों से बात करने लगा। वह पार्लियामेंट की उपेक्षा कर अपने को सर्वोपरि साबित करने की कोशिश करने लगा। जब पार्लियामेंट ने परीक्षा-नियम को नहीं उठाया तब जेम्स ने इसे न्यायालय के द्वारा अवैध घोषित कराने की कोशिश की। सर एडवर्ड हेल्स के मामले में न्यायाधीशों ने राजा के पक्ष में ही अपना फैसला सुनाया। हेल्स जो कि एक कैथेलिक था, को सेना के एक पद पर नियुक्त करना वैध करार दिया गया। अब जेम्स को परीक्षा-नियम की कोई चिन्ता नहीं रह गई। अब वह राज्य, चर्च, सेना तथा शिक्षण-संस्थाओं यानी सभी क्षेत्रों में कैथोलिकों को नियुक्त करने लगा। उसने कैथोलिकों के पक्ष में दो बार धार्मिक अनुग्रह की घोषणाएँ जारी कीं। उसने दोषियों को दण्ड देने के लिए एक धार्मिक न्यायालय भी खोला।

जेम्स सत्ता के मद में बेहोश हो गया था। उसकी दृष्टि व उसके विचार संकुचित हो गए थे। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि विचारधारा को नहीं उल्टा जा सकता और लोकमत की उपेक्षा नहीं की जा सकती। वह इस बात को भी नहीं समझ रहा था कि शक्ति से या जबरदस्ती धर्म-प्रचार नहीं हो सकता। अत: उसे उसकी करनी का फल मिला। सबने उसका विरोध करना शुरू कर दिया। जो लोग कभी उसके समर्थन में थे अब उसके विरोधी बन गये। उसके विरुद्ध क्रान्ति शुरू हो गयी। उसे गद्दी का त्याग करना पड़ा व अपने प्राणों की रक्षा हेतु किसी दूसरे देश में जाके शरण लेनी पड़ी। उसके गद्दी छोड़कर भागने के बाद विलियम तृतीय को गद्दी पर बैठाया गया।

5. विलियम तृतीय (1689-1700 ई.) : तीसरे विलियम का राज्य काल इंग्लैण्ड के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसके समय में धार्मिक समस्या का निवारण हो गया। 1689 ई. में पार्लियामेंट के द्वारा सहिष्णुता-नियम पास हुआ। अब इसके द्वारा प्राय: संभी सम्प्रदायों को धार्मिक स्वतन्त्रता मिल गई। अब धर्म के नाम पर अत्याचार एवं शोषण बंद हो गये।

अभी भी कैथोलिकों के ऊपर कुछ प्रतिबन्ध रह गये, किन्तु अब ये बहुत कम रह गए थे। आगे चलकर धीरे-धीरे इन्हें भी स्वतन्त्रता प्राप्त हो गयी। राज्य में उन्हें भी सुविधाएँ मिलने लगीं। किन्तु गद्दी पर वही बैठ सकता था जो प्रोटेस्टेंट था और अंग्रेजी चर्च के सिद्धान्त को मानता था। 1689 ई. में यह बात स्थायी रूप से तय कर दी गयी थी। फिर भी इन छोटी-मोटी सीमाओं के बावजूद भी 17वीं सदी में धर्म के प्रति दृष्टिकोण में निश्चित रूप से परिवर्तन हो गया।

10.5 सत्रहवीं सदी में व्यक्तिगत स्वाधीनता की समस्या

1. शक्ति-पार्थक्य का सिद्धान्त : शक्ति-पार्थक्य का सिद्धान्त राजनीतिशास्त्र को मौंटेस्क्यू नामक विचारक की एक महत्त्वपूर्ण देन है। राज्य की प्रमुख तीन शक्तियाँ होती हैं– कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका। मौंटेस्क्यू का मत है कि इन तीनों शक्तियों के कार्य एवं अधिकार अलग-अलग व्यक्तियों या संस्थाओं के हाथ में होने चाहिए। एक ही व्यक्ति या एक ही संस्था के हाथ में तीनों शक्तियाँ कभी भी नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने से

नोट

न्याय का काम सुचारु रूप से नहीं हो सकता और व्यक्ति की स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं रह सकती। जिस राज्य या समाज में न्याय एवं स्वतंत्रता के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं हो और जहाँ विधि (कानून) का राज्य नहीं हो उस राज्य या समाज में मानव-जीवन सुखमय एवं शान्तिमय नहीं बन सकता। अत: आधुनिक युग में इस बात पर पूरा ध्यान दिया जाता है कि राज्य की तीनों शाखाएँ एक-दूसरे से भिन्न रहें। पार्लियामेंटरी पद्धति में कार्यपालिका एवं व्यवस्थापिका में तो निकट सम्बन्ध होता है, किन्तु इस पद्धति में भी न्यायपालिका को अन्य दो शाखाओं से स्वतन्त्र ही रखने का प्रयत्न किया जाता है। किसी राज्य या देश में न्यायपालिका कहाँ तक स्वतंत्र है और वह कैसे न्याय का कार्य सम्पादित करती है, यही उसकी सभ्यता एवं प्रगति का एक बड़ा मापदण्ड है।

2. स्वतंत्र न्यायपालिका का अर्थ : स्वतन्त्र न्यायपालिका का मतलब है कि उसमें काम करने वाले न्यायपति किसी भी कृपा के प्रलोभन या किसी भय से मुक्त रहते हैं और वे निष्पक्ष एवं निर्भीक होकर अपने अंत:करण के अनुसार ही न्याय का कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की भी स्वतन्त्रता सुरक्षित मानी जाती है।

3. 17वीं सदी में इंग्लैण्ड की स्थिति : 17वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में शक्ति-पार्थक्य का सिद्धान्त लागू नहीं था। कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के बीच विभाजन रेखा बहुत ही क्षीण थी। अत: स्टुअर्ट वंश के राजाओं की नीति के कारण केवल पार्लियामेंट के ही अधिकारों पर नहीं, अपितु व्यक्ति के अधिकारों पर भी आघात पहुँचा था। पार्लियामेंट और व्यक्ति दोनों की स्वतंत्रता खतरे में पड़ गयी थी। यहाँ न तो राजनैतिक स्वतंत्रता थी और न ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता थी।

4. व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए आवश्यक बातें : व्यक्तिगत स्वतंत्रता में तीन आवश्यक बातें निहित हैं –

(*i*) कानून की दृष्टि में सबको एक समान समझा जाए। चाहे वह राजा हो रंक, सरकारी पदाधिकारी हो या साधारण नागरिक।

(*ii*) किसी व्यक्ति को उसी समय दण्ड दिया जा सकता है, जब वह निश्चित रूप से कानून का उल्लंघन करे।

(*iii*) उसका दोष साधारण न्यायालय में साबित होना चाहिए।

5. साधारण न्यायालयों में हस्तक्षेप : साधारण न्यायालय या स्वतन्त्र न्यायालय (कॉमन लॉ या कॉमन प्लीज कोर्ट) के अधिकांश कानून लिखित नहीं थे। वे कानून जनता के रीति-रिवाजों पर आधारित थे। न्यायाधीशों के लिए ये प्राचीन लोक विधि-विधान (रीति रिवाज या विधि-नियम) बहुत महत्त्वपूर्ण थे। ऐसा नहीं था कि ये लोग कानून को नहीं मानते थे, अपितु ये पार्लियामेंट के द्वारा निर्मित कानूनों को भी लागू किया करते थे। राजा इन न्यायालयों के जजों को भी प्रभावित कर अपने पक्ष में निर्णय कराने की कोशिश करता था। जेम्स का मानना था कि–"राजा न्यायाधीशों की शक्ति का स्रोत होता है, अत: राजा के हित के विरुद्ध कोई निर्णय नहीं लिया जाना चाहिए।"

6. असाधारण न्यायालय : 17वीं सदी के प्रारम्भ में अनेक असाधारण अदालतें बनी थीं। इनमें मुख्य रूप से स्टार चैम्बर हाई कमीशन, उत्तर की कौंसिल और वेल्स की कौंसिल को विशेष स्थान प्राप्त था। असाधारण न्यायालय को परमाधिकार (प्रिरोगेटिव) भी कहते हैं। इन पर राजा का प्रभाव तथा नियंत्रण था। इन न्यायालयों के सदस्य प्रिवी कौंसिल के ही सदस्य होते थे। 16वीं सदी में ट्यूडर काल में इन न्यायालयों से जनता को फायदा हुआ था, क्योंकि ये सामन्तों के अधिकारों को कम करने और शान्ति स्थापित रखने में सहायक सिद्ध हुए थे। 17वीं सदी में ये पूर्वकालीन स्टुअर्ट राजाओं के अत्याचार के साधन बन गये थे। एक्सचेकर और चांसरी कोर्ट भी राजा के ही प्रभाव में थे। इन न्यायालयों को प्रभावित कर अपने पक्ष में निर्णय करा लेना राजा के लिए बहुत आसान काम था। कई मामलों में राजा स्वयं निर्णय ले लिया करता था। बेकन नामक न्यायाधीश तो परमाधिकार से सम्बन्धित सभी मामलों को विचारार्थ राजा को ही सौंप देता था।

7. कोक का सिद्धान्त : 1606 ई. में सर एडवर्ड कोक साधारण न्यायालयों का प्रधान न्यायाधीश नियुक्त हुआ। वह न्याय के क्षेत्र में तत्कालीन स्थिति का घोर विरोध किया करता था। वह राजा के परमाधिकारों (प्रिरोगेटिव्स) का विरोध करता था। वह न्यायपालिका की स्वतंत्रता और विधि की सर्वोच्चता का प्रबल समर्थक था।

उसका मानना था कि "न्यायाधीश को ताज से स्वतंत्र रहकर संविधान का संरक्षक होना चाहिए और मतभेद के सभी विषयों में निर्णय देना चाहिए।" एडवर्ड जनता के अधिकारों की सुरक्षा तथा असाधारण अदालतों का अंत चाहता था। वह न्यायप्रिय व्यक्ति था। उसे सदैव जनता के अधिकारों की रक्षा की चिंता रहती थी।

नोट

8. बेकन का सिद्धान्त : जहाँ एक तरफ एडवर्ड तत्कालीन स्थिति का विरोधी था वहीं दूसरी ओर बेकन जोकि एक महान विचारक था वह तत्कालीन स्थिति का समर्थक था। बेकन का कहना था, "सिंह की तरह जज स्वतंत्र एवं शक्तिशाली थे, परन्तु वे भी राजा के अधीन थे।" उसका यह भी मत था कि, "राजा का परमाधिकार मैग्नाकार्टा में वर्णित आदेश के कानून का ही एक अंश था और राजा स्वयं मतभेद के विषयों में निर्णय दे सकता था।" ऐसी स्थिति में स्टुअर्ट-काल में विधि का आधिपत्य नहीं था। अत: स्थापित कानून का स्पष्ट रूप से उल्लंघन किए किना किसी व्यक्ति का दण्डित होना साधारण सी बात थी। यदि किसी का अपराध साबित न हो तो भी उसे अनिश्चित काल के लिए जेल में डाला जा सकता था। राजा स्वयं को कानून के ऊपर समझता था। उसके विरुद्ध जाने पर किसी भी जज को पदच्युत (पद से हटाया जाना) करने में राजा को जरा भी संकोच नहीं होता था।

10.6 17वीं सदी की प्रमुख घटनाएँ

1. जेम्स प्रथम : जेम्स प्रथम के समय में कार्यपालिका तथा न्यायापालिका के बीच संघर्ष शुरू हो गया था। इस संघर्ष में उसने अहम भूमिका निभाई थी। उसके समय के प्रमुख मामले निम्नलिखित हैं–

(i) **निषेध सम्बंधी मामला (प्रोहीबिशन) :** साधारण न्यायालय धार्मिक न्यायालयों को किसी मामलें में जाँच या निर्णय करने से मना कर सकती थी। यह परम्परा बहुत समय से चली आ रही थी। आर्कबिशप बैंक्रफ्ट को यह बात अच्छी नहीं लगती थी। इसीलिए उसने 1605 ई. में एक लेखक के द्वारा इसके सम्बन्ध में राजा से शिकायत की। उसके इस शिकायत पत्र को 'आर्टिकुली क्लरी' के नाम से जाना जाता है। उसने अपने इस लेख में यह प्रस्ताव किया कि इस तरह के निर्देशन को जारी करने का अधिकार चांसरी कोर्ट को दिया जाये, परन्तु कोक ने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया।

1607 ई. में फुलर का मामला भड़क उठा। इस मामले में जेम्स ने स्वयं ही निषेध संबंधी अधिकार अपने हाथों में लेना चाहा। फुलर पार्लियामेंट का एक सदस्य और वकील था। उसने एक बार घोषणा की कि यह मामला हाई कमीशन कोर्ट के अधिकार-क्षेत्र के अंदर नहीं था और अपने दो व्यक्तियों के लिए बंदी-मुक्तिकरण की माँग की। इसके लिए उसको हाई कमीशन के द्वारा राजा की अवज्ञा का दोषारोपण लगाकर अर्थदण्ड एवं कैद की सजा दे दी गई। बैंक्रफ्ट ने उक्त मामलें के सम्बन्ध में राजा का मत जानना चाहा। राजा ने कोक को इस सम्बन्ध में प्रभावित करना चाहा, परन्तु वह सफल नहीं हो सका। अंत में राजा ने उक्त मामले को हाई कमीशन कोर्ट के अधिकार-क्षेत्र के ही अंदर घोषित किया। इस तरह बैंक्रफ्ट ने बाजी मार ली और फुलर ने अवैध रूप से दण्ड पाया। कोक ने राजा की कार्यवाही का विरोध किया। उसके मतानुसार उक्त प्रश्न पर निर्णय देने का अधिकार साधारण न्यायाधीश को ही था, राजा को नहीं। अत: इसके बाद से साधारण न्यायालय के न्यायाधीश ही निषेध-सम्बन्धी अधिकार का उपयोग करते रहे।

(ii) **घोषणा-सम्बंधी मामला :** हेनरी अष्टम के समय में एक प्रथा प्रचलित थी। इस प्रथा के अंतर्गत राजा कोई भी घोषणा या अध्यादेश जारी कर सकता था। बाद में कुछ संशोधन के द्वारा इस प्रथा में बदलाव किया गया परन्तु संशोधन के बाद भी राजा घोषणा या अध्यादेश जारी कर ही रहा था। जिस तरह कानून को देश में लागू किया जाता था उसी तरह घोषणा को भी देश में लागू किया जाता था, परन्तु स्टुअर्ट राजा ने इस अधिकार का दुरुपयोग करना शुरू कर दिया। पार्लियामेंट के सदस्यों को यह बात कतई पसंद नहीं आई। उन्होंने यह शिकायत की कि राजा निम्नलिखित तरीके से अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर रहा है–

(क) जिस अपराध के लिए कानून द्वारा जो दण्ड तय है राजा उससे अधिक दण्ड देने की घोषणा क ा है।

(ख) अपराधियों को ऐसे न्यायालयों द्वारा दण्ड दिया जाता है जिन्हें उनके अपराधों की जाँच करने का अधिकार ही नहीं है।

(ग) राजा घोषणा द्वारा ऐसे अपराधों को भी दण्डनीय कर देता है जो पार्लियामेंट के कानून द्वारा दण्डनीय नहीं है।

राजा ने कोक तथा उसके सहयोगियों से सम्मति ली। कोक के नेतृत्व में न्यायाधीशों ने कहा कि–

नोट

(क) राजा के पास वही परमाधिकार रहेंगे, जिन्हें देश के कानूनों ने स्वीकार किया है अर्थात् उसके परमाधिकार से बाहर वह कोई घोषणा नहीं कर सकता है।

(ख) राजा घोषणा द्वारा देश के किसी भी लिखित या सर्वमान्य अलिखित कानून में संशोधन या परिवर्तन नहीं कर सकता। राजा घोषणा द्वारा केवल किसी विषय या कानून के सम्बंध में जनता को सूचना दे सकता था।

(ग) जो अभियोग स्टार चैम्बर के देखने लायक नहीं होगा, उसे घोषणा के द्वारा उसके अधीन नहीं किया जा सकता।

(घ) राजा घोषणा द्वारा किसी नए विषय को दण्डनीय नहीं बना सकता जो देश के कानून द्वारा दण्डनीय नहीं है।

इसी तरह राजा के द्वारा जारी अमानवीय घोषणा या अध्यादेश की सीमा संकुचित कर दी गई। न्यायाधीशों का यह निर्णय अंग्रेजो की स्वाधीनता का एक प्रपत्र ही माना जाना चाहिए।

(*iii*) **पीचम का मामला :** 1615 ई. में पीचम का मामला उठा। उसमें राजा ने न्यायाधीशों को गुप्त रूप से प्रभावित करने की चेष्टा की। पीचम के यहाँ एक कागज मिला जिसमें उसने राजा की आलोचना की थी। उसका न तो प्रकाशन हुआ था और न तो कहीं प्रचार हुआ था, फिर भी उस पर राजद्रोह का अपराध लगाया गया, परन्तु यह अपराध साबित करना अनिवार्य हो गया था। राजा ने जजों से मिलकर उन्हें प्रभावित करने का बहुत प्रयास किया परन्तु इन सब चेष्टाओं के बाद भी कोक प्रभावित नहीं हुआ और उसका अपराध साबित नहीं हो सका। उसने बतलाया कि पीचम राजद्रोही नहीं है। राजा की आलोचना करना या उसे अयोग्य कहना राजद्रोह नहीं है। उसने जजों से व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से मिलकर गुप्त बात करने के तरीके को भी अनुचित और राज्य की प्रथा के प्रतिकूल बतलाया। फिर भी पीचम को तथाकथित अपराध में दण्ड दे ही दिया गया।

ट्यूडर वंश के राजा भी न्यायाधीशों से परामर्श करते थे, परन्तु कानून के सम्बन्ध में कोई सन्देह दूर करने के लिए, स्वार्थ-सिद्धि के लिए नहीं। स्टुअर्ट-वंश के राजा स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही परामर्श करना चाहते थे।

(*iv*) **कौमेण्डम्स का मामला :** जेम्स ने लिचफिल्ड के बिशप नील को कुछ जमीन दी जो एक व्यक्ति के अधीन थी। उस व्यक्ति ने राजा एवं बिशप दोनों के उक्त जमीन पर अधिकार का विरोध किया और इस सम्बन्ध में न्यायालय में आवेदन-पत्र दिया। राजा ने न्यायाधीशों को सूचित किया कि उससे बातचीत करने के पहले इस मामले में निर्णय नहीं दिया जाए। न्यायाधीशों ने उत्तर दिया कि, "किसी मामले में निर्णय करने में विलम्ब करना कानून एवं शपथ के प्रतिकूल कार्य होगा।" अत: वे राजा की बातों को नहीं मान सकते। इस पर राजा ने न्यायाधीशों को बुलाकर डाँट-डपट नहीं किया। राजा ने उससे पूछा कि, "क्या परमाधिकार (प्रिरोगेटिव) की रक्षा के लिए भी किसी मामले में विलम्ब नहीं किया जा सकता? इस सवाल का उत्तर कोक ने निर्भीक होकर दिया कि "एक न्यायाधीश के लिये जो उचित जान पड़ेगा, वह वही करेगा।" बस अब क्या था। राजा ने क्रुद्ध होकर कोक को पदच्युत कर दिया। 1616 ई. में यह घटना हुई।

कोक की पदच्युति अन्य न्यायाधीशों के लिये कठोर चेतावनी थी। अब कोई न्यायाधीश जल्दी राजा के आदेश का उल्लंघन नहीं करता था।

(*v*) **स्विडलर का मामला :** सिवडलर को लोकविधि न्यायालय (कॉमन लॉ कोर्ट) ने दण्ड दिया था। वह इस निर्णय के खिलाफ चांसरी कोर्ट में अपील करना चाहता था। राजा ने इसके लिए अनुमति दे दी, पन्तु कोक ने इसका विरोध किया था, क्योंकि वह चांसरी कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश था और राजा की ही आज्ञा का पालन किया करता था।

नोट

2. पहला चार्ल्स : चार्ल्स प्रथम का शासनकाल 1625-49 ई. तक चला था। इस काल में न्याय विभाग में कार्यपालिका की ओर से हस्तक्षेप होता रहता था। राजा ने बलपूर्वक कर्ज लेने का प्रयत्न किया जिसका राष्ट्र में विरोध हो रहा था। बेफिजूल के कर्ज देना डार्नेल तथा उनके पाँच सरदारों को कतई रास नहीं आया। इसलिए उन्होंने 1626 ई. को बलात कर्ज देना अस्वीकार कर दिया। इसलिए उन्हें जबरन गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। सैनिक उन्हें बहुत तंग किया करते थे। उन लोगों को दंड देने के लिए सैनिक न्यायालय का प्रयोग किया जाने लगा था। शान्तिकाल में फौजी कानून भी लागू किया जाता था। जो कोई राजा का विरोध करता था उसे कठोर दंड दिया जाता था। इसके लिये असाधारण न्यायालयों का भी बहुत प्रयोग किया जाता था। यदि किसी ने राजा के अनुकूल कार्य नहीं किया तो उस न्यायाधीश को अपने पद से हाथ धोना पड़ता था। मुख्य न्यायाधीश क्रू ने बलात् कर्ज को मानने से इंकार कर दिया जिस कारण उसे पद से हटा दिया गया। ऐसे ही कुछ अन्य न्यायाधीशों के साथ भी हुआ था। 1629-40 के काल को अनियंत्रित शासनकाल कहा जाता है क्योंकि इस बीच राजा मनमाने ढंग से काम करने लगा था।

1636 ई. में जौन हैम्पडेन का मामला भड़का। हैम्पडेन एक जहाजी था। उसने जहाजी कर (टैक्स) को अनुचित समझ कर देना अस्वीकार कर दिया। इस कारण उस पर मुकदमा चलाया गया। इस मामले में राजा विजयी हो गया। हैम्पडेन को जेल में बंद रखा गया और उससे जहाजी कर (टैक्स) भी वसूल किया जाता था।

3. चार्ल्स द्वितीय : चार्ल्स द्वितीय के समय में अर्थात् 1660-85 ई. में भी न्यायविभाग में हस्तक्षेप करना चालू रहा। *अंतिम 4 वर्षों (1681-85 ई.) में चार्ल्स ने निरंकुश शासन स्थापित कर दिया था। उसने अपने शासनकाल* में तीन लार्ड चांसलर, दो लार्ड कीपर, तीन प्रधान और छः साधारण न्यायाधीशों को पदच्युत कर दिया था। उसने ज्योफ्रे जैसे निर्दयी जजों को पदनियुक्त कर दिया। उसने कई नगरों को भी उदारवादी अधिकार-यंत्र से वंचित कर दिया था।

4. जेम्स द्वितीय: जेम्स द्वितीय का शासनकाल 1685-88 ई. तक चला। इसलिए कहा भी जाता है कि जेम्स द्वितीय का शासनकाल कब शुरू हुआ और कब खत्म हो गया, कुछ पता ही नहीं चला। इन तीन वर्षों में उसने मनमाने ढंग से काम किया। उसे निरंकुशता पर दृढ़-विश्वास था। वह दावा करता था कि वह बड़ी ही आसानी से किसी भी कानून को बना सकता है और किसी को भी पद से मुक्त कर सकता है। उसने अपने इस अधिकार का समर्थन न्यायालय द्वारा पास करवा लिया था।

पार्लियामेंट ने कैथोलिकों के विरुद्ध एक परीक्षा-नियम पास किया था। जेम्स द्वितीय कैथोलिकों का पक्षपाती था। अतः वह इस नियम के विरुद्ध कई कैथोलिकों को कई पदों पर नियुक्त करने लगा। वह पार्लियामेंट पर दबाव डालकर इस नियम को समाप्त करा देना चाहता था, परन्तु वह इसमें सफल नहीं हो सका। इसके बाद उसने न्यायाधीशों पर दबाब डालकर इस नियम के विरुद्ध निर्णय करा लिया। जेम्स द्वितीय के समय में एडवर्ड हेल्स का मामला बहुत प्रतिद्ध था। उसने एडवर्ड हेल्स नामक एक कैथोलिक को सेना के पद पर नियुक्त कर दिया था। न्यायालय को यह निर्णय पसंद नहीं आया इसलिए उन्होंने राजा के इस फैसले को वैध घोषित कर दिया। पार्लियामेंट ने भी न्यायालय का ही साथ दिया क्योंकि राजा का यह फैसला कानून के विरुद्ध था। जेम्स के विरुद्ध जाने पर *न्यायाधीश को पदच्युत कर दिया गया। इस प्रकार उसने लगभग 12 न्यायाधीशों को पद से हटा दिया।*

जेम्स द्वितीय शिकायतों को दूर करने के लिए राजा को दिए जाने वाले आवेदन-पत्र के अधिकार को नहीं मानता था। 1688 ई. में उसने धार्मिक अनुग्रह की दूसरी घोषणा प्रकाशित कर दिया और इसे सभी गिरजों (चर्च) में पढ़ने का आदेश दिया। कैंटरबरी के 7 पादरियों (बिशपों) ने इससे उन्हें मुक्त करने के लिये आवेदन-पत्र दिया। जेम्स बिगड़ गया और उन पर राजद्रोह का मुकदमा चला दिया, परन्तु पादरियों के इस मामले में राजा की हार हो गई। जूरी और जज ने उन्हें निर्दोष घोषित कर दिया।

5. व्यक्तिगत स्वतंत्रता की समस्या का समाधान : जेम्स ने लिचफिल्ड के बिशप नील को कुछ जमीन दी थी। वह जमीन एक व्यक्ति के अधीन थी। उस व्यक्ति ने राजा एवं बिशप दोनों के उक्त जमीन पर अधिकार का विरोध किया और इस सम्बन्ध में न्यायालय में आवेदन-पत्र दिया। राजा ने न्यायाधीशों को सूचित किया कि उससे बातचीत करने के पहले इस मामले में निर्णय नहीं देना होगा। न्यायाधीशों ने उत्तर दिया कि "किसी मामले में निर्णय

नोट

करने में विलम्ब करना कानून एवं शपथ के प्रतिकूल कार्य होगा।" अत: वे राजा की बातों को नहीं मान सकते। इस पर राजों ने न्यायाधीशों को बुलाकर डाँट-डपट की। इस पर कुछ न्यायाधीशों ने तो राजा की बात मान ली, किन्तु कोक टस-से-मस नहीं हुआ। राजा ने उससे पूछा कि, "क्या परमाधिकार (प्रिरोगेटिव) की रक्षा के लिए भी किसी मामले में विलम्ब नहीं किया जा सकता?" कोक ने निर्भीक होकर उत्तर दिया कि एक न्यायाधीश के लिये जो उचित जान पड़ेगा, वही वह करेगा। बस अब क्या था। राजा ने क्रुद्ध होकर कोक को पदच्युत कर दिया। 1616 ई. में यह घटना हुई।

कोक की पदच्युति अन्य न्यायाधीशों के लिये कठोर चेतावनी थी? अब कोई न्यायाधीश जल्दी राजा के आदेश के विरुद्ध निर्णय देने के लिये साहस नहीं कर सकता था।

10.7 17वीं सदी का महत्त्व (रचनात्मक युग के रूप में)

* **'रचनात्मक' की व्याख्या :** एडम्स के अनुसार, "इंग्लैण्ड के संवैधानिक इतिहास में 14वीं सदी की तरह ही 17वीं सदी एक महान रचनात्मक युग है।" रचनात्मक का मतलब यह नहीं है कि इस सदी में किसी नवीन संस्था या संवैधानिक पद्धति का प्रादुर्भाव हुआ, अपितु रचनात्मक का मतलब यह है कि इस सदी में संविधान का अर्थ एवं भाव सदा के लिए स्पष्ट रूप से निश्चित कर दिया गया।

1. पार्लियामेंट की शक्ति में वृद्धि (14वीं एवं 15वीं सदी में) : इंग्लैण्ड में पार्लियामेंट का जन्म 13वीं सदी में हुआ था परन्तु इसका विकास 14वीं सदी में शुरू हुआ था। 1399 ई. में लंकास्टर-वंश का राज्य शुरू हुआ था और 63 वर्षों यानी कि 1399 से 1461 ई. तक इस वंश का शासन कायम रहा था। लंकास्टर-वंश के समय में पार्लियामेंट प्रधान संस्था बन गई थी और यह उसके चरमोत्कर्ष का काल था। इस काल में राजा सदैव पार्लियामेंट के साथ सहयोग देने के लिए तत्पर रहता था। इसी तरह इंग्लैण्ड में सीमित राजतंत्र या वैधानिक शासन कायम हो चुका था। लंकास्टर-काल को 'वैधानिक राजतंत्र' का युग कहते हैं, परन्तु वैधानिक शासन के सिद्धान्तों से लोग अभी पूरी तरह परिचित नहीं थे।

2. राजा की शक्ति में वृद्धि (16वीं सदी में) : लंकास्टर-वंश के बाद यार्क वंश (1461-85) ई. और ट्यूडर वंश (1485-1603 ई.) तक शासन करते रहे। इन वंशों के शासनकाल के समय में राजाओं ने अपनी शक्तियों की वृद्धि कर ली थी। ट्यूडर वंश के राजा तो 'निरंकुश शासक' भी कहलाते हैं। उनका शासनकाल व्यावहारिक निरंकुशता का युग था। वे शक्तिशाली एवं चतुर थे। वे भलीभाँति जानते थे कि पार्लियामेंट की शक्तियों का प्रयोग कैसे अपने लिये किया जाए। वे सदैव पार्लियामेंट को सहयोग करने तथा उनका सहयोग प्राप्त करने की कोशिश किया करते थे। एक लेखक ने तो यहाँ तक कहा है-"ट्यूडरों ने पार्लियामेंट के साथ शासन किया, इससे पृथक् या प्रतिकूल नहीं।" इसी तरह ट्यूडर शासनकाल में भी वैधानिक राजतंत्र का व्यावहारिक रूप कायम रहा। इस नीति से राजा को पार्लियामेंट का समर्थन मिला और इससे पार्लियामेंट की शक्ति में वृद्धि हुई। इसीलिए पार्लियामेंट भी ट्यूडर वंश के राजाओं का जल्दी विरोध नहीं किया करती थी। यह उसकी कमजोरी का नहीं अपितु राजाओं की बढ़ती शक्तियों को दर्शाता है।

3 पार्लियामेंट एवं राजा के बीच सत्ता का संघर्ष (17वीं सदी) : इंग्लैंड में 16वीं सदी के अंत तक राजा तथा पार्लियामेंट दोनों ने ही अपनी शक्तियों को बढ़ाया तथा सत्ता पर भी बारी-बारी से शासन किया। 17वीं सदी तक (आरम्भ तक) दोनों ही शक्तिशाली बन चुके थे। स्टुअर्ट वंश का पहला राजा जेम्स, ट्यूडर राजाओं की भाँति ही निरंकुश बनना चाहता था और पार्लियामेंट की शक्तियों को दबाकर अपने अधीन करना चाहता था। दूसरी ओर पार्लियामेंट राजा को निरंकुश नहीं बनने देना चाहती थी और राजा की शक्तियों पर अंकुश लगाना चाहती थी। पार्लियामेंट राजा को कानून के अधीन रखना चाहती थी। अत: 17वीं सदी में राजा तथा पार्लियामेंट दोनों ही अपनी-अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए संघर्ष कर रही थी।

4. सत्ता के लिए संघर्ष के मूल प्रश्न : इस संघर्ष के मूल में सार्वभौम सत्ता का प्रश्न निहित था। इसका अहम प्रश्न यह था कि प्रभुसत्ता राजा में निहित थी या पार्लियामेंट में। इस प्रश्न का समाधान कई प्रश्नों के समाधान

पर निर्भर करता था। धीरे-धीरे इस प्रश्न ने संघर्ष का और फिर हिंसा का रूप ले लिया था। यह संघर्ष बहुत बढ़ चुका था। इसके फलस्वरूप राजा चार्ल्स प्रथम को फांसी पर लटका दिया गया था। जेम्स द्वितीय के ऊपर भी खतरा मंडरा रहा था। इसलिए उसे भी अपनी रक्षा के लिए गद्दी को त्यागना पड़ा और वहाँ से भागकर अपने प्राण की रक्षा करनी पड़ी थी। 1688-89 ई. की महान क्रान्ति के बाद सार्वभौम सत्ता का प्रश्न हल हुआ।

नोट

5 संघर्ष में पार्लियामेंट की विजय : सत्ता के लिए व्यापक रूप से संघर्ष चल रहा था। इसके लिए सबसे पहले 1628 ई. में अधिकार-याचना (पेटीशन-आफॅ राइट) के द्वारा राजा की प्रभुता पर प्रतिबंध लगाया गया। इसके बाद दीर्घ (लम्बा समय) पार्लियामेंट (1641 ई.) ने राजा की शक्ति को बहुत हद तक सीमित कर दिया था। इसने राजा के अनियंत्रित शासन पर भी रोक लगा दी थी। इसी से इंग्लैंड में आधुनिक वैधानिक विकास की नींव पड़ी। अब राजा की शक्तियों पर कुछ हद तक पाबंदी लग गई थी। अब राजा पार्लियामेंट की अनुमति के बिना कोई भी टैक्स नहीं लगा सकता था, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कर नहीं वसूल कर सकता था। वह पार्लियामेंट को मनमाने ढंग से स्थगित भी नहीं कर सकता था। अब राजाओं का पार्लियामेंट की उपेक्षा करना कठिन हो गया था। उनके लिए विरोधियों को भी दंड देना सरल कार्य नहीं था। यह कहा जा सकता है कि पार्लियामेंट ने अपनी शक्ति के द्वारा राजा के हाथ काट डाले थे। राजाओं के अधिकार दिन-प्रतिदिन घटते ही जा रहे थे।

दीर्घ पार्लियामेंट के द्वारा आरम्भ किए गए काम को 1688-89 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति ने पूरा कर दिया। इस बीच पुनर्स्थापन-काल में भी यद्यपि कानून की दृष्टि से राजा प्रधान था पर व्यावहारिक दृष्टि से पार्लियामेंट प्रधान थी। अब राजा अपनी शक्ति को समझ गया था और पार्लियामेंट से भरसक झगड़ा मोल लेना नहीं चाहता था। गौरवपूर्ण क्रान्ति के फलस्वरूप राजा की शक्ति बहुत नियन्त्रित हो गई। उत्तराधिकार निश्चित करने का अधिकार पार्लियामेंट के हाथ में आ गया। अब वही गद्दी पर बैठ सकता था जिसे पार्लियामेंट बैठाना चाहती थी। वंशानुगत या दैवी अधिकार का सिद्धान्त समाप्त हो गया। राज्य की सेना एवं अर्थ पर पार्लियामेंट का अधिकार कायम रहा। राजा उसी धर्म को मानने के लिए बाध्य था जिसे पार्लियामेंट चाहती थी। राजा के मन्त्री भी वे ही हो सकते थे जो पार्लियामेंट के विश्वासपात्र थे। अतः अब प्रभुता राजा सहित पार्लियामेंट में केन्द्रित हुई। अब राजतन्त्र सीमित या वैधानिक हो गया। यह ठीक ही है कि संघर्ष में पार्लियामेंट ने बाजी मार ली और उसकी प्रधानता कायम की गयी किन्तु उसमें यह हिम्मत नहीं थी कि वह राजतन्त्र को निर्मूल ही कर दे। राजतन्त्रों को सुरक्षित रखा गया और राजा को भी संविधान का एक अंग स्वीकार किया गया। इस तरह राजा और पार्लियामेंट दोनों ही ब्रिटिश संविधान के आवश्यक अंग बन गए।

6. वैधानिक बातों की स्पष्टता : संघर्ष के सिलसिले में दोनों ने पूर्व दृष्टांतों का सहारा लिया था, परन्तु राजा उनका मौलिक अर्थ लगाता था और पार्लियामेंट तर्क के द्वारा उनके व्यावहारिक पक्ष पर जोर देती थी। अतः कानून तथा ऐतिहासिक दृष्टि से राजा को सहायता मिलती थी तो भावना तथा व्यावहारिक दृष्टि से पार्लियामेंट को सुविधा प्राप्त थी। इस तरह संविधान के कई अस्पष्ट सिद्धान्तों की स्पष्ट व्याख्या हो गई थी।

7. राजनैतिक दलों का प्रादुर्भाव : 17 वीं सदी इंग्लैंड के लिए अति उत्तम काल था। उस काल में अन्य वैधानिक समस्याओं का निवारण हुआ। चार्ल्स-द्वितीय के राज्य-काल में जेम्स-द्वितीय को उत्तराधिकारी के पद से वंचित कर दिया गया। तब उस समय दो दलों का उदय हुआ—पेटीश्नर्ग (ह्विग) और ऐभोरर्स (टोरी)। इन दोनों दलों में जरा भी नहीं बनती थी। विलियम तृतीय के राज्य में एकदलीय सरकार बनाने की प्रथा को शुरू हुआ। आगे चलकर ह्विग लिबरल के नाम से और टोरी कन्जर्वेटिव के नाम से प्रसिद्ध हो गए। इन्हीं दोनों दलों के पथ-प्रदर्शन में संविधान का और अधिक विकास हुआ। प्रजातंत्र की नींव भी सबल हुई।

8. मंत्रिमंडलात्मक (कैबिनेट) प्रणाली का आरम्भ : 17वीं सदी में केवल राजनैतिक दलों का ही विस्तार नहीं हुआ अपितु आधुनिक मंत्रिमंडल (कैबिनेट) प्रणाली का भी आरम्भ हुआ। इस आधुनिक कैबिनेट प्रणाली के निम्नलिखित सिद्धान्त हैं—

(क) प्रधानमंत्री का सबल नेतृत्व,

(ख) मंत्रियों का व्यक्तित्व एवं सामूहिक उत्तरदायित्व,

(ग) कैबिनेट में राजा की अनुपस्थिति,

(घ) मंत्रियों के विचारों में समता और

(ङ) जनता की प्रतिनिधि संस्था के बहुमत वाले दल से मंत्रियों की नियुक्ति।

नोट

- चार्ल्स द्वितीय के ही शासनकाल में केबाल के निर्माण में आधुनिक कैबिनेट का बीज छिपा हुआ पाया जाता है।
- डैनबी के मंत्रित्वकाल में पार्लियामेंट के प्रति मंत्रियों के उत्तरदायित्व का सिद्धान्त स्थापित हो गया।
- विलियम तृतीय के राज्यकाल में यह निश्चित हो गया कि कॉमन्स सभा में बहुमत वाले दल से ही राजा अपने मंत्रियों की नियुक्ति करेगा।

इंग्लैण्ड में 1695 ई. विलियम तृतीय के शासनकाल में एकदलीय सरकार या मंत्रिमंडल का निर्माण हुआ, जिसे 'ह्विग जिंटों' कहते हैं। 1701 ई. में उत्तराधिकार निर्णय कानून पास हुआ और इसी के कारण इंग्लैण्ड की गद्दी पर एक विदेशी राजा (जार्ज प्रथम) का राज्यारोहण हुआ। इसी के परिणामस्वरूप प्रधानमंत्री के पद का प्रादुर्भाव हुआ और आधुनिक कैबिनेट प्रणाली के अन्य सिद्धान्तों का भी विकास हुआ। प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार **ट्रेविलियम** का मत है कि, "अनुभव के आधार पर क्रान्ति जनित व्यवस्था से ही वालपोल एवं पिटों के हैनोवर संविधान का विकास हुआ है।"

9. नागरिकों की स्वतंत्रता की रक्षा : 17वीं सदी में केवल पार्लियामेंट पर ही संकट नहीं था, बल्कि प्रत्येक नागरिक पर भी संकट था। यदि पार्लियामेंट की स्वतन्त्रता खतरे में थी तो व्यक्ति की स्वतंत्रता खतरे से खाली नहीं थी, किन्तु हर्ष की बात है कि 17वीं सदी में पार्लियामेंट की स्वतन्त्रता हुई तो नागरिक की भी स्वतन्त्रता सुरक्षित हो गई। 1628 ई. में ही अधिकार-याचना ने राजा के द्वारा मनमानी गिरफ्तारी पर रोक लगा दी। दीर्घ पार्लियामेंट ने 1641 ई. में आसाधारण न्यायालयों को ही समाप्त कर दिया। 1679 ई. में बन्दी-प्रत्यक्षीकरण नियम (हैबियस कौर्पस ऐक्ट) पास हुआ और इसके अनुसार साधारण न्यायालयों के जजों द्वारा बन्दी के अपराध की जाँच आवश्यक हो गई। 1696 ई. में राजद्रोह नियम के द्वारा भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की रक्षा करने में बड़ी सहायता मिली। 1701 ई. में उत्तराधिकार निर्णय (ऐक्ट ऑफ सेटलमेंट) के द्वारा इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाया गया। अब न्यायपालिका कार्यपालिका से स्वतंत्र हो गई। जजों को राजा मनमाने ढंग से पदच्युत नहीं कर सकता था। अब निश्चित रूप से दुराचार या अपराध सिद्ध होने पर ही पार्लियामेंट के दोनों भवनों की राय से ही न्यायाधीश पदच्युत किया जाने लगा। अत: अब यह निष्पक्ष एवं निर्भीक होकर न्याय-कर्म संपादित करने लगा।

लॉस्की के मतानुसार "17वीं शताब्दी में अंग्रेजी संविधानवाद (English constitutionalism) कानून के बाहर के हस्तक्षेप से नागरिक की रक्षा की दृष्टि से पदाधिकारी (authority) के पथ-प्रदर्शन के लिये नियमों को निर्धारित करता है। इतना ही नहीं, निरंकुशता के दो प्रमुख साधनों-सेना एवं अर्थ के सम्बन्ध में भी उसे शक्तिहीन कर देता है इस प्रकार इंग्लैण्ड की उदारवादी विचारा धारा के विकास में 17वीं शताब्दी की महत्त्वपूर्ण देन है।"

10.8 17वीं सदी में इंग्लैण्ड की दशा

17वीं सदी में इंग्लैण्ड की दशा को आर्थिक दशा, सामाजिक दशा, सांस्कृतिक दशा, शिक्षा और साहित्य, कला और संगीत, विज्ञान में बाँट सकते हैं तथा इंग्लैण्ड की दशा को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।

1. कला और संगीत : कला और संगीत तथा शिल्प की दिशाओं में साधारण प्रगति हुई क्योंकि इन दिशाओं में प्यूरिटनों का विशेष प्रभाव पड़ा था। प्यूरिटन लोग जीवन के हर क्षेत्र में सादगी के कट्टर समर्थक थे। वे 'सादा जीवन'-'उच्च विचार' के लक्ष्य को ही मानते थे। अत: वे कला, संगीत-सजावट, तड़क-भड़क में दिलचस्पी नहीं रखा करते थे। उन्होंने अद्भुतालय (म्यूजियम) के बहुत से चित्रों को बेच दिया या फिर बर्बाद कर डाला। उन लोगों ने चर्च में गाना-बजाना भी बंद कर दिया था। फिर भी सभी प्यूरिटन इस सभी चीजों के कट्टर-विरोधी नहीं थे। मिल्टन और क्रॉमवेल जो कि बड़े नेता थे, वे कला तथा संगीत के प्रेमी थे। पुनर्स्थापना के साथ प्यूरिटनों द्वारा लगाये गये नियंत्रण भी समाप्त हो गए थे। उन्होंने चर्च में गाना-बजाना फिर से शुरू करवा दिया। कई विदेशी कलाकारों

नोट

को ब्रिटेन में रहने के लिए स्थान दिया। वे देश की सेवा उत्तम कृतियों से करने लगे। पीटरलेली नाम का एक डच बड़ा ही कुशल चित्र खींचने वाला (फोटोग्राफर) था। वह प्रजातंत्र-काल में ही इंग्लैण्ड चला आया था और कई वर्षों तक यहाँ ठहरकर उसने सैंकड़ों स्त्री-पुरुषों के फोटो लिए। एक दूसरे डच ने लकड़ी पर सुन्दर काम करने में दक्षता प्राप्त की थी। हेनरी पर्सेल नाम का एक सुविख्यात संगीतज्ञ था, किन्तु उसकी अकाल मृत्यु हो गई जिससे अंग्रेजी संगीत को बहुत बड़ी क्षति पहुँची।

ऐलिजाबेथ के समय में शिल्प की कला जारी रही, परन्तु इस युग में दो नये प्रभावों का आगमन हुआ। 1. पहला प्रभाव विलियम लॉर्ड तथा उसके शिष्यों का था। इस प्रभाव से गोथिक शैली का पुनरुद्धार हुआ। 2. दूसरा प्रभाव वेल्स के इनिगोजॉन्स का था। इस प्रभाव से क्लासिकल शैली की तरफ लोगों का झुकाव हुआ। इससे ग्रीक और रोमन शैली को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ। प्रजातंत्र के बाद क्रिस्टोफर रेन ने जॉन्स के काम को और आगे बढ़ाया। उसने कई चर्चों का निर्माण इसी शैली के आधार पर किया जिसमें सेंडपाल का चर्च सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। इस शैली में मीनार और बुर्ज विशेष महत्त्व की चीजें थीं।

स्टुअर्टों के युग में विज्ञान के क्षेत्र में भी प्रगति हुई। जेम्स-प्रथम का चांसलर बेकन तो एक प्रसिद्ध लेखक था ही, वह प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी था। ऐसा माना जाता है कि आधुनिक विज्ञान को उससे बहुत बड़ी प्रेरणा मिली। ज्योतिषशास्त्र में नेपियर और केप्लर निपुण थे। 17वीं सदी के पूर्वार्द्ध में नेपियर ने लांग स्थिम का, गैस्कोईन ने 'माइक्रोमीटर' का तथा विलियम हार्वेन ने खून के दौरा का आविष्कार किया। एक दूसरा सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटन भी इसी युग में हुआ था जिसने आकर्षण-शक्ति के सिद्धान्त (लॉऑफ ग्रेविटी) को स्थापित किया। प्रकृति-शास्त्र में बायल का नाम उल्लेखनीय है। वैज्ञानिकों की कभी-कभी बैठक भी होने लगी थी जिसमें पारस्परिक विचार-विनिमय होते थे। चार्ल्स द्वितीय भी विज्ञान की प्रगति चाहता था और उसकी आज्ञा से 1662 ई. में वैज्ञानिकों का एक समाज संगठित हुआ जो रॉयल सोसायटी के नाम से बहुत प्रसिद्ध हुआ। यह संस्था अब भी वर्तमान है और विश्व के बड़े-बड़े वैज्ञानिक इसके सदस्य हैं।

2. सामाजिक दशा : 17वीं सदी में अंग्रेजी समाज को चार भागों में बाँटा गया था। यह विभाजन धन तथा भूमि के आधार पर किया गया था–

(क) बड़े-बड़े भूपति : ये लोग बहुत से भूमिखंडों के मालिक होते थे और दूसरों को जोतने के लिए अपनी जमीन दिया करते थे। यह विभाग समाज का प्रभावशाली हिस्सा था। अत: इसी वर्ग से बड़े-बड़े अफसरों की नियुक्ति की जाती थी। इस विभाग के लोग धनधान्य से संतुष्ट होने के कारण स्वाभाविक रूप से भोग-विलास में लीन रहते थे।

(ख) छोटे भूपति : ये लोग साधारण श्रेणी के भूमिपति थे। इनमें शिक्षा का अभाव था, परन्तु देहाती इलाकों में इनका प्रभाव कम नहीं था।

(ग) मध्यम श्रेणी : मध्यम श्रेणी के लोगों को योमैन भी कहा जाता था। इनका प्रभाव भी समाज में कुछ कम नहीं था। खूब हट्टे-कट्टे होना इनकी मुख्य विशेषता थी अत: सेना विभाग में इनकी बहुत माँग रहती थी।

(घ) किसान : समाज की यह बहुत बड़ी श्रेणी थी। इनमें कृषक तथा मजदूर लोग शामिल थे।

समाज को और अन्य क्षेत्रों या अंतरों द्वारा विभाजित किया जा सकता है क्योंकि समाज में तो खानपान, पहनावे, रहन-सहन का भी अपना ही महत्त्व होता है।

(i) शहर तथा देहात : 17वीं सदी तक राष्ट्र में व्यापक रूप से औद्योगिक क्रांति नहीं आई थी। इसलिए राष्ट्र में गाँव (देहात) की संख्या अधिक और शहरों की संख्या कम थी। लंदन सबसे बड़ा शहर था जहाँ की जनसंख्या करीब 5 लाख थी। इसके बाद नार्विच तथा ब्रिस्टल नाम के दो शहर थे जिनमें प्रत्येक शहर की आबादी लगभग 30-30 हज़ार थी। शहरों के हालात ठीक नहीं थे। वहाँ पर जरा भी विकास देखने में नहीं आता था। गलियों तथा सड़कों पर गंदगी भरी रहती थी, सड़कों पर कीचड़ व पानी रहता था जिस कारण गाड़ियों को निकलने में बहुत दिक्कत होती थी। प्रकाश का भी कोई प्रबंध नहीं था। डाकुओं व चोरी का डर भी सदैव बना रहता था। शहर के जीवन में कोई विशेष अभिरुचि नहीं थी।

नोट

1666 ई. में लंदन शहर में एक बड़ी घटना घटी। पूरे शहर में आग लग गई। पुराने और गंदे सभी मकान जलकर मिट्टी में मिल गये थे। इसे अग्निकांड के नाम से जाना जाता है। इससे लंदन शहर को बहुत लाभ पहुँचा। इसके बाद शहर में सुन्दर-सुन्दर मकान बनवाये गये। शहर की सुन्दरता में वृद्धि होने लगी, परन्तु इन सब के बाद भी सफाई का काम पूरा नहीं हुआ था।

उस समय देहातों में रहने वाले लोगों की संख्या अधिक थी और उनकी स्थिति शहरों से अधिक खराब थी। जहाँ-तहाँ जंगल थे। सभी देहातवासियों को जरूरत से ज्यादा काम करना पड़ता था। खाने-पीने की भी पूरी व्यवस्था नहीं हो पाती थी। लोग स्वास्थ्य के नियमों से अनभिज्ञ थे जिस कारण शहरों तथा देहातों के लोगों में बीमारियाँ अधिक से अधिक फैलती थीं। लोगों की मृत्यु दर बहुत ज्यादा थी। आए दिन लोग बड़ी-बड़ी बीमारियों का शिकार हो जाया करते थे

(*ii*) **सफर और सवारियाँ :** लोगों में सफर करने की चाहत तो रहती थी परन्तु उत्तम सड़कों तथा तेज सवारियों का अभाव था। चार्ल्स द्वितीय के समय सबसे तेज गाड़ी (Flying Coaches) दिनभर में अधिक से अधिक 50 मील तक ही जा सकती थी। पालकी गाड़ियों का पूरा प्रचार हो चला था, परन्तु खर्चीली, सवारी होने के कारण साधारण लोगों तक यह सुविधा नहीं पहुँच पाती थी। ये लोग घोड़ों तथा ठेलों से ही अपना काम पूरा कर लिया करते थे। ठेलों पर सामान भी ढोया जाता था। पालकी गाड़ी से डाक भी ढोने का काम किया जाता था।

(*iii*) **खानपान :** 17वीं सदी में इंग्लैण्ड में तेजी से बदलाव हो रहा था। इंग्लैंड के धन-दौलत में तीव्र गति से वृद्धि हो रही थी। इससे लोगो का जीवन स्तर ऊँचा हो गया। लोगों के रहन-सहन, खानपान में अंतर पड़ गया। लोग शराब तो पीते ही थे, अब चाय और कहवा पीने का प्रचार होने लगा। यह प्रचार चार्ल्स-द्वितीय के समय से प्रारम्भ हुआ। कितने ही कहवाघर कायम हो गये।

(*iv*) **पहनावे और मनोविनोद :** पोशाक, पहनावे तथा मनोविनोद के साधनों में भी पर्याप्त अन्तर दिखने लगा। चार्ल्स द्वितीय के राज्याभिषेक के पहले प्यूरिटनों का विशेष प्रभाव था। अत: उन लोगों ने इन सभी चीजों पर नियंत्रण रखा था और सादगी पर विशेष ध्यान दिया था, लेकिन चार्ल्स द्वितीय के राज्यकाल में भीषण प्रतिक्रिया शुरू हुई। अब फैशन का बाजार गर्म हो चला। तरह-तरह के फैशन निकलने लगे। नाच-गाना, रास-रंग और खेल-तमाशों में लोग, खासकर ऊँची श्रेणी के लोग मस्ती में लिप्त होने लगे। घुड़दौड़, ताश, जुआ, मुर्गों की लड़ाई और टेनिस के खेल अधिक प्रचलित थे। पालमाल नाम का एक नया खेल भी शुरू ही हुआ था। कहवेघर में भद्र लोग गपशप और कभी राजनैतिक विषयों पर वाद-विवाद करते थे। नाटक तथा थियेटर का भी प्रचार हुआ था।

लोगों की पोशाकें बहुत ही भड़कीली होने लगीं। प्रजातंत्रकाल तक लंबे कोट और डबलेट पहनने की विशेष प्रथा थी, लेकिन उसके बाद इनका व्यवहार बंद हो चला और आधुनिक फैशन के कोट, वेस्टकोट तथा पतलून की प्रथा चल पड़ी। बहुत से पुरुष अपने सिर के बालों को काटकर कृत्रिम बालों की टोपी (wigs) पहनते थे, स्त्रियाँ भी पुरुषों की नकल करने लगी थीं।

3. सांस्कृतिक दशा, शिक्षा एवं साहित्य : (*i*) इस युग में शिक्षा में अधिक प्रगति एवं प्रचार नहीं हो पाया था। आम जनता में तो बहुत ही कम लोग पढ़े-लिखे होते थे। उस समय लोगों का ख्याल था कि अच्छी चाल-ढाल, तौर-तरीका सीखना ही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। अत: लोग फ्रांसीसियों की ही नकल करते रहते थे। कैम्ब्रिज तथा ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी शिक्षा के दो बड़े उन्नतिशील केंद्र थे, परन्तु धार्मिक तथा राजनैतिक मतभेद होने के कारण बहुत से विद्वान देश से निष्कासित कर दिए जाते थे। इससे शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में त्रुटि पड़ जाती थी।

(*ii*) साहित्य के क्षेत्र में भी उन्नति हुई। यह उन्नति एलिजाबेथ के ही समय में शुरू हो गई थी, जो स्टुअर्ट-काल में बढ़ती गई। जेम्स-प्रथम के समय में 1623 ई. में शेक्सपियर के लिखे हुए सभी नाटकों को एकत्र करके 'फर्स्ट फोलियो' के नाम से प्रकाशित कर दिया गया। शेक्सपियर के बाद दूसरा प्रसिद्ध नाटककार बेन जॉनसन था। जॉन ड्राइडन स्टेज पर खेलने वाले नाटक का पहला लेखक था। इस समय का एक महान तथा सुप्रसिद्ध कवि जॉन मिल्टन था। वह प्रजातंत्रकाल में विदेशी मामलों का मंत्री भी था। उसके सोनेट अंग्रेजी-साहित्य में बहुत प्रसिद्ध

नोट

हैं। उसकी एक बड़ी और लोकप्रिय कविता 'पैराडाइज लॉस्ट' है। मिल्टन के बाद गद्य-लेखन की ओर लोगों का झुकाव विशेष होने लगा। बेकन, जॉन बनियन और क्लेरेंडन के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। बेकन के लेख बड़े ही गंभीर होते थे। बनियन की 'पिलॉग्रिम्स प्रोगश' तथा क्लेरेंडन की 'हिस्ट्री ऑफ दी ग्रेट रेबेलियन' प्रसिद्ध किताबें हैं। राज्य-पुनर्स्थापना-काल से साहित्यिक शैली में अंतर पड़ने लगा। पहले की अपेक्षा अब लेख अश्लील तथा साधारण होने लगे। उनमें भाव तथा गम्भीरता का अभाव दिख पड़ने लगा और शृंगाररस की प्रधानता होने लगी। समाचार पत्र के जरिये भी गद्य-लेखन के विकास में बहुत बड़ी सहायता मिली।

(*iii*) **समाचार :** पत्रों के प्रसार-प्रचार में भी विशेष उन्नति हुई। महान क्रान्ति के पहले समाचार-पत्रों के स्वतंत्र प्रकाशन पर नियंत्रण लगा हुआ था लेकिन विलियम के राज्यकाल में यह नियंत्रण हटा दिया गया। अब समाचार-पत्रों का प्रकाशन जोरों से होने लगा। दो साप्ताहिक अखबार-टैट्लर और स्पेक्टेटर-बहुत ही प्रसिद्ध थे। दैनिक समाचार-पत्र का भी निकलना शुरू हो गया। अब राजनैतिक दल भी सिद्धान्तों के प्रचार तथा लोकमत के निर्माण के लिए अखबारों पर अपना-अपना अधिकार स्थापित करने की कोशिश करते थे। एन के राज्यकाल में यह बात विशेष रूप से होने लगी।

4. आर्थिक दशा : इस समय इंग्लैंड ने व्यापारिक क्षेत्र में अपूर्व उन्नति की। यह उन्नति रानी एलिजाबेथ के समय में प्रारम्भ हो गयी थी और स्टुअर्टों के युग में यह जारी रही। 1588 ई. तक औपनिवेशिक और व्यापारिक क्षेत्रों में स्पेन को एकाधिकार-सा प्राप्त हो गया था, लेकिन उसी साल आर्मेडा के युद्ध में उसकी शक्ति क्रमजोर कर दी गयी। अब स्पेन की जगह इंग्लैंड ने ले ली, लेकिन अभी उसके दो भीषण प्रतियोगी थे-हालैंड और फ्रांस। पूर्वकालीन स्टुअर्टों के समय में इंग्लैण्ड की प्रगति कुछ मन्द-सी रही, लेकिन प्रजातंत्र तथा उत्तरकालीन स्टुअर्टों के समय में तीव्रता से प्रगति हुई। 1713 ई. तक हालैंड तथा फ्रांस दोनों की शक्ति तोड़ दी गयी और उनके हौसले मिट्टी में मिल गए। इंग्लैंड की व्यापारिक, सामुद्रिक और औपनिवेशिक प्रधानता स्थापित हो गयी। बहुत से अंग्रेज दूर-दूर के देशों में जा बसे और क्रमशः अपनी शक्ति को दृढ़ करने लगे। बड़े-बड़े देशों के साथ इंग्लैण्ड का व्यापारिक सम्बन्ध हो गया। उपनिवेशों का व्यापार इंग्लैण्ड के नियंत्रण में था। व्यापार संचालन करने के लिए कई कम्पनियाँ खुल चुकी थीं। इस प्रकार स्टुअर्ट-युग के आखिर तक इंग्लैण्ड एक बड़ा ही समृद्धिशाली देश हो गया।

(*i*) **गरीबी-रक्षण कानून** (Poor law) : यद्यपि देश में गरीबों, कंगालों और भिखमंगों का सर्वथा अभाव नहीं था। एलिजाबेथ के ही समय में एक गरीब रक्षण कानून बन चुका था। इसके द्वारा गरीबों की रक्षा का भार पेरिस के हाथ में दे दिया गया। इससे पेरिस में कितने बेकारों तथा गरीबों की भीड़ जमा होने लगी थी। अतः चार्ल्स द्वितीय के समय में कानून बनाया गया कि प्रत्येक पेरिस नवागन्तुक गरीबों को उनके अपने पहले के ही पेरिस में लौटा दें।

सारांश

- 17वीं सदी में या अंत तक इंग्लैण्ड में मंत्रिपरिषद् अर्थात् मंत्रिमंडल का विकास हो चुका था। 1714 ई. के बाद प्रधानमंत्री के पद के प्रादुर्भाव के साथ कैबिनेट पर कॉमन्स सभा का पूरा नियंत्रण कायम हो गया था।
- 1714 ई. तक राजा राज्य करता था और शासन भी करता था। मंत्रिमंडल का स्थायित्व भी वही करता था। 1714 ई. में हैनोवर-राजवंश की स्थापना का साल पूरा हो गया था।
- 17वीं सदी में राजनीति पर धर्म का प्रभाव साफतौर पर देखा जा सकता था। इस समय मनुष्य के जीवन पर भी धर्म का प्रभाव दिखता था। ट्यूडर के समय धर्म और राजनीति का मिलना स्पष्ट रूप से दिखता था। 11 वर्षीय अनियंत्रित शासनकाल में चार्ल्स ने विलियम लॉड को अपना धार्मिक सलाहकार नियुक्त कर दिया था।
- 17वीं शताब्दी में पार्लियामेंट तथा व्यक्ति दोनों की ही शक्ति क्षीण हो गई थी। दोनों के पास न तो राजनैतिक स्वतंत्रता ही बची थी और न ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता।

नोट

- इंग्लैण्ड के इतिहास में बेकन के सिद्धान्त तथा कोक के सिद्धान्त का भी बहुत महत्त्व है। बेकन तत्कालीन स्थिति का विरोधी था और कोक तत्कालीन स्थिति का समर्थक था।
- 17वीं शताब्दी के प्रमुख घटनाओं में प्रोहीबिशन का मामला, घोषणा सम्बन्धी मामला, पीचम का मामला कौमेण्डम्स का मामला, स्विडलर का मामला, बहुत प्रसिद्ध थे।
- 17वीं सदी के रचनात्मक युग में 14वीं-15वीं सदी तक पार्लियामेंट की शक्ति में वृद्धि हुई थी। फिर 16वीं सदी में राजा की शक्तियों में वृद्धि हुई थी। फिर 17वीं सदी में पार्लियामेंट और राजा के बीच सत्ता के लिए संघर्ष शुरू हो गया था। अंत में इस संघर्ष में पार्लियामेंट की जीत हो गयी थी।

अभ्यास-प्रश्न

1. 1714 ई. तक इंग्लैण्ड में मंत्रिपरिषद् (कैबिनेट) की उत्पत्ति एवं उसके विकास को रेखांकित कीजिए।
2. 17वीं सदी में इंग्लैण्ड में 'राजनीति पर धर्म का प्रभाव' विषय पर एक निबंध लिखिए।
3. 17वीं सदी में इंग्लैण्ड में व्यक्तिगत स्वाधीनता की समस्या पर एक निबंध लिखिए।
4. इंग्लैण्ड के इतिहास में 17वीं शताब्दी का रचनात्मक युग के रूप में महत्त्व की विवेचना कीजिए।
5. 17वीं सदी में इंग्लैण्ड की दशा की संक्षेप में समीक्षा कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. राजेश कुमार – भट्ट ब्रदर्स।*
2. ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक इतिहास : *धनपति पाण्डेय – मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।*
3. इंग्लैण्ड का इतिहास : *डॉ. गिरिश कुमार सिंह – भट्ट ब्रदर्स।*
4. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटेन : *कार्टर एण्ड मीयर्स – स्टेसी इन्टरनेशनल।*
5. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास : *राधाकृष्ण शर्मा – किताबमहल।*
6. ब्रिटेन का इतिहास : *दीपा भण्डारी – कॉमनवैल्थ पब्लिशर्स।*
7. इंग्लैण्ड का इतिहास : *एल.पी. शर्मा – एल.एन.ए. पब्लिशर्स।*

परिशिष्ट 1

राजवंशों की वंशावलियाँ

प्रारम्भिक ब्रिटेन 802 ई. तक

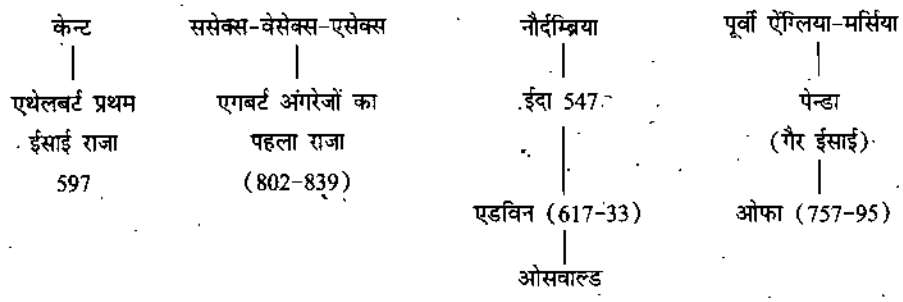

परिशिष्ट 2

802 से 1603 ई. तक

(क) सैक्सन वंश की वंशावली

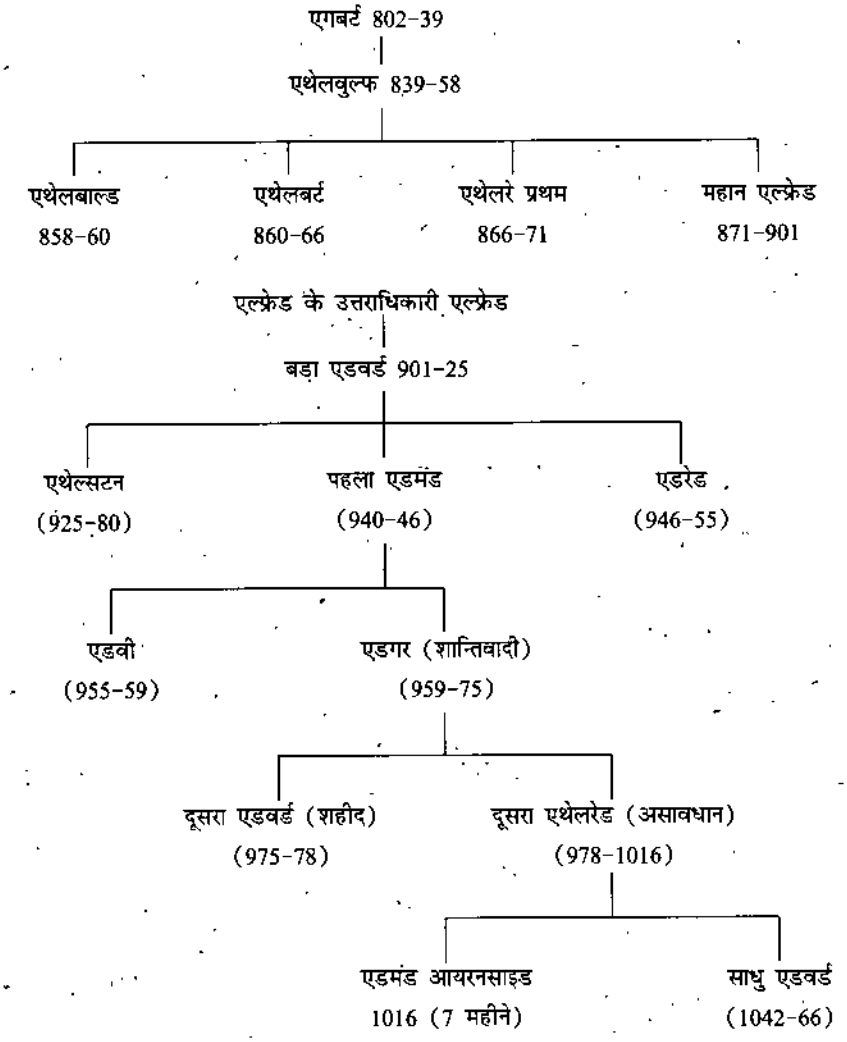

नोट

नोट

(ख) डेनों की वंशावली

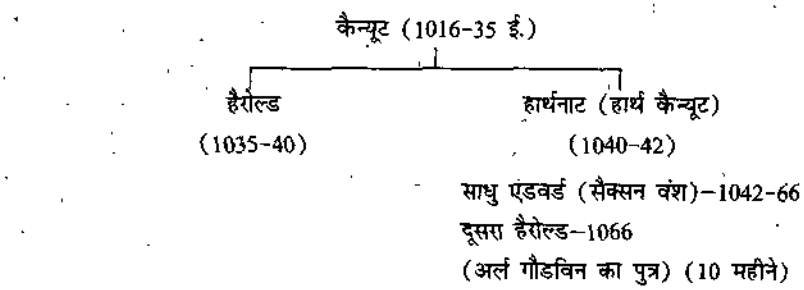

(ग) नार्मन राजाओं की वंशावली

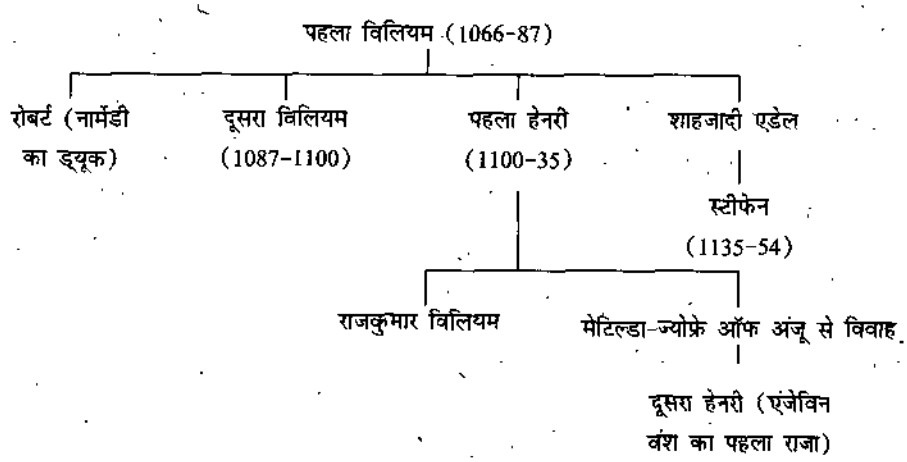

(घ) एंजेविन (प्लैंटेजिनेट) राजाओं की वंशावली

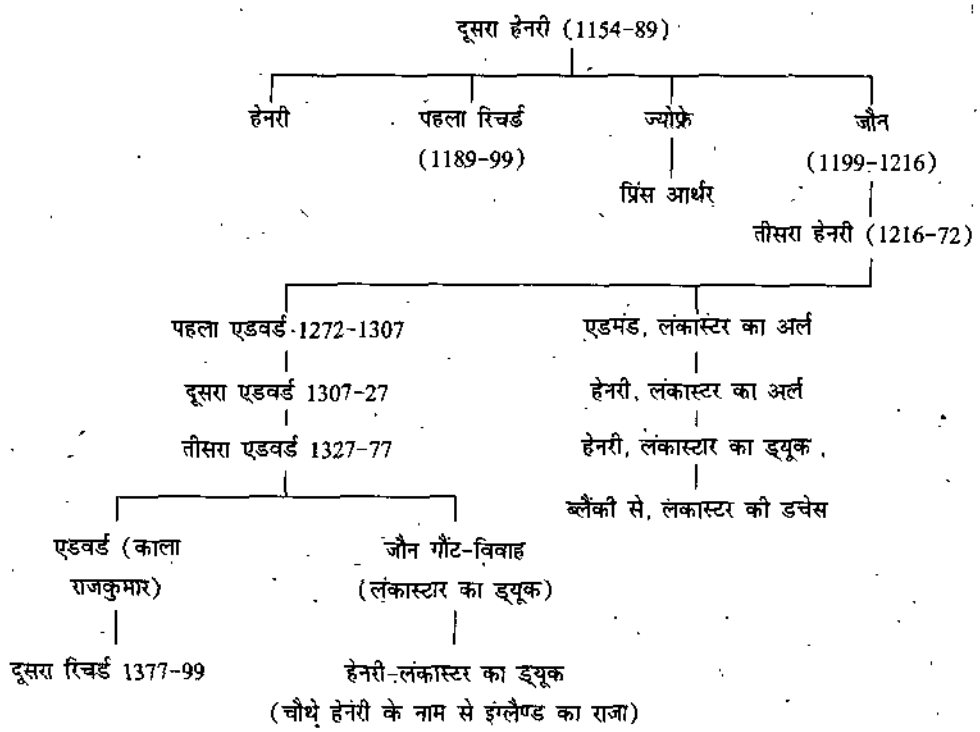

(ङ) ट्यूडर वंशावली

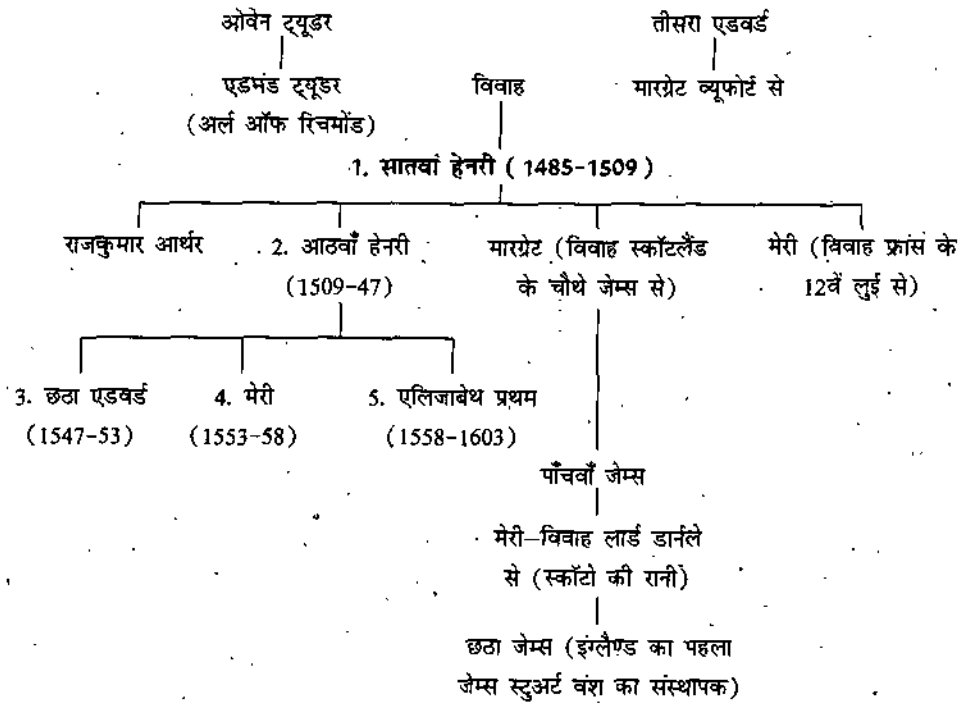

(च) स्टुअर्ट राजाओं की वंशावली

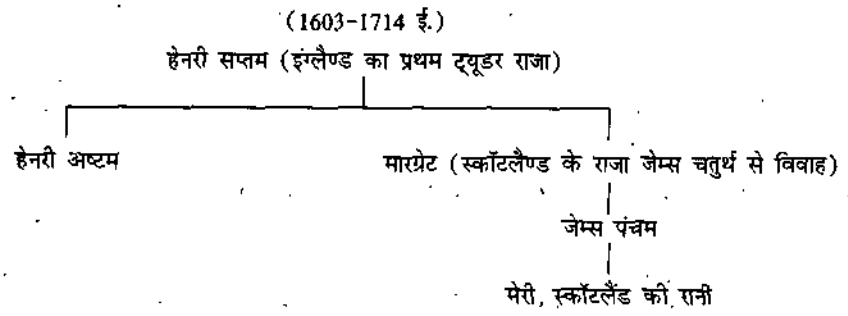

नोट

नोट

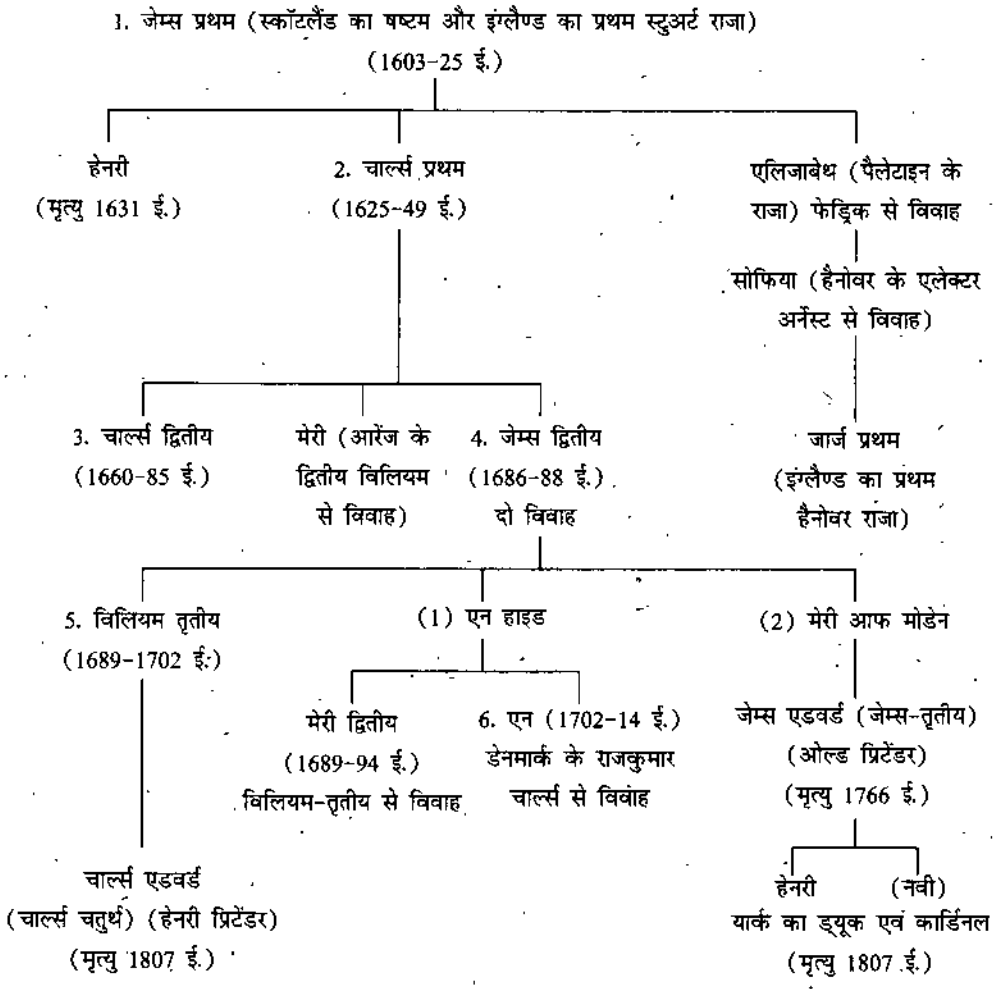

परिशिष्ट 3

प्रसिद्ध घटनाएँ तथा तिथियाँ (1603 ई. तक)

ब्रिटेन पर जूलियस सीजर का हमला	–	55 ई.पू.
ब्रिटेन पर रोमनों का दूसरा हमला	–	43 ई.
ब्रिटेन से रोमनों का हटना	–	410 ई.
इंग्लैण्ड में संत आगस्टाइन का आगमन और केंट के राजा को ईसाई बनाना	–	597 ई.
ह्विटबी की चर्च-सभा	–	664 ई.
थियोडोर कैंटरबरी का आर्कबिशप हुआ	–	668 ई.
अलफ्रेड का राजा होना	–	871 ई.
वेडमूर की सन्धि	–	878 ई.
विलियम का राज्यारोहण एवं नार्मन वंश का प्रारम्भ	–	1066 ई.
सेलिसबरी की कसम–डूम्सडे बुक का निर्माण	–	1086 ई.
पहला धर्मयुद्ध (क्रूसेड) का आरम्भ	–	1095 ई.

नोट

आजादी का पहला चिट्ठा (चार्टर)	–	1100 ई.
वेलिंगफोर्ड की सन्धि	–	1153 ई.
जूरी प्रथा का आरम्भ	–	1166 ई.
टॉमस बेकेट की हत्या	–	1170 ई.
आजादी का दूसरा चिट्ठा–मैग्नाकार्टा	–	1215 ई.
पागल पार्लियामेंट–ऑक्सफोर्ड की शर्तें	–	1258 ई.
साइमन पार्लियामेंट, डेबशाम का युद्ध और साइमन की मृत्यु	–	1265 ई.
आदर्श (मॉडेल) पार्लियामेंट	–	1295 ई.
दूसरे एडवर्ड का गद्दी से उतारा जाना और उसका वध	–	1327 ई.
सौ वर्षीय युद्ध का आरम्भ	–	1336 ई.
काली मौत (प्लेग)	–	1348 ई.
अच्छी (गुड) पार्लियामेंट	–	1376 ई.
किसानों की बगावत	–	1381 ई.
दूसरा रिचर्ड का गद्दी से उतारा जाना	–	1399 ई.
लौलार्डों के विरुद्ध चौथे हेनरी का अत्याचारपूर्ण कानून	–	1401 ई.
जोन ऑफ आर्क का जीते ही जलाया जाना	–	1431 ई.
इंग्लैण्ड तथा फ्रांस में समझौता	–	1444 ई.
गुलाबों के युद्ध का आरम्भ	–	1455 ई.
गुलाबों के युद्ध का अन्त, बोसवर्थ की लड़ाई और ट्यूडर वंश का आरम्भ	–	1485 ई.
स्टार चैम्बर की स्थापना	–	1487 ई.
पोयनिंग्स नियम (ऐक्ट)	–	1494 ई.
पवित्र संघ (होली लीग)	–	1511 ई.
बुल्जे की मृत्यु	–	1530 ई.
छोटे-छोटे मठों की बर्बादी	–	1536 ई.
बड़े-बड़े मठों की बर्बादी	–	1539 ई.
प्रार्थना की पहली पुस्तक का जारी किया जाना	–	1549 ई.
प्रार्थना की दूसरी पुस्तक का जारी किया जाना	–	1552 ई.
इंग्लैण्ड के हाथ से कैले का निकलना	–	1558 ई.
मेरी की फाँसी	–	1587 ई.
आर्मडा की लड़ाई	–	1588 ई.
गरीबों का कानून	–	1601 ई.
महारानी एलिजाबेथ की मृत्यु, ट्यूडर वंश का अन्त, स्टुअर्ट वंश का प्रारम्भ	–	1603 ई.
हैम्पटन कोर्ट कान्फरेंस	–	1604 ई.
बारूद का षड्यन्त्र (गनपाउडर प्लाट)	–	1605 ई.
रैले की फाँसी और तीस वर्षीय युद्ध का प्रारम्भ	–	1618 ई.
धर्मयात्रियों (पिलग्रिम फादर्स) का अमेरिका के लिये प्रस्थान	–	1620 ई.

नोट

स्पेन के साथ युद्ध	–	1624 ई.
अधिकार-पत्र (पेटीशन आफ राइट्स)	–	1628 ई.
राष्ट्रीय प्रतिज्ञा-पत्र (सौलम्न लीग ऐन्ड कोवेनेन्ट)	–	1638 ई.
बड़ी (लौंग) पार्लियामेंट	–	1640 ई.
महान विरोध-पत्र (ग्रैंड रीमौन्सट्रैंस)	–	1641 ई.
स्टैफोर्ड की फाँसी	–	1641 ई.
गृहयुद्ध का प्रारम्भ	–	1642 ई.
मार्स्टन मूर का युद्ध	–	1644 ई.
नेज्वी का युद्ध और लॉड की फाँसी	–	1645 ई.
द्वितीय गृहयुद्ध	–	1648 ई.
कर्नल प्राइड की सफाई (प्राइड्स पर्ज)	–	1648 ई.
राज्य-पुनर्स्थापना (रेस्टोरेशन)	–	1660 ई.
लम्बी पार्लियामेंट का अन्त	–	1660 ई.
कैवेलियर पार्लियामेंट	–	1661 ई.
द्वितीय आंग्ल-डच युद्ध	–	1665-67 ई.
डोवर की गुप्त सन्धि	–	1670 ई.
तृतीय आंग्ल-डच युद्ध	–	1672-74 ई.
टेस्ट ऐक्ट	–	1673 ई.
कैवेलियर पार्लियामेंट का अन्त, डैन्बी का पतन तथा हेबियस कारपस ऐक्ट	–	1679 ई.
राई हाउस प्लाट	–	1683 ई.
मन्मथ का विद्रोह, सेजमूर का युद्ध	–	1685 ई.
महान क्रान्ति	–	1688-89 ई.
अधिकार-विधान (बिल ऑफ राइट्स)	–	1689 ई.
बोर्बन का युद्ध	–	1690 ई.
ग्लैंकों का हत्याकांड	–	1692 ई.
रिज्विक की सन्धि	–	1697 ई.
उत्तराधिकार निर्णायक कानून (ऐक्ट आफ सेटलमेंट)	–	1701 ई.
स्पेन की उत्तराधिकार की लड़ाई	–	1712-13 ई.
ब्लेनहिम की लड़ाई, जिब्राल्टर पर आधिपत्य	–	1704 ई.
रैमेलिज की लड़ाई	–	1706 ई.
संयोग कानून (ऐक्ट आफ यूनियन)	–	1707 ई.
औडेनार्ड की लड़ाई	–	1708 ई.
मालप्लाके की लड़ाई	–	1709 ई.
गोडोल्फिन के ह्विग मंत्रिमण्डल का पतन और टोरी मंत्रिमण्डल की स्थापना	–	1710 ई.
यूट्रेक्ट की सन्धि	–	1713 ई.
रानी एन की मृत्यु और हैनोवर राजवंश का प्रारम्भ (1714 ई. से 1950 ई. तक)	–	1714 ई.
हैनोवर राजवंश का प्रारम्भ	–	1714 ई.

जैकोबाइट विद्रोह और बलवा कानून	–	1715 ई.
दक्षिणी समुद्र का बुलबुला	–	1720 ई.
वालपोल का प्रधानमंत्री होना	–	1721 ई.
जार्ज प्रथम की मृत्यु और जार्ज द्वितीय का राज्याभिषेक	–	1727 ई.
जेनकिन केरान की लड़ाई	–	1739 ई.
आस्ट्रिया के उत्तराधिकार की लड़ाई	–	1740-48 ई.
वालपोल का पदत्याग	–	1742 ई.
जैकोबाइटों का अन्तिम विद्रोह, डेटिन्जन का युद्ध	–	1745 ई.
एक्सला शैपल की सन्धि	–	1748 ई.
सप्तवर्षीय युद्ध	–	1756-63 ई.
बड़े पिट का मंत्री होना, पोताध्यक्ष बिंग की फाँसी, प्लासी में क्लाइव की विजय	–	1757 ई.
क्वीबेक की जीत	–	1759 ई.
जार्ज द्वितीय की मृत्यु और जार्ज तृतीय का राज्याभिषेक	–	1760 ई.
पेरिस की सन्धि	–	1763 ई.
टिकट (स्टाम्प) अधिनियम	–	1765 ई.
अमेरिका का स्वतन्त्रता-संग्राम	–	1775-83 ई.
अमेरिकी स्वतन्त्रता की घोषणा	–	1776 ई.

नोट